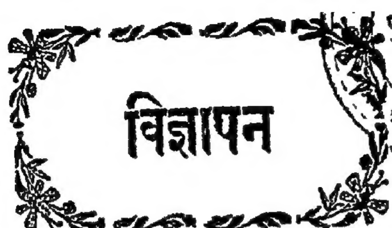
मुद्रक—
बैजनाथ केडिया
प्रोप्राइटर
"वणिक् प्रेस"
१, सरकार लेन कलकत्ता ।



विज्ञापन

यह नूतन संस्करण उपस्थित करते मुझे अत्यन्त आनन्द होता है। इसके पूर्व के संस्करणों में जो कुछ अशुद्धियां रह गयो थीं, उनका संशोधन कर दिया गया है, तथा आवश्यकतानुसार नवीन विषय भी बढ़ा दिये गये हैं। आशा है, विद्यार्थियों के लिये यह पूर्वापेक्षा अधिक उपयोगी होगा।

अन्त में निम्नलिखित सज्जनों को धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने कृपा कर अपने २ प्रान्तों के स्कूलों के लिये इसे स्वीकृत किया है।

१. डाइरेक्टर औफ् पब्लिक इनस्ट्रक्शन, बिहार ऐन्ड उड़ीसा
२. ,, ,, मध्य प्रदेश और बरार
३. ,, ,, पंजाब
४. वाइस-चैन्सेलर-पटना, कलकत्ता युनिवर्सिटी।

मुजफ्फरपुर
१—१२—१६२६।

विनीत—
शिवप्रसाद खन्ना



संस्कृत

व्याकरण कौमुदी

प्रथम भाग

अइउण्। ऋलृक। एओङ्। ऐऔच्। हयवरट्। लण्। ञमङणनम्। झभञ्। घढधष्। जबगडदश्। खफछठथ चटवत। कपय्। शषसर्। हल्।

ये १४ महादेव जी के सूत्र हैं। आदि वर्ण अन्त्य इत वर्ण के सहित मिल कर उच्चारित होते हैं। आदिवर्ण होने से इत वर्ण के बाद का सब वर्ण का बोध होता है। यथा अण कहने से अ, इ, उ; अक् कहने से अ, इ, उ, ऋ, लृ; अच् कहने से अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, का बोध होता है। सर्वत्र इसी रूप से बोध होता है।

वर्णनिर्णय—Distinction of letters.

१। वर्ण दो प्रकार के होते हैं, स्वर (Vowels) और व्यञ्जन (Consonants)। जो सब वर्ण अन्य वर्ण के आश्रय बिना स्वतन्त्र उच्चारित होते हैं उन्हें स्वर (अच्) वर्ण कहते हैं। जो

सब वर्ण स्वरवर्ण के आश्रय बिना स्वतंन्त्र उच्चारित नही होते उन्हें व्यञ्जन (हल्) वर्ण कहते हैं।

स्वरवर्ण—(Vowels)

स्वयं राजन्ते इति स्वराः।

२। अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ इन्ही तेरह वर्णों को स्वर कहते हैं। (१) स्वर दो प्रकार के हैं। ह्रस्व (Short Vowels) और दीर्घ (Long Vowels)। अ इ उ ऋ ऌ ये पाँच ह्रस्व और आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ ये आठ दीर्घ स्वर हैं।

ऌकार दीर्घ नहीं है। परस्पर के दो स्वरवर्ण परस्पर के सवर्ण कहलाते हैं। यथा, अ आ इ ई इत्यादि। यहाँ पर अ का सवर्ण आ और इ का सवर्ण ई हुआ इत्यादि।

व्यञ्जनवर्ण—(Consonants),

३। क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ, ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न, प फ ब भ म, य र ल व, श ष स ह, (ं), (ः) (१)

---

(१) वैयाकरण लोग अ इ उ ऋ ए ऐ ओ औ इन आठों को उच्चारण के भेद से प्लुत संज्ञा निर्देश कर इन को प्लुत स्वर के नाम से, और आठ स्वतन्त्र वर्ण मानते हैं। इसके अनुसार स्वर वर्णों की गिनती इक्कीस हुई। किसी किसी के मत से ऌकार भी प्लुत है, उस मत के अनुसार स्वरवर्ण की संख्या बाईस हुई। और मुग्धबोध के कर्त्ता वोपदेव ने दीर्घ ऌकार भी माना है, तो उनके अनुसार स्वरवर्ण तेईस हुए।

(१) अनुस्वार और विसर्ग की गिनती साधारणतः स्वरवर्ण में है, परन्तु अन्य स्वर के आश्रय बिना इन दोनों वर्णों का उच्चारण नहीं होता, इसी लिये इनको स्वरवर्ण नहीं गिनकर व्यञ्जन वर्ण में गिनना उचित है। इस के सिवाय कार्य्य कारण के विचार करने से अनुस्वार और विसर्ग

ये कुल पैंतीस व्यञ्जन वर्ण हैं, (२) जिन में क से म तक पच्चीस वर्णों को स्पर्श, (३) (Mutis) कहते हैं। सब स्पर्श वर्ण पाँच भागों (Group) में विभक्त किये गये है। क ख ग घ ङ ये पाँच वर्ण कवर्ग; च छ ज झ ञ ये पाँच चवर्ग, ट ठ ड ढ ण, ये पांच टवर्ग, त थ द ध न ये पाँच तवर्ग, प फ ब भ म ये पाँच पवर्ग, य र ल व ये चार अन्तःस्थ (४) और श

व्यञ्जन ही में गिने जा सकते हैं। न् और म् इन दोनों व्यन्जन वर्णों के स्थान में अनुस्वार होता है और अनुस्वार के स्थान मे ङ ञ ण न म य र ल व ये सब व्यञ्जन वर्ण होते हैं। इस लिये अनुस्वार के कार्य्य और कारण दोनों ही व्यन्जन हैं। र् और स् इन दोनों व्यन्जनवर्णों के स्थान मे विसर्ग होता है और विसर्ग के स्थान में य र श ष स, ये ही सब व्यञ्जन होते हैं। स्वर कार्य्य मे विसर्ग के स्थान में केवल ओ होता है। इस लिये विसर्ग के भी ओकार रूप कार्य्य छोड़ कर सब कार्य और करण दोनों ही व्यन्जन हैं। और अनुस्वार से जितनी सन्धियाँ होती हैं वैया-करणों ने उनका निर्देश स्वर सन्धि में नहीं किन्तु व्यञ्जन सन्धि में किया है। विसर्गघटित सन्धि और स्वर सन्धि प्रकरण मे निर्देश नहीं है वह एक स्वतन्त्र प्रकरण में निर्देश हुआ है। शिक्षा ग्रन्थ में भी अनुस्वार और विसर्ग को स्वर मे नहीं गिना है। यथार्थ में वैयाकरणों के मत में अनुस्वार और विसर्ग स्वर नहीं हैं।

(२) क्ष एक स्वतन्त्र वर्ण लिखा जाता है, परन्तु क् और ष् इन दोनों अक्षरों के मिलने से क्ष होता है, इसी से वैयाकरण लोग इस को स्वतन्त्र वर्ण नहीं मानते वस्तुतः क्ष एक संयुक्त वर्ण है।

(३) जिह्वा के अग्र, उपाग्र, मध्य और मूल इन स्थानों को स्पर्श करके इन सब वर्णों का उच्चारण होता है, इसी लिये इनका नाम स्पर्श वर्ण है।

ष स ह ये चार ऊष्मवर्ण कहे जाते हैं। (५) अनुस्वार (ं) और विसर्ग (:) इन दोनों वर्णों को अयोगवाह (६) कहते हैं (७)।

---

(४) स्पर्श वर्ण और ऊष्मवर्ण इन दोनों के मध्य में निर्दिष्ट हैं इस लिये य र ल व को अन्तःस्थ अर्थात् मध्यस्थित (Lntermediates) वर्ण कहते हैं। वैयाकरण लोगों ने अन्तस्थ आकारान्त निर्देश किया है।

(५) ऊष्म वर्ण (Sibilants) अर्थात् वायुप्रधान वर्ण, इन चारों वर्णों के उच्चारण में वायु की प्रधानता है।

(६) पाणिनी ने जिनको स्वर और व्यञ्जन माना है उनके बीच में अनुस्वार और विसर्ग का उल्लेख नहीं किया है, इस लिये अयोगवाह नहीं रहने से प्रयोग का निर्वाह करते हैं, इस निमित्त 'वाह' होता है, इन दोनों धर्म के होने के कारण अनुस्वार और विसर्ग को अयोगवाह [Letters Standing between vowels and Consonants] नाम प्राप्त हुआ।

(७) विसर्ग के और भी दो रूप हैं, एक का नाम जिह्वामूलीय और दूसरे का उपधमानीय। ये दो स्वतन्त्र वर्ण समझे जाते हैं। और वैयाकरणों ने ऌ को व्यञ्जन में गिना है तदनुसार व्यञ्जनों में ऌ एक स्वतन्त्र वर्ण है। इसे छोड़ कर यम नामक और चार व्यञ्जन वर्ण हैं, पर लौकिक व्यवहार में उनका प्रयोग नहीं होता है। इस लिए उनको यहाँ लिखना अनावश्यक है। इस प्रकार वैयाकरणों के मत से तेईस स्वर और बयालीस व्यञ्जनों को जोड़ कर पैंसठ वर्ण हुए।

वर्णों के उच्चारण स्थान के नियम
(Classification of letters according to their pronunciation.)

४। अहौ कण्ठ्यौ

अ आ ह इन के उच्चारण का स्थान कण्ठ है इसलिये इनको कंठ वर्ण (Gutturals) कहते हैं।

५। कवर्गो जिह्वामूलीयः

क ख ग घ ङ इनका उच्चारण स्थान जिह्वामूल है। (१) इस लिये इनको जिह्वामूलीय वर्ण (Linguoe-radicals) कहते हैं।

६। इचुयशानांतालु

इ ई च छ ज झ ञ य श इन सबों का उच्चारणस्थान तालु है, इस लिये इन सबों को तालव्य वर्ण (Palatals) कहते हैं।

७। ऋटुरषाणाम् मूर्द्धा

ऋ ॠ ट ठ ढ ण र ष इन सबों का उच्चारणस्थान मूर्द्धा है, इस लिये इन सबों को मूर्द्धन्यवर्ण (Cerebrals) कहते हैं।

८। लृतुलसानां दन्ताः

लृ त थ द ध न ल स इन के उच्चारण का स्थान दन्त है इस कारण इन को दन्त्यवर्ण (Dentals) कहते हैं।

---

(१) वैयाकरण लोग अ आ ह क ख ग घ ङ इन सब वर्णों का उच्चारणस्थान कण्ठ निर्देश करते हैं, परन्तु शिक्षा ग्रन्थ में अ आ ह ये तीन और कवर्ग का उच्चारण स्थान जिह्वामूल स्पष्ट निर्देश है। वस्तुतः अ आ ह इन तीनों में और कवर्ग के उच्चारण में बहुत विशेषता है। इस विशेषता के अनुसार विवेचना करने से शिक्षा ग्रन्थ का निर्देश ही सलग्न बोध होता है। इसलिये शिक्षाग्रन्थ के मतानुसार कवर्ग का उच्चारण स्थान जिह्वामूल पृथक् निर्देश किया गया है।

९। उपूपध्मानीयानामोष्ठौ

उ ऊ प फ ब भ म इन के उच्चारण का स्थान ओष्ठ है. इस लिये इनको ओष्ठ्य (Labials) वर्ण कहते हैं।

१०। एदैतोः कण्ठतालु

ए ऐ इन के उच्चारण का स्थान कण्ठ और तालु है; इस लिये इन्हें कण्ठतालव्य (Palato gutturals) वर्ण कहते हैं।

११। ओदौतोः कण्ठौष्ठम्

ओ औ इनका उच्चारण कण्ठ और ओष्ठ है, इसलिये इन को स्थान कण्ठोष्ठ्य (Labio-guttnrals) वर्ण कहते हैं।

१२। वकारस्य दन्तौष्ठम्

अन्तःस्थ वकार का उच्चारण स्थान दन्त और ओष्ठ है, इससे इन को दन्त्योष्ठ्य (Dento-labials) वर्ण कहते हैं।

१३। नासिकानुस्वारस्य

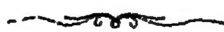
अनुस्वार (ं) का उच्चारण-स्थान नासिका है, इसलिये इसको अनुनासिक (Nasal) वर्ण कहते हैं।

१४। आश्रयस्थानभागी विसर्गः

विसर्ग (:) आश्रयस्थान भागी है, अर्थात् जब जिस स्वर वर्ण का अवलम्बन करता है तब उसी स्वर वर्ण का उच्चारण स्थान विसर्ग का उच्चारण स्थान होता है।

१५। ञमङणनानां नासिका च

ङ ञ ण न म ये सब जिह्वामूल तालु आदि के समान नासिका से भी उच्चारित होते हैं। इस लिये इनको अनुनासिक वर्ण (Nasals) भी कहते हैं।



(?)

(a) What are कण्ठ तालव्य and दन्तोष्ठ letters ?

(b) Why are letters of पवर्ग called labials ?

(c) Name the मूर्द्धन्य letters ?

(d) To what class the letters of the कवर्ग belong ?



परिभाषा (Definitions,)

प्रकृति (Radicals.)

१६—क्रियावाचक किंवा वस्तुवाचक अथवा वस्तु के विशेषणवाचक शब्दों को प्रकृति कहते हैं। प्रकृतिवाचक शब्द दो प्रकार के हैं, धातु और प्रातिपदिक।

धातु (Verbal-Roots)

१७ भुवादयो धातवः

जिसके द्वारा क्रिया का बोध हो उसे धातु कहते हैं। यथा, भू, स्था, गम्, दृश्, हन्, इत्यादि।

प्रातिपदिक (Substantive Radicals.)

१८। अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्

जो वस्तुवाचक हो अथवा वस्तु के विशेषणवाचक हो उनको प्रातिपदिक कहते हैं। वस्तुवाचक चन्द्र, सूर्य्य, तरु, लता जल, वायु, गृह इत्यादि। वस्तु का विशेषणवाचक; दृढ़, स्थिर, प्रबल, नूतन, पुराण, मन्द, सुन्दर इत्यादि।

प्रत्यय (Affix, Suffix or Postfix).

१६। धातु और प्रातिपदिक के उत्तर जो पद रहता है उसे प्रत्यय कहते हैं। प्रत्यय पाँच प्रकार के होते हैं; विभक्ति, कृत्, तद्धित, स्त्रीप्रत्यय और धात्ववयव।

विभक्ति (Inflections.)

२०। विभक्तिश्च

धातु के उत्तर ति, तः, अन्ति आदि और प्रातिपदिक के उत्तर, औ, अः आदि जो सब प्रत्यय होते है उनको विभक्ति कहते है।

कृत् (Primary affixes.)

२१। धातु के उत्तर तव्य, य, तृ, त, त्वा इत्यादि जितने प्रत्यय होते हैं उन्हें कृत कहते हैं।

तद्धित (Secondary affixes.)

२२। प्रातिपदिक के उत्तर अ य आदि जो प्रत्यय होते हैं उन्हें तद्धित कहते हैं। (१)

स्त्रीप्रत्यय (Feminine affixes).

२३। स्त्रीलिङ्ग मे आ ई आदि जितने प्रत्यय होते हैं उनको स्त्री प्रत्यय कहते हैं।

धात्ववयव (Parts of roots).

२४। धातु के उत्तर इ स आदि और प्रातिपदिक के उत्तर काम्य आदि जितने प्रत्यय होते हैं, उनको धात्ववयव कहते हैं।

---

(१) तिङन्त पद के उत्तर कल्प आदि तद्धित प्रत्यय होते हैं।

पद (Inflected forms.)

२५ । सुप्तिङन्तं पदम्

धातु और प्रातिपदिक विभक्तियुक्त हो तो उन्हें पद कहते हैं।

आदेश । (Substitutes.)

२६ । प्रकृति और प्रत्यय के रूपपरिवर्त्तन को आदेश कहते हैं। यथा, वृद्ध शब्द के स्थान में ज्य; स्था धातु के स्थान में तिष्ठ, या विभक्ति के स्थान में इ, अन् विभक्ति के स्थान में ऊः इत्यादि ।

गुण

२७ । अदेङ् गुणः

स्वर को गुण होता है, ऐसा कहने से यही समझा जायगा कि इ ई के स्थान में ए, उ ऊ के स्थान में ओ, ऋ ॠ के स्थान मे अर् और ऌ के स्थान में अल् होता है।

वृद्धि

२८ । वृद्धिरादैच्

स्वर की वृद्धि कहने से यह समझा जाता है कि अ के स्थान में आ, इ ई के स्थान में ऐ, उ ऊ, के स्थान में औ और ऋ ॠ के स्थान में आर् होता है।

लघु (Short) और गुरु (Long)

२९ । ह्रस्वं लघुः दीर्घश्च संयोगे गुरुः

ह्रस्व स्वर को लघु और दीर्घ को गुरु कहते हैं। संयुक्त वर्ण परे रहने से ह्रस्व स्वर भी गुरु समझा जाता है।

उपसर्ग (Prepositional Prefixes)

३० । उपसर्गाः क्रियायोगे

यदि क्रिया के साथ योग हो तो प्र, अप, अव, उप्, आ, परा, नि, वि, परि, प्रति, अति, अधि, अपि, अभि, सु, अनु, उत्, (१) सम्, निर्, दुर, (२), इन्हीं बीस शब्दों को उपसर्ग कहते हैं।

QUESTIONS.

1. Indicat the Points of difference between धातु, and प्रातिपदिक् कृत् and तद्धित ?
2. What is the difference between पद and धातु ?
3. What do you understand by गुण and वृद्धि ?
4. Name the Sanskrit उपसर्ग ?

——*——

सन्धि प्रकरण

(conjuncton of words.)

सन्धि

३१ । अतिशयितः सन्निधिः सन्धिः

दो वर्ण परस्पर होने से मिल जाते हैं। इसी मिलने को सन्धि कहते हैं। स्वरवर्ण की स्वरवर्ण के साथ, व्यञ्जन वर्ण की व्यञ्जन वर्ण के साथ और व्यञ्जन वर्ण की स्वर वर्ण के साथ सन्धि होती है। कभी दो वर्ण केवल मिल जाते हैं, कभी पहला वर्ण विकृत होता है, कभी दूसरा वर्ण विकृत होता है। कभी दोनों वर्ण विकृत होते हैं, कभी पहले वर्ण का लोप होता

१. वैयाकरण लोग दकारान्त लिखते हैं।

२. पाणिनीय लोग निस् और दुस् ये दो उपसर्ग और मानते हैं।

है और कभी दूसरे वर्ण का लोप हो जाता है। यथा, महान् + आग्रहः=महानाग्रहः; उत् + चारयति=उच्चारयति, याच + ना =याञ्चा; महान् + शब्दः=महाञ्छब्दः; सः + आगतसः=आगतः; गुरो + अनुमन्यस्व,=गुरोऽनुमन्यस्व।

किस जगह कौन वर्ण किस प्रकार से विकृत होता है और किस जगह किस वर्ण का लोप होता है उस के नियम क्रम से दिखलाये जाते हैं।

स्वरसन्धि

(Conjunction of Vowels.)

*३२। अकः सवर्णे दीर्घः

यदि आकार के परे अकार या आकार रहे तो दोनों मिलकर आकार होता है, आकार पूर्व वर्ण में मिल जाता है। यथा, अ + अ = आ; शश + अङ्कः=शशाङ्कः; उत्तम + अङ्गम् = उत्तमाङ्गम्, अद्य + अवधि=अद्यावधि, अ + आ = आ; कुश + आसनम् =कुशा-सनम्।

३३। अवर्णो दीर्घोऽवर्णेन

यदि आकार के परे अकार वा आकार रहे तो दोनों मिल कर आकार होता है। आकार पूर्ववर्ण में मिल जाता है। यथा आ + अ = आ। दया + अर्णवः=दयार्णवः; महा + अर्घः=महार्घः; लता + अन्तः=लतान्तः; आ + आ = आ। महा + आशयः=महाशयः। गदा + आघातः=गदाघातः; विद्या + आलयः=विद्यालयः।

३४। इवर्ण इवर्णेन

यदि ह्रस्व इकार के परे इ अथवा ई रहे तो दोनों मिलकर

---

* अ इ उ ऋ, ऌ से सवर्ण अच् परे हुए पूर्व पर के स्थान में दीर्घ एकादेश होता है।

दीर्घ ई होता है। ईकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है यथा इ + इ=ई। गिरि + इन्द्रः=गिरीन्द्रः; अति + इव=अतीव; प्रति + इतिः=प्रतीतिः; इ + ई = ई। कवि + ईश्वरः=कवीश्वरः, क्षिति + ईशः=क्षितीशः; प्रति + ईक्षा=प्रतीक्षा ।

३५। यदि दीर्घ ईकार के परे इ अथवा ई रहे तो दोनों मिल कर दीर्घ ईकार होता है। ईकार पूर्व वर्ण में मिल जाता है। यथाः ई + इ = ई। मही + इन्द्रः = महीन्द्रः, महती + इच्छा = महतीच्छा; ई + ई=ई, लक्ष्मी + ईशः=लक्ष्मीशः; पृथ्वी + ईश्वरः= पृथ्वीश्वरः।

३६। उवर्ण उवर्णेन

यदि ह्रस्व उकार के परे उ अथवा ऊ रहे तो दोनों मिलकर दीर्घ ऊकार होता है। ऊकार पूर्व वर्ण में मिल जाता । यथा उ + उ=ऊ, विधु + उदयः=विधूदयः; मधु + उत्सवः=मधूत्सवः; स्वादु + उदकम्=स्वादूदकम्; साधु + उक्तम्=साधूक्तम्। उ + ऊ = ऊ, लघु + ऊर्म्मिः=लघूर्म्मिः; गुरु + ऊढ़ः=गुरूढ़ः।

३७। यदि दीर्घ ऊकार के परे उ अथवा ऊ रहे तो दोनों मिलकर दीर्घ ऊकार होता है। ऊकार पूर्व वर्ण मे मिल जाता है। यथा; ऊ + उ = ऊ, वधू + उत्सवः=वधूत्सवः; स्वयम्भू + उदय =स्वयम्भूदयः; ऊ + ऊ=ऊ, भू + ऊर्द्ध्वम् = भूर्द्ध्वम्; वधू + ऊहनम्=वधूहनम्।

३८। यदि ह्रस्व ऋकार के परे ऋकार रहे तो दोनों मिलकर दीर्घ ॠकार होता है। ॠकार पूर्व वर्ण में मिल जाता है। यथा पितृ + ऋणम्=पितॄणम्; भ्रातृ + ऋद्धिः=भ्रातॄद्धिः।

* ३९। आद्गुणः

यदि अकार के परे इ अथवा ई हो तो दोनों मिलकर एकार होता है। एकार पूर्व वर्ण मे मिल जाता है। यथा, अ+इ=ए, देव+इन्द्रः=देवेन्द्रः; पूर्ण+इन्दुः=पूर्णेन्दुः; अ+ई=ए, गण+ईशः=गणेशः; अव+ईक्षणम्=अवेक्षणम्।

४०। यदि आकार के परे इ अथवा ई रहे तो दोनों मिल कर एकार होता है। एकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है। यथा, आ+इ=ए, महा+इन्द्रः=महेन्द्रः; लता+इव=लतेव; रमा+ईशः=रमेशः; महा+ईश्वरः=महेश्वरः।

४१। यदि अकार के परे उ अथवा ऊ रहे तो दोनों मिल कर ओकार होता है। ओकार पूर्व वर्ण में मिल जाता है। यथा, अ+उ=ओ, नील+उत्पलम्=नीलोत्पलम्; सूर्य्य+उदय=सूर्य्योदयः; अ+ऊ=ओ, एक+उन+विंशतिः=एकोनविशन्तिः; गृह+उर्द्ध्वम्=गृहोर्द्ध्वम्।

४२। यदि आकार के परे उ अथवा ऊ रहे तो दोनों मिल कर ओकार होता है। ओकार पूर्व वर्ण में मिल जाता है। यथा आ+उ=ओ, महा+उदयः=महोदय., गंगा+उदकम्=गंगोदकम्; आ+ऊ=ओ। गङ्गा+ऊर्म्मिः=गङ्गोर्म्मिः, महा+उर्म्मिः=महोर्मिः।

४३। यदि अकार के परे ऋ रहे तो, ऋ के स्थान में र होता है। र पर वर्ण के मस्तक पर जाता है। यथा, अ+ऋ=र्, देव+ऋषिः=देवर्षिः, हिम+ऋतुः=हिमर्तुः।

४४। यदि आकार के परे ऋ रहे तो आकार के स्थान में अकार और ऋ के स्थान में र् होता है। र् पर वर्ण के मस्तक

* अवर्ण से अच् परे हो तो पूर्व और पर के स्थान मे एक गुण आदेश हो।

पर जाता है। यथा, आ+ऋ=अर् महा+ऋषिः=महर्षिः; देवता+ऋषभः=देवतर्षभः।

४५। वृद्धिरेचि

यदि आकार के परे ए अथवा ऐ रहे तो दोनों मिलकर ऐकार होता है। ऐकार पूर्व वर्ण में मिल जाता है। यथा, अ+ए=ऐ। अद्य+एव=अद्यैव; एक+एकदम्;=एकैदम्; आ+ऐ=ऐ, मत+ऐक्यम्=मतैक्यम्।

४६। यदि आकार के परे ए किंवा ऐ रहे तो दोनों मिलकर ऐकार होता है। ऐकार पूर्व वर्ण में मिल जाता है। यथा, आ+ए=ऐ; सदा+एव=सदैव; तथा+एतत्=तथैतत्, आ+ऐ =ऐ; महा+ऐरावतः=महैरावतः।

४७। यदि अकार के परे ओ अथवा औ रहे तो दोनों मिल कर औकार होता है। औकार पूर्व वर्ण में मिल जाता है। यथा, अ+ओ=औ। जल+ओघः=जलौघः, ग्राम+ओकः=ग्रामौकः; चित्त+औदार्य्यम्=चित्तौदार्य्यम्;गत+औत्सुक्यः=गतौत्सुक्यः।

४८। यदि आकार के परे ओ अथवा औ रहे तो दोनों मिल कर औकार होता है। औकार पूर्व वर्ण में मिल जाता है। यथा अ+औ=औ; महा+औषधिः=महौषधिः; सदा+ओदनम्= सदौदनम्, महा+औदार्य्यम्=महौदार्य्यम्। सदा+औत्सुक्यम् =सदौत्सुक्यम्।

४९। इकोऽयणचि

इ ई छोड़ कर कोई दूसरा स्वर वर्ण परे रहे तो, ह्रस्व इ के स्थान में य् होता है। य पूर्व वर्ण में मिल जाता है और परे का स्वर य्कार में मिल जाता है। यथा, यदि+अपि=यद्यपि; प्रति+ अवायः=प्रत्यवायः; इति+आदि=इत्यादि; अति+आचारः=

अत्याचारः, अभि + उदयः=अभ्युदयः, प्रति + उद्गमनम्=प्रत्यु-द्गमनम्; दि + ऊतम=द्यूतम, प्रति + ऊहः=प्रत्यूहः; मुनि + ऋषभः=मुन्यृषभः; अति + ऋणम्=अतृणम्; प्रति + एकम्=प्रत्येकम्। यदि + एवम् = यद्येवम् ; मुनि + ऐक्यम्=मुन्यैक्यम्। अति + ऐश्वर्य्यम्=अत्यैश्वर्य्यम्; पचति + ओदनम्=पचत्योदनम्, मुनि + ओकः = मुन्योकः, अपि + औत्सुक्यम् = अप्यौत्सुक्यम्, अति + औदार्य्यम्=अत्यौदार्य्यम् ।

इ + इ=ई से भिन्न स्वर [अर्थात् अ, आ, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ] के स्थान में य् हो जाता है ।

इ ई छोड़ कर और स्वर वर्ण परे रहे तो दीर्घ ई के स्थान में य् होता है। य् पूर्व वर्ण में मिल जाता है और परे का स्वर यकार में मिल जाता है। यथा, नदी + अम्बु=नद्यम्बु; देवी + आगता=देव्यागता; सखी + उक्तम्=सख्युक्तम् ; शशी + उर्द्ध ग =शश्यूर्द्ध गः; वली + ऋषभः=वल्यृषभः; गोपी + एषा=गोप्येषा; वली + ऐरावतः=वल्यैरावतः, सरस्वती + ओघः=सरस्वत्योघः, वाणी + औचित्यम्=वाण्यौचित्यम् ।

५१ । उवम्

उ ऊ भिन्न स्वर वर्ण परे रहने से ह्रस्व उ के स्थान में व् होता है। व् पूर्व वर्ण में युक्त हो जाता है; और परे का स्वर वकार में मिल जाता है। यथा; अनु + अयः=अन्वयः; सु + आगतम्=स्वागतम् ; मधु + इदम=मध्विदम्; साधु + ईहितम्= साध्वीहितम्; मधु + ऋते=मध्वृते; अनु + एषणम्=अन्वेषणम् ; अनु + ऐक्षिष्ट = अन्वैक्षिष्ट; पचतु + ओदनम् = पचत्वोदनम् ; ददातु + औषधम्=ददात्वौषधम् ।

उ + उ-ऊ से भिन्नस्वर = ऊ के स्थान पर व् होता है ।

५२ । उ ऊ भिन्न स्वर वर्ण परे रहने से दीर्घ ऊ के स्थान

में व् होता है। व् पूर्व वर्ण में मिल जाता है। और परे वाला स्वर व्कार में मिल जाता है। यथा; सरयू + अम्बू=सरय्यम्बू; वधू + आदिः=वध्वादिः; तनु + इन्द्रियम्=तन्विन्द्रियम्; तनु + ईश्वरः=तन्वीश्वरः; सरयू + एधितम्=सरय्वेधितम्; सरयू + ओघः=सरय्वोघः; वधू + ऐश्वर्य्यम्=वध्वैश्वर्य्यम्; वधू + औदार्य्यम्=वध्वौदार्य्यम्।

५३। ऋ रम

ऋ भिन्न स्वर वर्ण परे रहने से ऋ के स्थान में र् होता है। र् पूर्व वर्ण में युक्त होता है; और परे वाला स्वर र् (१) अकार में मिल जाता है। यथा; पितृ + अनुमतिः=पित्रनुमतिः; पितृ + आदेशः=पित्रादेशः; पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा; पितृ + ईहितम्=पितृहितम्; पितृ + उपदेशः=पित्रुपदेशः; पितृ + ऊहः= पित्रूहः; पितृ + एषणा=पित्रेषणा; पितृ + ऐश्वर्य्यम्=पित्रैश्वर्य्यम्; पितृ + ओकः=पित्रोकः; पितृ + औदार्य्यम्=पित्रौदार्य्यम्।

ऋ + ऋ से भिन्न स्वर-ऋ के स्थान पर (ृ) हो जाता है।

*५४। स्वर वर्ण परे रहे तो, एकार के स्थान में अय् होता है। अकार पूर्व वर्ण में मिल जाता है; और परे वाला स्वर यकार में मिल जाता है। यथा शे + अनम्=शयनम्; ने + अनम् =नयनम्; जे + अति=जयति; सञ्चे + अः=सञ्चयः; शे + आते=

(१) विद्यासागर महाशय ने इस स्थान में रकार शब्द का प्रयोग किया है। किन्तु 'रकार' कहना व्याकरण के विरुद्ध है। 'रकार' 'नकार' 'पकार' इत्यादि कहना ठीक है किन्तु 'रकार' कहना ठीक नहीं है। 'रकार' शब्द को प्रयोग न करके 'रेफ' शब्द का प्रयोग करना उचित है।

*एचोऽयवायावः। अच् प्रत्याहार (ए ओ, ऐ औ) का क्रमसे अय्, अव्, आय्, आव् हो जाता है।

शयाते; अशे + आताम् = अशयाताम्; शे + इतम् = शयितम्; अशे + इष्ट=अशयिष्ट; शे + ईत=शयीत, शे + ईरन = शयीरन्; शे + ए=शये; शे + ऐ=शयै।

५५। स्वर वर्ण परे रहे तो ऐ के स्थान में आय् होता है। आ पूर्व वर्ण में युक्त होता है और परे वाला स्वर यकार के साथ मिल जाता है। यथा विनै + अकः=विनायकः; सञ्चै + अकः= सञ्चायकः; रै + आ=राया; रै + इ=रायि; रै + ए=राये; रै + ओः रायोः।

५६। स्वर वर्ण परे रहने से ओकार के स्थान में अव् होता है। अ पूर्व वर्ण में मिल जाता है, और परे वाला स्वर व्कार मे मिल जाता है। यथा भो + अनम्=भवनम्, पो + अनः=पवनः श्रो + अणम् = श्रवणम्, गो + आ=गवा; भो + इता = भविता; पो + इत्रम्=पवित्रम्; गो + ए=गवे; गो + ओः=गवोः।

ओ + स्वर वर्ण-ओ के स्थान में अव् होता है।

५७। ओ औ अवावौ

स्वर वर्ण परे रहने से औकार के स्थान में आव् होता है। आकार पूर्व वर्ण में मिल जाता है और परे का स्वर व्कार में मिल जाता है। यथा पौ + अकः=पावकः; तौ + अकः=स्तावकः, नौ + आ=नावा, ग्लौ + आ=ग्लावा; नौ + इ=नावि; भौ + उकः =भावुकः; नौ + ए=नावे; ग्लौ + ए=ग्लावे; ग्लौ + ओ=ग्लावोः, नौ + औ = नावौ।

औ स्वर वर्ण-औ के स्थान में आव् हो जाता है।

५८। एङ-पदान्तादचि

पद अन्तस्थित एकार किंवा ओकार के परे अकार रहे तो, उसका लोप हो जाता है। लोप होने से अकार का जो चिन्ह

रह जाता है उसे लुप्त अकार (ऽ) कहते हैं। यथा, कवे + अवेहि = कवेऽवेहि; सखे + अर्पय=सखेऽर्पय; प्रभो + अनुगृहाण =प्रभोऽनुगृहाण; गुरो + अनुमन्यस्व=गुरोऽनुमन्यस्व।

५९। अकार भिन्न स्वर वर्ण परे रहने से शब्द के अन्तस्थित एकार के स्थान में विकल्प से अ और अय् होता है। अ पूर्व वर्ण में मिल जाता है और पर वाला स्वर यकार में मिल जाता है (१)। यथा, सखे + आगच्छ, सख + आगच्छ=सखयागच्छ, सखे + इह, सखइह=सखयिह; सखे + ईहसे,सख + ईहसे=सखयीहसे; सखे + उच्यताम्, सख उच्यताम्=सखयुच्यताम्; सखे-ऊहनम्, सख ऊहनम्=सखयूहनम्; सखे + ऋच्छ, सख ऋच्छ =सखयृच्छ; सखे + इहि, सख इहि = सख येहि; सखे + ऐपीः, सख ऐपीः =सखयैपीः; सखे + ओदनम्, सख ओदनम् = सखयोदनम्; सखे + औपधम्, सख औपधम्=सखयौपधम्।

६०। अ-कार भिन्न स्वर वर्ण परे रहने से पद के अन्तस्थित ओकार के स्थान में विकल्प से अ और अव् होता है। अ पूर्व वर्ण में मिल जाता है, और पर का स्वर व्‌कार में युक्त होता है (२)। यथा, प्रभो + आगच्छ, प्रभआगच्छ=प्रभवागच्छ; प्रभोइह + प्रभ इह=प्रभविह, प्रभो-ईहसे + प्रभ ईहसे=प्रभवीहसे; प्रभोउच्यताम् + प्रभ उच्चयताम्=प्रभवुच्यताम्, प्रभो + ऊहनम् प्रभुऊहनम्=प्रभवूहनम्, प्रभो + ऋच्छ, प्रभ ऋच्छ=प्रभवृच्छ; प्रभोएहि + प्रभ एहि=प्रभवेहि, प्रभो + ऐपीः, प्रभ ऐपीः=प्रभवैपीः,

---

(१) अ होने पर सन्धि नहीं होती।

पद के अन्त में स्थित ए—एऽ (लुप्त अकार का चिन्ह) पद के अन्त में स्थित ओ-अ=ओऽ (लुप्त अकार का चिन्ह)

(२) अ होने पर सन्धि नहीं होती।

प्रभो + ओदनम्, प्रभ ओदनम्=प्रभवोदनम्, प्रभो + औषधम्, प्रभ औषधम=प्रभवौषधम् ।

६१ । स्वर वर्ण परे रहने से पद के अन्तस्थित ऐकार के स्थान में आ और आय् होता है। आ पूर्व वर्ण में और परस्थित स्वर य् कार से युक्त होता है (१)। यथा, श्रियै + अर्थ:=श्रिया अर्थ: श्रियाअर्थ:; श्रियै + आग्रह:=श्रिया आग्रह:, श्रियायाग्रह:; श्रियै + इच्छति=श्रिया इच्छति श्रियायिच्छति; श्रियै + ईहा =श्रिया ईहा श्रियायीहा; श्रियै + उत्सुक:=श्रिया उत्सुक:, श्रियायुत्सुक:; श्रियै + ऊह:=श्रिया ऊह:, श्रियायूह:; श्रियै + ऋच्छति=श्रिया ऋच्छति, श्रियायृच्छति; श्रियै + पति=श्रिया पति, श्रियायेति; श्रियै + ऐक्यम्=श्रिया ऐक्यम्, श्रियायैक्यम्; भुक्त्यै + ओदनम्=भुक्तया ओदनम्, भुक्त्यायोदनम्; श्रियै + औत्सुक्यम्=श्रिया औत्सुक्यम्, श्रियायौत्सुक्यम् ।

६२ । स्वर वर्ण परे रहने से पद के अन्तस्थित् औकार के स्थान में आ और आव् होता है आ पूर्व वर्ण में और पारवर्ती स्वर वकार में युक्त होता है (२)। यथा, रवौ + अस्तमिते =रवा अस्तमिते, रवावस्तमिते; गुरौ + आगते, गुरो आगते; =गुरावागते, गतौ + इमौ गता इमौ=गताविमौ, तौ + ईश्वरौ ता ईश्वरौ=तावीश्वरौ, विधौ + उदिते विधा उदिते=विधावुदिते; रवौ + ऊर्द्ध विगे रवा ऊर्द्ध विगे=रवावुद्र्द्धगे; गुरौ + ऋच्छति गुरा ऋच्छति=गुरा वृच्छति; प्रस्थितौ + एतौ प्रस्थिता एतौ=प्रस्थितावेतौ; मतौ + ऐक्यम् मता ऐक्यम्, =मतावैक्यम्; तरौ + ओखति तराओखति=तारावोखति; गतौ + औत्सुक्यम् गता औत्सुक्यम्=गतावौत्सुक्यम् ।

(१) आ होने से सन्धि नहीं होती ।
(२) आ होने से सन्धि नहीं होती ।

६३। धातु का एकार अथवा ओकार परे रहने से उपसर्ग के अकार और आकार का लोप होता है। एकार और ओकार उपसर्ग में मिल जाता है। यथा, प्र+एजते=प्रेजते; उप+एषते=उपेषते; प्र+एषयति=प्रेषयित; अ+एटति=एटति; उप+ओषति=उपोषति; अव+ओहति=अपोहति; परा+ओखति=परोखति; परा+ओहति=परोहति।

एध और इण् धातुओं का एकार परे रहने से उपसर्ग के अकार और आकार का लोप नहीं होता। यथा, उप+एधते, उपैधते; परा+एधते=परैधते; अव+एति=अवैति, आ+एति=ऐति।

६४। यदि उपसर्ग के अकार अथवा ओकार के परे धातु का ऋ रहे, तो दोनों मिलकर आर् होता है। आकार उपसर्ग में युक्त होता है, र् पर वर्ण के मस्तक पर जाता है। यथा, अप+ऋच्छति=अपार्च्छति; अव+ऋणोति=अपार्णोति, उप+ऋतति=उपार्तति; प्र+ऋजते=प्रार्जते; परा+ऋध्यति, परार्ध्यति; परा+ऋषति=परार्षति; आ=ऋचति=आर्चति।

६५। ओष्ठ शब्द परे रहने पर विकल्प से अकार और आकार का लोप होता है। यथा, विम्ब+ओष्ठः=विम्वोष्ठः, विम्बौष्ठः; उमा+ओष्ठ=उमोष्ठः, उमौष्ठ.।

समास न होने से नहीं होता। यथा, तव+ओष्ठः=तवौष्ठः; मम+ओष्ठः=ममौष्ठः।

६६। (सन्धिः निषेध)

ओकारान्त अथवा एक स्वर मात्र अव्यय शब्द की सन्धि नहीं होती। यथा, अहो+अपेहि=अहोअपेहि, अहो+आगमिष्यति=अहोआगमिष्यति; अ+अद्यापि=अ अद्यापि;

आ + एवम् = आ एवम्, (१) उ + उत्तिष्ठ, उ उत्तिष्ठ; ए एव + मेततत्=ए एवमेतत्; ऐ + इहागच्छ=ऐ इहागच्छ; औ + आगम्यताम् = औआगम्मताम् ।

६७ । दीर्घ ऊकारान्त और एकारान्त पदों की सन्धि नहीं होती यथा. कवि + इमौ=कवी इमौ; गिरि + एतौ = गिरीएतौ, साधू + इमौ = साधू इमौ; बन्धू + आगतौ = बन्धू आगतौ; लते + एते = लते एते; विद्ये + इमे = विद्येइमे; शयाते + अर्भकौ =शयातेअर्भकौ; शयावहे + आवाम्=शयावहे आवाम्; याचेते + अर्थम् = याचेतेअर्थम् ।

६८ । अदसो मात्

अदस् शब्द के दीर्घ ईकारान्त और दीर्घ ऊकारान्त पदों की सन्धि नही होती । यथा अमी + अश्वा: = अमी अश्वा:; अमी + इषव:=अमी इषव:, अमू + अर्भकौ = अमू अर्भकौ ।

अतिरिक्त Exception

मनष + ईषा = मनीषा (Intellect) हल + ईषा = हलीषा; (A Plough stick); लाङ्गल + ईष = लाङ्गलीषा (stick) शक + अन्धु: = शकन्धु: (Well), कुल + अटा = कुलटा (An Unchaste woman), सीमन् + अन्त: = सीमान्त: (Hair Parting) पर + अक्ष:=परोक्ष: । ये सब रूप निपातन से सिद्ध होते हैं, अर्थात् लक्षण के अनुसार ये सब रूप सिद्ध नहीं होते हैं।

---

[१] सीमा, व्याप्ति अथवा ईषदर्थ बोध होने या क्रिया के साथ योग होने पर अव्यय आकार की सन्धि होती है । सीमा यथा, आ + अध्ययनात्, आध्ययनात्, अध्ययन पर्य्यन्त । व्याप्ति—यथा, आ एकदेशात्, एकदेशात्, एकदेशव्यापी । ईषदर्थ-यथा, आ आलोचितम् । ईषत आलोचितम् । क्रिया के साथ योग—यथा, आ + इहि=एहि ।

QUESTIONS.

1. Join the following words:—

लक्ष्मी + ईशः, भ्रातृ + ऋद्धि ,महा + ईश्वरः, महा + ऊर्म्मिः, हिम + ऋतुः, ग्राम + ओकः, मुनि + ऋषभः, अति + औदार्य्यम्, वधू + औदार्यम्, पितृ + ऊहः, सखै + अकः, भो + ईला. नौ + ए, सखे + एहि, प्रभो + आगच्छ, श्रियै + औत्सुक्यम्, रवौ + उदिते, उप + ओषयति, बिम्ब + ओष्ठः, अप + ऋच्छति, अहो + आगमिष्यति, याचते + अर्थम्, अमी + ईश्वरः ।

2. Disjoin the following words.—

गिरीन्द्रः, साधूक्तम्, भूर्ध्वम्, पितृणाम्, रमेशः, एकोनविंशतिः, देवर्षिः, देवतर्षभः, महैरावत्, गतौत्सुक्यम्, प्रत्युद्गमनम्, शश्यूद्ध ग, ददात्यौषधम्, शयीरन्, पवित्रम्, स्तावकः, सखेप्य, प्रधवोदनम्, भावीश्वरी, तरावोषति ।

3, प्र + एषयति, Becomes प्रेषयति But उप + एधते Becomes उपैधते; justify the differencei nform.

4 Is there any difference in conjunction of the following ? If so, st ate your reason for the difference.—

(१) बिम्ब + ओष्ठः, (२) तव + ओष्ठः ।

5. What are the cases in which conjunction does not take place ? Give illustrations.

6. Disjoin tne sandhi in ahy three of the following:—

सन्नुनम् । बुद्धिर्यस्य । भोयुक्तम् । ततोऽसौ । वायस्याह ।

(C. U. 1913)

व्यञ्जन सन्धि

(CONJUNCTION OF CONSONANTS)

*६९। स्तोः, श्चुना श्चुः

यदि च् अथवा छ् परे रहे तो त् और द् के स्थान में च् होता है। यथा, महत् + चक्रम्=महच्चक्रम्; भवत + चरणम्= भवच्चरणम्; उत् + चारणम्=उच्चारणम्; एतद् + चन्द्रमण्डलम् =एतच्चन्द्रमण्डलम्; विपद् + चयः=विपच्चयः; तद् + चलनम्= तच्चलनम्; महत + छत्रम् = महच्छत्रम्; भवत् + छलनम् = भवच्छलनम्, उत् + छिनत्ति=उच्छिनत्ति, तद् + छविः = तच्छविः, एतद् + छाया = एतच्छाया।

७०। यदि ज् अथवा झ् परे रहे तो त् और द् के स्थान में ज् होता है। यथा, भवत् + जीवनम्=भवज्जीवनम्, उत् + ज्वल =उज्ज्वलः, सरित् + जलम्=सरिज्जलम्, तद् + जन्म=तज्जन्म, एतद् + जननम् = एतज्जननम्, विपद् + जालम् = विपज्जालम्, महत् + झञ्झनम्=महज्झञ्झलम्, तत + झनत्कारः=तज्झनत्कारः

७१। यदि ज अथवा झ परे हो तो दन्त्य न् के स्थान में ञ् होता है। यथा, महान् + जयः = महाञ्जयः; राजन् + जागृहि = राजञ्जागृहि; भवान् + जीवतु=भवाञ्जीवतु; उद्यन् + झङ्कारः=उद्यञ्झङ्कारः; विरमन् + झनत्कारः=विरमञ्झनत्कारः; गच्छन् + झटिति=गच्छञ्झटिति।

७२। यदि पद के अन्तस्थित त्कार वा द्कार के परे तालव्य श् रहे तो त् और द् के स्थान में च् और तालव्य श् के स्थान में छ् (१) होता है। यथा, जगत् + शरण्यः=जगच्छरण्यः;

(१) तालव्य श् च् युक्त रहने से नहीं होता। यथा, उत्श्चोतति, उत्श्चोतति।

महत् + शकटम् = महच्छकटम्; तद् + शरीरम् = तच्छरीरम्; एतद् + शकाब्दीयम् = एतच्छकाब्दीयम् [१]

७३। यदि पद के अन्तस्थित नकार के परे तालव्य श रहे तो न् के स्थान में ञ् और तालव्य श् के स्थान में छ् होता है। यथा, महान् + शब्दः=महाञ्छब्दः; धावन् + शशः=धावञ्छशः; निन्दन् + शठः=निन्दञ्छठः (२)।

७४। यदि पद के अन्तस्थित त्कार वा द्कार के परे ह् हो तो त् के स्थान मे द् और ह् के स्थान में ध् होता है। यथा, तत् + हतः=उद्धतः; उत् + हरणम्=उद्धरणम्; महत् + हसनम्= महद्धसनम्; तद् + हितम् = तद्धितम्; तद् + हेयम् = तद्धेयम्, विपद् + हेतुः=विपद्धेतुः (३)।

७५। यदि चवर्ग के परे दन्त्य न् रहे तो उसके स्थान में ञ् होता है। यथा, याच् + ना=याच्ञा; यज् + नः=यज्ञः, जज् + नाते =जज्ञाते, जज् + निषे=जज्ञिषे; जज् + निध्वे=जज्ञिध्वे; जज् + ने =जज्ञे; राज् + ना=राज्ञा, राज् + नी=राज्ञी।

---

(१) वैयाकरण लोग पद के अन्तस्थित तकार अथवा दकार के परे तालव्य श रहने से दो पद सिद्ध करते हैं। यथा, महत् + शकटम्=मह- च्छकटम्, महच्शकटम्; तद्शरीरं=तच्छरीरम्, तच्शरीरम्।

(२) वैयाकरणलोग पद के अन्तस्थित नकार के परे तालव्य श् रहने से चार पद सिद्ध करते हैं। यथा, महान् + शब्द = महाञ्छब्दः, महाञ्छब्दः; महाञ्छ्ब्दः, महाञ्शब्दः।

(३) वैयाकरण लोग पद के अन्तस्थित त्कार वा द्कार के परे ह रहने से, दो पद सिद्ध करते हैं। यथा उत् + हतः = उद्धतः, उद्हतः, तद्-हेयम् = तद्धेयम्, तद्हेयम्।

*** ७६ । स्तोः ष्टुनाष्टुः**

यदि ट् किम्बा ठ् परे हो तो त् और द् के स्थान में ट् होता है। यथा उत्+टलति=उट्टलति; महत्=टङ्कनम्=महट्टङ्कनम्, तद्+टीका=तट्टीका, एतद्+टङ्कारः=एतट्टङ्कारः; सत+ठकारः सट्ठकारः, एतद्+ठक्कुरः=एतठ्ठक्कुरः।

७७। यदि ड् किम्बा ढ् परे रहे तो, त् और द् के स्थान में ड् होता है। यथा, उत्+डीनः=उड्डीनः, भवत्+डमरुः=भवड्डमरुः, तद्+डिण्डिमः=तड्डिण्डिमः, एतद्+डामरः=एतड्डामरः, उत्+ढौकते=उड्ढौकते, महत्+ढालम्=महड्ढालम्, एतत्+ढक्का=एतड्ढक्का, तद्+ढुण्ढनम्=तड्ढुण्ढनम्।

७८। यदि ड् अथवा ढ् परे रहे तो दन्त्य न् के स्थान में मूर्द्धन्य ण होता है। यथा, महान्+डामरः=महाण्डामरः, रुवन् +डिण्डिमः=रुवण्डिण्डिमः, भवान्+ढुण्ढति=भवाण्ढुण्ढति, राजन्+ढौकसे=राजण्ढौकसे।

७९। तथौ टठौ षकारात्

मूर्द्धन्य ष्कार के परस्थित त् के स्थान में ट् और थ् के स्थान में ठ् होता है। यथा, आकृष्+तः=आकृष्टः, सृष्+ता=स्रष्टा, द्रष्+ता=द्रष्टा. उत्कृष्+तः=उत्कृष्टः, षष्+थः=षष्ठः।

८०। लेल स्तवर्गस्य

यदि ल् परे हो तो त्, द् और न् के स्थान में ल् होता है। यथा, वृहत्+ललाटम्=वृहल्ललाटम्, उत्+लिखितः=उल्लिखितः, तद्+लीलायितम्=तल्लीलायितम्, एतद्+लीलोद्यानम् =एतल्लीलोद्यानम्, महान्+लाभः=महाँल्लाभः, भवान्+लभते=भवाँल्लभते (१)।

---

(१) नकार के स्थान में हुए लकार का नकार की भांति अनुनासिक

८१। यदि स्वर वर्ण परे रहे तो, पद के अन्तस्थित न्कार का द्वित्व होता है। यथा, धावन् + अश्वः=धावन्नश्वः, हसन् + आगतः=हसन्नागतः, स्मरन् + उवाच=स्मरन्नुवाच।

यदि न् दीर्घ स्वर के परे हो तो द्वित्व नहीं होता। यथा महान् + आग्रहः=महानाग्रहः, कवीन् + आह्वय = कवीनाह्वयः, साधून + आद्रियस्व = साधूनाद्रियस्व, भ्रातॄन् + अनुगृह्णीष्व = भ्रातॄननुगृह्णीष्व।

८२। यदि च् किंवा छ् परे हो तो पद के अन्तस्थित न् के स्थान में अनुस्वार होता है, एवं च् के स्थान में श्च् और श्छ् होता है। यथा, पश्यन् + चकितः=पश्यंश्चकितः, हसन् + चलितः=हसंश्चलितः, नृत्यं + चकोरः = नृत्यंश्चकोरः, धावन + छागः=धावंश्छागः, महान् + छेदः = महांश्छेदः, विराजन् + छायापथः = विराजंश्छायापथः।

८३। यदि ट् अथवा ठ् परे हो तो पद के अन्तस्थित न्कार के स्थान में अनुस्वार होता है। एवं ट् और ठ् के स्थान में ष्ट् और ष्ठ होता है। यथा, चलन् + टिट्टिभः=चलंष्टिट्टिभः, उद्यन् + टङ्कारः = उद्यंष्टङ्कारः, महान् + ठक्कुरः=महांष्ठक्कुरः।

८४। यदि त् अथवा थ् परे हो तो पद के अन्तस्थित नकार के स्थान में अनुस्वार होता है और त् और थ् के स्थान में स्त और स्थ् होता है। यथा, पतन् + तरुः = पतंस्तरुः, महान् + तड़ागः=महांस्तड़ागः, उत्तिष्ठन् + तरङ्गः=उत्तिष्ठंस्तरङ्गः, शाम्यन् + तापः = शाम्यंस्तापः, क्षिपन् + थुत्कारम् = क्षिपंस्थुत्कारम्, स्पृशन्थुध्यति=स्पृशंस्थुध्यति।

उच्चारण होता है। उसी उच्चारण का सूचक विन्दु सहित अर्द्धचन्द्र (चन्द्रविन्दु) पहले वर्ण में लाया जाता है।

८५ । म्नोऽनुस्वारः

यदि तालव्य श् किंवा दन्त्य स् वा ह् परे हो तो पद के मध्यस्थित न् के स्थान में अनुस्वार होता है। यथा, दन् + शनम् =दंशनम्, भ्रन् + शते=भ्रंशते, मीमान् + सते=मीमांसते, जिघान् + सति=जिघांसति, रन् + हते=रंहते, वृन् + हितम्=वृंहितम् ।

८६ । यदि दन्त्य स् परे हो तो, पद मध्यस्थित म् के स्थान में अनुस्वार होता है। यथा, रम् + स्यते = रंस्यते, अयम् + सीत् =अयंसीत्; संगम् + स्यते=संगंस्यते, निनम् + सति=निनंसति ।

८७ । वा पदान्तस्य

जिस वर्ग का अक्षर परे हो तो पद के मध्यस्थित न् के स्थान में उसी वर्ग का पञ्चम वर्ण होता है। यथा, आशन् + कते = आशङ्कते, प्रेन् + खणीयम्=प्रेङ्खणीयम्; आलिन् + गतिः = आलिङ्गतिः, वन् + चयति=वञ्चयति, वान् + छति = वाञ्छति, रन् + जयति = रञ्जयति, वन् + टयति=वण्टयति, उत्कन् + ठते=उत्कण्ठते, मन् + डयति=मण्डयति, कन् + पते = कम्पते, द्रुम् + फति =द्रुम्फति, आलन् + बते=आलम्बते, जृन् + भते=जृम्भते ।

८८ । यदि त् परे हो तो पद के मध्यस्थित म् के स्थान में न् होता है। गम् + ता=गन्ता, गम् + तव्यम्=गन्तव्यम्, नियम् + ता=नियन्ता, क्षाम् + तिः=क्षान्तिः; क्षम + तव्यम्=क्षन्तव्यम्, आक्राम् + तम्=आक्रान्तम्, शाम् + तम्=शान्तम्, दाम् + तः= दान्तः ।

८९ । यदि अन्तस्थ अथवा ऊष्म वर्ण परे हो तो, पद के अन्तस्थित म् के स्थान में अनुस्वार होता है। यथा, सत्वरम् + याति=सत्वरंयाति, करुणम् + रोदिति=करुणंरोदिति, विद्याम् + लभते=विद्यांलभते, भारम् + वहति=भारंवहति, शय्यायाम् +

शेते=शय्यायांशेते, कष्टम् + सहते=कष्टंसहते, मधुरम् + हसति =मधुरंहसति।

६०। यदि स्पर्श वर्ण परे हो तो, पद के अन्तस्थित म् के स्थान में अनुस्वार होता है, अथवा जो वर्ण परे रहे उसी वर्ग का पञ्चम वर्ण होता है। यथा, किम् + करोषि = किंकरोषि, किङ्करोषि; गृहम् + गच्छ = गृहंगच्छ, गृहङ्गच्छ; क्षिप्रम् + चलति = क्षिप्रंचलित, क्षिप्रञ्चलति; शत्रुम् + जहि = शत्रुंजहि, शत्रुञ्जहि; नदीम् + तरति = नदीतरति, नदीन्तरति; धनम् + ददाति = धनंददाति, धनन्ददाति; स्तनम् + धयति = स्तनंधयति, स्तनन्धयति; गुरुम् + नमति = गुरुंनमति, गुरुन्नमति; चन्द्रम् + पश्यति = चन्द्रंपश्यति, चन्द्रम्पश्यति; किम् + फलम् = किंफलम् किम्फलम्; सत्यम् + ब्रूयात् = सत्यंब्रूयात्, सत्यम्ब्रूयात्; मधुरम् + भाषते = मधुरंभाषते, मधुरम्भाषते; शास्त्रम् + मीमांसते = शास्त्रंमीमांसते, शास्त्रम्मीमांसते।

६१। छे च

यदि छ परे रहे तो, स्वर वर्ण के आगे च् हो जाता है। च् छ् मिल कर च्छ् होता है। यथा, सित + छत्रम् = सितच्छत्रम्, परि + छदः = परिच्छदः, अव + छेदः = अवच्छेदः, वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया, गृह + छिद्रम् = गृहच्छिद्रम्। (१)

६२। उत् उपसर्ग के परस्थित स्था और स्तम्भ धतु के स का लोप हो जाता है। यथा, उत् + स्थानम् = उत्थानम्, उत् + स्थितिः, उत्थितिः, उत् + स्थास्यति = उत्थास्यति, उत् +

(१) वैयाकरण लोग पद के अन्तस्थित दीर्घ स्वर के परे विकल्प से च् (पाणिनी के मत के अनुसार तुक्) विधान करते हैं। यथा-लक्ष्मी-छाया, लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया।

स्तम्भनम् = उत्तम्भनम्, उत् + स्तम्भयति = उत्तम्भयति, उत् + स्तम्भयिष्यिति = उत्तम्भयिष्यति।

६३। यदि स्वर वर्ण, वर्ग का तृतीय चतुर्थ वर्ण अथवा-य् र् ल् व् ह् परे हो तो क् के स्थान में ग् होता है। यथा, दिक् + अन्तः = दिगन्तः, वाक् + आडम्बरः = वागाडम्बरः, त्वक् + इन्द्रियम्=त्वगिन्द्रियम्; वाक् + ईशः=वागीशः; सम्यक् + उक्तम्=सम्युक्तम्, धिक् + ऋणकारिणम्=धिगृणकारिणम्, प्राक् + एव = प्रागेव; धिक + ऐश्वर्य्यमक्तम्=धिगैश्वर्य्यमत्तम्; सम्यक् + ओजः=सम्यगोजः, वाक् + औचित्यम्=वागौचित्यम्, दिक् + गजः=दिग्गजः, प्राक् + घनोदयः=प्राग्घनोदयः, वाक् + जालम् = वाग्जालम्, सम्यक् + जायते = सम्यग्जायते, सम्यक् + डयते=सम्यग्डयते; सम्यक् + ढौकते=सम्यग्ढौकते, वाक् + दानम् = वाग्दानम्, धिक् + धनगर्व्वितम् = धिग्धनगर्व्वितम्, वाक् + वाहुल्यम् = वाग्वाहुल्यम्, दिक + भागः = दिग्भागः, धिक् + याचकम्=धिग्याचकम्, वाक् + रोधः=वाग्रोधः, धिक् + लोभिनम् = धिग्लोभिनम्, सम्यक् + वदति = सम्यग्वदति, दिक् + हस्ती=दिग्हस्ती (१)

६४। यदि स्वर वर्ण अथवा ग् घ् द् ध् ब् भ् य् र् व् परे हो तो पद के अन्तस्थित त् के स्थान मे द् होता है। यथा, जगत् + अन्तः=जगन्तः, जगत् + आदिः=जगदादिः, जगत् + इन्द्रः=जगतिन्द्रः, जगत् + ईशः = जगदीशः, भवत् + उक्तम्= भवदुक्तम्, भवत् + ऊहनम्=भवदूहनम्, भवत् + ऋणम्=भवदृणम्, जगत् + एतत्=जगदेतत्, महत् + ऐश्वर्य्यम् = महदैश्व-

(१) वैयाकरण लोग क् के परे ह् रहने से ह् के स्थान में विकल्प से घ् करते हैं। यथा, दिग्घस्ती = दिग्हस्ती।

र्थ्यम्; महत् + ओजः=महदोजः, महत् + औषधम्=महदौषधम्, बृहत् + गहनम्=बृहद्गहनम्, बृहत् + घटः=बृहद्घटः, भवत् + दर्शनम् = भवद्दर्शनम्, महत् + धनुः=महद्धनुः, जगत् + बन्धुः= जगद्बन्धुः, महत् + भयम्=महद्भयम्, बृहत् + यानम्=बृहद्यानम्, बृहत् + रथः = बृहद्रथः, महत् + वनम्=महद्वनम् ।

६५ । यदि स्वर वर्ण वर्ग के तृतीय और चतुर्थ वर्ण अथवा य् र् ल् व् ह् के परे हो तो पद के अन्तस्थित च् के स्थान में ज् और ट् के स्थान में ड् और प् के स्थान में ब् होता है यथा; अच + अन्तः=अजन्तः, अच् + वत्=अज्वत्, परिव्राट् + अयम्= परिव्राडयम्; परिव्राट् + आगतः = परिव्राडागतः, परिव्राट् + उवाच=परिव्राडुवाचः, परिव्राट् + गच्छति = परिव्राड्गच्छति, परिव्राट + वदति=परिव्राड्वदति, परिव्राट + हसति=परिव्राड्-हसनि (१) अप् + इन्धनः=अबिन्धनः, अप् + घटः=अब्घटः, अप् + भक्षः=अब्भक्षः, अप् + वासः=अब्वासः, अप् + हरणम्= अब्हरणम् (२) ।

६६ । यदि न् अथवा म परे हो तो, पद के अन्तस्थित वर्ग के प्रथम वर्ण के स्थान में पञ्चम अथवा तृतीय वर्ण होता है । यथा, दिक् + नागः=दिङ्नाग , दिग्नाग ; अच् + नास्ति=अञ्नास्ति, अज्नास्ति; मधुलिट् + नर्दति=मधुलिण्नर्दति, मधुलिड्नर्दति; जगत् + नाथः = जगन्नाथ', जगद्नाथः; अप् + नदी = अम्नदी, अब्नदी; प्राक् + मुखः=प्राङ्मुखः, प्रागमुख ; अच् + मध्यम्=

(१) वैयाकरण लोग ट् के परे ह् रहने पर विकल्प से ह् के स्थान में ढ् करते हैं । यथा परिव्राड् + हसति=परिव्राड्ढसति ।

(२) वैयाकरण लोग प् के परे ह् रहने पर विकल्प से ह के स्थान में भ् करते हैं । यथा, अब् + भरणम् = अब्हरणम् ।

= अञ् मध्यम्, अजमध्यम्; मधुलिट् + मत्तः = मधुलिण् मत्तः, मधुलिड् मत्तः; भवत् + मत्तम् = भवन्मत्तम्, भवद्मत्तम्; अप् + मानम् = अम्मानम्, अब्मानम्।

९७। यदि मात्र अथवा मय प्रत्यय परे हो तो, पद के अन्तस्थित वर्ग के प्रथम वर्ण के स्थान में केवल पञ्चम वर्ण होता है। यथा, वाक् + मयम् = वाङ्मयम्; अच् + मात्रम् = अञ्मात्रम्; मधुलिट् + मात्रम्, मधुलिण् मात्रम्; चित् + मयम = चिन्मयम्; अप + मयम्, अम्मयम्।

विसर्ग-सन्धि

Combination of visarga with Vowels or Consonants

९८। शषसाश्च विसर्ज्जनीयश्च्छ ट ठ तथेषु

यदि च् अथवा छ् परे हो तो, विसर्ग के स्थान में तालव्य श् होता है। यथा, पूर्णः + चन्द्रः = पूर्णश्चन्द्रः; ज्योतिः + चक्रम् = ज्योतिश्चक्रम्; निः + चितः = निश्चितः; वायुः + चलति, = वायुश्चलति; धावितः + छागः, = धावितश्छागः, रवेः + छविः = रवेश्छविः; तरोः + छाया = तरोश्छाया; रज्जुः + छिद्यते, = रज्जुश्छिद्यते।

९९। यदि ट् अथवा ठ् परे हो तो, विसर्ग के स्थान में मूर्द्धन्य ष् होता है। यथा, भीतः + टलति = भीतष्टलति; उड्डीन + टिट्टिभ = उड्डीनष्टिट्टिभः; धनुः + टङ्कारः = धनुष्टङ्कारः; स्थिरः + ठक्कुरः = स्थिरष्ठकुरः; भग्नः + ठक्कुरः = भग्नष्ठकुरः।

१००। यदि त् अथवा थ् परे हो तो, विसर्ग के स्थान में दन्त्य स् होता है। यथा, उन्नतः + तरुः = उन्नतस्तरुः; नद्याः +

तीरम्=नद्यस्तीरम्; भूमे + तलम्=भूमेस्तलम्; क्षिप्तः + थुत्कारः =क्षिप्तस्थुत्कारः; स्नातः + शुध्यति = स्नातस्शुध्यति (१)।

१०१। वा शरि

यदि तालव्य श् परे हो तो, विसर्ग के स्थान में विकल्प से तालव्य श् होता है। यथा, सुप्तः + शिशुः = सुप्तश्शिशुः, सुप्तःशिशुः; उन्नतः + शैलः = उन्नतश्शैलः; उन्नतः-शैलः; अग्नेः + शिखा = अग्नेश्शिखा, अग्नेः शिखा; गौः + शब्दायते = गौश्शब्दायते, गौः शब्दायते।

१०२। यदि मूर्द्धन्य ष् परे रहे तो, विसर्ग के स्थान में विकल्प से मूर्द्धन्य ष् होता है। यथा, मत्तः + षट्पदः=मत्त-ष्षट्पदः, मत्तः षट्पदः; मधुरः + षड्जः=मधुरष्षड्जः, मधुरः षड्जः; भागः + षोडशः=भागष्षोडशः, भागः षोडशः।

१०३। यदि दन्त्य स् परे हो तो, विसर्ग के स्थान में विकल्प से दन्त्य स् होता है। यथा, प्रथमः + सर्गः = प्रथम-स्सर्गः, प्रथमःसर्गः; रवेः + संक्रमः = रवेस्संक्रमः, रवेःसंक्रमः; साधोः + सङ्गः=साधोस्सङ्गः, साधोः सङ्गः।

१०४। ओ मकारयोर्मध्ये

यदि अकार के परे विसर्ग हो और अकार परे हो तो, पूर्व अकार और विसर्ग दोनों के स्थान में ओ होता है। ओकार पूर्व वर्ण में युक्त होता है और पर अकार का लोप हो जाता है। यथा, नरः + अयम्=नरोऽयम्, नयः + अङ्कुरः=नयो-ऽङ्कुरः; तीक्ष्णः + अङ्कुशः=तीक्ष्णोऽङ्कुशः; ज्वलितः + अङ्गारः =ज्वलितोऽङ्गारः; वेदः + अधीतः=वेदोऽधीतः।

(१) यदि तकार के परे स् रहे तो विसर्ग के स्थान में स् नहीं होता। यथा, शठः + त्सरति=शठःत्सरति; दृढ + त्सरुः=दृढः त्सरुः।

१०५। हशि च

यदि वर्ग का तृतीय चतुर्थ अथवा पञ्चम वर्ण अथवा य् र् ल् व् ह् परे हो तो अकार और अकार के परिस्थत विसर्ग इन दोनों के स्थान में ओ होता है। ओकार पूर्व वर्ण में युक्त होता है। यथा, शोभनः + गन्धः=शोभनो-गन्धः; नूतनः + घटः=नूतनोघटः, सद्यः + जातः=सद्योजातः; मधुरः + झङ्कारः=मधुरोझङ्कारः; नवः + डमरुः=नवोडमरुः; गजः + ढौकते =गजोढौकते; मूर्द्धन्यः + णकार=मूर्द्धन्योणकारः, निर्वाणः + दीपः=निर्वाणोदीपः; अश्वः + धावति = अश्वोधावति, उन्नतः + नगः=उन्नतोनगः; दृढः + बन्धः=दृढोबन्धः; अकुतः + भयः =अकुतोभयः; अतीतः + मासः=अतीतोमासः; कृतः + यत्नः =कृतो यत्नः; शान्तः + रोषः=शान्तोरोषः; कुतः + लोभः=कुतोलोभः; शीतः + वायुः = शीतोवायुः; वामः + हस्तः=वामोहस्तः।

१०६। न विसर्जनीय लोपे पुनः सन्धिः

यदि अकार भिन्न स्वर वर्ण परे हो तो अकार के परिस्थित विसर्ग का लोप होता है और लोप होने पर फिर सन्धि नहीं होती। यथा, कुतः + आगतः=कुत-आगतः; नरः + इव=नर इव; कः + ईहते=कईहते; चन्द्रः + उदेति=चन्द्रउदेति; इतः + ऊर्द्ध्वम्=इतऊर्द्ध्वम्; देवः + ऋषिः=देवऋषिः; उच्चारितः + ऌकारः = उच्चारित ऌकारः; कः + एषः = क एषः; कुतः + ऐक्यम्=कुतऐक्यम्; रक्तः + ओष्ठ=रक्तोष्ठः; राज्ञः + औदार्य्यम्=राज्ञऔदार्य्यम् (१)।

---

(१) वैयाकरणीय विसर्ग का लोप करके उस के स्थान में य करते है। यथा, कुतः + आगतः=कुत आगतः, कुतयागतः, कः + एषः=क एषः, क येषः।

१०७ । आभोभ्यामेवच अचि परे। हशिच लोपम् हशिच परे

यदि स्वर वर्ण वर्ग के तृतीय, चतुर्थ और पञ्चम वर्ण अथवा य् र् ल् व् परे हो तो, अकार के परिस्थित विसर्ग का लोप हो जाता है और लोप होने पर सन्धि नही होती। यथा, अश्वाः + अमी = अश्वाअमी; गजाः + इमे = गजाइमे; कृताः + घटाः=कृताघटाः; पुत्राः + जाताः=पुत्राजाताः; मधुराः + झंकाराः=मधुरा झङ्काराः; नवाः + डमरवः=नवा डमरवः; गजाः + ढौकन्ते=गजा ढौकन्ते; निर्वाणाः + दीपाः=निर्वाणादीपाः; अश्वाः + धावन्ति=अश्वाधावन्ति; उन्नताः + नगाः=उन्नतानगाः दृढ़ाः + बन्धः = दृढ़बन्धः; नराः + भीताः = नराभीताः; अतीताः + मासाः=अतीता मासाः; छात्राः + यतन्ते=छात्रा यतन्ते; एताः + रथ्याः=एता रथ्याः; नराः + लभन्ते = नरा लभन्ते; वाताः + वान्ति = वाता वान्ति; बालकाः + हसन्ति = बालका हसन्ति (१)।

१०८ । इको बिसर्ज्जनीयो रमज् झसोः

यदि अ, आ भिन्न स्वर वर्ण के परे विसर्ग हो और यदि स्वर वर्ण वर्ग के तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण अथवा य् र् ल् व् ह् परे हो तो विसर्ग के स्थान में र् होता है। यथा, कविः + अयम् = कविरयम्; गतिः + इयम्=गतिरियम्; रविः + उदेति = रविरुदेति; श्रीः + असौ=श्रीरसौ, सुधीः + एषः=

(१) वैयाकरणी लोग स्वर वर्ण परे रहने से आकार के परिस्थत विसर्ग के स्थान में विकल्प से य् करते हैं। यथा, गजाः + इमे=गजा इमे, गजायिमे; नराः + एते=नरायेते।

सुधीरेषः; बन्धुः + आगतः + बन्धुरागतः; गुरुः + उवाच= गुरुरुवाच; बधुः + एषा=बधुरेषा; भूः + इयम्=भूरियम्; मातृः + अर्च्चय=मातृरर्च्चय; दुहितृः + आह्वय=दुहितृराह्वय; रवेः + उदयः=रवेरुदयः; तैः + उक्तम्=तैरुक्तम्; विधोः + अस्तगमनम् =विधो-रस्तगमनम्; प्रभोः + आदेशः = प्रभोरादेशः; गोः + अयम्=गौरयम्; ऋषिः + गच्छति = ऋषिर्गच्छति; हविः + घ्राणम्=हविर्घ्राणम्; गुरुः + जयति=गुरुर्जयति; कृतैः + झङ्कारैः =कृतैर्झङ्कारैः; नवैः + डमरुभिः=नवैर्डमरुभिः; गौः + ढौकते= गौर्ढौकते; रवेः + दर्शनम्; =रवेर्दर्शनम्; निः + धनः=निर्धनः; दु + नीतिः=दुर्नीतिः; निः + बन्धः,=निर्बन्धः, निः + भयः= निर्भयः; मुहुः + मुहुः = मुहुर्मुहुः; वहिः + योगः=वहिर्योगः; विधुः + लीयते=विधुर्लीयतेः; वायुः + वाति=वातुर्वातिः, शिशुः + हसति=शिशुर्हसति।

१०९। रेफ प्रकृतिश्च

यदि स्वर वर्ण, वर्ग के तृतीय, चतुर्थ, पञ्चमवर्ण, किंवा य् र् ल् व् ह् परे हो तो अकार के परस्थित रजात विसर्ग (१) के स्थान में र् होता है। यथा, पुनः + अपि + पुनरपि; पुनः + आगतः=पुनरागतः; प्रातः + इहागतः=प्रातरिहागतः; प्रातः + एव=प्रातरेव; अन्तः + धानम्=अन्तर्धानम्; स्वः + गतः= स्वर्गतः; भ्रातः + आगच्छ=भ्रातरागच्छ; पितः + अनुमन्यस्व= पितरनुमन्यस्व; मातः + देहि=मातर्देहि; जामातः + वंद= जामातर्वंद; दुहितः + याहि = दुहितर्याहि।

---

(१) पुनः, प्रातः, अन्तः, स्वः इत्यादि पद के विसर्ग और ऋकारान्त शब्द के सम्बोधन के एकवचन के पद का विसर्ग रजात अर्थात् र् के स्थान में विसर्ग हुआ है।

११० । रोरि लोप पूर्व्वोदीर्घः

र् परे रहने से विसर्ग के स्थान में जो र् होता है उसका लोप हो जाता है और पूर्व स्वर दीर्घ हो जाता है यथा, पितः +रक्ष=पितारक्ष; निः+रसः=नीरसः; निः+रोगः=निरोगः; विधुः+राजते=विधूराजते; मातृः+रोदनम्=मातृरोदनम् ।

१११ । एष स परा हलि चलोपम्

यदि अकार भिन्न स्वर अथवा कोई व्यञ्जन वर्ण परे हो तो, सः, एषः इन दोनों पदों के विसर्ग का लोप होता है और लोप होने पर फिर सन्धि नही होती । यथा, सः+आगतः=स आगतः; सः+इच्छति=स इच्छिति; सः+ईहते=स ईहते; सः+उवाच=स उवाच; सः+करोति=स करोति; सः+गच्छति=स गच्छति; सः+चलति=स चलति; सः+हसति=स हसति; एषः+आयाति=एष आयाति; एषः+पति=एषपति; एषः+धावति=एष धावति; एषः+रोदिति=एष रोदिति; एषः+वदति=एष वदति; एषः+शेते=एष शेते; एषः+सहते=एषसहते ।

११२ । भोसः

११२ । यदि स्वर वर्ण, वर्ग के तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण अथवा य् र् ल् व् ह् परे हो तो, भोः पद के विसर्ग का लोप हो जाता है, और लोप होने पर फिर सन्धि नहीं होती । यथा, भोः+अम्बरीष=भो अम्बरीष; भोः+ईशान=भो ईशान; भोः+उमापते=भो उमापते; भोः+गदाधर=भो गदाधर; भोः+

जनमेजय=भो जनमेजय; भोः+दामोदर=भो दामोदर; भोः+माधव=भो माधव; भोः+यदुपते=भो यदुपते। (१)

११३। इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य

क्, ख्, प् अथवा फ् परे रहने से निः, आविः, बहिः, दुः, प्रादुः और चतुः इन सब शब्दों के विसर्ग के स्थान में मूर्द्धन्य ष् होता है। यथा, निः+कामः=निष्कामः; निः+खेदः=निष्खेदः; निः+पीड़ितः=निष्पीड़ितः; निः+फलः=निष्फलः; आविः+कृतम्=आविष्कृतम्; बाहिः+कृतः=बहिष्कृतः; दुः+करम्=दुष्करम्; दुः+खम्=दुष्खम्; प्रादुः+कृतम्=प्रादुष्कृतम्; चतुः+कोणम्=चतुष्कोणम्; चतुः+पथम्=चतुष्पथम्।

११४। कुप्वर्गयोः वा इसुसोः सामर्थ्ये

क्, ख् प् अथवा फ् परे रहने से हविः, सर्पिः आयुः, धनुः इत्यादि। (२) के विसर्ग के स्थान में विकल्प से मूर्द्धन्य ष् होता है। यथा, हविः+पतति=हविष्पतति, हविःपतति; सर्पिः+पिवति=सर्पिष्पिवति, सर्पि पिवति; आयुः+करोति=आयुष्करोति, आयुः करोति; धनुः+करोति=धनुष्करोति, धनुः करोति। समास में नित्य मूर्द्धन्य ष् होता है। यथा, हविः+पानम्=हविष्पानम्; सर्पिः+पात्रम्=सर्पिष्पात्रम्; आयुः+कामः=आयुष्कामः; धनुः+पाणिः=धनुष्पाणिः (३)

---

(१) वैयाकरणीय स्वर वर्ण परे रहने से भोः शब्द के विसर्ग (:) के स्थान में विकल्प से य् करते हैं। यथा, भोः+अच्युत=भो अच्युत, भोयच्युत, भोः+अत्र=भो अत्र, भोयत्र।

(२) हविः, सर्पिः, बहिः, अर्च्चिः, रोचिः, शोचिः, आयुः, धनुः, चक्षुः, वपुः, यजुः इत्यादि।

(३) भ्रातुः पुत्रः के विसर्ग के स्थान में ष होता है। यथा, भ्रातुष्पुत्रः।

११५ । तकारादि तद्धित प्रत्यय परे रहने से ह्रस्व इकार और ह्रस्व उकार के परस्थित विसर्ग के स्थान में मूर्द्धन्य ष् होता है। यथा, अर्चिः+त्वम्=अर्चिष्ट्वम्; चतुः+तयम्= चतुष्टयम्।

११६ । नमस्पुरसोर्गत्योः

कृ धातु परे रहने से नमः, पुरः, तिरः, इन तीनों (शब्दों) के विसर्ग के स्थान में दन्त्य स होता है। यथा, नमः+करोति= नमस्करोति; नमः+कारः=नमस्कारः; नमः+कृत्यः=नमस्कृत्यः; पुरः+कारः=पुरस्कारः; पुरः+कृत्य=पुरस्कृत्य; तिः+कारणी तिरस्कारणी; तिरः+कारः=तिरस्कारः।

११७। कर, कार, कान्त, काम, कुम्भ और पात्र सब्द परे रहने से अकार के परिस्थत विसर्ग के स्थान में दन्त्य स् होता है। यथा, श्रेयः+करः=श्रेयस्करः; पुरः+कारः=पुरस्कारः; अयः+कान्तः=अयस्कान्तः; मनः+कामः=मनस्कामः; अयः+कुम्भः=अयस्कुम्भः; पयः+पात्रम्=पयस्पात्रम्।

११८। तमः काण्डः, मेदः पिण्डः, भाः-करः, अहः-करः, वाचः-पतिः, दिवः-पतिः, अयः-कीलः इत्यादि के विसर्ग के स्थान में दन्त्य स् होता है। यथा, तमस्काण्डः, मेदस्पिण्डः, भास्करः, अहस्करः, वाचस्पतिः, अयस्कीलः।

QUESTIONS.

1—(a) जगत्+शरण्यम्=जगच्छरण्यम्, but उत्+श्चोतति=उत्श्चोचति।

Account for the difference of form in these two cases.

(b) What difference form can beobtained by combination of उत् and शरीरम् and शक्टम् etc. ?

2. What Different forms can be had from the conjunction of महान् and शब्दः ?

3, Disjoin the word तद्धितम्, what other word is formed by joining its two other parts ?

(4) Join the following.—
तद् + झनत्कारः, गच्छन् + झटिति, निन्दन् + शठः, एतद् + छाया, उत् + हरणम्, यज् + नः, राज् + नी, एतम् + टक्कर., महत् + ढालम्, राजन् + ढौकते, महान् + लाभः, धावन् + अश्वः, स्मरन् + उवाच and पश्यन् + चकितः ।

(a) चिन्तयन् + इह=चिन्तयन्निह and हसन् + आगतः= हसन्नागतः ।

(b) साधून् + आद्रियस्व=साधुनाद्रियस्व and कवीन् + आह्वय = कवीनाह्वय; Say if there is any Difference in the form of (4) and (a, b) and if so. account for the difference.

5. Disjoin the following:—
उद्घट्टङ्कारः, शाम्यस्तापः, एशते, विहितं, संस्यते, आशङ्कते, रंजयति, उत्कण्ठते, अनुमति, क्षन्तव्यं, वशंवद वृक्षच्छाया, उदस्तनम्, उदिष्ठेति, सभ्यगुणम् and वाग्जालम् ।

6. Join the following:—
गृहम् + गच्छ शत्रुम् + जहि, धनम् + ददाति, सत्यम् + ब्रूयात्, गुरुम् + नमति, मधुलिट् + मत्तः, दिक् + नागः, दिक् हस्ती, अप्: + हरम्, परिव्राट् + हसति, सुतः + शिशुः, अग्नेः +

न्) नगरयायिणा नगरयायिना, विषपायिणा विषपायिना, (१) (ई प्रत्यय युक्त न्) नगरयायिणी नगरायिनी, विषपायिणी विषपायिनी (२)।

१२५। यदि पर पद एक स्वर विशिष्ट अथवा कवर्ग युक्त हो तो, दन्त्य न् सर्व्वदा मूर्द्धन्य होता है। यथा, (एक स्वर विशिष्ट) प्रभुणा, प्रभूणाम्, पुनर्भुणाम्, वृत्रहणौ, वृत्रहणः। (कवर्गयुक्त) श्रीकामेण, दुर्गमेण, गृहगामिणा, नगरगामिणी; धर्म्मकामाणाम्, दोषभागिणी, आर्द्रगोमयेण, शुष्कगोमयेण, परिपाकेण (३)

१२६। विभाषौषधिवनस्पतिभ्यः

औषधिवाचक (४] और वृक्षवाचक शब्दों के परे वन शब्द का विकल्प से मूर्द्धन्य होता है। यथा [औषधिवाचक] व्रीहिवणम् व्रीहिवनम्, माषवणम् माषवनम्, दुर्व्वावणम् दुर्व्वावनम्, दर्भवणम् दर्भवनम्, रम्भावणम् रम्भावनम्, क्षुमावणम् क्षुमावनम्, उशीरवणम् उशीरवनम्, नीवारवणम् नीवारवनम्, हरिद्रावणम् हरिद्रावनम्, सर्षपवणम् सर्षपवनम्, जीरकवणम् जीरकवनम्, आर्द्रकवणम् आर्द्रकवनम्,

---

(१) युवन् शब्द का न मूर्द्धन्य नहीं होता। यथा, नृयुवानौ, क्षत्रिययूना, शूद्रयूनाम्।

(२) भगिनी, कामिनी, भामिनी, यामिनी, यूनी आदि कई एक शब्दों का न मूर्द्धन्य नहीं होता। यथा, पितृभगिनी, हरकामिनी, हरभामिनी, घोरयामिनी, क्षत्रिययूनी।

(३) पक्व शब्द का न मूर्द्धन्य नहीं होता। यथा, परिपक्वेन, परिपक्वानि, परिपक्वानाम्।

(४) शस्य पक्व होने से जिन सब उद्भिदों का जीवन शेष होता है उनको औषधि कहते हैं।

[वृक्षवाचक] लोध्रवणम् लोध्रवनम्, द्राक्षावणम् द्राक्षावनम्, केसरवणम् केसरवनम्, मन्दारवणम् मन्दारवनम्, मालूरवणम् मालूरवनम्, बदरीवणम् बदरीवनम्, शिरीषवणम् शिरीषवनम्, जम्बीरवणम् जम्बीरवनम् [१]।

१२७। शर, कार्ष, इक्षु, प्लक्ष, आम्र, खदिर इन कई शब्दों के परे वन शब्द के न् का सर्व्वदा मूर्द्धन्य होता है, यथा, शरवणम्, इक्षुवणम्, लक्षवणम्, आम्रवणम्, खादिरवणम्, कार्षवणम्।

१२८। प्र, निर्, अन्तर्, अग्रे इन कई शब्दों के परस्थित वन शब्द के न् का मूर्द्धन्य होता है यथा, प्रवणम्, निर्वणम्, अन्तर्वणम्, अग्रेवणम्।

१२९। वा भावरकणयोः

अन्य पदस्थित र् आदि के परवर्ती पान शब्द का म् विकल्प से मूर्द्धन्य होता है। यथा, क्षीरपाणम् क्षीरपानम्, नीरपाणम् नीरपानम्, विषपाणम् विषपानम्, कषायपाणम् कषायपानम्।

१३०। त्रिचतुर्भ्यां हायनस्य णत्वं वाच्यम्

वयस् अर्थ बोध होने से त्रि और चतुर शब्दों के परवर्त्ती हायन् शब्द का न् मूर्द्धन्य होता है। यथा, त्रिहायणो वत्सः, चतुर्हायणी गौः।

१३१। अह्नोऽदन्तात्

प्र, पूर्व अपर आदि शब्दों के परवर्त्ती आदि शब्द का न् मूर्द्धन्य होता है। यथा, प्राह्णः, पूर्व्वाह्णः, अपराह्णः।

---

(१) द्विस्वर अथवा त्रिस्वर न रहने से नहीं होता। यथा, देवदारुवनम्, उदुम्बरवनम्, नारङ्गवनम्, नारिकेलवनम्, बोधिद्रुमवनम्, कोविदारवनम्, राजवृक्षवनम्, सहकारवनम्, कुरवकवनम्, कर्णिकारवनम्, सिन्धुवारवनम्, नागकेसरवनम्।

१३२। अयनञ्च

पर, पार, उत्तर, चान्द्र, नारा और राम शब्द के परवर्त्ती अयन शब्द का न् मूर्द्धन्य होता है। परायणम्, पारायणम्, उत्तरायणम्, चान्द्रायणम्, नारायणः, रामायणम्।

१३३। अग्रग्रामाभ्याँ नयतेः

अग्र और ग्राम के परवर्त्ती नी शब्द का न् मूर्द्धन्य होता है। यथा, अग्रणीः, ग्रामणीः।

१३४। पूर्व्वपदात् संज्ञायामगः। उपसर्गात् बहुलम्

शूर्प के परिस्थित नख का न् और प्रद्रुखर और गाध्री शब्दों के परिस्थित नस का न् मूर्द्धन्य होता है। यथा, (१) शुर्पणखा, प्रणसः, द्रुणसः, खरणसः, गाध्रीणसः।

१३५। गिरीनद्यादीनां वा

गिरी नदी इत्यादि के [२] न का विकल्प से मूर्द्धन्य होता है। यथा, गिरिणदी गिरीनदी, स्वर्णदी स्वर्नदी, गिरिणितम्बः गिरिनितम्बः।

१३६। षात् पदान्तात्

पूर्व्व पद के अन्त में मूर्द्धन्य ष् रहने से पर पद का न् मूर्द्धन्य नही होता है। यथा, निष्पानम्, दुष्पानम, हविष्पानम्, आयुष्कामेन, निष्कामेन, निष्कामानाम्, दुष्खेन, दुष्खिना, सर्पिष्पायिना।

---

(१) संज्ञा बोध होने से ही शूर्पणखा इत्यादि शब्दों के दन्त न का मूर्द्धन्य ण होता है। अन्यत्र शूर्पनखी।

(२) गिरिनदी, स्वर्नदी, गिरिनितम्ब, गिरिनख, गिरिनद्ध, चक्रनदी, चक्रनितम्ब, तूर्य्यमान, माघोन, आर्गयन।

१३७ । उपसर्गाद् समासेऽपि नोपदेशस्य

प्र, परा, परि, निर इन चार उपसर्ग और अन्तर शब्द के परे यदि नद् प्रभृति (१] धातु हों तो; उन सबों का न् मूर्द्धन्य हो जाता है । यथा, नद्-प्रणदति, पराणदति, परिणदति, निर्णादति, अन्तर्णादति, नम्-प्रणमति, प्रणामः, प्रणतिः, परिणमति, परिणामः, परिणमतिः, नश-प्रणश्यति, परिण-श्यति, प्रणाशः, परिणाशः, अन्तर्णाशः, (२) परिणतिः, नह् + प्रणह्यते, परिणाहः । नी—प्रणयति, प्रणीयते, प्रणयः, परिणयः, परिणीतः, निर्णीयते, निर्णयः, नु—प्रणौति, परिणौति, प्रणवः, नुद्—प्रणुदति, प्रणोदः । अन्—प्राणिति, प्राण्यात, प्राणः, हन्—प्रहण्यते, परिहण्यते, प्रहण्यात्, परिहण्यात्, प्रहणनम्, पराहणनम्, परिहणनम्, निर्हणम्, अन्तर्हणनम् (३) ।

१३८ । वामोर्व्वा

यदि हन् धातु का न्, म्, अथवा व् संयुक्त हो तो विकल्प से मूर्द्धन्य होता है । यथा, प्रहण्मि, प्रहन्मि, प्रहण्वः, प्रहन्वः ।

१३६ । वा निंसनिक्ष निन्दाम्

निस्, निक्ष्, निन्द इन तीनों धातुओं का न् विकल्प से

(१) नद् नम् नश् नह् नी नु नुद् अन् हन् ।
नदी नमो नशश्चैव नहनीनुनुदस्तथा ।
अनो हनश्चेति नव नदादिर्गण इष्यते ॥

(२) नशधातु के श मूर्द्धन्य होने से न् मूर्द्धन्य नहीं होता । यथा, प्रनष्टः, परिनष्ट, निर्नष्ट, अन्तर्नष्टः ।

(३) हन् धातु के ह, स्थान मे घ होने से न् मूर्द्धन्य नहीं होता । यथा, प्रघ्नन्ति, परिघ्नन्ति, प्रघानि, प्रघ्योघ्नि । शत्रुघ्नः ।

मूर्द्धन्य होता है। यथा, निस्-प्रणि- सितव्यम्, प्रनिंसितव्यम्, निक्ष्-प्रणिक्षणम्, प्रनिक्षणम्, निन्द्-प्रणिन्दति, प्रनिन्दति।

१४०। हिनुमीना

हिनु और मीना का न् मूर्द्धन्य होता है। यथा, हिनु-प्रहिणोति, प्रहिणुतः, प्रहिण्वन्ति। मीना-प्रमीणाति, प्रमीणीतः, प्रमीणन्ति।

१४१। आनि लोट्

लोट् के आनि तिभक्ति का न् मुर्द्धन्य होता है। यथा, प्रभवाणि, पराभवाणि, परिभवाणि, निर्भवाणि, अन्तर्भवाणि, प्रवहाणि, परिवहाणि, अन्तर्वहाणि, प्रवपाणि, परिवपाणि, अन्तर्वपाणि, निर्वपाणि।

१४२। गद् आदि। (१) धातुओं का पूर्ववर्त्ती नि उपसर्ग का न मूर्द्धन्य होता है। यथा, गद्-प्रणिगदति, पत्-प्रणिपतति, प्रणिपातः, दा-प्रणिददाति, धा-प्रणिदधाति, प्रणिधानम्, प्रणिहितः; हन्-प्रणिहन्ति, परणिहन्ति, निर्णिहन्ति, अन्तर्णिहन्ति।

१४३। कृत्यचः

धातु के पूर्व प्र, परा, परि और निर् ये चार उपसर्ग अथवा अन्तर शब्द रहने से कृत् प्रत्यय का न् मूर्द्धन्य होता है। यथा, या-प्रयाणम्, निर्याणम्, प्रयाणीयम्, अन्तर्याणीयम्, हा-प्रहाणम्, प्रहीणः, परिहाणीः, परिहीयमाणम्, ऊह-प्रोहणीयम्, प्रोहणम्, वप्-प्रवपणीयम्, प्रवपणम्, वह्-प्रवहमाणः, प्रोह्य-

(१) गद्, पत्, दा, धा, हन्,नद्, पद्, दान्, दो, सो, दे, धे, मा, या, द्रा, प्सा, वप, वह, शम्, चि, दिह्।

माण:, प्रव-हणम्:, आप्-प्रापणम्, प्रापणीयम्, प्राप्यमाणम्, मा-मां-प्रमाणम्, परिमाणम्; इख्-प्रेङ्खणम्, प्रेङ्खणीयम्।

१४४। हलश्चेजुपधात्

जिन धातुओं के आदि में व्यञ्जन वर्ण हो और अन्य वर्ण के पूर्व्व में अ आ भिन्न स्वर वर्ण रहे तो उनके उत्तर विहित कृत प्रत्यय का न् विकल्प से मूर्द्धन्य होता है। यथा, कुप्-प्रकोपणम्, प्रकोपनम्, प्रकोपणीयम्, प्रकोपनीयम्, गुप्-परिगोपणम्, परिगोपनम्, परिगोपणीयम्, परिगोपनीयम्।

१४५। णे विभाषा

ण्यन्त धातुओं के (१) उत्तर विहित कृत् प्रत्यय का न् विकल्प से मूर्द्धन्य ण् होता है। यथा, यापि प्रयापण, प्रयापनम्, प्रयाप्यमाणम्, प्रयाप्यमानम्, प्रयापणीयणम्, प्रयापनीयम्, वाहि-प्रवाहणम्, प्रवाहनम्, प्रवाह्यमाणम्, प्रवाह्यमानम्, प्रवाह्यणीयम्, प्रवाह्यनीयम्।

१४६। न भा भू पूकमिगमिप्यायिवेपाम्

भा, भू, पू, कम्, गम्, प्याय्, वेप् और कम्प् इन धातुओं के उत्तर विहित कृत् का न् मूर्द्धन्य नहीं होता। यथा, भा—परिभानीयम्; भू—परिभवनीयम्; पू—परिपवनीयम्; कम्—परिकमनीयम्; गम्—परिगमनीयम्; प्याय्—परिप्यायनीयम्, वेप्—परिवेपनीयम्, कम्प—परिकम्पनीयम्।

१४७। कृत् प्रत्यय का न् व्यञ्जन वर्ण में युक्त होने पर मूर्द्धन्य नहीं होता। यथा, प्रभग्नः, परिभग्नः, प्रभुग्नः, परिभुग्नः, प्रमग्नः, परिमग्नः, प्रविग्नः, परिविग्नः, निर्विग्नः।

(१) भा, भू, पू, कम्, वेप्, कम्प्, भिन्न।

निम्न लिखित शब्दों में "ण" होता है ।

"वाणी-तुणीर,वेणी-फणि लवणं कोण-कल्याणवाणाः, गोणी-
घोणी-कणा-गुणु र्ण-विपणि-पणं स्थाणु-पुण्यं विषाणम् ।
माणिक्यं शोणशाणौ गुण-गणिका-वेणु-सिंहाण-वीणा,
निर्व्वाणोनिक- णैण-कण-किण-वणिजः कङ्कणं पाणितूणौ ।
पिणाक—मपि चाणक्यमित्याद्याः स्थुः स्वभावतः ।"

QUESTIONS.

1. Account for either the double न in सन्नन्न—वीत् or for the elision of अ in एतेऽस्मन् पुत्राः ।

C. U. 1910

2. विषपायिना and विषपायिणा, नगरवासिनी and नगरवासिणी, पितृभगिनी and पितृभगिणी, घोरयामिनी and घोरयामिणी । Point out which of these are correet or which are incorreet and justify your answer by quoting the rule or rules governing them.

3. According to what rule न of परिपाकेन becomes मूर्द्धन्य ण ? Is there any exception to that rule ? Illustrate.

4. What rule governs the changing of न of नश् and हन् धातु ? is there any exception to that rule ?

5. Re-write the following after correcting;—"न"—रामेन, हरिना, विषन्न, रिपूनाम्, दंष्ट्रानाम्, दर्पेन, निवारनम्, रनस्थलम्, तारिनी, शिक्षकेन, रेखानाम्, नरान्, नृपान्, रजनी and राजानः ।

षत्वविधान

(change of दन्त्य (dental) स् into मूर्धन्य (cerebral) ष्)

१४८ । इणः कोः

अ आ भिन्नस्वर क् और र् इन वर्णों के परस्थित प्रत्यय का दन्त्य स् मूद्र्धन्य होता है। यथा, मुनिषु, नदीषु, साधुषु, वधुषु, भ्रातृषु, नरेषु, अनैषीत्, गोषु, नौषु, विक्ष, चतुर्षु [१]

१४९ । नुम्विसर्ज्जनीयशर्व्यवायेऽपि

अनुस्वार और विसर्ग व्यवधान रहने से भी होता है। यथा, हवींषि, धनूंषि, आशीःषु, आयुःषु (२)

१५० । षोपदेश धातु को (३) अभ्यस्त करने से यदि ...

---

[१] सात् प्रत्यय का स् मूद्र्धन्य नहीं होता। यथा, अग्निसात्, वायुसात्, भ्रातृसात्।

[२] क्लीवलिंग शब्द की प्रथमा और द्वितिया के बहुवचन में जो अनुस्वार रहता है उसको छोड़ अन्य अनुस्वार के व्यवधान में नहीं होता। यथा, पुमस् शब्द की सप्तमी के बहुवचन में पुंसु मुद्र्धन्य ष नहीं हुआ।

[३] सन्ज्, सद्, सह्, साध्, सिच्, सिध्, सिव्, सृ, ... स्तम्भ्, स्तु स्तुभ्, सत्यै, स्था, स्ना, स्निह, स्नु, स्मि, ... स्वप्, स्विद् इत्यादि।

सञ्जः सदः सहः साध, सिच् सिधौ सिव् च सुस्तथा।
सृः सेवः सोस्तथा स्तम्भः स्तुस्तुभो स्त्यायतिस्तथा।
स्था स्नास्निहस्नवः स्मिश्च स्वञ्जः स्वद्स्वप् स्विदस्तथा।
एते चान्ये च बहवः षोपदेशाः प्रकीर्तिता।

का द्वितीय स् ई, ऊ, ए, ओ इन वर्णों के परस्थित हो तो मूर्द्धन्य होता है यथा, सिच्-सिषेच, सिषिचतुः, सिषिचुः (१) सिध्-सिषेध, सिषिधतुः, सिषिधुः, सु-सुषाव, सषुवतुः, सषुवुः, सू-सुषुवे, सुषुवाते, सुषुविरे, सेव-सिषेवे, सिषेवाते, सिषेविरे, स्तु-तुष्टाव, तुष्टुवतु, तुष्टुवुः, स्निह्-सिष्णेह, सिष्णिहतुः, सिष्णिहुः, स्मि—सिष्मिये, सिष्मियाते, सिष्मियिरे, स्वप्—सुष्वाप, सुषुपतुः, सुषुपुः, स्तुभ्—तुष्टुभे, तुष्टभाते, तुष्टुभिरे, सो–सोषीयते, सेव—सेवीव्यते, सू—सोषूयते, स्तु–तोष्टूयते।

१५१। धातु के उत्तर विहित सन् प्रत्यय का स् मूद्र्धन्य होने से उस धातु का स् मूद्र्धन्य नही होता। यथा, सिच—सिसिक्षति, सू–सुसूषति, सेव–सिसेविषते, स्मि–सिस्मयिषते, स्तम्भ्–तिस्तम्भिषति, स्तुभ्–तुस्तोभिषते; स्नु–सुस्नूषति (२)। सन् का स् दन्त्य रहने से, धातु का स् मूद्र्धन्य होता है। यथा स्था–तिष्ठासति, स्वप्–सुषुप्सति; सो–सिषासाति; स्ना–सिष्णासति। णयन्तधातु में केवल स्विद्, स्वद् और सह धातुओं का नही होता। यथा, स्विद्-सिस्वेदयिषति; स्वद्-सिस्वादयिषति; सह्–सिसाहयिषति। स्नु को छोड़ कर णयन्त धातु का होता है यथा,स्वप्-सुष्वापयिषति; सिच्-सिषेचयिषति; सिध्-सिषेधयिषति, स्तु-सुष्णावयिषति, सञ्ज् सिषञ्जयिषति।

१५२। इकारान्त (३) और उकारान्त (४) उपसर्ग के

---

[१] यङ् प्रत्यय होने से, सिच् धातु का स मूद्र्धन्य नहीं होता। यथा, सेसिच्यते।

(२) केवल स्तु धातु का होता है। यथा, तुष्टुषति।

(३) नि, वि, परि, प्रति, अति, अधि, अपि, अभि।

(४) सु, अनु।

परस्थित सु आदि (१) धातुओं का स् मूर्द्धन्य ष् होता है। यथा, सु-अभिषुणोति, अनुषुणोति (२) सू- (३) अभिषुवति, अनुषुवति; सो-अधिष्यति; स्तु-अभिष्टौति, अनुष्टौति; स्तुभ्-प्रतिष्टोभते, अनुष्टोभते; स्था-अधिष्ठास्यति; अनुष्ठास्यति; सेनि-अभिषेणयति, सिध्-(४) प्रतिषेधति, अनुषेधति; सिच्-निषिञ्चति, अनुषिञ्चति, सञ्ज्-निषजति, अनुषजति; स्वञ्ज्-परिष्वजते, अनुष्वजते, सद्-विषीदति, अनुषीदति (५) स्तम्भ्-अभिष्टभ्नोति, अनुष्टभ्नोति (६)। अट्-व्यवधान में भी मूर्द्धन्य होता है। यथा, अभ्यषुणोत्, अभ्यषेणयत्, न्यषिञ्चत्, अन्वषजत्, न्यषीदत् (७)।

---

(१) सु, सू, सो, स्तु, स्तुभ्, स्था, सेनि, सिध, सिच्, सञ्ज, स्वञ्ज सद्, स्तम्भ्।

सुः सूः सोः स्तुः स्तुभश्चैव स्थाः सेनिश्च सिधः सिचः।
सञ्जः स्वञ्जः सदः स्तम्भः स्वादिरेते त्रयोदश॥

(२) लट्, लङ् विभक्ति और स्यत् प्रत्यय परे रहने से नहीं होता। यथा; लट् अभिसोष्यति, लङ्-अभ्यसोष्यत्, स्यत् अभिस्तोष्यत्।

(३) तुदादिगणीय।

(४) गमनार्थ सिध् धातु का नहीं होता। यथा गृहं प्रतिसेधति, परिसेधति, अभिसेधति।

(५) प्रतिपूर्वक का नहीं होता। यथा, प्रतिसीदति।

(६) आलम्बन और सामीप्य अर्थ में अवपूर्वक का भी होता है। यथा आलम्बन अर्थ में यष्टिमवष्टभ्य आस्ते, यष्टिमालम्ब्य तिष्ठतीत्यर्थः। सामीप्य अर्थ में अवष्टब्धा गौः, गोः समीपे वर्त्तते इत्यर्थः।

(७) परि; नि; वि पूर्वक स्तु और स्वञ्ज धातु का विकल्प से होता है। यथा; पर्य्यष्टावीत्, पर्य्यस्तावीत्; पर्य्यष्वजत; पर्य्यस्वजत्।

१५३। परिनिविभ्यः सेवसितसयसिवुसहसुट्स्तुस्वञ्जाम्

परि, नि, वि, पूर्वक सेव् और सह, धातु का स् मूर्द्धन्य होता है। यथा सेव्-परिषेवते, निषेवते, सिव्-परिषीव्यति, निषीव्यति, विषीव्यति, सह्-परिषहते, निषहते, विषहते (१) अट् के व्यवधान में भी होता है। किन्तु सेव् धातु का नित्य; सिव् और सह् धातु का विकल्प से होता है। यथा सेव्-पर्य्यषेवत्, सिव्-पर्य्यषीव्यत्, पर्य्यसीव्यत्, सह्-न्यषहत, न्यसहत। णयन्त करने से लुङ् विभक्ति में सिव् और सह् धातु का स् मूर्द्धन्य नहीं होता। यथा, सिव्-पर्य्यसीसिवत्, सह्-पर्य्यसीसहत्।

१५४। स्थादिष्वभ्यासेन चाभ्यासस्य

इकारान्त और उकारान्त उपसर्ग के परिस्थित सेनि आदि (२) धातु अभ्यस्त होने से, दोनों स् मूर्द्धन्य हो जाते हैं। यथा, सेनि-अभिषिषेणयिषति, सिध्-निषिषेध, प्रतिषिषेधयिषति, अभिषेषियते; सिच्-अभिषिषेच, अभिषिषेचयिषति, (३) सञ्ज्-अनुषषञ्ज, प्रतिषिषञ्जयिति; स्वञ्ज्-परिषिष्वञ्जयिषति,

(१) स्ह् के स्थान में सोढ़ होने से मूद्‌र्धन्य नहीं होता। यथा; परिसोढ़ा; निसोढुम्; विसोढ़ः।

(२) सेनि, सिध, सिच्, सञ्ज, स्वञ्ज, सद्, सेव्

सेनिः सिधः सिचश्चैव सञ्जः स्वञ्जः सदस्तथा।

सेव सत्येष विज्ञेयः सेन्यादिः स्सको गणः॥

(३) यङ् होने से नहीं होता। यथा, अभिसेसिच्यते।

परिषाष्पज्यते (१), सद्-निषिषादयिषति, विषाषद्यते; सेव्-परिषिषेवे, अभिषिषेव्यते।

१५५। स्तन् भेः

इकारान्त और उकारान्त उपसर्ग के परस्थित अभ्यस्त स्था और स्तम्भ् धातु का स् , त् व्यवधान में भी मूर्द्धन्य होता है। यथा, स्था-अनुतष्ठौ, अधितष्ठौ, अभितष्ठौ, स्तम्भ्-अनुतष्टम्भ, अधितष्टम्भ, अभितष्टम्भ (२)।

१५६। परिपूर्वक स्कृ धातु का स् मूर्द्धन्य होता है। यथा, परिष्करोति, परिष्कारः। अट् व्यवधान में विकल्प से होता है। यथा, पर्य्यष्करोत्, पर्य्यस्करोत्, पर्य्यष्कार्षीत्, पर्य्यस्कार्षीत्।

१५७। अनुविपर्य्यभिनिभ्यः स्यन्दतेरप्राणिषु

अनु, वि, परि, अभि, नी पूर्वक स्यन्द् धातु का स विकल्प से मूद्धर्न्य होता है। यथा, अनुष्यन्दते, अनुस्यन्दतु, विष्यन्दते, विस्यन्दते, परिष्यन्दते, परिस्यन्दते, अभिष्यन्दते, अभिस्यन्दते, निष्यन्दते, निस्यन्दते (३)।

१५८। परेश्च

परि पूर्वक स्कन्द् धातु का स् विकल्प से मूर्द्धन्य होता है। यथा, परिष्कन्दति, परिस्कन्दति, परिष्कण्णः, परिस्कन्नः।

---

(१) लिट् विभक्ति में स्वञ्ज् और सद् धातु का द्वितीय स् मूद्धर्न्य नहीं होता। यथा, स्वञ्ज्-परिषस्वजे, विषस्वजे, सद्-निषसाद, विषसाद।

(२) प्रतिस्तब्ध और निस्तब्ध इन दोनों का स् मूद्धर्न्य नहीं होता है। ण्यन्त करने से लुङ् विभक्ति में स्तम्भ का स् मूद्धर्न्य नहीं होता। यथा, पर्य्यतस्तम्भत्।

(३) प्राणी-कर्त्ता होने से नहीं होता। यथा, अनुस्यन्दते मत्स्यः।

१५९ । वेः स्कन्देरनिष्ठायाम्

निष्ठा भिन्न (१) कृत् प्रत्यय परे रहने से वि पूर्वक स्कन्द् धातु का स् विकल्प से मूर्द्धन्य होता है। यथा, विष्कन्ता, विस्कन्ता, विष्कन्तुम्, विस्कन्तुम्। निष्ठा प्रत्यय में नही होता। यथा, विस्कन्नः, विस्कन्नवान्।

१६० । स्फुरतिस्फुलत्योर्निर्निर्विभ्यः

निर, नि वि पूर्वक स्फुर् और स्फल् धातु का स् विकल्प से मूर्द्धन्य होता है। यथा, स्फुर-निष्फुरति, निःस्फुरति, विष्फुरति, विस्फुरति, स्फुल-निःष्फुलति, निःस्फुलति, विष्फुलति, विस्फुलति।

१६१ । वेःस्कभ्नातेर्नित्यम्

वि पूर्वक स्कन्भ् धातु का स् मूर्द्धन्य होता है। यथा, विष्कभ्नाति, विष्कभ्नितुम्, विष्कभ्नितव्यम् विष्कम्भः, विष्कम्भकः।

१६२ । सुविनिर्दुर्भ्यः सुपि सूति समाः

स्वप् के स्थान में कृत, सुप्, सु, वि, निर्, दुर् उपसर्ग के परवर्ती होने से, दन्त्य स मूर्द्धन्य होता है। यथा, सुषुप्तः, सुषुप्तिः, विषुप्तः, निःषुप्तः, दुःषुप्तः, दुःषुषुपतुः, दुःषुषुपुः।

१६३ । उपसर्ग प्रादुर्भ्यामस्तिर्यच्परः

इकारान्त और उकारान्त उपसर्ग का और प्रादुः शब्द के परवर्ती अस् धातु का स मूर्द्धन्य होता है यथा, निषन्ति, प्रतिषन्ति, अधिषन्ति, अनुषन्ति, परिष्यात्, प्रादुःषन्ति, प्रादुःष्यात्। किन्तु सकार त् थ् म् अथवा वकार के साथ युक्त

(१) क्त और क्तवतु इन्हीं दो कृत् प्रत्ययों को निष्ठा कहते हैं।

रहने से नहीं होता। तथा त-युक्त अधिस्तः, अनुस्तः, प्रादुःस्तः; थः युक्त प्रतिस्थः, अभिस्थः, प्रादुःस्थः; म-युक्त-अधिस्मः, अनुस्मः, प्रादुस्मः; व-युक्त-अनुस्वः, प्रादुःस्वः।

१६४। शासिवासिघसीनाञ्च

वस् धातु के स्थान में उस् होने से, स् मूर्द्धन्य होता है। यथा, उषितः उषितवान्, ऊषतुः, ऊषुः।

१६५। घस् धातु के घ् के स्थान में क् होने से स् मूर्द्धन्य होता है। यथा, जक्षतुः, जक्षुः।

१६६। सहे साढसः

सह् धातु से बने हुए साह् शब्द साट् और साड् होने से स मूर्द्धन्य होता है। यथा, तुराषाट्, तुराषाड्, तुराषाट्सु, तुराषाड्सु, तुराषाड्भ्यः। साह् रहने से नहीं होता। यथा, तुरासाहो, तुरासाहः, तुरासाहम्।

१६७। समासेऽङ्गुलेः सङ्गः

समास होने से अङ्गुलि शब्द के परस्थित सङ्ग शब्द का स् मूर्द्धन्य होता है। यथा, अंगुलिषङ्गः

१६८। सु, वि, निर्, दर् उपसर्ग के परस्थित सम शब्द का स मूर्द्धन्य होता है। यथा सुषमः, विषमः, निःषमः दुःषमः।

१६९। एतिसंज्ञायामगात्

संज्ञा नाम बोध होने पर, अ आ भिन्न स्वर के परस्थित, सेना शब्द का स् मूर्द्धन्य होता है। यथा, सुषेणः, हरिषेणः, मधुषेणः। संज्ञा नहीं बोध होने से नहीं होता। यथा, कुरुसेना, यदसेना, कपिसेना।

१७०। भूमि और दिवि शब्द के परवर्ती स्थ शब्द का स् मूर्द्धन्य होता है यथा, भूमिष्ठः, दिविष्ठः।

१७१ । गवियुधिभ्यां स्थिरः

युधि शब्द के परवर्ती स्थिर शब्द का स् मूद्र्धन्य होता है । यथा, युधिष्ठिरः ।

१७२ । मातृपितृभ्यामं स्वसा

समास होने से, मातृ और पितृ शब्द के परवर्ती स्वसृ शब्द का पहला स् मूद्र्धन्य होता है । मथा, मातृष्वसा, पितृष्वसा । विभक्ति रहने पर विकल्प से होता है । यथा, मातुःष्वसा, मातुःस्वसा, पितुःष्वसा, पितुःस्वसा । समास नहीं होने से नही होता । यथा, मातुः स्वसा, पितुःस्वसा । *

QUESTIONS.

1. We see अशीःषु and हवींसु but पुंसु । what is the cause of this change ?

2. Why has the स् of सिच् धातु been changed in ष; in सिषेवे ? Is it always so ? State if there is any exception ?

3. Under what circumstance the स् of a धातु remains unchanged ? Is there any exception ?

4 When does the स् of स्था and स्तम्भ धातु Changed into ष and when not ?

5. point out if there is any mistake in the following;

---

* निम्न लिखित शब्दों में ष् स्वभाविक है ।

मञ्जु. षेषां प्रदोषो वृषवृषभमृषाषादराष्ट्रोष्ट्रकष्टम् ,

ग्रीष्मोऽस्मश्लेअभीप्सा विषयविषविषाणानि कुष्माण्डषण्डौ ।

ज्ञातिषु, हस्तिसु; दारेसु, मन्त्रिषु, पक्षिषु, परिस्कार, निष्पन्द्‌न्ते and परिष्कन्दित । Correct the wrong one and justify your answers.

6. Explain and illustrate the principle rule by which dental स is Changed into Cerebral ष ।

सुवन्त प्रकरण

(Declension.)

१७३। प्रातिपदिक के उत्तर सात विभक्तियाँ होती हैं; प्रथम (Nominative), द्वितीय (accusative). तृतीया (instrumental), चतुर्थी (Dative), पञ्चमी (ablative), षष्ठी (Genetive), सप्तमी (Locative)। एक विभक्ति के ३ वचन (Number) होते हैं एकवचन (Singular), द्विवचन (Dual), बहुवचन (Plural)। एकवचन से एक संख्या का बोध होता है और बहुवचन से तीन से लेकर परार्द्ध * तक की सब संख्याओं का बोध होता है।

---

* परार्द्ध एक संख्या है। काशी दारानगर (वृद्धकूप के समीप) निवासी कायस्थ जयगोपाल सिंह नाजिर से जिन्हें वहां वाले पालसिंह कहते थे, अरबी विद्या में उस समय उनकी बराबरी करने वाला कोई न था। वे कविता और मानस-रामायण के परम अनुरागी थे। उन्होंने तुलसी–शब्दार्थ प्रथम प्रकाश के सप्तम भेद में लिखा है :—

एकरु दश शत सहस गनि, अयुत लक्ष प्रयुतौर ।
कोटि रु अर्बुद अब्ज भनि, खर्ब निखर्व सुठौर ॥
महापदम संख रु जलधि, अन्तज मध्य परार्ध ।
अष्टादश ए सुक्रमकरि दशदश गुण हैं सार्ध ॥, [अनुवादक]

विभक्तियों का रूप (Declensional Terminations.)

	एकवचन Singular	द्विवचन Dual	बहुवचन Plural
१ मा	:	औ	अः
२ या	अम्	औ	अः
३ या	आ	भ्याम्	भिः
४ र्थी	ए	भ्याम्	भ्यः
५ मी	अः	भ्याम्	भ्यः
६ ष्ठी	अः	ओः	आम्
७ मी	इ	ओ.	सु

इन्हीं सात विभक्तियों का नाम सुप् है। सुप् को प्रातिपदिक के साथ योग करने से पद बनते हैं। सुप् अन्त में युक्त होने से पद बनते हैं इसी लिये इन पदों को सुवन्त पद कहते हैं।

१७४। विभक्ति का योग होने से प्रातिपदिक से किसी २ अंश का रूपान्तर होता है और किसी २ विभक्ति का रूपान्तर प्राप्त अथवा लोप होता है यथा;

वैयाकरण लोगों ने इन इक्कीस विभक्तियों का आकार निम्न लिखित प्रकार से लिखा है :—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सु	औ	जस्
द्वितीया	अम्	औट्	शस्
तृतीया	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी	ङि	ओस्	सुप्

[नोट का शेष अंश पेज ६१ में देखिये]

नर शब्द (Man)

प्रथमा	नरः–	नरः	नर-औ	नरौ,	नर-अः	नराः ।
द्वितीया	नर-अम्	नरम्	नर-औ	नरौ	नर-अः	नरान् ।
तृतीया	नर-आ	नरेण	नर-भ्याम्	नराभ्याम्	नर भिः	नरैः ।
चतुर्थी	नर-ए	नराय	नर-भ्याम्	नराभ्याम्	नर-भ्यः	नरेभ्यः ।
पञ्चमी	नर-अः	नरात्	नर-भ्याम्	नरा-भ्याम्	नरभ्यः	नरेभ्यः ।
षष्ठी	नर-अः	नरस्य,	नर-ओः	नरयोः	नर-आम्	नराणाम् ।
सप्तमी	नर-इ	नरे	नर-ओः	नरयोः	नर-सु	नरेषु ।

मुनि शब्द (Sage)

प्रथमा	मुनिः–	मुनिः	मुनि-औ	मुनी	मुनि-अः	मुनयः
द्वितीया	मुनि-अम्	मुनिम्	मुनि-औ	मुनी	मुनि-अः	मुनीन् ।
तृतीया	मुनि-आ	मुनिना	मुनि-भ्याम्	मुनिभ्याम्	मुनि-भिः	मुनिभिः ।
चतुर्थी	मुनि-ए	मुनये	मुनि-भ्याम्	मुनिभ्याम्	मुनि-भ्यः	मुनिभ्यः ।
पञ्चमी	मुनि-अः	मुनेः	मुनि-भ्याम्	मुनिभ्याम्	मुनि-भ्यः	मुनिभ्यः ।
षष्ठी	मुनि-अ	मुनेः	मुनि-ओः	मुन्योः	मुनि-आम्	मुनीनाम् ।
सप्तमी	मुनि-इ	मुनौ	मुनि-ओः	मुन्योः	मुनि-सु	मुनिषु ।

सुहृद् शब्द (Friend)

प्रथमा	सुहृद्-स्	सुहृत्	सुहृद्-औ	सुहृदौ	सुहृद्-अः	सुहृदः ।
द्वितीया	सुहृद्-अम्	सुहृदम्	सुहृद्-औ	सुहृदौ	सुहृद्-अः	सुहृदः ।
तृतीया	सुहृद्-आ	सुहृदा	सुहृद्-भ्याम्	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्-भिः	सुहृद्भिः ।
चतुर्थी	सुहृद्-ए	सुहृदे	सुहृद्-भ्याम्	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्-भ्यः	सुहृद्भ्यः ।
पञ्चमी	सुहृद्-अः	सुहृदः	सुहृद्-भ्याम्	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्-भ्यः	सुहृद्भ्यः ।
षष्ठी	सुहृद्-अः	सुहृदः	सुहृद्-ओः	सुहृदोः	सुहृद्-आम्	सुहृदाम् ।
सप्तमी	सुहृद्-इ	सुहृदि	सुहृद्-ओः	सुहृदोः	सुहृद्-सु	सुहृत्सु ।

विद्वस् शब्द (Learned)

प्रथमा	विद्वस:	विद्वान्	विद्वस्-औ	विद्वांसौ	विद्वस्-अः	विद्वांसः ।
द्वितीया	विद्वस्-अम्	विद्वांसम्	विद्वस्-औ	विद्वांसौ	विद्वस्-अः	विदुषः ।
तृतीया	विद्वस्-आ	विदुषा	विद्वस्-भ्याम्,	विद्वद्भ्याम्	विद्वस्-भिः	विद्वद्भिः ।
चतुर्थी	विद्वस्-ए	विदुषे	विद्वस्-भ्याम्,	विद्वद्भ्याम्	विद्वस्-भ्यः	विद्वद्भ्यः ।
पञ्चमी	विद्वस्-अः	विदुषः	विद्वस्-भ्याम्	विद्वद्भ्याम्	विद्वस्-भ्यः	विद्वद्भ्यः ।
षष्ठी	विद्वस्-अः	विदुषः	विद्वस्-ओः	विदुषोः	विद्वस्-आम्	विदुषाम् ।
सप्तमी	विद्वस्-इ	विदुषि	विद्वस्-ओः	विदुषोः	विद्वस्-सु	विद्वत्सु ।

किस शब्द में किस विभक्ति का योग करने से कैसा रूप होता है सो यथाक्रम दिखाया जाता है। सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होते हैं; इसलिए सम्बोधन मे शब्दों के रूप प्रथमा ही की तरह होते हैं। किन्तु किसी २ शब्द के सम्बोधन के एक वचन में भिन्न रूप होते हैं। इसी लिये सम्बोधन के एकवचन का रूप पृथक् लिखना पड़ता है।

स्वरान्त शब्द Words ending in vowels.

पुलिंग (Masculine.)

अ-कारान्त-नर शब्द (Man)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नरः	नरौ	नराः
द्वितीया	नरम्	नरौ	नरान्
तृतीया	नरेण	नराभ्याम्	नरैः
चतुर्थी	नराय	नराभ्याम्	नरेभ्यः
पञ्चमी	नरात्	नराभ्याम्	नरेभ्यः
षष्ठी	नरस्य	नरयोः	नराणाम्

वे पहके इन्ही प्रकार निर्देश करके कार्य्यकाल में सु का उकार, जस् का ज, और टा का ट, शस का श, ङे ङस् ङि इन तीनों का ङ्, ङसि का ङ और इकार तथा सुप् का प छोड़ देते हैं और सु, जस्, शस् भिस्, भ्यस्, ङसि, ङस् इन सबों के स के स्थान में विसर्ग करते हैं। उ ज, ट, ङ, श, इ, प इन को छोड़ने और सु इत्यादि के स के स्थान में विसर्ग करने से विभक्ति का जो रूप रहता है वही मूल में परिगृहीत होता है। आदि अक्षर सु और अन्त्य अक्षर प लेकर के वैयाकरण लोगों ने विभक्तियों का नाम सुप् निर्देश किया है।

सप्तमी	नरे	नरयोः	नरेषु
सम्बोधन	नर		

अल्प आदि और द्वितीय तृतीय शब्द भिन्न प्रायः सब पुलिङ्ग अकारान्त शब्दों (१) के रूप ऐसे ही होते हैं।

अल्प आदि के (२) केवल प्रथमा के बहुवचन मे कुछ विशेषता है यथा, अल्पे, अल्पाः। द्वितीय और तृतीय शब्दों में केवल चतुर्थी पंचमी और सप्तमी के एकवचन में कुछ विशेषता है। यथा—

	चतुर्थी	पञ्चमी	सप्तमी
द्वितीय	द्वितीयस्मै	द्वितीयस्मात्	द्वितीयस्मिन्
	द्वितीयाय	द्वितीयात्	द्वितीये
तृतीय	तृतीयस्मै	तृतीयस्मात्	तृतीयस्मिन्
	तृतीयाय	तृतीयात्	तृतीये

आ-कारान्त हाहा शब्द (गन्धर्व विशेष)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हाहाः	हाहौ	हाहाः
द्वितीया	हाहाम्	हाहौ	हाहाः
तृतीया	हाहा	हाहाभ्याम्	हाहाभिः
चतुर्थी	हाहै	हाहाभ्याम्	हाहाभ्यः
पञ्चमी	हाहाः	हाहाभ्याम्	हाहाभ्यः

---

(१) कर (A ray of light, the hand, tax. an elephants, trunk, Deer, Bull, अर्थात्—प्रकाश की किरण, हाथ, कर, हाथी की सूंड़, मृग (हरिन); वृष (बैल)।

(२) अल्प, प्रथम, चरम, अर्द्ध, कतिपय, द्वय, त्रय, द्वितीय, त्रितीय, चतुष्टय इत्यादि।

षष्ठी	हाहाः	हाहोः	हाहाम्
सप्तमी	हाहे	हाहो	हाहासु
सम्बोधन	हाहाः		

धातु निष्पन्न भिन्न सब पुलिङ्ग आकारान्त शब्दों के ऐसे ही रूप होते हैं।

धातु निष्पन्न आकारान्त–विश्वपा शब्द

(Sun, Moon, five)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विश्वपा	विश्वपौ	विश्वपाः
द्वितीया	विश्वपाम	विश्वपौ	विश्वपः
तृतीया	विश्वपा	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभिः
चतुर्थी	विश्वपे	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः

रोष (Anger—क्रोध), वृक्ष (Tree—पेड़); अर्थ (Wealthe—धन-दौलत), अश्व (Horse—घोड़ा), गज (Elephant—हाथी), सागर (Sea—समुद्र), देव (Deity—देवता), (असुर Demon-राक्षस), सूर्य्य (Sun—सूरज), चन्द्र (moon—चन्द्रमा); अनल Eire—आग); अनिल (Air—हवा), सिंह (Lion—शेर), व्याघ्र (Tiger—चीता), सर्प (Snake—साँप) मत्स्य (Eish—मछली, विहग (Bird—पक्षी), स्वर्ग (Heaven), मेघ (Cloud—बादल), काल (Time—समय), कण्ठ (Throat—गला); केश (Hair—बाल), नख (Nail—नाखून), ओष्ठ (Lip—ओंठ); शिक्षक (Teacher), छात्र (Pupil), ग्राम (Village—गाँव), आलय (House—घर), रस (Juice), गन्ध (Scent), शब्द Sound—आवाज), ग्रीष्म (Summer—गर्मी), वसन्त (Spring) कुक्कुर (Dog—कुत्ता), मार्जार (Cat—बिल्ली), शृगाल (Jackal—सियार), मूषिक (Mouse—चूहा) इत्यादि अकारान्त पुलिंग शब्दों के रूप नर शब्द के समान ही होते हैं।

पञ्चमी	विश्वपः	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
षष्ठी	विश्वपः	विश्वपोः	विश्वपाम्
सप्तमी	विश्वपि	विश्वपोः	विश्वपासु
सम्बोधन	विश्वपाः		

(१) धातु निष्पन्न सब आकारान्त शब्दों के ऐसे ही रूप होते हैं।

इकारान्त-मुनि शब्द (Sage.)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पञ्चमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
सम्बोधन	मुने		

पति और सखि शब्द भिन्न सब पुल्लिङ्ग इकारान्त (२) शब्दों के ऐसे ही रूप होते हैं।

---

(१) गोपा Cowherd. सोमपा one who drinks the soma juice, धूम्रपा one who inhales smoke, बलदा Strength giver, शंखध्मा Counch shel blower इत्यादि धातु से बने हुए सब आकारान्त शब्दों के रूप विश्वपा शब्द के सदृश होते हैं।

(२) निधि (Gem—मणि), विधि (Rule, Destiny); गिरि (Mountain—पहाड़); अग्नि (Fire—आग), कवि (poet), कपि (Monkey—बन्दर); ऋषि (A Saint);

पति शब्द (१) (Husband, Lord)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पञ्चमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	पते		

सखि शब्द (Friend)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायाम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः

रवि (The Sun—सूर्य्य), पाणि (Hand—हाथ), अरि (Enemy.—शत्रु), असि (Sword—तलवार), अतिथि (A guest), मणि (Jewal), राशि (Heap—ढेर), मसि (Ink—स्याही) , हरि (God Vishnu—विष्णु), इत्यादि ह्रस्व इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप मुनि शब्द के ही समान होते हैं।

(१) अन्य अन्य शब्दों के साथ पति शब्द का समास होने से उसके रूप मुनि शब्द के तुल्य होते हैं। यथा, नृपति, भूपति, महीपति. नरपति (king) इत्यादि।

षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	सखे		

ईकारान्त-सुधी-शब्द-पंडित (Learned.)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
द्वितीया	सुधियम्	सुधियौ	सुधियः
तृतीया	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
चतुर्थी	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
पञ्चमी	सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीयाम्
षष्ठी	सुधियः	सुधियोः	सुधियाम्
सप्तमी	सुधियि	सुधियोः	सुधीषु
सम्बोधन	सुधीः		

सेनानि (general), अग्रणी (Leader), ग्रामणी (superitendent) आदि कई एक शब्दों को छोड़ कर प्रायः सब ईकारान्त शब्दों (१) के ऐसे ही रूप होते हैं।

सेनानी शब्द । सेनापति (A general)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सेनानीः	सेनान्यौ	सेनान्यः
द्वितीया	सेनान्यम्	सेनान्यौ	सेनान्यः
तृतीया	सेनान्या	सेनानीभ्याम्	सेन.नीभिः
चतुर्थी	सेनान्ये	सेनानीभ्याम्	सेनानीभ्यः
पञ्चमी	सेनान्यः	सेनानीभ्याम्	सेनानीभ्यः
षष्ठी	सेनान्यः	सेनान्योः	सेनान्याम्

(१) सुश्री, शुद्धी, हतधी, दुर्धी, यवक्री भद्री इत्यादि।

सप्तमी	सेनान्याम्	सेनान्योः	सेनानीषु
सम्बोधन	सेनानीः		

अग्रणी आदि शब्दों के भी ऐसे ही रूप होते हैं। प्रधी आदि कई एक शब्द सेनानी शब्द के तुल्य होते हैं, केवल सप्तमी के एकवचन में प्रध्यि ऐसा पद होता है। इतनी ही विशेषता है और वातप्रमी आदि कई एक शब्द हैं, जिनके रूप सेनानी शब्द के समान होते हैं, केवल द्वितीया के एकवचन में वातप्रमीम्, द्वितीया के बहुवचन में वातप्रमीन् और सप्तमी के एकवचन में वातप्रमी ऐसे पद होते हैं। इतनी ही विशेषता है।

उकारान्त—साधु शब्द (Pious man.)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	साधुः	साधू	साधवः
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
पञ्चमी	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
सप्तमी	साधौ	साध्वोः	साधुषु
सम्बोधन	साधो		

प्रायः सब ह्रस्व उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों (१) के ऐसे ही रूप होते हैं।

दीर्घ ऊकारान्त-प्रतिभू शब्द। प्रतिनिधि (Representative)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	प्रतिभूः	प्रतिभुवौ	प्रतिभुवः

(१) प्रभु (Master—मालिक); (विभु—Lord), रिपु (Enemy—शत्रु), ऋतु (Season—मौसिम); शिशु (Child,

द्वितीया	प्रतिभुवम्	प्रतिभुवौ	प्रतिभुवः
तृतीया	प्रतिभुवा	प्रतिभूभ्याम्	प्रतिभूभिः
चतुर्थी	प्रतिभुवे	प्रतिभूभ्याम्	प्रतिभूभ्यः
पञ्चमी	प्रतिभुवः	प्रतिभूभ्याम्	प्रतिभूभ्यः
षष्ठी	प्रतिभुवः	प्रतिभुवोः	प्रतिभुवाम्
सप्तमी	प्रतिभुवि	प्रतिभुवोः	प्रतिभूषु
सम्बोधन	प्रतिभूः		

सुलू, खलपू, वर्षाभू, करभू, काराभू, आदि को छोड़कर प्रायः सब दीर्घ उकारान्त शब्दों (१) के ऐसे ही रूप होते हैं।

सुलू शब्द। उत्कृष्ट छेदनकारी (Sharp cutter.)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुलूः	सुल्वौ	सुल्वः
द्वितीया	सुल्वम्	सुल्वौ	सुल्वः
तृतीया	सुल्वा	सुलूभ्याम्	सुलूभिः
चतुर्थी	सुल्वे	सुलूभ्याम्	सुलूभ्यः
पञ्चमी	सुल्वः	सुलूभ्याम्	सुलूभ्यः
षष्ठी	सुल्वः	सुल्वोः	सुल्वाम्
सप्तमी	सुल्विः	सुल्वोः	सुलूषु
सम्बोधन	सुलूः		

—बच्चा); पशु (Beast), विधु (Moon—चन्द्र), भानु (Sun—सूर्य्य); वायु (Air—हवा); गुरु (Teacher), बन्धु (Friend—मित्र), धातु (Metal), सिन्धु (Sea), तरु (Tree—वृक्ष), शम्भु (Shiva), इत्यादि शब्दों के रूप साधु शब्द के समान होते हैं।

(१) मनोभू, अग्निभू, स्वभू, अधिभ्भू, जितभू, इत्यादि।

खलपू (Sweper) आदि शब्दों के भी ऐसे ही रूप होते हैं। हूहू (A gandharba) आदि कई एक शब्दों के रूप सुलू शब्द के समान होते हैं केवल द्वितीया के एकवचन में हूहूम् और बहुवचन में हूहून् ऐसा पद होता है इतनी विशेषता है।

ऋ-कारान्त—दातृ शब्द दाता (Donor.)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दाता	दातारौ	दातारः
द्वितीया	दातारम्	दातारौ	दातॄन्
तृतीया	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
चतुर्थी	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पञ्चमी	दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
षष्ठी	दातुः	दात्रोः	दातॄणाम्
सप्तमी	दातरि	दात्रोः	दातृषु
सम्बोधन	दाताः		

नृ सब्द-नर (Man.)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ना	नरौ	नरः
द्वितीया	नरम्	नरौ	नॄन्
तृतीया	न्रा	नृभ्याम्	नृभिः
चतुर्थी	न्रे	नृभ्याम्	नृभ्यः
पञ्चमी	नुः	नृभ्याम्	नृभ्यः
षष्ठी	नुः	न्रोः	नृणाम्, नॄणाम्
सप्तमी	नरि	न्रोः	नृषु
सम्बोधन	नः		

भ्रातृ, पितृ, जमातृ, नृ, सव्वेंष्टृ और देवृ आदि कई

एक शब्दों को छोड़ कर सब ऋकारान्त शब्दों (१) के ऐसे ही रूप होते हैं। भ्रातृ आदि शब्दों के भी केवल प्रथमा के द्विवचन और बहुवचन मे और द्वितीया के एकवचन मे विशेषता है, और सब विभक्तियों के रूप दातृ शब्द के तुल्य हैं। यथा,

भ्रातृ शब्द। भाई (Brother.)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भ्राता	भ्रातरौ	भ्रातरः
द्वितीया	भ्रातरम्	भ्रातरौ	भ्रातॄन्
तृतीया	भ्रात्रा	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभिः
चतुर्थी	भ्रात्रे	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभ्यः
पञ्चमी	भ्रातुः	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभ्यः
षष्ठी	भ्रातुः	भ्रात्रोः	भ्रातॄणाम्
सप्तमी	भ्रातरि	भ्रात्रोः	भ्रातृषु
सम्बोधन	भ्रातः		

पितृ (Father—पिता); जामातृ (Son-in-law—दामाद) देवृ (Husbands' brother—देवर) सव्येष्टृ (Charioteer—सारथि); इत्यादि शब्दों के रूप भ्रातृ शब्द के समान होते हैं।

ओ-कारान्त—गो शब्द (साढ़, बैल Bull.)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	गावौ	गाः

(१) कर्तृ (Agent), धातृ (Creator), विधातृ (Creator) सवितृ (Sun), श्रोतृ (Hearer), क्रेतृ (Buyer), द्रष्टृ (Looker), इत्यादि पुलिङ्ग शब्दों के रूप दातृ शब्द के ही समान होते हैं।

तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
चतुर्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पञ्चमी	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	गवोः	गोषु
सम्बोधन	गौः		

सब पुल्लिङ्गओकारान्त शब्दों के ऐसे ही रूप होते हैं।

औकारान्त—ग्लौ शब्द। चन्द्रमा

Moon, Camphor, Earth,

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ग्लौः	ग्लावौ	ग्लावः
द्वितीया	ग्लावम्	ग्लावौ	ग्लावः
तृतीया	ग्लावा	ग्लौभ्याम्	ग्लौभिः
चतुर्थी	ग्लावे	ग्लौभ्याम्	ग्लौभ्यः
पञ्चमी	ग्लावः	ग्लौभ्याम्	ग्लौभ्यः
षष्ठी	ग्लावः	ग्लावोः	ग्लावाम्
सप्तमी	ग्लाविः	ग्लावोः	ग्लौषु
सम्बोधन	ग्लौः		

सब पुलिङ्ग औ-कारान्त शब्दों के ऐसे ही रूप होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग (Faminine)

आ-कारान्त—लता शब्द (Creeper.)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः

चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पञ्चमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	लते		

अम्बा, द्वितीया, तृतीया और जराशब्द को छोड़ कर सब आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों (१) के रूप लता शब्द के तुल्य हैं। अम्बा शब्द के सम्बोधन के एकवचन में अम्ब ऐसा रूप होता है, इतनाही विशेष है, और सब विभक्तियों का रूप लता शब्द के तुल्य है। द्वितीया और तृतीया शब्दों की चतुर्थी, पञ्चमी षष्ठी और सप्तमी के एकवचन में विशेषता होती है। यथा,

चतुर्थी	पञ्चमी	षष्ठी	सप्तमी
द्वितीयस्यै	द्वितीयस्याः	द्वितीयस्याः	द्वितीयस्याम्
द्वितीयायै	द्वितीयायाः	द्वितीयायाः	द्वितीयायाम्

और सब विभक्तियों के रूप लता शब्द के सदृश हैं। तृतीया शब्द द्वितीया शब्द के समान है।

जरा शब्द (Old age) बुढ़ापा

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जरा	जरसौ, जरे,	जरसः जराः
द्वितीया	जरसम्, जराम्	जरसौ, जरे,	जरसः, जराः
तृतीया	जरसा, जरया	जराभ्याम्	जराभिः

(१) विद्या (Learing), शिखा (Flame), जटा (Matted locks), रेखा (Line), निशा (Night), प्रभा (Light), सेवा (Service), शोभा (Beauty) इत्यादि शब्दों के रूप लता शब्द के समान होते हैं।

चतुर्थी	जरसे, जरायै	जराभ्याम्	जराभ्यः
पञ्चमी	जरासः, जरायाः	जराभ्याम्	जराभ्यः
षष्ठी	जरसः, जरायाः, जरसोः, जरयोः, जरसाम्, जराणाम्		
सप्तमी	जरसि, जरायाम्	जरसोः, जरयोः	जरासु
सम्बोधन	जरे		

इ-कारान्त—मति शब्द (बुद्धि) Intellect.

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	मते		

सब ह्रस्व इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के (१) रूप मति शब्द के तुल्य होते हैं।

---

(१) धूलि (Dust) ; आलि (Female attendant of a woman), आवलि (Row), श्रेणी (Row), भूमि (Earth); पङ्क्ति (Line), ओषधि (Herb) व्रतति (A creeper); अंगुलि (Finger), इत्यादि शब्दों के रूप मति शब्द के समान हैं।

मति शब्द मन् धातु भाव में क्ति प्रत्यय द्वारा निष्पन्न हुआ है, भाववाच्य में क्ति प्रत्यय—निष्पन्न समस्त शब्द स्त्रीलिङ्ग मति शब्द के समान ही होते हैं। यथा-गति (Going), बुद्धि (Understanding) भक्ति (Devotion); मुक्ति (Abolution), श्रुति (The Vedas), भूति

ईकारान्त—नदी शब्द (River.)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्य.
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	नदी		

श्री, ह्री, धी, भी और स्त्री इत्यादि को छोड़ कर प्रायः सब दीर्घ इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों (१) के रूप नदी शब्द के तुल्य होते हैं। लक्ष्मी शब्द की प्रथमा के एकवचन में लक्ष्मीः विसर्ग-

---

(Prosperity), आसक्ति (Attachment), विरक्ति (Aversion), अनुरक्ति (Affection), स्तुति (Hymn), नीति (Politics), प्रकृति Nature), आकृति (Form), शान्ति (Peace of mind), प्रणति (Salutation), कान्ति (Beauty), कृति (Action), स्मृति (Memory) इत्यादि शब्दों के रूप भी मति शब्द के ही सदृश होते हैं।

(१) अटवी (Forest), श्रेणी (Line), वीथी (Road), औषधी (Medicinal plant), अंगुली (Finger), मंजरी (Blossom), कुमारी (Maid), सुन्दरी (Abeautiful woman), जननी (Mother), भगिनी (Sister), रजनी (Night), अवनी (Earth), राज्ञी (Queen), पत्नी (Wife), पृथ्वी (Earth), कामिनी (Woman), मानवी (Woman), सिंहनी (Lioness), व्याघ्री (Tigress), शूकरी (Sow), घोटकी (Mare), हंसी (Duck), इत्यादि शब्दों के रूप नदी शब्द के समान होते हैं।

युक्त ऐसा पद होता है और सब विभक्तियों में नदी शब्द के समान रहता है।

श्री शब्द—लक्ष्मी (Eortune, Beauty,)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृतीय	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभि
चतुर्थी	श्रियौ, श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियाः, श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियाः,श्रियः	श्रियोः	श्रियाम्, श्रीणाम्
सप्तमी	श्रियाम्, श्रियि	श्रियोः	श्रीषु

ह्री (Shame), धी (intelect), और भी (fear) शब्द (के रूप) श्री शब्द के तुल्य होते हैं।

स्त्री शब्द–(पत्नी Wife)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः, स्त्रीः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पञ्चमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियो.	स्त्रीषु
सम्बोधन	स्त्रि		

ह्रस्व उकारान्त—धेनु शब्द (गाय) Cow

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः

द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्, धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	धेनो		

सब ह्रस्व उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप (१) ऐसे ही होते हैं।

दीर्घ ऊकारान्त—वधू शब्द (Bride)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्योः	वधूषु
सम्बोधन	वधू		

भू, भ्रू, सुभ्रू आदि भिन्न सब दीर्घ ऊकारान्त (२) स्त्रीलिङ्ग शब्दों के ऐसे ही रूप होते हैं।

भू शब्द । पृथ्वी (Earth)

---

(१) तनु (body), रेणु (dust), चंचु (beak), उडु (Lunar mansion) इत्यादि ।

(२) चमु (carmy), चञ्चू (beck), तनू (body), पुनर्भू (re-born), प्रसू (mother), वीरसू (mother of Hero), इत्यादि ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भूः	भुवौ	भुवः
द्वितीया	भुवम्	भुवौ	भुवः
तृतीया	भुवा	भूभ्याम	भूभिः
चतुर्थी	भुवै, भुवे	भूभ्याम्	भूभ्यः
पञ्चमी	भुवाः भुवः	भूभ्याम्	भूभ्यः
षष्ठी	भुवाः, भुवः	भुवोः	भुवाम्, भूनाम्
सप्तमी	भुवाम्; भुवि	भुवोः	भूषु
सम्बोधन भूः			

भ्रू (Eye braw) और सुभ्रू (woman having beautiful eyes) शब्द के रूप भू शब्द के तुल्य है। केवल सुभ्र शब्द के सम्बोधन के एकवचन में 'सुभ्रु' यही ह्रस्व उकारान्त विसर्ग-हीन पद होता है इतनी ही विशेषता है।

ऋकारान्त

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द पांच हैं—दुहितृ (daughter) मातृ (mother), यातृ (wife of husbands, brother), ननान्दृ, (husbands wife), स्वसृ (sister)। इन में दुहितृ, मातृ, यातृ ननान्दृ ये चार शब्द भ्रातृ शब्द के तुल्य हैं, केवल इतना ही भेद है कि द्वितीया के बहुवचन में दुहितृः, मातृः, यातृः, ननान्दृः ऐसे पद होते हैं। और स्वसृ ऐसा पद होताहै इतनी ही विशेषता है।

ओकारान्त और औकारान्त

स्त्रीलिङ्ग ओकारान्त और औकारान्त शब्द पुलिङ्ग ओकारान्त और औकारान्त शब्द के तुल्य होते हैं। द्यो (heaven) शब्द के तुल्य है, नौ (boat) शब्द ग्लौ शब्द के तुल्य है।

स्वरान्त–क्लीव (नपुंसक) लिङ्ग Neuter

अ–कारान्त—फल शब्द (Fruit)

क्लीवलिङ्ग अकारान्त शब्द पुल्लिङ्ग के तुल्य होते हैं। केवल प्रथमा और द्वितीया की विभक्तियों में विशेषता है। जैसे—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	फल		

प्रायः सब अकारान्त क्लीवलिङ्ग शब्दों (१) के ऐसे ही रूप होते हैं।

---

(१) जल (Water), वन (Forest), कानन (Forest), धन (Riches), तृण (Grass), पुष्प (Flower), कमल (Lotus), मूल (Root), पत्र (Leaf), कुसुम (Flower), अपत्य (Offspring), कलत्र (Wife), मित्र (Friend), सुख (Happiness), दुःख (Sorrow), पुण्य (Merit), पाप (Sin), सौन्दर्य्य (Beauty), ज्ञान (Knowledge), गान (Song), ध्यान (Meditation), मांस (Flesh), रक्त (Blood), मुख (Face), नयन (Eye), स्वर्ण (Gold), ताम्र (Copper), रजत (Silver), लोह (Iron), गगन (Sky), नक्षत्र (Star), विवर (Hole), उदक (Water), पर्ण (Leaf), हिम (Frost), द्रविण (Wealth), बल (Strength), प्रमाण (Proof), कारण (Cause), लक्षण (Sign) इत्यादि शब्द के रूप फल शब्दों के समान होते हैं।

ई-कारान्त—वारि शब्द जल-(Water)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणो	वारिषु
सम्बोधन	वारे, वारि		

अक्षि (Eye), अस्थि (Bone), सक्थि (Thigh), दधि (Curds) भिन्न सब विशेष्य ह्रस्व इकारान्त क्लीबलिङ्ग शब्दो के ऐसे ही रूप होते हैं ।

अक्षि शब्द चक्षु (Eye.)

प्रथमा	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
द्वितीया	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
तृतीया	अक्ष्णा	अक्षिभ्याम्	अक्षिभिः
चतुर्थी	अक्ष्णे	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
पञ्चमी	अक्ष्णः	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
षष्ठी	अक्ष्णः	अक्ष्णोः	अक्ष्णाम्
सप्तमी	अक्ष्णि, अक्षणि	अक्ष्णोः	अक्षिषु
सम्बोधन	अक्षे, अक्षि		

अस्थि, सक्थि और दधि शब्द के ऐसे ही रूप होते हैं।

ह्रस्व उकारान्त—मधु शब्द (Honey)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधुनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु

सब विशेष्य ह्रस्व उकारान्त क्लीबलिङ्ग शब्दों (१) के ऐसे ही रूप होते हैं।

विशेषण

विशेषण ह्रस्व इकारान्त और उकारान्त शब्दों के रूप विशेष्य इकारान्त और उकारान्त शब्दों के तुल्य होते हैं। केवल ए, इ, ओः पञ्चमी, षष्ठी की अः विभक्ति में पुलिङ्ग इकारान्त और उकारान्त शब्दों के तुल्य रूप होते हैं। यथा—

अनादि शब्द (Eternal.)

प्रथमा	अनादि	अनादिनी	अनादीनि
द्वितीया	अनादि	अनादिनी	अनादीनि
तृतीया	अनादिना	अनादिभ्याम्	अनादीभिः
चतुर्थी	अनादिने, अनादये	अनादिभ्याम्	अनादिभ्यः
पञ्चमी	अनादिनः, अनादेः	अनादिभ्याम्	अनादिभ्यः
षष्ठी	अनादिनः, अनादे.	अनादिनोः, अनाद्योः	अनादीनाम्

(१) जानु (Knee), दारु (Wood), अम्बु (Water), सानु (Tableand) इत्यादि।

सप्तमी	अनादिनि, अनादौ, अनादिनो अनाद्योः		अनादिषु
सम्बोधन	अनादे, अनादि		

स्वादु शब्द—स्वादिष्ट (Sweet)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्वादु	स्वादुनी	स्वादूनि
द्वितीया	स्वादु	स्वादुनी	स्वादूनि
तृतीया	स्वादुना	स्वादुभ्याम्	स्वादुभिः
चतुर्थी	स्वादुने, स्वादवे	स्वादुभ्याम्	स्वादुभ्यः
पञ्चमी	स्वादुनः, स्वादोः	स्वादुभ्याम्	स्वादुभ्यः
षष्ठी	स्वादुनः, स्वादोः	स्वादुनोः, स्वाद्वोः	स्वादूनाम्
सप्तमी	स्वादुनि, स्वादो	स्वादुनोः, स्वाद्वोः	स्वादुषु
सम्बोधन	स्वादौ, स्वादु		

ऋकारान्त—धातृ—रक्षाकर्ता (Creator)

प्रथमा	धातृ	धातृणी	धातृणि
द्वितीया	धातृ	धातृणी	धातृणि
तृतीया	धातृणा, धात्रा	धातृभ्याम्	धातृभिः
चतुर्थी	धातृणे, धात्रे	धातृभ्याम्	धातृभ्यः
पञ्चमी	धातृणः, धातुः	धातृभ्याम्	धातृभ्यः
षष्ठी	धातृणः, धातुः	धातृणोः, धात्रोः	धातृणाम्
सप्तमी	धातृणि, धातरि	धातृणोः, धात्रोः	धातृषु
सम्बोधन	धातृ., धातृ		

सब ह्रस्व ऋकारान्त क्लीवलिङ्ग शब्दों के रूप धातृ शब्द के तुल्य हैं। यथा, कर्तृ (Doer Author), दातृ (Giver) जेतृ (Conqueror) इत्यादि।

व्याञ्जनान्त शब्द

Words ending in consonants.

पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग ।

व्यञ्जनान्त शब्दों में विभक्ति योग करने से पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग के कारण शब्दों के रूप में विलक्षणता नहीं होती। इस लिये दोनों शब्दों के रूप एक प्रकरण में लिखे जाते हैं।

च-कारान्त—जलमुच् शब्द-मेघ (Cloud)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जलमुक्	जलमुचौ	जलमुचः
द्वितीया	जलमुचम्	जलमुचौ	जलमुचः
तृतीया	जलमुचा	चलमुग्भ्याम्	जलमुग्भिः
चतुर्थी	जलमुचे	जलमुग्भ्याम्	जलमुग्भ्यः
पञ्चमी	जलमुचः	जलमुग्भ्याम्	जलमुग्भ्यः
षष्ठी	जलमुचः	जलमुचोः	जलमुचाम्
सप्तमी	जलमुचि	जलमुचोः	जलमुक्षु
सम्बोधन	जलमुक्		

प्राच्, प्रत्यच्, तिर्य्यच्, उदच् आदि कई एक भिन्न समस्त चकरान्त शब्दों (१) के ऐसे ही रूप होते हैं। प्राच् आदि स्त्रीलिङ्ग चकरान्त नहीं रहते हैं। प्राची, प्रतीचि आदि दीर्घ ईकारान्त हो जाते हैं। अतएव उनके केवल पुल्लिङ्ग रूप लिखे जाते हैं।

---

(१) पुल्लिङ्ग—वारिमुच् (Cloud), पयोमुच् (Cloud) इत्यादि। स्त्रीलिङ्ग—वाच् (Speech), त्वच् (Skin), शुच् (Sorrow) इत्यादि।

प्राच् शब्द

(East, the Eastern country, the prior time)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	प्राङ्	प्राञ्चौ	प्राञ्चः
द्वितीया	प्राञ्चम्	प्राञ्चौ	
सम्बोधन	प्राङ्		

और २ विभक्तियों में जलमुच् शब्द के तुल्य होते हैं।

प्रत्यच् शब्द

(The West The Western country.)

प्रथमा	प्रत्यङ्	प्रत्यञ्चौ	प्रत्यञ्चः
द्वितीया	प्रत्यञ्चम्	प्रत्यञ्चौ	प्रतीचः
तृतीया	प्रतीचा	प्रत्यग्भ्याम्	प्रत्यग्भिः
चतुर्थी	प्रतीचे	प्रत्यग्भ्याम्	प्रत्यग्भ्यः
पञ्चमी	प्रतीचः	प्रत्यग्भ्याम्	प्रत्यग्भ्यः
षष्ठी	प्रतीचः	प्रतीचोः	प्रतीचाम्
सप्तमी	प्रतीचि	प्रतीचोः	प्रत्यक्षु
सम्बोधन	प्रत्यङ्		

तिर्य्यच् शब्द पशुपक्षी (The birds and beasts)

प्रथमा	तिर्य्यङ्	तिर्य्यञ्चौ	तिर्य्यञ्चः
द्वितीया	तिर्य्यञ्चम्	तिर्य्यञ्चौ	तिरश्चः
तृतीया	तिरश्चा	तिर्य्यग्भ्याम्	तिर्य्यग्भिः
चतुर्थी	तिरश्चे	तिर्य्यग्भ्याम्	तिर्य्यग्भ्यः
पञ्चमी	तिरश्चः	तिर्य्यग्भ्याम्	तिर्य्यग्भ्य
षष्ठी	तिरश्चः	तिरश्चोः	तिरश्चाम्
सप्तमी	तिरश्चि	तिरश्चोः	तिर्य्यक्षु
सम्बोधन	तिर्य्यङ्		

उदच् शब्द (North, Northern)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	उदङ्	उदञ्चौ	उदञ्चः
द्वितीया	उदञ्चम्	उदञ्चो	उदीचः
तृतीया	उदीचा	उदग्भ्याम्	उदग्भिः
चतुर्थी	उदीचे	उदग्भ्याम्	उदग्भ्यः
पञ्चमी	उदीचः	उदग्भ्याम्	उदग्भ्यः
षष्ठी	उदीचिः	उदीचोः	उदीचाम्
सप्तमी	उदीचि	उदीचौः	उदक्षु
सम्बोधन	उदङ्		

जकारान्त—वाणिज् शब्द (Merchant,)

प्रथमा	वाणिक्	वणिजौ	वणिजः
द्वितीया	वणिजम्	वणिजौ	वणिजः
तृतीया	वणिजा	वणिग्भ्याम्	वणिग्भिः
चतुर्थी	वणिजे	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
पञ्चमी	वणिज.	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
षष्ठी	वणिजः	वणिजो.	वणिजाम्
सप्तमी	वणिजि	वणिजोः	वणिक्षु
सम्बोधन	वणिक्		

सम्राज् (Emperor), देवराज् (Indra), विराज् (Splendour), परिव्राज् (Medicant), विश्वसृज् (Creator) (fo Universe) आदि कई एक भिन्न समस्त जकारान्त शब्दों (१) के ऐसे ही रूप होते हैं।

---

(१) पुल्लिङ्ग–भिषज् (Physician), ऋत्विज् (Family), (Priest), भृतिभुज् (Servant), वलिभुज्, हुतभुज् (Fire), भूभुज् (King) इत्यादि। स्त्रीलिङ्ग—स्रज् (Garland), रुज् (Disease) इत्यादि।

सम्राज् शब्द (Emperor,)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सम्राट्	सम्राजौ	सम्राजः
द्वितीया	सम्राजम्	सम्राजौ	सम्राजः
तृतीया	सम्राजा	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भिः
चतुर्थी	सम्राजे	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः
पञ्चमी	सम्राजः	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः
षष्ठी	सम्राजः	सम्राजोः	सम्राजाम्
सप्तमी	सम्राजि	सम्राजोः	सम्राट्सु
सम्बोधन	सम्राट्		

देवराज् आदि (शब्दों) के भी ऐसे ही रूप होते हैं।

तकारान्त—भूभृत शब्द । राजा, पर्वत

(King, Sovereign, Mountain.)

प्रथमा	भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः
द्वितीया	भूभृतम्	भूभृतौ	भूभृतः
तृतीया	भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः
चतुर्थी	भूभृते	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
पञ्चमी	भूभृतः	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
षष्ठी	भूभृतः	भूभृतोः	भूभृताम्
सप्तमी	भूभृति	भूभृतोः	भूभृत्सु
सम्बोधन	भूभृत्		

अत्, स्यत्, मत्, वत्, तवत् प्रत्ययान्त और महत्भिन्न सब तकारान्त शब्दों के ऐसे ही रूप होते हैं। अत् प्रत्ययान्त

आदि स्त्रीलिङ्ग तकारान्त नहीं रहते, दीर्घ तकारान्त हो जाते है। इसलिये केवल पुल्लिंग के रूप दिखलाये जाते हैं। इन सब शब्दों में भी केवल प्रथमा और द्वितीया के एकवचन और द्विवचन में विशेषता होती है। और सब विभक्तियों मे भूभृत्* शब्द के तुल्य होता है।

अत् और स्यत् प्रत्ययान्त

अत् और स्यत् प्रत्ययान्त शब्दों के एक से रूप होते है।

अत् प्रत्ययान्त—धावत् शब्द (Running.)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धावन्	धावन्तौ	धावन्त.
द्वितीया	धावन्तम्	धावन्तौ	धावत.
तृतीया	धावता	धावद्भ्याम्	धावद्भिः
चतुर्थी	धावते	धावद्भ्याम्	धावद्भ्यः
पञ्चमी	धावतः	धावद्भ्याम्	धावद्भ्य
षष्ठी	धावत·	धावतोः	धावताम्
सप्तमी	धावति	धावतो	धावत्सु
सम्बोधन	धावन्		

* महीभृत् (King, mountain), विपश्चित् (Learned), महीक्षित् (King), दिनकृत् (Sun), शशभृत् (Moon), परभृत् (Cuckoo), तनूनपात् (Fire), दन्त (Tooth), बृहत् (Large) इत्यादि पुलिङ्ग तथा सरित् (River), योषित् (Woman), तड़ित् (Lightening), क्षुत् (Sneezing) इत्यादि स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप भी भूभृत् शब्द के समान ही होते हैं।

जाग्रत्, शासत्, ददत्, दधत्, बिभ्रत् आदि कई एक (शब्द) भिन्न सब अत् और स्यत् प्रत्ययान्त शब्दों (१) के ऐसे ही रूप होते है। जाग्रत् आदि शब्दों के रूप भूभृत् शब्द के तुल्य होते हैं।

मत्, वत्, तवत् प्रत्ययान्त शब्द

मत्, प्रत्ययान्त (२) वत् प्रत्ययान्त (३) और तवत् प्रत्ययान्त (४) सब शब्द अत् प्रत्ययान्त धावत् शब्द के तुल्य होते हैं। केवल प्रथमा के एकवचन में नकार के पूर्ववर्ती अकार का आकार हो जाता है। इतना ही भेद है। यथा, मत्-प्रत्ययान्त श्रीमत्, श्रीमान्, धीमत्, धीमान्; वत् प्रत्ययान्त, ज्ञानवत्, ज्ञानवान्, प्रज्ञावत्, प्रज्ञावान्; तवत्-प्रत्ययान्त श्रुतवत्, श्रुतवान्, कृतवत्, कृतवान् इत्यादि

(१) भवत्, कुर्वत्, गच्छत्, तिष्ठत्, ध्यायत्, ब्रुवत्, पिबत्, जानत्, गृह्णत्, इच्छत्, पश्यत्, नृत्यत्, गायत्, द्विषत्, करिष्यत्, गमिष्यत्, स्थास्यत्, यास्यत्, दास्यत्, इत्यादि।

(२) श्रीमत्, धीमत्, बुद्धिमत्, मतिमत्, भानुमत्, सानुमत्, (आयुष्मत्), धनुष्मत्, इत्यादि।

(३) ज्ञानवत्, प्रज्ञावत्, लज्जावत्, विद्यावत्, बलवत्, भगवत् (युष्मदर्थ), भवत्, यावत्, तावत्, एतावत्, कियत्, इयत्, नभस्वत्, विवस्वत्, इत्यादि।

(४) कृतवत्, स्थितवत्, ज्ञातवत्, गतवत्, जितवत्, श्रुतवत्, दृष्टवत्, उक्तवत्, इत्यादि।

सम्बोधन में अकार के स्थान में आकार नहीं होता। यथा, श्रीमन्, धीमन् इत्यादि।

महत् शब्द —बड़ा—(Great)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	महान्	महान्तौ	महान्तः
द्वितीया	महान्तम्	महान्तौ	महतः
सम्बोधन	महन्		

और सब विभक्तियों में भूभृत शब्द के तुल्य रूप होते हैं।

दकारान्त—सुहृद् शब्द (Friend)

प्रथमा	सुहृत्	सुहृदौ	सुहृदः
द्वितीया	सुहृदम्	सुहृदौ	सुहृदः
तृतीया	सुहृदा	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भिः
चतुर्थी	सुहृदे	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भ्यः
पञ्चमी	सुहृदः	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भ्यः
षष्ठी	सुहृदः	सुहृदोः	सुहृदाम्
सप्तमी	सुहृदि	सुहृदोः	सुहृत्सु
सम्बोधन	सुहृद्		

सब दकारान्त शब्दों (१) के ऐसे ही रूप होते हैं।

---

(१) पुलिङ्ग—निरापद् (Prosperous), सभासद् (Member of an assembly), दिविषद् (God), उद्भिद् (Plant), पद् (foot), इत्यादि। स्त्रीलिङ्ग—आपद्, विपद् (danger), सम्पद् (Prosperity), उपनिषद्, क्षुद्, मृद्, परिषद् (Assembly), संसद्, संविद्, दृषद् (Stone), शरद् (Winter)।

ध-कारान्त—वीरुध् शब्द । लता (Creeper.)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वरुत्	वीरुधौ	वीरुधः
द्वितीया	वीरुधम्	वीरुधौ	वीरुधः
तृतीया	वीरुधा	वीरुद्भ्याम्	वीरुद्भिः
चतुर्थी	वीरुधे	वीरुद्भ्याम्	वीरुद्भ्यः
पञ्चमी	वीरुधः	वीरुद्भ्याम्	वीरुद्भ्यः
षष्ठी	वीरुधः	वीरुधोः	वीरुधाम्
सप्तमी	वीरुधि	वोरुधोः	वीरुत्सु
सम्बोधन	वीरुत्		

सब धकारान्त शब्दों (१) के ऐसे ही रूप होते हैं ।

नकारान्त शब्द

नकारान्त शब्द तीन प्रकार के हैं—इन्भागान्त, अन्भागान्त और हन्भागान्त ।

इन्भागान्त—गुणिन् शब्द (गुण—Meritorious.)

प्रथमा	गुणी	गुणिनौ	गुणिनः
द्वितीया	गुणिनम्	गुणिनौ	गुणिनः
तृतीया	गुणिना	गुणिभ्याम्	गुणिभिः
चतुर्थी	गुणिने	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
पञ्चमो	गुणिन.	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
षष्ठी	गुणिन:	गुणिनोः	गुणिनाम्

(१) क्षुध् (Hunger), युध् (War), समिध् (Fuel) इत्यादि । वीरुध्, क्षुध्, समधि् ये सब स्त्री-लिङ्ग शब्द हैं, पुलिङ्ग धकारान्त बहुत कम होते हैं ।

सप्तमी	गुणिनि	गुणिनोः	गुणिषु
सम्बोधन	गुणिन्		

पथिन्, मथिन्, ऋभुक्षिन् भिन्न समस्त इन्‌भागान्त शब्दों [१] के ऐसे ही रूप होते हैं।

पथिन् शब्द। रास्ता (Way)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
द्वितीया	पन्थानम्	पन्थानौ	पथः
तृतीया	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
चतुर्थी	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
पञ्चमी	पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
षष्ठी	पथः	पथोः	पथाम्
सप्तमी	पथि	पथोः	पथिषु
सम्बोधन	पन्थाः		

मथिन् (Churning stick) शब्द के ऐसे ही रूप होते हैं। ऋभुक्षिन् (Indra) शब्द पथिन् शब्द के तुल्य होता है; केवल ऋभुक्षाः, ऋभुक्षाणौ, ऋभुक्षाणः, ऋभुक्षाणम्, ऋभुक्षाणौ इन्हीं कई एक पदों में विशेषता है।

अन्-भागान्त—लघिमन् शब्द। लघुता (Lightness.)

प्रथमा	लघिमा	लघिमानौ	लघिमानः
द्वितीया	लघिमानम्	लघिमानौ	लघिम्नः

(१) पुलिङ्ग बलिन् (Strong), ज्ञानिन् (Wise), मेधाविन् (Intelligent), तपस्विन् (Ascetic), मनोहारिन् (Pleasing), एकाकिन् (Alone), करिन् (She-elephant), पक्षिन् (Bird), वाजिन् (Horse), विषयिन् (Sensualist), स्वामिन् (Lord) इत्यादि।

तृतीया	लघिम्ना	लघिमभ्याम्	लघिमभिः
चतुर्थी	लघिम्ने	लघिमभ्याम्	लघिमभ्यः
पञ्चमी	लघिम्नः	लघिमभ्याम्	लघिमभ्यः
षष्ठी	लघिम्नः	लघिम्नोः	लघिम्नाम्
सप्तमी	लघिम्नि, लघिमनि	लघिम्नोः	लघिमसु
सम्बोधन	लघिमन्		

आत्मन्, युवन्, श्यन् आदि, भिन्न समस्त अन्भागान्त शब्दों (१) के ऐसे ही रूप होते हैं।

आत्मन् शब्द। आत्मा (Soul Self.)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आ—	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पञ्चमी	आ	आत्मभ्याम्	आत्मभ्य.
षष्ठ	आ	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मान	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बोधन	आत्मन्		

जितने अनन्त शब्द के अकार म् संयुक्त अथवा व् संयुक्त वर्ण में मिले रहते है (२) वे आत्मन् शब्द के तुल्य है।

---

[१] पुलिङ्ग—गरिमन् (heaviness), प्रथिमन् (greatness), मृदिमन्, द्रढिमन् (hardness), प्रेमन् (affection), मूर्द्धन् (head), वेमन् (Loom or shuttle), दोषन् (arm), राजन् (King) इत्यादि।

(२) पुलिङ्ग—यज्वन् (Sacrificer), यक्ष्मन् (Consumption), अर्व्वन् (horse), अश्मन् (Stone), ब्रह्मन् (Brahma), द्विजन्मन् (twice borne) इत्यादि।

युवन् शब्द । युवा (Youth).

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	युवा	युवानौ	युवानः
द्वितीया	युवानम्	युवानौ	यूनः
तृतीया	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
चतुर्थी	यूने	युवभ्याम्	युवभ्यः
पञ्चमी	यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः
षष्ठी	यूनः	यूनोः	यूनाम्
सप्तमी	यूनि	यूनोः	युवसु
सम्बोधन	युवन्		

मघवन् शब्द । इन्द्र (Indra)

प्रथमा	मघवा	मघवानौ	मघवानः
द्वितीया	मघवानम्	मघवानौ	मघोनः
तृतीया	मघोना	मघवभ्याम्	मघवभिः
चतुर्थी	मघोने	मघवभ्याम्	मघवभ्यः
पञ्चमी	मघोनः	मघवभ्याम्	मघवभ्यः
षष्ठी	मघोनः	मघोनोः	मघोनाम्
सप्तमी	मघोनि	मघोनोः	मघवसु
सम्बोधन	मघवन्		

श्वन् शब्द । कुत्ता (Dog)

प्रथमा	श्वा	श्वानौ	श्वानः
द्वितीया	श्वानम्	श्वानौ	शुनः
तृतीया	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
चतुर्थी	शुने	श्वभ्याम	श्वभ्यः

पञ्चमी	शुनः	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
षष्ठी	शुनः	शुनोः	शुनाम्
सप्तमी	शुनि	शुनोः	श्वसु
सम्बोधन	श्वन्		

हन्भागान्त—वृत्रहन्—शब्द इन्द्र (Indra)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वृत्रहा	वृत्रहणौ	वृत्रहणः
द्वितीया	वृत्रहणम्	वृत्रहणौ	वृत्रघ्नः
तृतीया	वृत्रघ्ना	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभिः
चतुर्थी	वृत्रघ्ने	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभ्यः
पञ्चमी	वृत्रघ्नः	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभ्यः
षष्ठी	वृत्रघ्नः	वृत्रघ्नोः	वृत्रघ्नाम्
सप्तमी	वृत्रघ्नि, वृत्रहणि	वृत्रघ्नोः	वृत्रहसु
सम्बोधन	वृत्रहन्		

सब हन् भागान्त शब्दों के ऐसे ही रूप होते हैं। हन्भाग के स्थान में घ्न होने से न् मूर्द्धन्य नहीं होता।

पकारान्त शब्द

पकारान्त शब्द बहुत कम हैं, केवल स्त्रीलिङ्ग अप् शब्द का प्रयोग देखा जाता है। अप् शब्द केवल बहुवचन में होता है।

अप् शब्द। जल (Water.)

	बहुवचन
प्रथमा	आपः
द्वितीया	अपः
तृतीया	अद्भिः
चतुर्थी	अद्भ्यः

पञ्चमी			अद्भ्यः
षष्ठी			अपाम्
सप्तमी			अप्सु
सम्बोधन			आपः

भकारान्त—ककुभ शब्द। दिशा-(Direction)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ककुप्	ककुभौ	ककुभः
द्वितीया	ककुभम्	ककुभौ	ककुभः
तृतीया	ककुभा	ककुब्भ्याम्	ककुब्भिः
चतुर्थी	ककुभे	ककुब्भ्याम्	ककुब्भ्यः
पञ्चमी	ककुभः	ककुब्भ्याम्	ककुब्भ्यः
षष्ठी	ककुभः	ककुभोः	ककुभाम्
सप्तमी	ककुभि	ककुभोः	ककुप्सु
सम्बोधन	ककुप्		

सब भकारान्त शब्दों (१) के ऐसे ही रूप होते हैं।

रकारान्त

रकारान्त शब्द बहुत थोड़े हैं केवल स्त्रीलिङ्ग गिर् पुर् और धुर् शब्दों का सर्व्वदा प्रयोग होता है।

गिर्—शब्द (Speech.)

प्रथमा	गीः	गिरौ	गिरः
द्वितीया	गिरम्	गिरौ	गिरः
तृतीया	गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः
चतुर्थी	गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः

(१) अनुष्टुभ्, त्रिष्टुभ्, इत्यादि। ककुभ्, अनुष्टुभ्, त्रिष्टुभ्, ये स्त्रीलिङ्ग शब्द हैं। पुल्लिङ्ग भकारान्त शब्द बहुत कम है।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पञ्चमी	गिरः	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
षष्ठी	गिरः	गिरोः	गिराम्
सप्तमी	गिरि	गिरोः	गीर्षु
सम्बोधन	गीः		

पुर् शब्द—नगर (City, town.)

प्रथमा	पूः	पुरौ	पुरः
द्वितीया	पूरम्	पुरौ	पुरः
तृतीया	पुरा	पूर्भ्याम्	पुर्भिः
चतुर्थी	पुरे	पूर्भ्याम्	पूर्भ्यः
पञ्चमी	पुरः	पूर्भ्याम्	पूर्भ्यः
षष्ठी	पुरः	पुरोः	पुराम्
सप्तमी	पुरि	पुरोः	पुर्षु
सम्बोधन	पूः		

धुर् (The forpart of a carriage), शब्द का रूप पुर् शब्द के ऐसा होता है।

अन्तःस्थ वकारान्त शब्द बहुत कम है, केवल स्त्रीलिङ्ग दिव् शब्द का प्रयोग होता है।

वकारान्त दिव् शब्द। स्वर्ग, (Heaven, sky)

प्रथमा	द्यौः	दिवौ	दिवः
द्वितीया	द्याम्, दिवम्	दिवौ	दिवः
तृतीया	दिवा	द्युभ्याम्	द्युभिः
चतुर्थी	दिवे	द्युभ्याम्	द्युभ्यः
पञ्चमी	दिवः	द्युभ्याम्	द्युभ्यः
षष्ठी	दिवः	दिवोः	दिवाम्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
सप्तमी	दिवि	दिवोः	द्युषु
सम्बोधन	द्यौः		

शा-कारान्त विश् शब्द । वैश्य—(Merchant.)

प्रथमा	विट्	विशौ	विशः
द्वितीया	विशम्	विशौ	विशः
तृतीया	विशा	विड्भ्याम्	विड्भिः
चतुर्थी	विशे	विड्भ्याम्	विड्भ्यः
पञ्चमी	विशः	विड्भ्याम्	विड्भ्यः
षष्ठी	विशः	विशोः	विशाम्
सप्तमी	विशि	विशोः	विट्सु
सम्बोधन	विट्		

द्विश्, दृश्, स्पृश्, भिन्न समस्त शकारान्त शब्दों (१) के ऐसे ही रूप होते हैं।

दिश् शब्द स्त्रीलिङ्ग । दिशा—(Direction, Quarter)

प्रथमा	दिक्	दिशौ	दिशः
द्वितीया	दिशम्	दिशौ	दिशः
तृतीया	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
चतुर्थी	दिशे	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
पञ्चमी	दिशः	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
षष्ठी	दिशः	दिशोः	दिशाम्
सप्तमी	दिशि	दिशोः	दिक्षु
सम्बोधन	दिक्		

(१) स्त्रीलिङ्ग निश् (Night), विपाश् इत्यादि ।

दृश् (To see, to behold) और स्पृश् (Touching) शब्दों के रूप दिश् शब्द (१) के तुल्य होते हैं।

ष-कारान्त—द्विष् शब्द । शत्रु (Enemy)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	द्विट्	द्विषौ	द्विषः
द्वितीया	द्विषम्	द्विषौ	द्विषः
तृतीया	द्विषा	द्विड्भ्याम्	द्विड्भिः
चतुर्थी	द्विषे	द्विड्भ्याम्	द्विड्भ्यः
पञ्चमी	द्विषः	द्विड्भ्याम्	द्विड्भ्यः
षष्ठी	द्विषः	द्विषोः	द्विषाम्
सप्तमी	द्विषि	द्विषोः	द्विट्सु
सम्बोधन	द्विट्		

प्रायः समस्त मूर्द्धन्य षकारान्त शब्दों (२) के ऐसे ही रूप होते हैं।

स-कारान्त वेधस् शब्द । ब्रह्मा (Creator).

प्रथमा	वेधाः	वेधसौ	वेधसः
द्वितीया	वेधसम्	वेधसौ	वेधसः
तृतीया	वेधसा	वेधोभ्याम्	वेधोभिः

(१) दृश् और स्पृश्, दो प्रकार के हैं, स्वतन्त्र और अन्यान्य शब्दों के सहित । पुलिङ्ग—ईदृश् (Such), तादृश् (Such like), कीदृश् (what like), एतादृश् (Such), भवादृश् (like you), स्पृश् (who touches) मर्म्मस्पृश् (sharp) इत्यादि । स्त्रीलिङ्ग—दृश्, सुदृश् (beautiful woman), मृगदृश (deer-eyed women) इत्यादि ।

(२) पुलिङ्ग—अतिरुष् (very angry) इत्यादि । स्त्रीलिङ्ग विषरुष् विप्रुष् (drop of water) इत्यादि ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी	वेधसे	वेधोभ्याम्	वेधोभ्यः
पञ्चमी	वेधसः	वेधोभ्याम्	वेधोभ्यः
षष्ठी	वेधसः	वेधसोः	वेधसाम्
सप्तमी	वेधसि	वेधसोः	वेधःसु
सम्बोधन	वेधः		

दोस्, विद्वस्, जग्मिवस्, लघीयस्, आशिस्, पुमस्, आदि कई एक भिन्न प्रायः समस्त सकारान्त शब्दों (१) के ऐसे ही रूप होते हैं। उशनस् शब्द के रूप वेधस् शब्द के तुल्य होते हैं, केवल प्रथमा के एकवचन में विशेषता है। यथा, उशना, सम्बोधन में उशन, उशनन्, उशनः ।

दोस् शब्द (Arms.)

प्रथमा	दोः	दोषौ	दोषः
द्वितीया	दोषम्	दोषौ	दोषः
तृतीया	दोषा	दोर्भ्याम्	दोर्भिः
चतुर्थी	दोषे	दोर्भ्याम्	दोर्भ्यः
पञ्चमी	दोषः	दोर्भ्याम्	दोर्भ्यः
षष्ठी	दोषः	दोषोः	दोषाम्
सप्तमी	दोषि	दोषोः	दोःसु
सम्बोधन	दोः		

विद्वस् शब्द । विद्वान (Learned)

प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः

(१) पुलिङ्ग—चन्द्रमस् (moon), प्रचेतस् (वरुण), दिवौकस्, (god), विमनस् (ill minded), दुर्मनस् (ill minded), विहायस् (Sky) इत्यादि । स्त्रीलिङ्ग—सुमनस् (flower), अप्सरस् [nymph], इत्यादि । सुमनस् और अप्सरस् शब्द बहुवचनान्त हैं ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
द्वितीया	विद्वांसम्	विद्वांस	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पञ्चमी	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
षष्ठी	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बोधन	विद्वान्		

जग्मिवस् शब्द (One who is going)

प्रथमा	जग्मिवान्	जग्मिवांसौ	जग्मिवांसः
द्वितीया	जग्मिवांसम्	जग्मिवांसौ	जग्मुषः
तृतीया	जग्मुषा	जग्मिवद्भ्याम्	जग्मिवद्भिः
चतुर्थी	जग्मुषे	जग्मिवद्भ्याम्	जग्मिवद्भ्यः
पञ्चमी	जग्मुषः	जग्मिवद्भ्याम्	जग्मिवद्भ्यः
षष्ठी	जग्मुषः	जग्मुषोः	जग्मुषाम्
सप्तमी	जग्मुषि	जग्मुषोः	जग्मिवत्सु
सम्बोधन	जग्मिवन्		

समस्त वस् प्रत्ययनिष्पन्न शब्दों (१) के ऐसे ही रूप होते हैं ।

लघीयस् शब्द, छोटा (Lighter)

प्रथमा	लघीयान्	लघीयांसौ	लघीयांसः
द्वितीया	लघीयांसम्	लघीयांसौ	लघीयसः

(१) पुल्लिङ्ग—निषेदिवस् Sitting; तिस्थिवस्—Staying; पेचिवस् cooking इत्यादि । वस् भागान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग में सकारान्त नहीं होता है ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	लघीयसा	लघीयोभ्याम्	लघीयोभिः
चतुर्थी	लघीयसे	लघीयोभ्याम्	लघीयोभ्यः
पञ्चमी	लघीयसः	लघीयोभ्याम्	लघीयोभ्यः
षष्ठी	लघीयसः	लघीयसोः	लघीयसाम्
सप्तमी	लघीयसि	लघीयसो	लघीयःसु
सम्बोधन	लघीयन्		

समस्त ईयस् प्रत्ययनिष्पन्न शब्दों (१) के रूप ऐसे ही होते हैं।

आसिस् शब्द—स्त्रीलिङ्ग अशीर्व्वाद (Blessing.)

प्रथमा	आशीः	आशिषौ	आशिषः
द्वितीया	आशिषम्	आशिषौ	आशिषः
तृतीया	आशिषा	आशीर्भ्याम्	आशीर्भिः
चतुर्थी	आशिषे	आशीर्भ्याम्	आशीर्भ्यः
पञ्चमी	आशिषः	आशीर्भ्याम्	आशीर्भ्यः
षष्ठी	आशिषः	आशिषो	आशिषाम्
सप्तमी	आशिषि	आशिषोः	आशिीःषु
सम्बोधन	आशीः		

पुमस् शब्द—पुल्लिङ्ग (Male being)

प्रथमा	पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः
द्वितीया	पुमांसम्	पुमांसौ	पुंसः

(१) पुल्लिङ्ग–गरीयस् (heavier). द्रढ़ीयस् (harder) स्थेयस् (more firm), प्रेयस् (dearer), ज्यायस् (elder), कनीयस् (younger), यवीयस् (younger), श्रेयस् (better) इत्यादि। ईयस् प्रत्यय निष्पन्न शब्द स्त्रीलिङ्ग में सकारान्त नहीं होते।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	पुंसा	पुंभ्याम्, पुम्भ्याम्	पुंभिः, पुम्भिः
चतुर्थी	पुंसे	पुंभ्याम्, पुम्भ्याम्	पुंभ्यः, पुम्भ्यः
पञ्चमी	पुंसः	पुंभ्याम्, पुम्भ्याम्	पुंभ्यः, पुम्भ्यः
षष्ठी	पुंसः	पुंसोः	पुंसाम्
सप्तमी	पुंसि	पुंसोः	पुंसु
सम्बोधन	पुमन्		

हकारान्त—मधुलिह् शब्द । भ्रमर (Black Bee.)

प्रथमा	मधुलिट्	मधुलिहौ	मधुलिहः
द्वितीया	मधुलिहम्	मधुलिहौ	मधुलिहः
तृतीया	मधुलिहा	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भिः
चतुर्थी	मधुलिहे	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भ्यः
पञ्चमी	मधुलिहः	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भ्यः
षष्ठी	मधुलिहः	मधुलिहोः	मधुलिहाम्
सप्तमी	मधुलिहि	मधुलिहोः	मधुलिट्सु
सम्बोधन	मधुलिट्		

उपानह्, अनडुह् आदि कई एक भिन्न सब पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग हकारान्त शब्दों (१) के ऐसे ही रूप होते हैं।

उपानह् शब्द—स्त्रीलिङ्ग (Shoes.)

प्रथमा	उपानत्	उपानहौ	उपानहः
द्वितीया	उपानहम्	उपानहौ	उपानहः
तृतीया	उपानहा	उपानद्भ्याम्	उपानद्भिः
चतुर्थी	उपानहे	उपानद्भ्याम्	उपानद्भ्यः
पञ्चमी	उपानहः	उपानद्भ्याम्	उपानद्भ्यः

(१) पुल्लिङ्ग—तुरासह् इत्यादि।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
षष्ठी	उपानहः	उपानहोः	उपानहाम्
सप्तमी	उपानहि	उपानहोः	उपानत्सु
सम्बोधन	उपानत्		

अनडुह् शब्द—पुल्लिङ्ग । वृष (Bull, ox)

प्रथमा	अनड्वान्	अनड्वाहौ	अनड्वाहः
द्वितीया	अनड्वाहम्	अनड्वाहौ	अनडुहः
तृतीया	अनडुहा	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भिः
चतुर्थी	अनडुहे	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भ्यः
पञ्चमी	अनडुहः	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भ्यः
षष्ठी	अनडुहः	अनडुहोः	अनडुहाम्
सप्तमी	अनडुहि	अनडुहोः	अनडुत्सु
सम्बोधन	अनड्वन		

क्लीवलिङ्ग (Neuter.)

व्यञ्जनान्त क्लीवलिङ्ग शब्द पुल्लिङ्ग के समान हैं केवल प्रथमा और द्वितीया में विशेषता है । अतएव केवल प्रथमा और द्वितीया के रूप दिखाये जाते हैं । जिस स्थान में पुल्लिङ्ग के साथ सर्व्वांश में एकता नहीं होगी वहाँ सब विभक्तियों के रूप लिखे जायेंगे ।

च-कारान्त (प्राच् शब्द)

(The east, The Eastern Country, The Prior time)

प्रथमा	प्राक्	प्राची	प्राञ्चि
द्वितीया	प्राक्	प्राची	प्राञ्चि
सम्बोधन	प्राक्		

और सब विभक्तियों में जलमुच् शब्द के समान रूप होते हैं। प्रत्यच्, तिर्य्यंच्, उदच् भिन्न प्रायः सब चकारान्त शब्दों के रूप प्राच शब्द के तुल्य होते हैं।

प्रत्यच् शब्द

(The west, The western country, The future time)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	प्रत्यक्	प्रतीची	प्रत्यञ्चि
द्वितीया	प्रत्यक्	प्रतीची	प्रत्यञ्चि
सम्बोधन	प्रत्यक्		

तिर्य्यंच् शब्द (The Birds & Beasts.)

प्रथमा	तिर्य्यक्	तिरश्ची	तिर्य्यञ्चि
द्वितीया	तिर्य्यक्	तिरश्ची	तिर्य्यञ्चि
सम्बोधन	तिर्य्यक्		

उदच् शब्द (The Northern)

प्रथमा	उदक्	उदीची	उदञ्चि
द्वितीया	उदक्	उदीची	उदञ्चि
सम्बोधन	उदक्		

ज-कारान्त—असृज् शब्द। रक्त (Blood)

प्रथमा	असृक्	असृजी	असृञ्जि
द्वितीया	असृक्	असृजी	असृञ्जि
सम्बोधन	असृक्		

और सब विभक्तियों में स्रज् शब्द के ऐसा ही रूप होता है। प्रायः सब जकारान्त शब्दो के ऐसे ही रूप होते हैं।

त-कारान्त—भविष्यत् शब्द (Future.)

प्रथमा	भविष्यत्	भविष्यती	भविष्यन्ति

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
द्वितीया	भविष्यत्	भविष्यती	भविष्यन्ति
सम्बोधन	भविष्यत्		

और सब विभक्तियों में धावत् शब्द के ऐसा रूप होता है। कई एक अत्प्रत्ययान्त और महत् शब्द भिन्न समस्त तकारान्त शब्दों के ऐसे ही रूप होते हैं।

अत्-प्रत्ययान्त शब्द

अत्-प्रत्ययान्त क्लीबलिङ्ग शब्द चार प्रकार के हैं।

गच्छत् शब्द (Going.)

प्रथमा	गच्छत्	गच्छन्ती	गच्छन्ति
द्वितीया	गच्छत्	गच्छन्ती	गच्छन्ति
सम्बोधन	गच्छत्		

भ्वादिगणीय और दिवादिगणीय धातुओं के उत्तर अत्-प्रत्यय करने से जो सब शब्द बनते हैं उनके ऐसे ही रूप होते हैं।

इच्छत् शब्द (Wishing.)

प्रथमा	इच्छत्	इच्छती, इच्छन्ती	इच्छन्ति
द्वितीया	इच्छत्	इच्छती, इच्छन्ती	इच्छन्ति
सम्बोधन	इच्छत्		

तुदादिगणीय और अदादिगणीय धातुओं में आकारान्त धातु के उत्तर अत्प्रत्ययसे बने शब्दों के ऐसे ही रूप होते हैं।

ददत् शब्द (Giving.)

प्रथमा	ददत्	ददती	ददन्ति, ददति
द्वितीया	ददत्	ददती	ददन्ति, ददति
सम्बोधन	ददत्		

अभ्यस्त धातु के उत्तर अत्प्रत्यय से बने शब्दों के ऐसे ही रूप होते हैं।

इसके सिवाय अत्प्रत्यय से बने जितने सब्द हैं उनके रूप भविष्यत् शब्द के तुल्य होते हैं।

महत् शब्द (Great)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	महत्	महती	महन्ति
द्वितीया	महत	महती	महन्ति
सम्बोधन	महत्		

दकारान्त—हृद् शब्द (Heart.)

प्रथमा	हृत्	हृदी	हृन्दि
द्वितीया	हृत्	हृदी	हृन्दि
सम्बोधन	हृत्		

और २ विभक्तियों में सुहृद् शब्द के तुल्य रूप होते हैं। सब क्लीवलिङ्ग शब्दों के ऐसे ही रूप होते हैं।

न–कारान्त शब्द

क्लीवलिङ्ग नकारान्त शब्द दो प्रकार के हैं, अन्–भागान्त और इन्–भागन्त।

अन्—भागान्त—नामन् शब्द (Name)

प्रथमा	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
द्वितीया	नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि
सम्बोधन	नाम, नामन्		

कर्म्मन् आदि कई एक और अहन् भिन्न सब अनन्त क्लीवलिङ्ग शब्दों (१) के ऐसे ही रूप होते हैं।

(१) समान्; व्योमन् , धामन् , वेमन् , प्रेमन् , दामन् इत्यादि।

कर्म्मन् शब्द—काम (work)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कर्म्म	कर्म्मणी	कर्माणि
द्वितीया	कर्म्म	कर्म्मणी	कर्म्माणि
सम्बोधन	कर्म्म, कर्म्मन्		

जिन शब्दों (१) में अन् का अकार म् संयुक्त अथवा व् -संयुक्त वर्ण में मिला रहता है उनके ऐसे ही रूप होते हैं।

अहन् शब्द। दिन (Day.)

प्रथमा	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
द्वितीया	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
तृतीया	अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः
चतुर्थी	अह्ने	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
पञ्चमी	अह्नः	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
षष्ठी	अह्नः	अह्नोः	अह्नाम्
सप्तमी	अह्नि	अहनि, अह्नोः	अहःसु
सम्बोधन	अहः		

इन्-भागान्त—स्थायिन् शब्द (Lasting.)

प्रथमा	स्थायि	स्थायिनी	स्थायीनि
द्वितीया	स्थायि	स्थायिनी	स्थायीनि
सम्बोधन	स्थायिन्		

सब इन्भागान्त क्लीवलिङ्ग शब्दों के ऐसे ही रूप होते हैं।

---

(१) चर्म्मन् (Skin) ; वर्म्मन् (Armour), शर्म्मन् (Happiness), नर्म्मन् (Joke), जन्मन् (Birth), सद्मन् (House), भस्मन् (Ashes), लक्ष्मन् (Sign), वर्त्मन् (Road), पर्व्वन् (A festival) इत्यादि शब्दों के रूप कर्म्मन् शब्द के समान होते हैं।

स-कारान्त

सकारान्त क्लीवलिङ्ग शब्द तीन प्रकार के हैं; अस् भागान्त इस् भागान्त और उस् भागान्त।

अस् भागान्त—पयस् शब्द (Milk)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पयः	पयसी	पयांसि
द्वितीया	पयः	पयसी	पयांसि
सम्बोधन	पयः		

और २ विभक्तियों में पुलिङ्ग वेधस् शब्द के तुल्य होता है। सब अस् भागान्त क्लीवलिङ्ग शब्दों (१) के ऐसे ही रूप होते हैं।

इस् भागान्त—हविस्* शब्द (Clarified butter.)

प्रथमा	हविः	हविषी	हवींषि
द्वितीया	हविः	हविषी	हवींषि
तृतीया	हविषा	हविर्भ्याम्	हविर्भिः
चतुर्थी	हविषे	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
पञ्चमी	हविषः	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
षष्ठी	हविषः	हविषोः	हविषाम्

(१) अम्भस् (water), अयस् (Iron), आगस् (Sin, fault), उरस् (Breast), चेतस् (Mind), छन्दस् (Metre), तमस् (Darkness), मनस् (Mind), वयस् (Age), रजस् (Dust), वक्षस् (Breast), सरस् (Lake) इत्यादि शब्दों के रूप पयस् शब्दों के समान ही होते हैं।

* हविस् शब्द का अर्थ घृत आदि होम की वस्तु है।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
सप्तमी	हविषि	हविषोः	हविःषु
सम्बोधन	हविः		

सब इस् भागान्त क्लीवलिङ्ग शब्दों (१) के ऐसे ही रूप होते हैं।

उस् भागान्त—धनुस् शब्द (Bow).

प्रथमा	धनुः	धनुषी	धनूंषि
द्वितीया	धनुः	धनुषी	धनूंषि
तृतीया	धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भिः
चतुर्थी	धनुषे	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
पञ्चमी	धनुषः	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
षष्ठी	धनुषः	धनुषोः	धनुषाम्
सप्तमी	धनुषि	धनुषोः	धनुःषु
सम्बोधन	धनुः		

सब उस् भागान्त क्लीवलिङ्ग शब्दों (२) के ऐसे ही रूप होते हैं।

सर्वनाम (Pronoun.)

रूप की विलक्षणता के अनुसार सब सर्व्वनाम शब्द पांच श्रेणी में विभक्त हैं। यथा, सर्व्वादि, अन्यादि पूर्व्वादि, यदादि, इदमादि।

(१) ज्योतिस् Light, सर्पिस् Ghee, वर्हिस् Light, अर्च्चिस् Ray of light, रोचिस् Light, शोचिस् Light, इत्यादि।

(२) आयुस् age, चक्षुस् eye, यजुस् Yayurveda, वपुस् (body) इत्यादि।

सर्व्वादि—सर्व्व, विश्व, उभय, एक, एकतर (१)।

अन्यादि—अन्य, अन्यतर, इतर, कतर, कतम, एकतम।

पूर्व्वादि—पूर्व्व, पर, अपर, अवर, अधर, दक्षिण, उत्तर, स्व (२)

यदादि—यद्, तद्, एतद्, त्यद्, किम्।

इदमादि—इदम्, अदस्, युष्मद्।

सर्व्वादि, अन्यादि, पूर्व्वादि अकारान्त सर्व्वनाम शब्दों के रूप सामान्य अकारान्त शब्दों के तुल्य हैं; केवल प्रथमा और षष्ठी के बहुवचन में और चतुर्थी पञ्चमी और सप्तमी के एक वचन में रूपों की विशेषता है।

सर्व्वादि

सर्व्व (All), विश्व (All), उभय (Both), एक (One), एकतर (One of two), इन पाँच शब्दों के रूप एक प्रकार के होते हैं।

---

(१) सर्व्व और विश्व शब्द सकल अर्थ बोधक होने से सर्व्वनाम होते हैं और नहीं तो उनके रूप सामान्य अकारान्त शब्दों के तुल्य होते हैं।

(२) पूर्व्व से उत्तर पर्य्यन्त सात शब्द दिक्, देश, कालवाचक होने से अर्थात् पूर्व्व दिक्, पूर्वकाल, पूर्वदेश इत्यादि अर्थ बोधक होने से सर्वनाम होते हैं नहीं तो सामान्य अकारान्त शब्द के समान रहते हैं। स्व शब्द अपना अर्थ बोधक होने से सर्वनाम होता है नहीं तो सामान्य अकारान्त शब्दों के तुल्य रहता है।

सर्व्व शब्द (All)

पुल्लिङ्ग (Masculine)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्व्वः	सर्व्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्व्वम्	सर्व्वौ	सर्व्वान्
तृतीया	सर्व्वेण	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वैः
चतुर्थी	सर्व्वस्मै	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्व्वस्मात्	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वेभ्यः
षष्ठी	सर्व्वस्य	सर्व्वयोः	सर्व्वेषाम्
सप्तमी	सर्व्वस्मिन्	सर्व्वयोः	सर्व्वेषु

क्लीबलिङ्ग (Neuter.)

प्रथमा	सर्व्वम्	सर्व्वे	सर्व्वाणि
द्वितीया	सर्व्वम्	सर्व्वे	सर्व्वाणि

* सर्व्व (All, whole), विश्व (all), उभ (two), उभय (Both), उत्तर (Affix; as in कतर, which of two), उत्तम (Affix, as in कतम, which of many), अन्य (Other), अन्यतर (Either), इतर (Other'), त्वत् (Other), त्व (Other), नेम (Half), सम (All), सिम (Whole), पूर्व (East prior), पर (Subsequent), अवर (West, posterior), दक्षिण (South right), उत्तर (North subsequent), अपर (Other), अधर (West, inferior), स्व (Own), अन्तर (Outer), त्यद् (He, she, it), तद् (He she it), यद् (Who which), एतद् (this), इदम् (this), अदस् (that), एक (One), द्वि (two), युष्मद् (you), अस्मद् (I) भवत् (you), किम् (what), ये पैंतीस शब्द सर्व्वनाम् हैं, इनके अतिरिक्त और कोई सर्व्वनाम नहीं है ।

और २ विभक्तियों में पुल्लिङ्ग शब्दों के तुल्य रूप होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग (Feminine)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्व्वा	सर्व्वे	सर्व्वाः
द्वितीया	सर्व्वाम्	सर्व्वे	सर्व्वाः
तृतीया	सर्व्वया	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वाभिः
चतुर्थी	सर्व्वस्यै	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्व्वस्याः	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वाभ्यः
षष्ठी	सर्व्वस्याः	सर्व्वयोः	सर्व्वासाम्
सप्तमी	सर्व्वस्याम्	सर्व्वयोः	सर्व्वासु

अन्यादि

अन्य (Other), अन्यतर (Either), इतर (Other), कतर (Which of two), कतम (Which of many), एकतम (One of many); इन कई एक शब्दों के रूप सर्व्वादि (शब्द) के तुल्य होते हैं, केवल क्लीवलिङ्ग की प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में अन्यत् अन्य तरत्, इतरत, करत्, कतमत्, एकतमत्, ऐसे रूप होते हैं और इतनी ही विशेषता है।

पूर्व्वादि

पूर्व्व (Prior, east), पर (After), अपर (Other), अवर (Posterior, west) अधर, दक्षिण (South, right), उत्तर (North), स्व (Own), इन कई एक शब्दों के रूप एक प्रकार के होते हैं।

पूर्व्व शब्द

(The East, the Eastern Country, The prior time.)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पूर्व्वः	पूर्व्वौ	पूर्व्वे, पूर्वाः
द्वितीया	पूर्व्वम्	पूर्व्वौ	पूर्व्वान्
तृतीया	पूर्व्वेण	पूर्व्वाभ्याम्	पूर्व्वैः
चतुर्थी	पूर्व्वस्मै	पूर्व्वाभ्याम्	पूर्व्वेभ्यः
पञ्चमी	पूर्व्वस्मात्, पूर्व्वात्	पूर्व्वाभ्याम्	पूर्व्वेभ्यः
षष्ठी	पूर्व्वस्य	पूर्व्वयोः	पूर्व्वेषाम्
सप्तमी	पूर्व्वस्मिन्, पूर्व्वे	पूर्व्वयोः	पूर्व्वेषु

क्लीवलिङ्ग

प्रथमा	पूर्व्वम्	पूर्व्वे	पूर्व्वाणि
द्वितीया	पूर्व्वम्	पूर्व्वे	पूर्व्वाणि

और २ विभक्तियों में पुल्लिङ्ग के तुल्य रूप होते हैं। स्त्रीलिंग में ठीक सर्व्व शब्द के तुल्य रहता है।

यदादि

यद् (Who, which, what), तद् (he, she, it that), एतद् (this), त्यद्, किम् (who, what), ये सब यत् एत, त्यद् के इस प्रकार अकारान्त हो जाते हैं; इनके रूप सर्व्वादि शब्दों के तुल्य होते हैं केवल क्लीवलिङ्ग की प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में यत्, तत्, एतत्, स्यत्, किम् ऐसे रूप होते हैं। और तद्, एतद्, त्यद् शब्दों की प्रथमा के एकवचन पुल्लिङ्ग में स, एषः, स्यः ऐसे रूप होते हैं। और स्त्रीलिङ्ग में सा, एषा, स्या ऐसे रूप होते हैं इतनी ही विशेषता है।

इदमादि (Heading)

इदम्, अदस्, युष्मद् इन शब्दो के रूप भिन्न २ होते हैं। अतएव प्रत्येक के रूप दिखलाये जाते हैं।

इदम् शब्द (This)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

क्लीवलिंग

प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्	इमे	इमानि

और २ विभक्तियों में पुल्लिंग के समान रूप होते हैं।

स्त्रीलिंग

प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयो	आसु

अदस् शब्द (This That).

पुल्लिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

क्लीवलिंग

प्रथमा	अदः	अमू	अमूनि
द्वितीया	अदः	अमू	अमूनि

अन्य विभक्तियों में पुल्लिंग के समान रूप होते हैं।

स्त्रीलिंग

प्रथमा	असौ	अमू	अमूः
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमूः
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
चतुर्थी	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
पञ्चमी	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
षष्ठी	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

युष्मद् शब्द (Thou you)

प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु (१)

तीनों लिङ्गों में समान रूप होते हैं कुछ भेद नहीं है।

अस्मद् शब्द (I) (२)

प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्

(१) च, वा, एव, इन तीनों अव्यय शब्दों के योग में युष्मद् शब्द के त्वा, ते, वाम्, वः इन चार शब्दों का और युष्मद् शब्द के मा, मे, नौ, न इन चार पदों का प्रयोग नहीं होता। यथा—गुरुः कृपया त्वा मा, च उपदिशति, स कदाचिदपि ते मे च वचनं न श्रृणोति, तदाश्रयं विना वां नौ च गतिर्नास्ति, तेनैवं क्रियमाणे वो नश्च का हानिः, ऐसा प्रयोग नहीं होगा। त्वां मां च उपदिशति, तव मम च वचनं न श्रृणोति, युवयो रावयोश्च गतिर्नास्ति, युष्माकमस्माकं च का हानिः, ऐसा रूप प्रयोग होगा। वा और एव शब्द के योग में भी ये ही रूप होते हैं।

वाक्य के अथवा श्लोक के चरण के आरम्भ में इन सब पदों का प्रयोग नहीं होता। तथा—वाक्य के आरम्भ में, ते पुस्तकं गृहाण, मे पुस्तकं देहि, वः प्रीतिर्वर्द्धते, नः सकाशमागच्छ इत्यादि प्रयोग नहीं होते। तवपुस्तकं गृहाण, मम पुस्तकं देहि, युष्माकं प्रीतिर्वर्द्धते, अस्माकं सकाशमागच्छ इस प्रकार के प्रयोग होते हैं। यथा—

श्लोक के चरण के आरम्भ में—

"त्वां स रक्षति यत्नेन मा स द्वेष्टि निरन्तरम्
ते दोष एव नैवात्र मे दोषो विद्यते सखे।"

—ऐसा प्रयोग नही होता।

"त्वां स रक्षति यत्नेन मां स द्वेष्टि निरन्तरम्।
तवैव दोषो नैवात्र मम दोषोऽस्ति कश्चन॥"—

—ऐसा प्रयोग होता है।

(२) तीनों लिङ्गों में एक ही समान रूप होते हैं कुछ भी भेद नहीं है।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

बहुव्रीहि, द्वन्द्व और तृतीया तत्पुरुष समास में, सर्व्वनाम का रूप नहीं होता। यथा, बहुव्रीहि समास में, जितं सर्व्वयेन इस समास से बना हुआ जितसर्व्व शब्द का रूप सर्व्वनाम शब्द के ऐसा न होकर चतुर्थी के एकवचन में जितसर्व्वाय, पञ्चमी के एकवचन में जितसर्व्वात्, सप्तमी के एकवचन में जितसर्व्वे इस प्रकार का होगा। द्वन्द्वसमास में, पूर्वश्च, दक्षिणश्च, उत्तरश्च इस समास से बना पूर्वदक्षिणोत्तर शब्द का रूप सर्व्वनाम शब्द के तुल्य न होकर पूर्व्वदक्षिणोत्तराणाम् ऐसा होगा। किन्तु प्रथमा के बहुवचन में विकल्प से सर्व्वनाम का रूप होता है। यथा पूर्व्वदक्षिणोत्तरे, पूर्व्वदक्षिणोत्तराः। तृतीया तत्पुरुष समास में कालेनपूर्व्वः इस समास से बना कालपूर्व्व शब्द का रूप सर्व्वनाम शब्द के तुल्य न होकर चतुर्थी के एकवचन में कालपूर्व्वाय, पञ्चमी के एकवचन में कालपूर्व्वात्, सप्तमी के एकवचन में कालपूर्व्वे ऐसा होगा।

समास न होने पर भी सर्वनाम का रूप नहीं होता। यथा कालेन पूर्व्वाय, कालेन पूर्व्वात्, कालेन पूर्व्वे (१)।

---

(१) वैयाकरणलोग त्व, त्वत्, द्वि, उभ, भवत्, सम, सिम, नेम, अन्तर इन कई शब्दों को भी सर्व्वनाम में गिनते है।

सर्व्वनाम से उत्पन्न क्रियाविशेषण

तद्, इदम्, एतद्, यद्, किम्, सर्व्व, पूर्व्व, पर इत्यादि सर्व्वनाम के परे पञ्चमी और सप्तमी के अर्थ में तस्, त्र, ह, क इत्यादि; कालसूचक अर्थ में दा, दानीम्, र्हि इत्यादि; काल स्थान और दिग्वाचक अर्थ में तात्; दिक्सूचक अर्थ में आ, आत्, आहि इत्यादि तथा प्रकार अर्थ में था, थ इत्यादि प्रत्यय जोड़े जाते हैं। यथा,

तद्—तदा then, तदानीम् at that time, तर्हि then, Therefore, तथा so, तत्र there, ततः thence, thereupon, therefore etc,

इदम्—इदानीम् now, इत्थम् thus. अत्र here, अतः therefore, इतः from this, hence, अधुना now, इह here,

एतद्—एतर्हि now, इत्थम् thus, अत.hence, therefore; अत्र here.

यद्—यर्हि when, यदा, when, यथा as, यत्र where, यतः whence, since, because.

किम्-कर्हि when, कदा when, कथम् how, कुत्र where, क्व where, कुतः where, whence, कुह whence, how.

सर्व्व—सर्व्वदा always, सदा always, सर्वतः everywhere, on all sides; सर्वत्र everywhere, in all places.

पर—परतः further on, beyond etc.

पूर्व्व—पुरः, पुरस्तात् before, in front ete.

अधर—अधः, अधस्तात् or अधरस्तात्, अधरतः, अधरात् down, below.

अवर—अवरः, अवस्तात् or अवरस्तात्, अवरतः behind below, Downwards.

अपर—पश्चात् from behind, afterwards, westward etc.

दक्षिण—दक्षिणा, दक्षिणात्, दक्षिणाहि to or in the south, on the right side.

उत्तर—उत्तरा, उत्तरात्, उत्तराहि to or in the north etc.

संख्यावाचक (Numeral.)

एक शब्द—एकवचनान्त (One, some, few)

एक शब्द का रूप तीनों लिङ्गों में सर्व्व शब्द के तुल्य होता है, कुछ भी भेद नही है।

द्वि शब्द द्विवचनान्त (Two)

	पुल्लिङ्ग	क्लीवलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग
	द्विवचन	द्विवचन
प्रथमा	द्वौ	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः

त्रि शब्द—बहुवचनान्त (Three)

	पुल्लिंग	क्लीवलिंग	स्त्रीलिंग
	बहुवचन	बहुवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्रयः	त्रीणि	तिस्रः
द्वितीया	त्रीन्	त्रीणि	तिस्रः
तृतीया	त्रीभिः	त्रिभिः	तिसृभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
पञ्चमी	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः

	बहुवचन	बहुवचन	बहुवचन
षष्ठी	त्रयाणाम्	त्रयाणाम्	तिसृणाम्
सप्तमी	त्रिषु	त्रिषु	तिसृषु

चतुर् शब्द—बहुवचनान्त (Four)

प्रथमा	चत्वारः	चत्वारि	चतस्रः
द्वितीया	चतुरः	चत्वारि	चतस्रः
तृतीया	चतुर्भिः	चतुर्भिः	चतसृभिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतुर्णाम्	चतसृणाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतुर्षु	चतसृषु

षष् शब्द—बहुवचनान्त । (Six.)

प्र०	द्वि०	तृ०	च०	प०	ष०	स०
षट्	षड्	षड्भिः	षड्भ्यः	षड्भ्यः	षण्णाम्	षट्सु

तीनों लिङ्गो में ऐसे ही रूप होते हैं ।

अष्टन् शब्द—बहुवचनान्त (Eight)

प्र०	द्वि०	तृ०	च०	प०	ष०	स०
अष्टौ	अष्टौ,	अष्टाभिः,	अष्टाभ्यः	अष्टाभ्यः,	अष्टानाम्	अष्टासु
अष्ट,	अष्ट,	अष्टभिः,	अष्टभ्यः,	अष्टभ्यः,		अष्टसु

तीनों लिङ्गों में ऐसे ही रूप होते हैं ।

पञ्चन् शब्द (Five)—बहुवचनान्त होता है ।

प्र०	द्वि०	तृ०	च०	प०	ष०	स०
पञ्च	पञ्च	पञ्चभिः	पञ्चभ्यः	पञ्चभ्यः	पञ्चानाम्	पञ्चसु

सप्तन्, नवन्, दशन् आदि सब नकारान्त संख्यावाचक शब्दों के रूप पञ्चन् शब्द के तुल्य होते हैं ।

इन के सिवाय सब संख्यावाचक शब्दों के रूप अन्त्य वर्ण

और लिङ्ग के अनुसार सामान्य शब्द के तुल्य होते हैं। यथा, विंशति, षष्ठि, सप्तति, अशीति, नवति आदि शब्द स्त्रीलिङ्ग और ह्रस्व इकारान्त हैं; इन (शब्दों) के रूप मति (शब्द) के तुल्य होते हैं। त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् शब्द तकारान्त और स्त्रीलिङ्ग हैं; इन के रूप भूभृत् शब्द के तुल्य होते है। शत सहस्र आदि शब्द अकारान्त और क्लीवलिङ्ग हैं; इनके रूप फल शब्द के तुल्य होते हैं।

विंशति से ले कर समस्त संख्यावाचक शब्द सर्व्वदा बहुवचनान्त पद के विशेषण होते हैं; तथापि एक वचनान्त प्रयोग किये जाते हैं। यथा विंशतिः पुरुषा, त्रिंशत् स्त्रियाः, चत्वारिंशत् शिशवः, पञ्चाशत् युवानः षष्टिर्वृद्धाः सप्ततिस्तरवः, अशीतिः सरांसि, नवतिः पत्राणि, शतं लताः, सहस्रं फलानि इत्यादि।

संख्यावाचक शब्द—(Numeral Adjectives)

एकं दश शतञ्चैव सहस्रमयुतन्तथा।
लक्षञ्च नियुतञ्चैव कोटिरर्ब्बुदमेव च॥
वृन्दः खर्व्वो निखर्व्वश्चशङ्खपद्मौ च सागरः।
अन्त्यं मध्यं परार्द्धञ्च दशवृद्धया यथोत्तरम्।

(Cardinals.)

एकः—One
द्वौ—Two
त्रयः—Three
चत्वारः—Four
पञ्च—Five
षट्—Six
सप्त—Seven
अष्ट—Eight

पञ्चदश—Fifteen
षोड्श—Sixteen
सप्तदश—Seventeen
अष्टादश—Eighteen
ऊनविंशतिः-एकोनविंशतिः-
नवदश—Nineteen
विंशतिः—Twenty
एकविंशतिः—Twenty-one

नव—Nine
दश—Ten
एकादश—Eleven
द्वादश—Twelve
त्रयोदश—Thirteen
चतुर्दश—Fourteen
अष्टविंशति: Twenty-eight
नवविंशतिः, ऊनत्रिंशत्-
Twenty-nine
त्रिंशत्-Thirty
एकत्रिंशत्—Thirty-one
द्वात्रिंशत्—Thirty-two
त्रयस्त्रिंशत्—Thirty-three
चतुस्त्रिंशत्—Thirty-four
पञ्चत्रिंशत—Thirty-five
षट्त्रिंशत्—Thirty-six
सप्तत्रिंशत्—Thirty-seven
अष्टात्रिंशत्-Thirty-eight
नवत्रिंशत्, ऊनचत्वारिंशत्-
Thirty-nine
चत्वारिंशत्-Forty
एकचत्वारिंशत्-Forty-oue
द्वाविंशतिः—Twehty-two
त्रयोविंशतिः—Twenty-three
चतुर्विंशतिः—Twenty-four
पञ्चविंशतिः—Twenty-five
षड्विंशतिः—Twenty six
सप्तविंशतिः—Twenty-seven
षट्चत्वारिंशत्-Foury-six
सप्तचत्वारिंशत्-Forty-seven
अष्टचत्वारिंशत्, अष्टचत्वारिंशत्
—Forty-eight
नवचत्वारिंशत्, ऊनपञ्चाशत्-
Forty-nine
पञ्चाशत्—Fifty
एकपञ्चाशत्—Fifty-one
द्विपञ्चाशत्, द्वापञ्चाशत्-
Fifty-two
त्रिपञ्चाशत्, त्रयःपञ्चाशत्—
Fifty-three
चतुःपञ्चाशत्-Fifty-four
पञ्चपञ्चाशत्-Fifty-five
षट्पञ्चाशत्—Fifty-six
सप्तपञ्चाशत्-Fifty-seven

चत्वारिंशत्, पञ्चाशत्, षष्टि सप्तति तथा नवति शब्द परे रहने पर द्वि स्थानों के विकल्प में द्वा, त्रि स्थानों में त्रयः एवं अष्टन् के स्थान में विकल्प में अष्टा होता है।

द्विचत्वारिंशत्, द्वाचत्वारिंशत्-Forty-two
त्रिचत्वारिंशत्, त्रयश्चत्वारिंशत्-Forty-three
चतुश्चत्वारिंशत्-Forty-four
पञ्चचत्वारिंशत्-Forty-five
अष्टपञ्चाशत्, अष्टापञ्चाशत्-Fifty-eight
नवपञ्चाशत्, ऊनषष्टिः, एकोनषष्टिः-Fifty-nine
षष्टिः-Sixty
एकषष्टिः-Sixty-one

द्विषष्टिः, द्वाषष्टिः-Sixty-two
त्रिषष्टिः त्रयःषष्टिः—Sixty-three
चतुःषष्टिः—Sixty-four
पञ्चषष्टिः—Sixty-five
षट्षष्टिः—Sixty-six
सप्तषष्टिः—Sixty-seven
अष्टषष्टिः, अष्टाषष्टिः—Sixty eight
नवषष्टिः, ऊनसप्तति: एकोनसप्ततिः—Sixty-nine
सप्ततिः—Seventy
एकसप्ततिः—Seventy-one
द्विसप्ततिः, द्वासप्ततिः-Seventy-two
त्रिसप्ततिः, त्रयःसप्ततिः-Seventy-three
चतुःसप्ततिः—Seventy-four
पञ्चसप्ततिः—Seventy-five
षट्सप्ततिः—Seventy-six
एकाशीतिः—Eighty-one
द्व्यशीतिः—Eighty-two
त्र्यशीतिः—Eighty-three
चतुरशीतिः—Eighty-four
पञ्चाशीतिः—Eighty-five
षडशीतिः—Eighty-six
सप्ताशीतिः—Eighty-seven
अष्टाशीतिः-Eighty eight
नवाशीतिः,ऊननवतिः, एकोननवति—Eighty-nine
नवतिः—Ninety
एकनवतिः—Ninety one
द्विनवतिः, द्वानवतिः-Ninety two
त्रिनवतिः, त्रयोनवतिः,—Ninety-three
चतुर्नवतिः-Ninety-four
पञ्चनवतिःNinety-five
षण्णवतिः—Ninety-six
सप्तनवतिः—Ninety-seven

सप्तसप्तति Seventy-seven
अष्टसप्तति:,अष्टासप्तति:— Seventy-eight
नवसप्तति:,ऊनाशीति:. एकोनाशीति.—Seventy nine
अशीति:—Eighty

अष्टनवति:, अष्टानवति:— Ninety-eight
नवनवति:,ऊनशतम्; एकोनः—शतम्—Ninety-nine
शतम्, एकशतम् Hundred
एकाधिशतम्—One hundred and one

द्वयाधिकशतम्-One hundred and two
पञ्चाधिकशतम्—One hundred and five
सहस्रम्—Thousand
अयुतम्-Tens of thousand

लक्षम्—Hundreds of thousand
नियुतम्—million
कोटि:—Tens of million
अर्व्बुदम्—Hundreds of million*

पञ्चन् से लेकर अष्टादशन् पर्य्यन्त समस्त शब्द बहुवचनान्त एवं तीनों लिंगों में समान ही होते हैं। ऊनविंशति से लेकर नवनवति पर्य्यन्त संख्यावाचक समस्त शब्द सर्व्वदा एकवचनान्त रहते हैं; परन्तु इन सब के विशेष्य बहुवचनान्त होते हैं, यथा—विंशतिः नराः इत्यादि। ऊनविंशति से लेकर नवनवति पर्य्यन्त उपर्युक्त समस्त शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। इकारान्त विंशति, षष्टि, सप्तति, अशीति नवति, इत्यादि सब शब्दों के रूप मति शब्द के सदृश हैं एवं त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् शब्दों के रूप भूभृत् शब्द के समान होते हैं। किन्तु ये सब

---

* गुणवाचक संख्यावाचक भी होते हैं। यथा—संस्कृत (एक बार) द्विः (दो बार) त्रिः (तीन बार अथवा तिगुना) चतुः (चतुर्गुण) चौगुना (पञ्चकृत्वः) पंचगुना (षट्कृत्वः) छः गुना सप्तकृत्वः (सात गुना) (इत्यादि) किन्तु ये सब शब्द अव्यय होते हैं।

तीनों लिङ्गों के ही विशेषण होते हैं, यथा—विंशतिः बालकाः, विंशतिः बालिकाः, विंशतिः फलानि। शत, सहस्र, अयुत, लक्ष, नियुत, अर्व्वुद, अन्त्य, मध्य, तथा परार्द्ध इत्यादि शब्द नपुंसक लिङ्ग के है, अतः इनके रूप फल शब्द के समान होते हैं। अतिरिक्त वृन्द, खर्व्व; निखर्व्व, शङ्ख, पद्म तथा सागर इत्यादि शब्द पुल्लिग हैं। व्यावृत्ति वोध होने पर शतादि शब्द का द्विवचन तथा बहुवचन भी होते हैं।

यथा—द्वेशते (Two hundred) दो सौ, त्रीणि शतानि (Theree hundred) तीन सौ इत्यादि।

Ordinals—(पूरणवाचक)

प्रथमः—The first
द्वितीयः—The secend
तृतीयः—The third
चतुर्थः—The fourth
पञ्चमः—The fifth
षष्ठः—The sixth
सप्तमः—The seventh
अष्टमः—The eighth
नवमः—The ninth
दशमः—The tenth
एकादशः—The eleventh
द्वादशः—The twelth
त्रयोदशः—The thirteenth
चतुर्दश—The fourteenth
पञ्चदश—The fifteenth
षोडशः—The sixteenth

विंशः, विंशतितमः—The twentieth
त्रिंशः, त्रिंशत्तमः—The thirtieth
चत्वारिंशः, चत्वारिंशत्तमः The fortieth
पञ्चाशः, पञ्चाशत्तमः—The fiftieth
षष्टितमः—The sixtieth
एकषष्टितमः, एकषष्टः—The sixty first
द्विषष्टितमः, द्विषष्टः—The sixty secend
सप्ततितम्—The seventieth
अशीतितमः—The eightieth

सप्तदशः–The seventeenth नवतितमः—The ninetieth
अष्टादश:–The Eighteenth शततम:—The hundredth
ऊनविंशः ऊनविंशतितमः— सहस्रतम:—The thousandth
The nineteenth

*अव्यय (Indeclinable).

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेषु च सर्वेषु यन्नव्येति तदव्ययम् ॥

अव्यय के उत्तर सब विभक्तियों का लोप हो जाता है। इस कारण सब विभक्तियों में अव्यय शब्द का एक ही रूप होता है केवल अन्तस्थित र् और स् का विसर्ग हो जाता है। अव्यय शब्द अनेक हैं उनमें से सर्व्वदा व्यवहृत होने वाले थोड़े नीचे लिखे जाते हैं। यथा;

अन्तर्	पृथक्	मृषा	सह
प्रातर्	दिवा	मिथ्या	धिक्
पुनर्	सायम्	सुधा	अथो
उच्चैस्	नक्तम्	वृथा	अथ

*संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में बहुत से शब्द ऐसे हैं जिनमें लिङ्ग, संख्या, और कारक के चिह्न नहीं पाये जाते–उनको अव्यय कहते हैं। अनेक अव्यय शब्द अर्थ सहित नीचे लिखे जाते हैं—

स्वर् = स्वर्ग, परलोक। पुनर् = फिर, विशेष। अन्तर= भीतर, चित्त। सनुतर्=गुप्त हो। प्रातर्=सबेरा। उच्चैस= ऊँचा, बड़ा। नीचैस्= नीचा, अल्प, छोटा। हेतौ =कारण। शनैः= धीरे २। इद्धा = प्रकाश। ऋधक् = सत्य, । श्रद्धा= स्पष्ट, निश्चय। ऋते=छोड़ कर, बिना। सामि=आधा युग-पद् =एक ही हाल में।

नीचैस	मनाक्	पुरा	अर्थकम्

वति प्रत्ययान्त शब्द भी अव्यय होते हैं—जैसे ब्राह्मणवत्

पृथक्=भिन्न, अनेक रूप।

आरात=दूर, समीप। | सना, सनत्, सनात् = नित्य

ह्यस् = गत दिवस।

श्वस्=आगामी दिन।

दिवा=दिन। उपधा=भेद। रात्रौ=रात। तिरस् = अन्तर्धान, तिर्छा, अनादर। सायम् = साँझ। चिरम् = बहुत काल। अन्तरा=मध्य, विना। अन्तरेण=छोड़ कर, विना। मनाक्= ईषत्, थोड़ा। ज्योक=बहुत काल, प्रश्न, शीघ्र। जोषम्=सुख, चुपचाप। तूष्णीम् = चुप चाप। कम् = जल, माथा। शम्= सुख, निन्दा। वहिस्, अवस्=वाहर, बाहरका। सहसा= अचानक, अविचार से। समया = समीप, मध्य। विना= छोड़कर। निकषा=समीप। नाना=अनेक, विना। स्वयम् = आप ही। स्वस्ति=मङ्गल, स्वीकार सूचक। वृथा=व्यर्थ, निर्थक। स्वा = पितरों को देने में। नक्तम=रात। अलम्= भूषण, बस, सामर्थ्य, निवारण, निषेध। नञ्=निषेध, अभाव। वषट्, श्रौषट्, वौषट्=देवताओं को हविर्दान् में बोला जाता है। अथ=अनन्तर, आरम्भ, प्रश्न, विकल्प। अम्= शीघ्र, अल्प। अन्यत्=अन्य। आम्=स्वीकार, हां। अस्ति=होना। प्रातन्=ग्लानि, थकावट।

उपांशु=अप्रकाश उच्चारण, गोप्य। प्रशान्=समान।

क्षमा=सहना। प्रस्तान=विस्तार।

विहायसा=आकाश। मा, माङ=विहायस्=निषेध, शङ्का।

दोषा=रात।

मृषा, मिथ्या=झूठा । मुधा=व्यर्थ । पुरा=पहिले, पूर्वकाल में ।
यह स्वरादि आकृतिगण है। अर्थात् इस रूप के और भी जो शब्द मिलें उनको भी अव्यय जानो । जैसे–कामम्=स्वच्छन्दता ।
मिथो, मिथस्=एकान्त, साथ, अन्योन्य । प्रकामम्=अतिशय ।
प्रयास्=बहुतायत से, बहुधा । भूयस्=फिर ।
मुहुस्=फिरफिर, बारबार । साम्प्रतम्=उचित, अब ।
प्रवाहुकम्=समान् काल, ऊपर । परम=किन्तु ।
आर्य्य हलम्=बलातकार से । साक्षात्=प्रत्यक्ष ।
अभीक्ष्णम्=पुनः पुनः, अत्यन्त । साचि=तिर्छा ।

सत्यम्=कुछ स्वीकार। सह, साकम्, सार्द्धम्=साथ। मङ्क्षु, आशु=शीघ्र। नमस=प्रणाम् । सम्वत्=वर्ष । हिरुक्=छोड़ कर । अवश्यम्=निश्चय। धिक्=निन्दा,धिक्कारना। उषा=रात। झटिति, झगिति, बरसा=शीघ्र । कुवित्=वाहुल्य, प्रशंसा । नेत्=शङ्का, निषेध, विचार समुच्चय । सुष्ठु=अच्छा । चेत्=यदि । दुष्ट=बुरा । चण्=यदि, कच्चितप्रश्न । सु=अच्छा । कु=निकम्मा, थोड़ा, अमर्ष, निन्दा आश्चर्य्य अनिश्चय। अञ्जसा=यथार्थ, शीघ्र । मिथु=दोनों । नह=प्रत्यारम्भ । अस्तम्=विनाश । हन्त=हर्ष, खेद, कृपया, वाक्यारम्भ। स्थाने=उचित। वरम्=कुछ अच्छा। सुदि=शुक्ल पक्ष । बदि=कृष्ण पक्ष । इत्यादि । ाकिः, माकिम्, नकिः=छोड़ कर। च=और, अर्थात् समुच्चय, ्वाचय, इतरेतरयोग, समहार। [समुच्चय] तावत्, ्वत्=समग्रता, अवधि, परिमाण, निश्चय । त्वै=विशेष, ।तर्क । द्वै=वितर्क। वा=विकल्प, उपमा, निश्चय । रै–दान , अनादर । हि=प्रसिद्धि। तुम=तुकारना । अह=पूजा ।

स्वर	युगपत्	उपांशु	समम्
अलम्	जोषम्	मिथस्	एव

तथापि=देखो। एव=निश्चय, अनिश्चय। खलु=निषेध, वाक्यालङ्कार, निश्चय। एवम=ऐसेही। नूनम्=निश्चय, वितर्क। किल=वार्ता, मिथ्या। शाश्वत्=पुनः पुनः, नित्य, साथ। स्म=भूतकाल सूचक, पादपूरण। कुमत्=प्रश्न। प्रशंसा। आदह=आरम्भ, हिंसा, निन्दा।

जो शब्द उपसर्ग विभक्ति और स्वर के तुल्य हों उन को भी अव्यय जानो। जैसे—अवदत्तम्, यहां अव अहं युः, अस्ति क्षीरा, यहां अहं और अस्ति अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ, यहां अकार आदि वर्ण, क्रम से उपसर्ग विभक्ति और स्वर के सदृश हैं। वस्तुतः उपसर्ग विभक्ति और स्वर नहीं हैं। पशु=भली भाँति। शुक्रम्=शीघ्र। यथा कथा च=अनादर। यत्, तत्=हेतु। पाट्, प्याट्, अङ्ग, हे, भोः, अये=सम्बोधन में। आहोस्वित्=अथवा। सीम=सब ओर से होना। सुकम्=अतिशय। अनुकम्=वितर्क। सम्वद्=अन्तःकरण, अनुकूलता। व=पादपूरण, सादृश्य की नाईं तुल्य। व=हिंसा, विपरीत क्रम, पादपूरण। दिष्ट्या=आनन्द। विषु=अनेक। चटु, चाटु=प्रियवाक्य। एकपदे=अकस्मात्। हूम=घुड़कना। पुत्=कुत्सा, निन्दा। इव=सादृश्य। अतः=इससे भी। अद्यतवे=अब, समाप्ति, हेतु।

यह चकारादि भी आकृतियों में अर्थात्—इति=कि, इस प्रकार गण है। इस रूप के और जिन तद्धित प्रत्ययान्त शब्दों के आगे सब विभक्तियों में न आवें अर्थात् एकवचन हो आवे उनको भी अव्यय कहते हैं। इन तद्धित प्रत्ययों का परिगणन कौमुदी में यों

विना	तूष्णीम्	श्वस्	एवम्
ऋते	बहिस्	प्रायस्	नूनम्
अन्तरा	स्वयम्	मुहुस्	वम्
अन्तरेण	सहसा	साकम्	शश्वत्
आरात्	नाना	सार्द्धम्	सूयम्
चेत्	सुष्ठु	यत्	च
यदि	अहो	तत्	ह
कच्चित्	अंग	इति	वै
हन्त	हे	न	वा
यथा	भोः	नो	स्म
तथा	अयि	मा	मास्म
तथाहि	अये	सु	नु

किया है। जैसा तसिल् प्रत्यय से लेकर पाशप् के पूर्व तक। शस् प्रत्यय से लेकर "समासान्त" इस सूत्र के पूर्व तक। अम् आम्। कृत्वसुच्, सुच्, धा, तसि, बतिना, नाञ; उन में सेथोड़े प्रसिद्ध शब्द नीचे लिखता हूँ—

कुतः=कहाँ से, क्यों। यतः=जहां से, क्योंकि। ततः=वहां से, उससे। अतः=यहां से, इससे। इतः=इससे, यहां से, इधर। बहुतः=बहुतों से। परितः=सब ओर से। अभितः=दोनों ओर से। कुत्र=कहां, किस में। यत्र=जहां, जिसमें। तत्र=वहां, उसमें। अत्र=यहां, इसमें। बहुत्र=बहुतों में। इह=यहां, इसमें। क्व=कहां। अधुना=अब, इस समय। इदानीम्=अब। तदानीम्=तब। यर्हि=जब। तर्हि=तब तो। कर्हि=कब। परेद्युः=दूसरा दिन। अद्य=आज। पूर्वेद्युः=पिछला दिन। अन्येद्युः=अन्य दिन। उभयद्युः=दोनों दिन। तथा=उस प्रकार से, तैसे। यथा=जिस प्रकार से, जैसे। इत्थम्=इस प्रकार से, ऐसे। कथम्=किस प्रकार से, कैसे।

खलु	अरे	हि	ननु
किल	रे	ही	इव

प्र आदि बीस उपसर्ग भी अव्यय शब्द हैं। अव्यय का विशेषण क्लीबलिंग होता है यथा—रमणीयमिदं प्रातः। अव अपि इन दोनों (शब्दों) आदिस्थित आकार का विकल्प से लोप होता है। यथा—वगाहः, अवगाहः, वगाहते, अवगाहते, वगाह्य, अवगाह्य, पिधानम, अपिधानम, पिहितम्, अपिहितम, पिदधाति, अपिदधाति।

सदा = सब काल में। सर्व्वदा = नित्य। एकदा = एक समय। अन्यदा= अन्य समय में। कदा = कब, किस समय। तदा = तब, इस समय। एतर्हि = इस काल में। मध्यतः = बीच में। अन्ततः = अन्त मे। बहुशः = बहुत। जैसे; बहुशो ददाति = बहुत देता है। अल्पशः=थोड़ा। जैसे; अल्पशो ददादि = थोड़ा देता है। आदितः = आदि में, पहिले। पृष्ठतः = पीछे। पार्श्वतः=दहिने बायें।

नकारान्त और एजन्त कृत् प्रत्यय जिस शब्द के अन्त में हों उसको भी अव्यय कहते हैं। जैसे स्मारं स्मारम्, बार बार स्मरण कर के। यहाँ स्मृ धातु से णमुल प्रत्यय हुआ है। जीव से, जीना। यहाँ जीव धातु से असे प्रत्यय है। पिवध्यै, पीना। यहाँ पा धातु से शध्यै प्रत्यय है।

क्त, तोसुन्, और कसुन् ये प्रत्यय जिन शब्दों के अन्त में हों उनको भी अव्यय कहते हैं। जैसे—कृत्वा करके। यहाँ कृ धातु से क्त्वा प्रत्यय है। उदेतोः उदय। यहाँ उत्पूर्वक धातु से तोसुन् प्रत्यय है। विसृपः गमन। यहाँ विपूर्वक सृप धातु से कसुन प्रत्यय है।

अव्ययीभाव समास को भी अव्यय कहते हैं। जैसे अधिहारी, हरि में इत्यादि।

क्रिया विशेषण (Adverd)

निम्नलिखित अव्ययों में से प्रायः सभी क्रिया विशेषण की तरह व्यवहार होते हैं। इनमें क्लीवलिंग द्वितीया एकवचन की विभक्ति होती है। कभी २ (दूसरी) विभक्तियों के एकवचन का प्रयोग भी किया जाता है।

अकस्मात्—Suddenly
अग्रे—In front of
अचिरम्—(अचिरेण) Soon
अञ्जसा—Rightly
अथ—After, now
अथकिम्—Yes
अथच—Also
अथवा—Or
अद्धा—Truly. verily
अद्य—To-day
अधि—Over
अधिकन्तु—Moreover
अधुना—Now
अन्तर—Within
अन्तरा—Betwixt
अन्तरेण—Without
अन्यत्—Other
अन्यत्र—Elsewhere
अन्यथा—Otherwise
अपि (अपि च)—Though
अभीक्ष्णम्—Repeatedly
अलम्—Enough
अवश्यम्—Certainly
अयि, अये, अरे—Oh
असि—You
अस्मि—I
अहो—Alas
आरात्—Near, far from
आविस्—Manifest
इतस्—Hence
इत्थम्—Thus
इदानीम्—Now
इव—As, like
इति—This
इह—Here
इषत्—A little
उच्चैस्—Aloud
उत—In question
उदक—Northern
उपधा—Last but one

also
उपांशु—Secretly
ऋते—Except
एकदा—Once
एकत्र—Together
एतर्हि—Now
एवम्—Thus
एव—Surely
कच्चित्—In question
कथम्—Why, how
क्व, कुत्र—Where
किम्—What
किल—Indeed
कुत—Whence
कदा—When
कदाचित्—Once
कथञ्चित्—With difficulty
खलु—Certainly
चिरम्, चिराय, चिरे, चिरात्
For a long time
चेत्—If
जातु—Scarcely
जोषम्—With ease
झटिति—At once
तत्, ततः—Therefore
तु—But

उपरि—Above
तदा, तर्हि—Then
तत्र—There
तावत्—Till then
तिरस्—Indirectly
तिर्य्यक्—Crookedly
तूष्णीम्—Silently
दिवा—By day
दिष्ट्या—Fortunetely
दोषा—At night
द्राक्—Soon
ध्रुवम्—Certainly
धिक्—Fie
ननु—Surely
नाना—Many
न, नो—Not
नमस्—Salutation
नक्तम्—At night
निकषा—Near
नीचैस्—Low
नूनम्—Certainly
पुनर्—Again
पुरा—Old, before
पुरस्तात्—Before
परितस्—Around
पश्चात्—Behind

तथा—Thus
प्रत्युत—On the other hand
प्रसह्य—By force
प्राक्—Before
प्रातर्—In the morning
प्रायस्—Almost
पुनः पुनः—Repeatedly
परुत्—Last year
भोस्—Hallow
भूयस्—Again
भृशम्—Greatly
भूरि—Much. enough
मनाक्—A little
मिथ्या, मृषा—False
मिथस्—Private
मुहुस—Again and again
मुधा—In vain
मा, मास्म—Not
यत्, यतः—Since
यत्र—Where
यदा—When
यावत्—As long as
यदि—if
युगपत्—At once
वहिस्—Outside
वृथा—In vain
पृथक्—Separtely
विना—Except
विहायसा—In the sky
वत्—Alas
शीघ्रम्—Soon
शनैस्—Slowly
श्वस्—To morrow
शश्वत्—Again often
सम्यक्—Well
स्वयम्—Self
सहसा—Suddenly
स्वर्—Heaven
सम्प्रति, साम्प्रतम—Now
सपदि, सद्यस्—At once
सह, साकम्, सार्द्धम्—With
सकृत्—Once
साक्षात्—In sight
सायम्—At eve
समन्तात्—Around
सदा, सर्व्वदा, सततम्—Often
सुष्ठु—Nicely well
सामि—Half
स्वाति—Blessing
समया—Near
हि—Because
हन्त—Alas

वा—Or हे—Oh
हिरुक्—Except ह्यस्—Yesterday
हेतौ—By reason

उपसर्ग

जो 'अव्यय' क्रिया के पूर्व रहते हैं वे उपसर्ग कहलाते हैं उपसर्ग के लगाने पर क्रिया के अर्थ में विभिन्नता हो जाती है कभी भिन्न और कभी बिल्कुल उल्टा अर्थ हो जाता है। उपसर्ग २० हैः—

प्र—Forth, forward, well, exceedingly, Very प्रयाति goes forth, प्रकर्षः greatness, प्रकारः, प्रचारः, प्रकोपः, प्रमाणम्; प्रमादः, प्रयोगः, प्रलापः, प्रवाहः, प्रवृत्तिः, प्रसादः, प्रस्तावः, प्रस्थानम्, प्रसारः, प्रहारः इत्यादि।

परा—Away, back, opposed to etc. पराक्रमः power, पराजयते defeats. पराभवः defeat. disregard परामर्शः पराजयः।

अप—Away, away from, opposite to. अपनयनं taking away. अपकर्षः degradation. अपकार, अपमानः, अपयशः, अपराधः, अपवादः, अपव्ययः, अपहरणम्, अपेक्षा।

सम्—together with, full, excellent etc, संगमः union· संस्कारः perfection, संस्कृतिः refinement, संयमः, संयोगः, संवादः, संसर्गः, संसारः, संहारः, सन्तानम्, सन्देशः, सन्देहः, सद्भावः, सम्भावः, सम्भोगः, सम्भ्रमः।

अनु—After, along, behind etc, अनुसरति-अनुगच्छति goesafter, follows, अनुकृतिः imitation, अनुक्रम method-अनुग्रहः अनुचरः, अनुतापः, अनुनयः, अनुपानम्, अनुमानम्,

अनुरागः, अनुरोधः, अनुवादः, अनुष्ठानम्, अनुसन्धानम्, अनुसरणम् ।

अव—Down off, from, away, etc, अवतरति goes down, descends अवगाहनम्, bathing, अवचयःgathering अवच्छेदः, अवतरणम्, अवसरः, अवहेला ।

निस्—(निर्)—out of, away from, without etc, निःश्वासः breathing out निर्गमः a passage, निर्दोषः, निराकरणम्, निर्झरः, निर्णयः, निर्धनः, निर्वाणम् ।

दुस्—(दुर्) Bad, hard to be done, difficult etc दुराचारः bad conduct, दुष्करः hard to be done, दुःसहः difficult to be borne, दुर्जनः, दुर्दशा, दुर्भिक्षम्, दुष्कृतिः ।

वि—Apart, separate from, certainly, reverse to etc, विश्लिष्यति seperates विकारः, विकृतिः, विकाशः विक्रमः, विक्रयः, विग्रहः, विघ्नः, विजयः, विज्ञानम्, वितानम्, विदेशः, विनयः, विनाशः, विप्लवः, विभवः, विभ्रमः, वियोगः, विरागः, विरामः, विरोधः,विलासः, विवाहः, विवेकः, विश्रामः, विषादः, विस्तारः, विस्मयः ।

आ—Up to, towards, allrouud, a little etc, आगच्छति comes आरोहति grows to, ascends आकरः, आकारः, आक्रोशः abuse, आक्षेपः, आख्यानम् atale, आगमः, आघातः, आचारः, आज्ञा, आतपः, आधारः, आपद्, आकम्पः shaking a litle, आहुतिः ।

नि—In, within, on, upon, opposed to down etc निषीदति sits down, निकरः heap, निकषः Touchstone निग्रहः, निदानम्, निदेशः, निपातः, निमन्त्रणम्, नियमः, नियोगः order, निसर्गः nature.

अधि–Over, above, upon, on etc, अधिगच्छति goes over, knows, gets, अधिकारः, अधिष्ठानम्, अधिवासः ।

अति—bevond, over, toomuch, very much, exceedingly; अतिक्राम्यति goes over, अतिसारः dysentry अतिपानम्, अत्ययः ।

सु—Well, thoroughly, सुकृतं done well, सुशासिता well governed, सुगमः, सुचरितम्, सुजनः, सुमहान्, सुषुप्तिः ।

उत्—UP, above, superior etc उत्पतति falls up, उद्गच्छति rises, उच्छ्वासः, उत्कण्ठा, उत्कर्षः, उत्तापः, उत्थानम्, उत्पत्तिः, उत्पातः, उत्सर्गः उत्सवः, उत्साहः, उदयः, उद्गमः, उद्भवः, उद्यमः ।

अभि—to, towards, upon, near to etc, अभिगच्छति goes to, goes near to अभिगमः going towards, अभिज्ञानम्, अभिधानम्, अभिनयः, अभिभवः defeat, अभिमानः, अभियोगः, अभिरुचिः, अभिलाषाः, अभिवादनम्, अभिशापः, अभिषेकः ।

प्रति—In return, back towards, in opposition to, etc, प्रतिभाषते speaks in return, प्रतिकारः remedy, प्रतिक्रिया, प्रतिग्रहः, प्रतिनिधिः, प्रतिध्वनिः, प्रतिवादः, प्रतिष्ठा, प्रतिरोधः, प्रतिहिंसा ।

परि—all round, about etc परिधा to place oll round परिखा ditch, परिचयः, परिजनः, परिणतिः result, परिणय marriage परिणामः, परितापः, परिधिः, परिपाकः, परिभवः, परिवर्त्तनम्, परिवारः, परिशिष्टम् appendix, परीक्षा ।

उप—near, less, next to etc, उपगच्छति approrches,

उपकारः, उपघातः disease, उपचयः excess, उपचारः, उपदेशः, उपभोगः enjoyment, उपनयम्, उपवासः, उपहारः।

N. B.—(१) अव और अपि उपसर्गों के अ का विकल्प से लोप होता है। यथा, वगाहः, अवगाहः, पिधानम्, अपिधानम्।

(२) एक से अधिक उपसर्ग भी लगाये जाते हैं। यथा, अभिनिविशते resorts, समुपागच्छति।

(३) समास में अति, अधि, अनु, अप, अव, अभि, उप, परि और प्रति के परे क्रिया का लोप होता है। यथा, अतिक्रान्तो मालां अतिमालः।

(४) सात् प्रत्ययान्त शब्द भी उपसर्ग की भाँति व्यवहृत होते हैं। यथा, भस्मसात्कृतः reduced to ashes, अग्निसात्कृत।

Calcutta University Questions;

1. Decline the base of प्रद्भाम in accusative द्वितीया विभक्ति in all numbers C. U. 1910

2, Decline the base of विद्वस् or श्रीमती in the accusative (द्वितीया विभक्ति) in the masculine gender of all numbers C. U. 1910

3. Decline the base of ज्वलन्तम् in the nominative प्रथमा विभक्ति of all the numbers in the neuter gender, C. U. 1911

4. Decline कीर्ति in the dative in all numbers,

5. Decline नामन् or तेजस् in all Cases C.U. 1912

6. Decline the bases of any two of the following in द्वितीया चतुर्थी and सप्तमी-राजा । युवाभ्याम् भ्राता, गो

7. Decline वृत्रहन् प्रत्यच्, and अदत् (masculine and neuter) in the second, the fourth and the 6th case C, U. 1913

8. Decline either क्षुध् or जरा in the तृतीया विभक्ति, C. U. 1914

9. Decline एक or अल्प In the masculine gender in all the विभक्ति in the singular C. U. 1915

10. Decline पथिन् or नीति in all विभक्ति C. U. 1916

11. Decline पति or पथिन् in the Locative case तृतीया and जरा or मति in the Detive case (सम्प्रदान) C. U. 1917

12. Decline सखि in the masculine gender in the acusative case (द्वितीया विभक्ति) अदस् in the feminine gender the possessive case (षष्ठी विभक्ति) and महत् in the neuter gender in the nominative case (प्रथमाविभक्ति) C. U. 1918

PATNA UNIVERSITY QUESTIONS.

1918-1-Decline अदस् (feminine) in चतुर्थी Singular. युष्मद् in तृतीया plural विद्वस in सप्तमी dual

2. Decline अस्मद् in चतुर्थी Singular and षष्ठी, सप्तमी plural.

3. Use any three of the following words in short Sanskrit Sentences:-

एनम्, तिस्र·, शासति, त्रायस्व and यथाशक्ति ।

4. What are ten general rules that bear upon ten changes of न into ण? Give examples

1919-5 Decline पति or सम्राज् in सप्तमी, जग्मिवस् or विद्वस in षष्ठी, अदस (feminine) इदम् (feminine) in चतुर्थी and प्रत्यच् or तिर्य्यच् in पञ्चमी ।

6 Decline नामन् in प्रथमा and गरीयस in षष्ठी ।

1920-Decline श्वन् (masculine) in पञ्चमी, युष्मद् or अस्मद् in सप्तमी, तिर्यच् (neuter) or उदच् (neuter) in द्वितीया, धातृ (feminine) or जग्मि-वस् (feminine) in चतुर्थी ।

Decline any two of the following in Nominative, Ablative and Locative cases.

यामिणी, पङ्क्ति, श्री, and बहुयज्वा ।

1921 9—Decline सखि or राजन् in पञ्चमी, युष्मद् or अस्मद् In षष्ठी, विद्वस् or वेधस in चतुर्थी, मति or बुद्धि in सप्तमी ।

10-Decline any two of the following in

Nominative Dative and Locative cases,
भूपति, राजन्, जामातृ जरा and भ्रू ।

1922 11–Decline any three of the following in Singular number only :—
नौ in तृतीया, धी in द्वितीया, दुहितृ in सप्तमी and भूपति in सम्बोधन ।

12–Frame short sentences with following:
नूनम्, कच्चित्, क्वचित् ।

13–Decline any three of the following:—नरपति in the sixth case ending जामातृ in seventh case ending सुधी in the second case ending जरा in the fourth case ending रात्रि in the fifth case ending.

1923 14–join the Sandhis in any three of the following :—
(a) धिक् + इमां (b) कच्चित् + उपविष्ठ (c) यदि + एन (d) हरिः + रक्षति ।

15—Decline सखि (masculine) in तृतीया । महत् (masculine) प्रथमा, अदस् (Neuter) in षष्ठी ।

16—Decline any three of the following:—
पश्चिम in सप्तमी, युष्मद् in पञ्चमी विश्वपा in द्वितीया युवन in चतुर्थी ।

17—combine according to the rules of Sandhi
प्र + ऋच्छति, मुनी + एतौ, रवौ + अस्तमिते ।

1925 18–Decline any four of the following in all the numbers:—

युष्मद् in द्वितीया, इदम् in feminine gender श्वन् in तृतीया and सप्तमी, पथिन् in पञ्चमी, श्री in the प्रथमा, द्युमान् in षष्ठी ।

19—Show the Sandhi in the following:—

गृह + छिद्रम्, वाक् + शरः, कुर्वन् + आस्ते ।

20—Construct four Sentences in Sanskrit using in each, one of the following अव्ययः—

यावत्, कुत्रचित्, नूनम् and एवं ।

21—What are the rules that bear upon the change of न into ण? Give examples.

22—Decline any three of the following in चतुर्थी विभक्ति वृत्रहन्, प्रत्यच्, लघीयस् and श्वन् ।

* प्रथम भाग समाप्त *

महामहोपाध्याय पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर प्रणीत

व्याकरण-कौमुदी



द्वितीय भाग

तिङन्त-प्रकरण (Conjugation).

१। क्रियावाचक प्रकृति को धातु * कहते हैं। यथा, भू, स्था, गम्, दृश्, रुद्, हस्, इत्यादि। धातु के उत्तर दश विभक्तियां होती हैं। यथा लट्—Present, लोट्—Imperative mood, लङ्—Imperfect or first preterite, विधिलिङ्—Potential mood, लुट्—periphrastic or first future, लृट्—Second future, लृङ्—conditional mood, आशीर्लिङ्—Benedictive mood, लिट्—perfect or second preterite, लुङ्—Aorist or Third preterite. विभक्तियों के तीन पुरुष हैं, प्रथमपुरुष, (Third person), मध्यमपुरुष (Second person), उत्तमपुरुष (first person)। अस्मद् शब्द से उत्तम पुरुष समझा जाता है, युष्मद् शब्द से मध्यमपुरुष और इनको छोड़ कर सब शब्द प्रथमपुरुष हैं। एक एक पुरुष में विभक्ति के तीन तीन वचन होते हैं, एकवचन, द्विवचन और बहुवचन।

२। सब विभक्तियां दो भागोंमें विभक्त हैं। प्रथम भाग को परस्मैपद

* अर्थात् जहां से क्रिया की उत्पत्ति होती है उसे धातु कहते हैं।

(transitive) और द्वितीय भाग को आत्मनेपद (intransitive) कहते हैं। प्रत्येक विभक्ति के अठारह रूप होते हैं, परस्मैपद में नव और आत्मनेपद में नव, अतएव परस्मैपद में नब्बे और आत्मनेपद में नब्बे—सब विभक्तियों के रूप एक सौ अस्सी हैं। विभक्ति के एक सौ अस्सो आकारों को भी विभक्ति के नाम से निर्दिष्ट किया जा सकता है।

विभक्ति की आकृति।

लट्—परस्मैपद। वर्त्तमान काल (Present tense)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ति	सि	मि
द्विवचन	तस् *	थस्	वस्
बहुवचन	अन्ति	थ	मस्

आत्मनेपद—लट्—वर्त्तमानकाल।

एकवचन	ते	से	ए
द्विवचन	आते	आथे	वहे
बहुवचन	अन्ते	ध्वे	महे

(अनुज्ञा) लोट्—परस्मैपद (Imperative mood).

एकवचन	तु	हि	आनि
द्विवचन	ताम्	तम्	आव
बहुवचन	अन्तु	त	आम

आत्मनेपद

एकवचन	ताम्	स्व	ऐ
द्विवचन	आताम्	आथाम्	आवहै
बहुवचन	अन्ताम्	ध्वम्	आमहै

* विभक्ति के प्रत्येक हलन्त सकार के स्थान में विसर्ग होता है।

लङ्—परस्मैपद (Imperfect).

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	द्	स्	अम्
द्विवचन	ताम्	तम्	व
बहुवचन	अन्	त	म

आत्मनेपद

एकवचन	त	थास्	इ
द्विवचन	आताम्	आथाम्	वहि
बहुवचन	अन्त	ध्वम्	महि

विधिलिङ्—परस्मैपद (Potential).

एकवचन	यात्	यास् (याः)	याम्
द्विवचन	याताम्	यातम्	याव
बहुवचन	युस्	यात	याम

आत्मनेपद

एकवचन	ईत	ईथास् (ईथाः)	ईय
द्विवचन	ईयाताम्	ईयाथाम्	ईवहि
बहुवचन	ईरन्	ईध्वम्	ईमहि

लृट्—परस्मैपद (Future).

एकवचन	स्यति	स्यसि	स्यामि
द्विवचन	स्यतस् (स्यतः)	स्यथस् (स्यथः)	स्यावस् (स्यावः)
बहुवचन	स्यन्ति	स्यथ	स्यामस् (स्यामः)

आत्मनेपद

एकवचन	स्यते	स्यसे	स्ये
द्विवचन	स्येते	स्येथे	स्यावहे
बहुवचन	स्यन्ते	स्यध्वे	स्यामहे

लङ्—परस्मैपद (Conditional).

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	स्यत्	स्यस्	स्यम्
द्विवचन	स्यताम्	स्यतम्	स्याव
बहुवचन	स्यन्	स्यत्	स्याम

आत्मनेपद

एकवचन	स्यत	स्यथास्	स्ये
द्विवचन	स्येताम्	स्येथाम्	स्यावहि
बहुवचन	स्यन्त	स्यध्वम्	स्यामहि

लुट्—परस्मैपद (Periphrastic Future).

एकवचन	ता	तासि	तास्मि
द्विवचन	तारौ	तास्थस्	तास्वस्
बहुवचन	तारस्	तास्थ	तास्मस्

आत्मनेपद

एकवचन	ता	तासे	ताहे
द्विवचन	तारौ	तासाथे	तास्वहे
बहुवचन	तारस्	ताध्वे	तास्महे

आशीर्लिङ्—परस्मैपद (Benidictive mood).

एकवचन	यात्	यास्	यासम्
द्विवचन	यास्ताम्	यास्तम्	यास्व
बहुवचन	यासुस्	यास्त	यास्म

आत्मनेपद

एकवचन	सीष्ट	सीष्ठास्	सीय
द्विवचन	सीयास्ताम्	सीयास्थाम्	सीवहि
बहुवचन	सीरन्	सीध्वम्	सीमहि

लिट—परस्मैपद (Perfect tense).

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एक वचन	अ	थ	अ
द्विवचन	अतुस्	अथुस्	व
बहुवचन	उस्	अ	म

आत्मनेपद

एकवचन	ए	से	ए
द्विवचन	आते	आथे	वहे
बहुवचन	इरे	ध्वे	महे

लुङ्—परस्मैपद (Aorist).

एकवचन	द्	स	अम्
द्विवचन	ताम्	तम्	व
बहुवचन	अन्	त	म

आत्मनेपद

एकवचन	त	थास्	इ
द्विवचन	आताम्	आथाम्	वहि
बहुवचन	अन्त	ध्वम्	महि

धातु विभाग

६ । संस्कृत के सब धातु दश श्रेणियों में विभक्त हैं । उन्हीं में से एक २ श्रेणीका नाम गण है ।

भ्वादि (First conjugation)

अदादि (Second conjugation)

भ्वाद्यदादी जुहोत्यादि र्दिवादिः स्वादिरेव च ।

तुदादिश्च रुधादिश्च तन क्र्यादि चुरादयः ।

(१) परस्मैपद

एकवचन	तिप्	सिप्	मिप

ह्वादि (Third conjugation)
दिवादि (Fourth conjugation)
स्वादि (Fifth conjugation)
तुदादि (Sixth conjugation)
रुधादि (Seventh conjugation)
तनादि (Eighth conjugation)
क्रयादि (Ninth conjugation)
चुरादि (Tenth conjugation)

साधारण नियम

४ । विभक्ति का अ-कार और ए-कार परे रहने से पूर्व्ववर्ती अ-कार का लोप होता है । यथा, भव-अन्ति भवन्ति, सेव—ए सेवे ।

५ । विभक्ति का म और व परे रहने से पूर्व्ववर्ती अकार के स्थान में आकार होता है । यथा, भव-वस भवावः, भव-मस् भवामः ।

द्विवचन	तस्	थस्	वस्
बहुवचन	झि	थ	मस्
		आत्मनेपद	
एकवचन	त	थास्	इट्
द्विवचन	आताम्	आथाम्	वहिङ्
बहुवचन	झ	ध्वम्	महिङ्

पाणिनि ने प्रथमतः यही अष्टादश विभक्ति कर के इन्हीं के स्थान में क्रम २ से एक सौ अस्सी विभक्तियाँ आदेश की हैं, वोपदेव आदि वैयाकरण लोगों ने पाणिनी के अनुवर्ती न होकर एक ही वार एक सौ अस्सी विभक्तियां बनाई हैं । प्रथम विभक्ति का आदि अक्षर ति और शेष विभक्तिका अन्त अक्षर ङ, यही आदि और अन्त्य वर्ण लेकर वैयाकरण लोगों ने धातु विभक्ति की तिङ् संज्ञा निर्दिष्ट की है । धातु के अन्त में तिङ् का योग होने से पद निष्पन्न (वनता) होता है, इसी हेतु उस पद को तिङन्त पद कहते हैं ।

६। अ-कार के परस्थित, आते, आथे, आताम्, आथाम् इन कई एक विभक्तियों के आ-कार के स्थान में इ-कार होता है। यथा, सेव-आते सेवेते, सेव-आथे सेवेथे, सेव-आताम् सेवेताम, सेव-आथाम सेवेथाम्।

७। अ—कार के परस्थित विधिलिङ् युस् के स्थान में इ-युस् और या-म् के स्थान में इयम् होता है। तद्भिन्न समस्त या भाग के स्थान में इ होता है। यथा भव-युस् भवेयुः, भव-याम् भवेयम्, भव-यात् भवेत, भव-याताम् भवेताम्।

८। आ—कार के और उ, नु इन दोनों आगमों के परस्थित हि विभक्ति का लोप होता है। यथा, भव-हि भव, कुरु-हि कुरु, शृणु-हि शृणु। नु व्यञ्जन वर्णों के साथ संयुक्त रहने से हि विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा आपनु-हि आप्नुहि।

९। वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण अथवा श्, ष्, स्, ह्, इन सब वर्णों के परस्थित हि के स्थान में धि होता है। यथा विद्-हि, विद्धि।

१०। अ—कार भिन्न वर्ण के परस्थित अन्त, अन्ताम्, अन्ते इन कई एक विभक्तियों के न-कार का लोप होता है। यथा, आस्-अन्त आसत, आस अन्ताम् आसताम, आस अन्ते आसते। धातु अभ्यस्त होने से अन्ति और अन्तु विभक्तियों के न कार का भी लोप हो जाता है। यथा, जुहु अन्ति जुह्वति, जुहु—अन्तु जुह्वतु, शास्—अन्ति शासति, जागृ-अन्तु, जाग्रतु।

११। अभ्यस्त * धातु के परस्थित लङ् के अन् के स्थान में उस् होता है और वही उसके आगे रहने से अन्त्य स्वरका गुण होता है। यथा, अजुहु—अन् अजुहवुः, अजागृ-अन् अजागरुः।

---

* अभ्यस्त उसको कहते हैं जिस लकार में धातु द्वित्व होता है। प्रायः लिट् लकार में इसका प्रयोग होता है।

१२। लङ्, लुङ् और लृङ् विभक्ति परे रहने से धातु के आदि में अ-कार होता है। यथा अभवत्, अभूत्, अभविष्यत्। मा और मास्म शब्द का योग रहने से अ नहीं होता। यथा, मा भवत्, मास्मभूत।

१३। लङ्, लुङ् और लृङ् विभक्तियों में धातु के आदि स्थित इ ई के स्थान मे ऐ, ऊ, के स्थान में औ; ऋ के स्थान में आर् होता है। यथा, इन्द् ऐन्दीत्, ईह्, ऐहिष्ट, उख् औखीत्, उह् औहिष्ट, ऋच्छ आच्छत्। मा और मास्मशब्द का योग रहने से अ नहीं होता। यथा, मा—ईहिष्ट, मास्म ऋच्छत्।

१४। व्यञ्जन वर्णके परस्थित होनेसे लङ् की द् स् इन दोनों विभक्तियों का लोप होता है। यथा अवेद् द् अवेत्।

१५। स्वर वर्ण परे रहने से धातु के अन्तस्थित इ ई के स्थान में इय् और उ ऊ के स्थान में उव् होता है। (१) यथा, अधि—इ-अते अधीयते, स्तु—अन्ति स्तुवन्ति।

१६। यदि धातु एकसे अधिक स्वर-विशिष्ट हो तो (२) इ ई के स्थान में य नहीं होता है। (३) यथा, दीधी-ईत दीध्यीत, निनी-इरे निन्यिरे।

१७। असमान स्वर वर्ण परे रहने से अभ्यस्त धातु के पूर्व भागस्थित इ ई के स्थान में इय् और उ ऊ के स्थान में उव् होता है। यथा, इ आय-इयाय, उ-ओषः उवोष।

१८। च्, छ्, ज्, श्, ष्, ह्, व्, इन सब अक्षरोंके परे दन्त्य स रहने से, दोनों मिल कर क्ष होता है। यथा वच् स्यति वक्ष्यति, प्रछ्-स्यति प्रक्ष्यति, यज्-स्यति यक्ष्यति।

---

(१) गुण और वृद्धि की सम्भावना रहने से नहीं होता।

(२) अभ्यस्त कर के एक से अधिक स्वर विशिष्ट होने पर होता है।

(३) इकार और ईकार संयुक्त वर्णों में मिला रहने से इय् होता है।

१९ । छ् अथवा तालव्य श-कार के परे त रहने से दोनों मिलकर ष्ट होता है, थ रहने से ष्ठ होता है । यथा,प्रछ्—ता प्रष्टा; दृश्-ता द्रष्टा।

२० । छ् तालव्य श्,मूर्द्धन्य ष् इन तीनों के परे रहने से छ्, ष्, श्, के स्थान में ड् होता है और ध् के स्थान में ढ् होता है । यथा, अप्रछ्-ध्वम् अप्रड्ढ्वम् । अवेश्—ध्वम् अवेड्ढ्वम्, अवेष् ध्वम् अवेड्ढ्वम् ।

२१ । त् अथवा थ् परे रहने से च् और ज् के स्थान में क् होता है; और ध् परे रहने से ग् होता है । यथा, मोच्-ता मोक्ता; योज-ता योक्ता ।

२२ । सृज्, सृज्, यज् इन तीन धातुओं के जकार के परे त् रहे तो दोनों मिल कर ष्ट होता है, थ रहने से ष्ठ होता है और यदि ध् रहे तो ज् के स्थान में ड् और ध के स्थान में ढ् होता है । यथा यज्-ता यष्टा; असृज्-थाः असृष्ठाः ।

२३ । त्, थ्, ध् परे रहने से ह्-कार का लोप होता है, और त् थ् ध् के स्थान में ढ् होता है । लुप्त ह-कार का पूर्व्व स्थित ह्रस्व (१) स्वर दीर्घ होता है (२) यथा, गुह-तः गूढः, लिह्-तः लीढः, अलिह्-ध्वम् अलीढ्वम् ।

२४ । दह्, दिह्, दुह आदि के ह-कार के परे त, थ् अथवा ध् रहे तो दोनों मिलकर ग्ध होता है । यथा, दह्-तम् दग्धम्, दिह-तम् दिग्धम्, दुह्-तम् दुग्धम्, अदिह्-थाः अदग्धाः (३) ।

२५ । मुह् आदि के ह-कार के परे त्, थ् अथवा ध् रहने से दोनों मिलकर ग्ध होता है; अथवा ह-कार का लोप होता है और त्, थ्, ध्

(१) ऋकार भिन्न ।

(२) सह् और वह् धातु के लुप्त ह-कार के पूर्ववर्ती आ-कार का ओ-कार होता है।

(३) नह् धातु के हकार के परे त, थ और ध रहने से दोनों मिलकर द्ध हो जाता है । यथा, नह्-तम नद्धम ।

के स्थान में ढ् होता है और लुप्त ह-कार का पूर्वस्थित ह्रस्व का दीर्घ होता है। यथा, मुह्-तः मुग्धः, मूढ़ः ।

२६। विभक्ति का स् अथवा ध् परे रहने से अथवा विभक्ति का लोप होने से दह्, बुध्-प्रभृति-धातुओं के आदि स्थित तृतीय वर्ण के स्थान में स्ववर्ग का चतुर्थ वर्ण होता है। यथा, दह्-स्यति धक्ष्यति; अबुध् सातां अभुत्साताम् ।

२७। विभक्ति का ध् परे रहने से दन्त्य स् के स्थान में द् होता है, अथवा स-कार का लोप होता है। यथा-असेविस-ध्वम्, असेविद्-ध्वम्, असेविध्वम् ।

२८। अ आ भिन्न स्वर के परवर्ती, लिट्, लुट्, आशिर्लिङ् इन तीन विभक्तियों के ध् के स्थान में ढ् होता है। यथा, लिट्, चकृ-ध्वे चकृढ्वे। लुङ्, अकृस् ध्वम् अकृढ्वम्, अकृध्वम्; आशिर्लिङ् कृषीध्वम्, कृषीढ्वाम्। य्, र्, ल्, व् ह् इन पांच व्यञ्जन वर्णों में मिले हुए इट् के रवर्ती होने पर विकल्प से होता है। यथा लिट्, शिशयि ध्वे, शिशयिढ्वे, शिशयिध्वे; लुङ्, अशयिस्-ध्वम् अशयिढ्वम्, अशयिध्वम्; आशिर्लिङ्, शयिषीध्वम् शयिषीढ्वम्, शयिषीध्वम् ।

२९। ध-कार के परे त्, थ्, अवा ध् रहे तो दोनों मिलकर द्ध होता है। यथा सिध्-तम् सिद्धम्; विध्-तम् विद्धम् ।

३०। भकार के परे त्, थ् अथवा ध् रहने से दोनों मिलकर ब्ध होता है। यथा, आरभ्-तम् आरब्धम्, लभ्-तम् लब्धम् ।

३१। त्, थ् अथवा दन्त्य स् परे रहने से द् के स्थान में त् होता है यथा, वेद्-ता वेत्ता, विद्—थ वित्थ, छेद्-स्यति छेत्स्यति।

३२। दन्त्य स् परे रहने से ध् के स्थान में त्—और भ् के स्थान में प् होता है। यथा, सेध्—स्यति सेत्स्यति, लभ्--स्यते लप्स्यते।

३३। लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् भिन्न विभक्तियों का स् परे रहने

से; धातुओं के अन्तस्थित स् के स्थान में त् होता है। यथा, अवास्-सीत् अवात्सीत्, वस्-स्यति वत्स्यति।

३४। पद के अन्तस्थित र् और दन्त्य स् के स्थान में विसर्ग होता है। यथा, भवतस् भवतः, भवेयुस् भवेयुः।

३५। पद के अन्त में स्थित वर्ग के तृतीय और चतुर्थ वर्ण के स्थान में स्ववर्ग का प्रथम वर्ण होता है। यथा, अभूद्, अभूत्, अभवद् अभवत्।

३६। पद के अन्त में स्थित च और ज के स्थान में क होता है।(१)

३७। पद के अन्तस्थित छ्, तालव्य श्, मूर्द्धन्य ष् और ह् के स्थान में ट् और ड् होता है।

३८। दकारादि धातुओं के पद अन्तस्थित ह के स्थान में क् होता है।

३९। एक वर्गीय तीन वर्ण एकत्र होने से मध्यवर्ण का लोप होता है। यथा, रुन्ध्-धि रुन्धि।

४०। लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् के अतिरिक्त विभक्तियों में एकारान्त, ऐकारान्त और ओकारान्त धातु आकारान्त होते हैं। यथा धे-धास्यति, गे-गाता, सो-साता।

कर्तृवाच्य

(Active Voice)

कर्तृवाच्य में धातु तीन प्रकार के हैं, परस्मैपदी, आत्मनेपदी और उभयपदी। परस्मैपदी धातु के उत्तर परस्मैपद की विभक्ति, आत्मनेपदी

---

(१) पदके अन्तस्थित मृज् धातु के ज के स्थान में ट होता है।

धातु के उत्तर आत्मनेपद की विभक्ति और उभयपदी धातु के उत्तर दोनों पदों की विभक्तियां होती हैं।

धातु में उत्तमपुरुष की विभक्ति का योग होने से अस्मद् की क्रिया; मध्यमपुरुष की विभक्ति का योग होने से युष्मद् की क्रिया और प्रथम-पुरुष की विभक्ति का योग होने से अस्मद् युष्मद् भिन्न सब ही क्रिया समझी जाती हैं।

कर्तृवाच्य के कर्तृपद में विभक्ति का जो वचन रहता है, क्रियापद में भी विभक्ति का वही वचन होता है, अर्थात् कर्तृपद में एकवचन की विभक्ति रहने से क्रियापद में भी एकवचन की विभक्ति होती है, कर्तृपद में द्विवचन की विभक्ति रहने से क्रियापद में भी द्विवचन की विभक्ति होती है और कर्तृपद में बहुवचन की विभक्ति रहने से क्रियापद में भी बहुवचन की विभक्ति होती है।

लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् इन्हीं चार विभक्तियों में गणभेद से धातु के रूप की भिन्नता है; इसी लिये इन चार विभक्तियों में एक एक गण के धातु के रूप पृथक् पृथक् प्रदर्शित होते हैं। इनको छोड़ और विभक्तियों में गण भेद से रूपभेद नहीं है। इसीलिये एक एक विभक्ति में सब गण के धातुओं के रूप दिखाये जायंगे।

लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ्

तुदादि (Sixth Conjugation).

४१। **तुदादिभ्यः शः।** लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् इन चार विभक्तियों में तुदादिगणीय धातुओं के उत्तर अ होता है। अकार अन्त्य वर्ण में युक्त होता है। यथा, सृज्+अ+ति=सृजति।

१—स्पृश् धातु (परस्मैपदी) छूना (To Touch)

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	स्पृशति	स्पृशसि	स्पृशामि
द्विवचन	स्पृशतः	स्पृशथः	स्पृशावः
बहुवचन	स्पृशन्ति	स्पशथ	स्पृशामः

लोट्

एकवचन	स्पृशतु	स्पृश	स्पृशानि
द्विवचन	स्पृशताम्	स्पृशतम्	स्पृशाव
बहुवचन	स्पृशन्तु	स्पृशत	स्पृशाम

लङ्

एकवचन	अस्पृशत्	अस्पृशः	अस्पृशम्
द्विवचन	अस्पृशताम्	अस्पृशतम्	अस्पृशाव
बहुवचन	अस्पृशन्	अस्पृशत	अस्पृशाम

विधिलिङ्

एकवचन	स्पृशेत्	स्पृशेः	स्पृशेयम्
द्विवचन	स्पृशेताम्	स्पृशेतम्	स्पृशेव
बहुवचन	स्पृशेयुः	स्पृशेत	स्पृशेम

परस्मैपदी धातु

उज्झ to avoid, to abandon. उञ्छ् to clean. त्रुट् to cut. स्पृश् to touch, to shake लिख् to write. विश् to enter, with नि to sit down, with परि to place before, with सन् and नि to be near, with सम् and आ to introduce. सृज् to create, with उत् or वि to leave, with सम् to unite. स्पृश् with उप to tread upon. स्फुर् to open स्फुट to throb इन सब धातुओं के रूप 'स्पृश्' के समान होते हैं।

२—विज् धातु (आत्मनेपदी) डरना, चलना

(To fear, to go).

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	विजते	विजसे	विजे
द्विवचन	विजेते	विजेथे	विजावहे
बहुवचन	विजन्ते	विजध्वे	विजामहे

लोट्

एकवचन	विजताम्	विजस्व	विजै
द्विवचन	विजेताम्	विजेथाम्	विजावहै
बहुवचन	विजन्ताम्	विजध्वम्	विजामहै

लङ्

एकवचन	अविजत	अविजथाः	अविजे
द्विवचन	अविजेताम्	अविजेथाम्	अविजावहि
बहुवचन	अविजन्त	अविजध्वम्	अविजामहि

विधिलिङ्

एकवचन	विजेत	विजेथाः	विजेय
द्विवचन	विजेयाताम्	विजेयाथाम्	विजेवहि
बहुवचन	विजेरन्	विजेध्वम्	विजेमहि

३—तुद्-धातु (उभयपदी) पीड़ा देना (To oppress)

लट्—परस्मैपद

एकवचन	तुदति	तुदसि	तुदामि
द्विवचन	तुदतः	तुदथः	तुदावः
बहुवचन	तुदन्ति	तुदथ	तुदामः

आत्मनेपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	तुदते	तुदसे	तुदे
द्विवचन	तुदेते	तुदेथे	तुदावहे
बहुवचन	तुदन्ते	तुदध्वे	तुदामहे

लोट्—परस्मैपद

एकवचन	तुदतु	तुद	तुदानि
द्विवचन	तुदताम्	तुदतम्	तुदाव
बहुवचन	तुदन्तु	तुदत	तुदाम

आत्मनेपद

एकवचन	तुदताम्	तुदस्व	तुदै
द्विवचन	तुदेताम्	तुदेथाम्	तुदावहै
बहुवचन	तुदन्ताम्	तुदध्वम्	तुदामहै

लङ्—परस्मैपद

एकवचन	अतुदत्	अतुदः	अतुदम्
द्विवचन	अतुदताम्	अतुदतम्	अतुदाव
बहुवचन	अतुदन्	अतुदत	अतुदाम

आत्मनेपद

एकवचन	अतुदत	अतुदथाः	अतुदे
द्विवचन	अतुदेताम्	अतुदेथाम्	अतुदाव
बहुवचन	अतुदन्त	अतुदध्वम्	अतुदामहि हि

विधिलिङ्—परस्मैपद

एकवचन	तुदेत्	तुदेः	तुदेयम्
द्विवचन	तुदेताम्	तुदेतम्	तुदेव

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
बहुवचन	तुदेयु	तुदेत	तुदेम

आत्मनेपद

एकवचन	तुदेत	तुदेथाः	तुदेय
द्विवचन	तुदेयाताम्	तुदेयाथाम्	तुदेवहि
बहुवचन	तुदेरन्	तुदेध्वम्	तुदेमहि

कृष् to plough, क्षिप् to throw, तुद् to oppress, दिश् to grant, with आ to order, with उत् to proclaim, with उप् to advice, with निर् to speak aloud, with वि and निर् to declare, with सम् to communicate नुद् to throw, to send to put, to incite, with प्र to direct, with अप् to remove, with निर् to confess, with वि to be happy, मिल् to join. इन सब धातुओं के रूप 'विज्' और 'तुद्' धातु के समान होते हैं।

इष, प्रच्छ, मस्ज्, भ्रस्ज् धातु

४२। लट् आदि चार विभक्तियों में इष् धातु के स्थान में इच्छ, प्रच्छ धातु के स्थान में पृच्छ, मस्ज् धातु के स्थान में मज्ज् और भ्रस्ज धातु के स्थान में भृज्ज् होता है।

४–इष्-(परस्मैपद) इच्छा करना (To wish)

लट् (वर्त्तमान काल)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	इच्छति	इच्छसि	इच्छामि
द्विवचन	इच्छतः	इच्छथः	इच्छावः
बहुवचन	इच्छन्ति	इच्छथ	इच्छामः

लङ्

एकवचन	ऐच्छत्	ऐच्छः	ऐच्छम्
द्विवचन	ऐच्छताम्	ऐच्छतम्	ऐच्छाव
बहुवचन	ऐच्छन्	ऐच्छत	ऐच्छाम

५—प्रच्छ्-धातु (परस्मैपदी) पूछना (To Ask)

लट् वर्त्तमान काल

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पृच्छति	पृच्छसि	पृच्छामि
द्विवचन	पृच्छतः	पृच्छथः	पृच्छावः
बहुवचन	पृच्छन्ति	पृच्छथ	पृच्छामः

६—मस्ज्-धातु(परस्मैपदी) शुद्ध करना

(To bath) स्नानादिसे शुद्ध होना।

लट् वर्तमान काल

एकवचन	मज्जति	मज्जसि	मज्जामि
द्विवचन	मज्जतः	मज्जथः	मज्जावः
बहुवचन	मज्जन्ति	मज्जथ	मज्जामः

७—भ्रस्ज्-धातु (उभयपदी) भूंजना (To fry)

लट्—परस्मैपद

एकवचन	भृज्जति	भृज्जसि	भृज्जामि
द्विवचन	भृज्जतः	भृज्जथः	भृज्जावः
बहुवचन	भृज्जन्ति	भृज्जथ	भृज्जामः

ह्रस्व ऋकारान्त धातु

४३। ऋदन्तनामृतोरियः लट् आदि चार विभक्तियोंमें ह्रस्व ऋकारान्त धातु के अन्तस्थित ऋ के स्थान में रिय् होता है।

८—मृ धातु (आत्मनेपदी) मरना (To die)

लट्

एकवचन	म्रियते	म्रियसे	म्रिये

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
द्विवचन	म्रियेते	म्रियेथे	म्रियावहे
बहुवचन	म्रियन्ते	म्रियध्वे	म्रियामहे

ॠकारान्त धातु

४४। ॠत इद्धातोः। लट् आदि चार विभक्तियों में दीर्घ ॠका-रान्त धातु के अन्तस्थित ॠ के स्थान में इर् होता है।

९—कॄ धातु (परस्मैपदी) फैलाना

(To scatter about)

लट्

एकवचन	किरति	किरसि	किरामि
द्विवचन	किरतः	किरथः	किरावः
बहुवचन	किरन्ति	किरथ	किरामः

मुचादि

४५। लट् आदि चार विभक्तियों में मुच् धातु के स्थान में मुञ्च, सिच् धातु के स्थान में सिञ्च, लिप् धातु के स्थान में लिम्प, लुप् धातु के स्थान में लुम्प, कृत धातु के स्थान में कृन्त् और विद् धातु के स्थान में विन्द् होता है।

१० मुच् धातु (उभयपदी) छोड़ना (To leave)

लट्—परस्मैपद

एकवचन	मुञ्चति	मुञ्चसि	मुञ्चामि
द्विवचन	मुञ्चतः	मुञ्चथः	मुञ्चावः
बहुवचन	मुञ्चन्ति	मुञ्चथ	मुञ्चामः

भ्वादि

४६। शप् भ्वादेश्चतुर्षु लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, इन चार

विभक्तियों में भ्वादिगणीय धातुओं के उत्तर अ होता है; अ अन्त्य वर्ण में युक्त होता है ।

११.—वद्-धातु (परस्मैपदी) बोलना (To say)

लट् वर्त्तमान काल

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	वदति	वदसि	वदामि
द्विवचन	वदतः	वदथः	वदावः
बहुवचन	वदन्ति	वदथ	वदामः

लोट्

एकवचन	वदतु	वद	वदानि
द्विवचन	वदताम्	वदतम्	वदाव
बहुवचन	वदन्तु	वदत	वदाम

लङ्

एकवचन	अवदत्	अवदः	अवदम्
द्विवचन	अवदताम्	अवदतम्	अवदाव
बहुवचन	अवदन्	अवदत	अवदाम

विधिलिङ्

एकवचन	वदेत	वदेः	वदेयम्
द्विवचन	वदेताम्	वदेतम्	वदेव
बहुवचन	वदेयुः	वदेत	वदेम

परस्मैपदी धातु

अक् to go, अक्ष् to pervade, अन्च् to go, to beg, to worship, अट् to ramble, to wander, अत् to go अर्च् to worship, अर्ज to earn, अर्ह् to worship, to deserve, अव् to protect, ईर्ष्य to envy, ऊष् to burn

कण् to sound, कांक्ष to wish, to desire, कूज् to coo, to hum, कुण्ठ् to be blunded, क्रन्द् to cry, क्रीड् to play क्षर् to flow क्षल् to wash, खाद् to eat, गद् to say, गर्ज् to roar, गै to sing, ग्लै to be weary, चर् to walk, with अति & आ to transgress, with अभि to betray, with अनु to attend, with आ to practise a duty, with उप to worship, with परि to serve, with वि & अभि to go astary, with सम् to ride upon, with सम् & आ to perform, चर्च् to discuss; चर्व् to eat, to chew, चल् to walk, to move, चुम्ब् to kiss, जप् to mutter, जल्प् to rumour, जीव् to live, ज्वर् to be hot with fever, ज्वल् to burn, to glow, टल् to be confused, तक्ष् to cut, to wound, तप् to shine, with अनु to repent, with परि or सम् to beat or inflict pain, तर्ज् to threaten, त्यज् to abandon, त्रस to trouble, दल् to burst open, दह् to burn, to pain. धे to suck, ध्यै to think, ध्वन् to sound, नट् to dance, to act, नद् to sound, नन्द् to be pleased, with अभि to wish for, with आ to be happy, with प्रति to be thankful, नम् to salute, नर्द् to sound, निन्द् to censure, पठ् to read, पण् to praise, पत् to fall, with अति prefixed to excel, with अभि or अव to descend, with आ to come, with उत् to ascend, with नि to get or fall down, with वि to turn back, with सम् & उत् to fly, फल् to result, फल्ल to open, to blow, भण् to speak, भूष् to adorn, भ्रम् to walk, to roam, मण्ड् to decorate, मथ् to churn, मील् to close, to twinkle, मुण्ड् to shave, to grind मूर्च्छ् to faint, म्लै to grow weary, रक्ष् to protect लप to talk, with अनु to talk like, with अप to deny, with आ to address, with प्र to talk incoherently, with वि to lament, with सम् to converse, लस् to shine, लुण्ठ् to rob, to plunder, वद् with अनु to speak similary, with अप to reprove, with परि to speak against, with प्रति to reply, वम् to vomit वस् to dwell, with अधि to occupy, with उप to fast, with नि to dwell, with प्र to dwell abroad, वाञ्छ् to wish, to desire, व्रज to go,. शंस् to praise, with प्र to praise, स्खल् to fall down, स्वन् to sound, हस् to laugh, इन धातुओं के रूप वद् के समान होंगे।



१२ सेव्-धातु आत्मनेपदी (सेवा करना)

(To nourish, To serve.)

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	सेवते	सेवसे	सेवे
द्विवचन	सेवेते	सेवेथे	सेवावहे
बहुवचन	सेवन्ते	सेवध्वे	सेवामहे

लोट्

एकवचन	सेवताम्	सेवस्व	सेवै
द्विवचन	सेवेताम्	सेवेथाम्	सेवावहै
बहुवचन	सेवन्ताम्	सेवध्वम्	सेवामहै

लङ्

एकवचन	असेवत	असेवथाः	असेवे
द्विवचन	असेवेताम्	असेवेथाम्	असेवावहि
बहुवचन	असेवन्त	असेवध्वम्	असेवामहि

विधिलिङ्

एकवचन	सेवेत	सेवेथाः	सेवेय
द्विवचन	सेवेयाताम्	सेवेयाथाम्	सेवेवहि
बहुवचन	सेवेरन्	सेवेध्वम्	सेवेमहि

आत्मनेपदी धातु

अय् to go, with प्रति to believe, with प्र or परा to fly ईक्ष् to see, with अप to expect, with अभि to gaze at, with अव to inspect, with निर् to see, with परि to examine, with प्रति to expect, with प्र to see,

with सम् to compare, to select, with उत् to look at, with उप् to abandon; to neglect, ईह् to aim at, एज् to shake, एध् to grow, to prosper, कम्प् to shake, to tremble, काश् to shine, क्षम् to bear, to endure, गाह् to bathe, ग्रन्थ् to be crooked, ग्रस् to swallow, घट् to happen, चर् with उत् to transgress, चेष्ट् to strive, to try, जृम्भ to yawn. ढौक् to go, with उप् to approach, तप् with उत् or वि to warm, त्रप् to be ashamed, त्रै to protect, त्वर् to hurry, दद् to give, दध् to hold, दय् to pity, to protect, दीक्ष् to dedicate oneself to, ध्वंश to perish, to fall down, प्याय् to grow; to swell, प्रथ् to become famous, बाध् to oppress, to torment, भाष् to speak with परि to explain with सम् to converse with अप to censsure, भास् to shine, भिक्ष to beg भ्रंश् to fall down भ्राज् to shine म्लास् to shine यत् to attempt रभ् to begin, with आ to begin, रम् to play, with उप् or वि to rest, with उप् to stop, लक्ष् to perceive लभ् to get, to gain, लम्ब् to hang down, with अव to hold, with वि delay लोक् to see, with अव to see, लोच् to see, to discuss वद् with वि to dispute, वन्द् to salute, वेप् to tremble, वेष्ट to surround, व्यथ् to be sorry, शङ्क् to doubt, to be afraid, शंस् with आ to hope शिक्ष् to learn, श्लाघ् to praise सह् to bear, to suffer स्तम्भ to support, स्पन्द् to throbe, स्पर्द्ध् to challenge, स्पन्द् to flow out, to run, हेष् to neigh ह्लाद् te be glad, इन धातुओं के रूप 'सेव्' के समान होंगे।

१३ धाव्-धातु (उभयपदी) दौड़ना, (To run)

लट्-परस्मैपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	धावति	धावसि	धावामि
द्विवचन	धावतः	धावथः	धावावः
बहुवचन	धावन्ति	धावथ	धावामः

आत्मनेपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	धावते	धावसे	धावे
द्विवचन	धावेते	धावेथे	धावावहे
बहुवचन	धावन्ते	धावध्वे	धावामहे

४७। गुणोऽन्त्यस्य। लट् आदि चार विभक्तियों में भ्वादिगणीय धातु के अन्त्यस्वर का गुण होता है।

१४ जि धातु (परस्मैपदी) जीतना

(To conquer)

लट्

एकवचन	जयति	जयसि	जयामि
द्विवचन	जयतः	जयथः	जयावः
बहुवचन	जयन्ति	जयथ	जयामः

१५ भू धातु (परस्मैपदी) होना (To be)

लट्

एकवचन	भवति	भवसि	भवामि
द्विवचन	भवतः	भवथः	भवावः
बहुवचन	भवन्ति	भवथ	भवामः

१६-स्मृ-धातु (परस्मैपदी) याद करना

(To remember)

लट्

एकवचन	स्मरति	स्मरसि	स्मरामि

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
द्विवचन	स्मरतः	स्मरथः	स्मरावः
बहुवचन	स्मरन्ति	स्मरथ	स्मरामः

परस्मैपदी धातु

क्षि to waste away; तॄ to cross, with अव to descend, with आ to cross by a boat, with उत् to cross over, with दुर् to cross with difficulty, with निर् to obtain salvation, with वि to give away, with सम् to swim over, द्रु to melt, to rush, नी with अनु to entreat, with अप to take away, with अभि to indicate by signs, with आ to bring, with उत् to raise up, with निर् to ascertain, with परि to marry, with वि to be humble, with प्र to write with वि and अप to remove, with सम् and आ to assemble, with उप to invest with sacred thread, श्वि to swell, to increase सृ to move, with अनु to follow, with अप to go back, with अभि to attend; with उप to approach; with निर् to go forth; with प्र to proceed. स्रु to flow; to go हृ with अनु to imitate; with अप to remove; with अभि and आ to reason; with उत् and आ to say to illustrate; with उप to bring to; with उप and सम् to withhold with निर् and आ to fast; with परि to leave, with प्र to strike; with प्रति (प्रती) to keep watch; with वि to sport; with वि and आ to say; with वि and अव to transact business; with सम् to kill with सम् and आ to collect इन धातुओं के रूप या 'भू' 'स्मृ' के समान होंगे।

४८ उपधा लघोश्च । लट् आदि चार विभक्तियों में भ्वादिगणीय धातु के उपधा लघु स्वरका गुण होता है।



१७-सिध्-धातु (परस्मैपदी) गमन करना

(To go)

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	सेधति	सेधसि	सेधामि
द्विवचन	सेधतः	सेधथः	सेधावः
बहुवचन	सेधन्ति	सेधथ	सेधामः

१८-शुच्-धातु (परस्मैपदी) शोक करना

(To regret, to mourn for)

लट्

एकवचन	शोचति	शोचशि	शोचामि
द्विवचन	शोचतः	शोचथः	शोचावः
बहुवचन	शोचन्ति	शोचथ	शोचामः

१९-वृत्-धातु (आत्मनेपदी) वर्तमान रहना

(To exist)

लट्

एकवचन	वर्त्तते	वर्त्तसे	वर्त्ते
द्विवचन	वर्त्तेते	वर्त्तेथे	वर्त्तावहे
बहुवचन	वर्त्तन्ते	वर्त्तध्वे	वर्त्तामहे

परस्मैपदी धातु

उष to burn; कृष् to plough; to draw, with अप to draw; down with अव to draw out; with आ to attack, with उत् to raise

with सम् to draw together. with सम् and नि to cry, to lament, with आ to censure; with उप् to reproach, with उत् to cry aloud घुष् to proclaim; to sound घृष् to rob चित् to understand, च्युत् to drop down पुष् to nourish मृष् to bear; to sprinkle वृष् to rain सृप् to go, to creed. इनके रूप "सिध या शुच" के समान होंगे।

आत्मनेपदी धातु

ऋज to go; to acquire क्षुभ् to disturb, द्युत to shine, भृज् to fry; to patch मृद् to be glad; to rejoice, रुच to be pleasd, वृध् to grow, शुभ् to shine, स्फुट् to split open इनके रूप 'वृत' के समान होंगे।

सन्ज्-स्वनज, दनश् धातु

४६। सनूज् स्वनूज दनूशां न लोपः लट् आदि चार विभक्तियोंमें सन्ज्, स्वनूज् और दनूश् धातुका लोप हो जाता है।

२०---शनूज् धातु (परस्मैपदी) संग करना

(To accompany)

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	सजति	सजसि	सजामि
द्विवचन	सजतः	सजथः	सजावः
बहुवचन	सजन्ति	सजथ	सजामः

२१---सनूज्-धातु (आत्नेपदी) आलिंगन करन

(To embrace)

लट्

एकवचन	स्वजते	स्वजसे	स्वजे
द्विवचन	स्वजेते	स्वजेथे	स्वजावहे
बहुवचन	स्वजन्ते	स्वजध्वे	स्वजामहे

२२-दनश्-धातु (परस्मैपदी) दांतसे काटना

(यह जानवरोंके दांतसे काटनेके व्यवहारमें आता है)

(To bite)

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	दशति	दशसि	दशामि
द्विवचन	दशतः	दशथः	दशावः
बहुवचन	दशन्ति	दशथ	दशामः

गम्, दृश्, क्रम्, सद्, ष्ठिव्, धातु ।

५० । लट् आदि चार विभक्तियोंमें गम् धातुके स्थानमें गच्छ, दृश् धातुके स्थानमें पश्य, क्रम धातुके स्थानमें क्राम्,सद् धातुके स्थानमें सीद और ष्ठिव् धातुके स्थानमें ष्ठीव् होता है ।

२३-गम्-धातु (परस्मैपदी) जाना

(To go)

एकवचन	गच्छति	गच्छसि	गच्छामि
द्विवचन	गच्छतः	गच्छथः	गच्छावः
बहुवचन	गच्छन्ति	गच्छथ	गच्छामः

२४ दृश्-धातु (परस्मैपदी) देखना (To see)

लट्

एकवचन	पश्यति	पश्यसि	पश्यामि
द्विवचन	पश्यतः	पश्यथः	पश्यावः
बहुवचन	पश्यन्ति	पश्यथ	पश्यामः

२५ क्रम-धातु (परस्मैपदी) चलना (To walk)

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	क्रामति	क्रामसि	क्रामामि
द्विवचन	क्रामतः	क्रामथः	क्रामावः
बहुवचन	क्रामन्ति	क्रामथ	क्रामामः

२६ सद् धातु (परस्मैपदी) दुख पाना

लट्

एकवचन	सीदति	सीदसि	सीदामि
द्विवचन	सीदति	सीदथः	सीदावः
बहुवचन	सीदन्ति	सीदथ	सीदामः

२७ ष्ठिव धातु (परस्मैपदी) थूकना (To spit)

लट्

एकवचन	ष्ठीवति	ष्ठीवसि	ष्ठीवामि
द्विवचन	ष्ठीवतः	ष्ठीवथः	ष्ठीवावः
बहुवचन	ष्ठीवन्ति	ष्ठीवथ	ष्ठीवामः

स्था, दाण, पा, घ्रा, ध्मा, म्ना, धातु

५१। लट् आदि चार विभक्तियों में स्था धातु के स्थान में तिष्ठ्, दाण्, (दा) धातु के स्थान में यच्छ, पा धातु के स्थान में पिव् घ्रा धातु के स्थान में जिघ्र, ध्मा धातु के स्थान में धम् और म्ना धातु के स्थान में मन् होता है।

२८ स्था धातु (परस्मैपदी) ठहरना (To stay)

लट्

एकवचन	तिष्ठति	तिष्ठसि	तिष्ठामि

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
द्विवचन	तिष्ठतः	तिष्ठथः	तिष्ठावः
बहुवचन	तिष्ठन्ति	तिष्ठथ	तिष्ठामः

२६ दाण्-धातु (परस्मैपदी) देना (To give)

लट्

एकवचन	यच्छति	यच्छसि	यच्छामि
द्विवचन	यच्छतः	यच्छथः	यच्छावः
बहुवचन	यच्छन्ति	यच्छथ	यच्छामः

३० पा-धातु (परस्मैपदी) पीना (To drink)

लट्

एकवचन	पिवति	पिवसि	पिवामि
द्विवचन	पिवतः	पिवथः	पिवावः
बहुवचन	पिवन्ति	पिवथ	पिवामः

३१ घ्रा-धातु (परस्मैपदी) सूंघना (To smell)

लट्

एकवचन	जिघ्रति	जिघ्रसि	जिघ्रामि
द्विवचन	जिघ्रतः	जिघ्रथः	जिघ्रावः
बहुवचन	जिघ्रन्ति	जिघ्रथ	जिघ्रामः

३२ ध्मा-धातु (परस्मैपदी) धौंकना (To blow)

लट्

एकवचन	धमति	धमसि	धमामि
द्विवचन	धमतः	धमथः	धमावः
बहुवचन	धमन्ति	धमथ	धमामः

३३ म्ना-धातु परस्मैपदी अभ्यास करना

(To learn by note)

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	मनति	मनसि	मनामि
द्विवचन	मनतः	मनथः	मनावः
बहुवचन	मनन्ति	मनथ	मनामः

३४ चम्-धातु (परस्मैपदी) खाना

(To eat).

५०। लट् आदि चार विभक्तियों में आ उपसर्ग के योग में चम् धातुके स्थान में चाम् होता है।

३५ आ पूर्व्वक चम् धातु, आचमन करना

(To sip)

लट्

एकवचन	आचामति	आचामसि	आचामामि
द्विवचन	आचामतः	आचामथः	आचामावः
बहुवचन	आचामन्ति	आचामथ	आचामामः

३६ गुह्धातु (परस्मैपदी) छिपाना

(To hide)

५१। लट् आदि चार विभक्तियों में गुह धातु के स्थान में गूह् होता है।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	गूहति	गूहसि	गूहामि
द्विवचन	गूहतः	गूहथः	गूहावः
बहुवचन	गूहन्ति	गूहथ	गूहामः

दिवादि (4th conjugation)

५४ । दिवादिभ्यः श्यन् लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् इन चार विभक्तियों में दिवादिगणीय धातु के उत्तर य का आगम होता है ।

३७ नृत् धातु (परस्मैपदी) नाचना

(To dance)

लट्

एकवचन	नृत्यति	नृत्यसि	नृत्यामि
द्विवचन	नृत्यतः	नृत्यथः	नृत्यावः
बहुवचन	नृत्यन्ति	नृत्यथ	नृत्यामः

लोट्

एकवचन	नृत्यतु	नृत्य	नृत्यानि
द्विवचन	नृत्यताम्	नृत्यतम्	नृत्याव
बहुवचन	नृत्यन्तु	नृत्यत	नृत्याम

लङ्

एकवचन	अनृत्यत्	अनृत्यः	अनृत्यम्
द्विवचन	अनृत्यताम्	अनृत्यतम्	अनृत्याव
बहुवचन	अनृत्यन्	अनृत्यत	अनृत्याम

विधिलिङ्

एकवचन	नृत्येत्	नृत्येः	नृत्येयम्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
द्विवचन	नृत्येताम्	नृत्यतम्	नृत्येव
बहुवचन	नृत्येयुः	नृत्येत	नृत्येम

परस्मैपदी धातु

असु to throw, with नि to deposit, with निर् to expel with अप to abandon, with परि and उप to sit around, with प्र to reject, with वि to divide, with सम् and नि to abandon the world, with सम् to collect, इषु to *go*, with अनु to search after, ऋधु to prosper, to please. कुपु to be angry, क्रुध to be angry, कृशु to become thin, क्षिपु to throw, क्षुधु *to* be angry क्षुभु to be agitated, तुषु to be pleased तृपु to become satisfied, तृषु to be thirsty, त्रस to be afraid त्रुटु to cut, दुषु to impure दृपु to be proud, द्रुह to bear malice, नशु to be lost, to parish, पुषु to nourish, पुष्प to open, to blow मुहु o faint राध to be favourable, रुषु to be angry लुभ to covet शुध to ce pure शुष to be dried, श्लिष to embrace सिधु to succeed, to accomplish, स्निह to have affection for. स्विदु to perspire हृषु to be delighted, इनके रूप ' नृत्' के समान होंगे।

३८-विद्-धातु (आत्मनेपदी) रहना

(To exist te live)

लिट्

एकवचन	विद्यते	विद्यसे	विद्ये
द्विवचन	विद्येते	विद्येथे	विद्यावहे
बहुवचन	विद्यन्ते	विद्यध्वे	विद्यामहे

लोट्

एकवचन	विद्यताम्	विद्यस्व	विद्यै
द्विवचन	विद्येताम्	विद्येथाम्	विद्यावहै
बहुवचन	विद्यन्ताम्	विद्यध्वम्	विद्यामहै

लिङ्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अविद्यत	अविद्यथाः	अविद्ये
द्विवचन	अविद्येताम्	अविद्येथाम्	अविद्यावहि
बहुवचन	अविद्यन्त	अविद्येध्वम्	अविद्यामहि

विधिलिङ्

एकवचन	विद्येत	विद्येथाः	विद्येय
द्विवचन	विद्येयाताम्	विद्येयाथाम्	विद्येवहि
बहुवचन	विद्येरन्	विद्येध्वम्	विद्येमहि

आत्मनेपदी धातु

अन् to breathe, to live, क्लिश् to be afflicted, खिद् to suffer pain, डी to fly, तप् to be powerful, to trouble, with अनु to repent, with परि or सम् to be sorrowful [see भ्वादि] दीप् to shine, दू to suffer pain पद् to go, to attain, with अभि to understand, with अनु to follow, with आ to happen, with उत् to be born, with प्र to gain with उप or प्रति to gain, with वि to suffer misfortune, with वि and उत् to discriminate, to analyze, with सम् to increase, to execute with सम् and आ to finish, पूर् to fill, to satisfy, प्री to feel affection, बुध् to know, with प्रति to look for, with वि to wake, मन् to think, to know, with अनु to assent, with अभि to desire, with अव् to disrespect, with सम् to concur. मा to measure. मी to kill, युज् to concentrate the mind, with उप् to take, to eat, with नि to order, to join, with प्र to be fit. with वि to separate, with सम् to unite युध to fight, ली to lie on, to stick. सू to produce, सृज to create इनके रूप 'विद्' के समान होंगे।

दिव् और सिव् धातु

५५। लट् आदि चार विभक्तियों में दिव् के स्थान में दीव् और सिव् के स्थान में सीव् होता है।

३९-दिव् (परस्मैपदी) क्रीड़ा करना (To play)	सिव् धातु (परस्मैपदी) सीना (To sew)
लट्	लट्
प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन दीव्यति	एकवचन सीव्यति
द्विवचन दीव्यतः	द्विवचन सीव्यतः
बहुवचन दीव्यन्ति	बहुवचन सीव्यन्ति

जन् और व्यध् धातु

५६। लट् आदि चार विभक्तियों में जन के स्थान में जा और व्यध् के स्थान में विध् होता है।

४०-जन्-धातु (आत्मनेपदी) उत्पन्न होना (To be born)	४१-व्यध धातु (परस्मैपदी) छेदना (To pierce, to strike)
लट्	लिट्
प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन जायते	एकवचन विध्यति
द्विवचन जायेते	द्विवचन विध्यतः
बहुवचन जायन्ते	बहुवचन विध्यन्ति

दीर्घ-ॠकारान्त—धातु

५७। ईर् ॠकारस्य। लट् आदि चार विभक्तियों में दीर्घ ॠकारान्त धातु के ॠ-कार के स्थान में ईर् होता है।

४२ जॄ धातु (परस्मैपदी) बूढ़ा होना
(To grow old)

लट्

प्रथमपुरुष

एकवचन	जीर्य्यति
द्विवचन	जीर्य्यतः
बहुवचन	जीर्य्यन्ति

४३-दॄ धातु (परस्मैपदी) फाड़ना
(To split)

लट्

प्रथमपुरुष

एकवचन	दीर्य्यति
द्विवचन	दीर्य्यतः
बहुवचन	दीर्य्यन्ति

शमादि

५८। शमादेरत् दीर्घः। लट् आदि चार विभक्तियों में शम् आदि (+) धातु के स्थान में आकार होता है।

४४ शम्-धातु (परस्मैपदी) शान्त होना
(To be pacific)

लट्

प्रथमपुरुष

एकवचन	शाम्यति
द्विवचन	शाम्यतः
बहुवचन	शाम्यन्ति

ओकारान्त धातु

५९। आतो लोपः। लट् आदि चार विभक्तियों में ओकारान्त धातु के ओकार का लोप हो जाता है।

(+) शम्, श्रम्, भ्रम्, तम्, दम्, दम्, क्लम्, मद्।

४५ सो-धातु (परस्मैपदी) नाश करना

(To put an end to, to destroy)

लट्

	प्रथमपुरुष
एकवचन	स्यति
द्विवचन	स्यतः
बहुवचन	स्यन्ति

छो to cut, शो to sharpen, दो to cut के रूप 'सा' धातु के सदृश होते हैं।

स्वादि (5th Conjugation)

६०। श्नुः स्वादेश्चतुर्षु। लट्, लोट्, लङ, और विधिलिङ् इन चार विभक्तियों में स्वादिगणीय धातु के उत्तर नु का आगम होता है।

६१। ति, सि, मि, तु, आनि, आव आम, ऐ, आवहै, आमहै, द, स, अम्, इन कई एक विभक्तियों के परे रहने से नु के स्थान में नो होता है।

४६-सु-धातु (उभयपदी) पैदा करना, मद्य चुआना (To bring forth)

लट्—परस्मैपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	सुनोति	सुनोषि	सुनोमि
द्विवचन	सुनुतः	सुनुथः	सुनुवः +
बहुवचन	सुन्वन्ति	सुनुथ	सुनुमः +

(+) यदि नु व्यन्जन वर्णों में मिला न हो तो वैयाकरण लोग विकल्प से उकार का लोप करते हैं। यथा; सुन्वः सुनुवः इत्यादि।

आत्मनेपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	सुनुते	सुनुषे	सुन्वे
द्विवचन	सुन्वाते	सुन्वाथे	सुनुवहे *
बहुवचन	सुन्वते	सुनुध्वे	सुनुमहे *

लोट्—परस्मैपद

एकवचन	सुनोतु	सुनु	सुनवानि
द्विवचन	सुनुताम्	सुनुतम्	सुनवाव
बहुवचन	सुन्वन्तु	सुनुत	सुनवाम

आत्मनेपद

एकवचन	सुनुताम्	सुनुष्व	सुनवै
द्विवचन	सुन्वाताम्	सुन्वाथाम्	सुनवावहै
बहुवचन	सुन्वताम्	सुनुध्वम्	सुनवामहै

लङ्

एकवचन	असुनोत्	असुनोः	असुनवम्
द्विवचन	असुनुताम्	असुनुतम	असुनुव *
बहुवचन	असुन्वन्	असुनुत	असुनुम *

आत्मनेपद

एकवचन	असुनुत	असुनुथाः	असुन्वि
द्विवचन	असुन्वाताम्	असुन्वाथाम्	असुनुवहि *
बहुवचन	असुन्वत	असुनुध्वम्	असुनुमहि *

* यदि नु व्यन्जन वर्ण में मिला न हो तो वैयाकरण लोग विकल्प से उकार का लोप करते हैं। यथा—असुन्व, असुनुव इत्यादि।

विधिलिङ्—परस्मैपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	सुनुयात्	सुनुयाः	सुनुयाम्
द्विवचन	सुनुयाताम्	सुनुयातम्	सुनुयाव
बहुवचन	सुनुयुः	सुनुयात	सुनुयाम

आत्मनेपद

एकवचन	सुन्वीत	सुन्वीथाः	सुन्वीय
द्विवचन	सुन्वीयाताम्	सुन्वीयाथाम्	सुन्वीवहि
बहुवचन	सुन्वीरन्	सुन्वीध्वम्	सुन्वीमहि

निम्न लिखित धातुओं के रूप 'सु' के समान होते हैं :—

परस्मैपदी धातु—क्षि to destroy, दु to give pain, हि to send forth, to go, पृ to be satisfied.

उभयपदी धातु-चि to collect, धु to shake, धू to shake वृ to choose, सि to bind, to tie; सि to throw, to scatter, स्तृ to spread.

६२। यदि नु हल्वर्ण अर्थात् व्यञ्जन वर्ण के साथ मिला हो तो, आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, और अम् के सिवाय विभक्तियों के स्वरवर्ण परे रहने से नु के स्थान में नुव् होता है।

४७-आप् धातु (परस्मैपदी) प्राप्त करना

(To get)

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	आप्नोति	आप्नोषि	आप्नोमि
द्विवचन	आप्नुतः	आप्नुथः	आप्नुवः
बहुवचन	आप्नुवन्ति	आप्नुथ	आप्नुमः

लोट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	आप्नोतु	आप्नुहि	आप्नवानि
द्विवचन	आप्नुताम्	आप्नुतम्	आप्नवाव
बहुवचन	आप्नुवन्तु	आप्नुत	आप्नवाम

लङ्

एकवचन	आप्नोत्	आप्नोः	आप्नवम्
द्विवचन	आप्नुताम्	आप्नुतम्	आप्नुव
बहुवचन	आप्नुवन्	आप्नुत	आप्नुम

विधिलिङ्

एकवचन	आप्नुयात्	आप्नुयाः	आप्नुयाम्
द्विवचन	आप्नुयाताम्	आप्नुयातम्	आप्नुयाव
बहुवचन	आप्नुयुः	आप्नुयात	आप्नुयाम

परस्मैपदी धातु—आप् with वि to pervade, with उप्, सम् & वि to arrive at or enter, तक्ष् to cut, to wound, शक् to be able to endure, राध् to kill, to accomplish, साध् to finish. इनके रूप 'आप' के समान होंगे।

४८·अश्·धातु (आत्मनेपदी) व्याप्त करना

(To spread)

लट्

एकवचन	अश्नुते	अश्नुषे	अश्नुवे
द्विवचन	अश्नुवाते	अश्नुवाथे	अश्नुवहे
बहुवचन	अश्नुवते	अश्नुध्वे	अश्नुमहे

लोट्

एकवचन	अश्नुताम्	अश्नुष्व	अश्नवै

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
द्विवचन	अश्नुवाताम्	अश्नुवाथाम्	अश्नवावहै
बहुवचन	अश्नुवताम्	अश्नुध्वम्	अश्नवामहै

लङ्

एकवचन	आश्नुत	आश्नुथाः	आश्नुवि
द्विवचन	आश्नुवाताम्	आश्नुवाथाम्	आश्नुवहि
बहुवचन	आश्नुवत	आश्नुध्वम्	आश्नुमहि

विधिलिङ्

एकवचन	अश्नुवीत	अश्नुवीथाः	अश्नुवीय
द्विवचन	अश्नुवीयाताम्	अश्नुवीयाथाम्	अश्नुवीवहि
बहुवचन	अश्नुवीरन्	अश्नुवीध्वम्	अश्नुवीमहि

४९ श्रु धातु (परस्मैपदी) सुनना (To heer)

६२। लट् आदि चार विभक्तियों में श्रु धातु के स्थान में श्र होता है।

लट्

एकवचन	शृणोति	शृणोषि	शृणोमि
द्विवचन	शृणुतः	शृणुथः	शृणुवः *
बहुवचन	शृण्वन्ति	शृणुथ	शृणुमः *

लोट्

एकवचन	शृणोतु	शृणु	शृणवानि
द्विवचन	शृणुताम्	शृणुतम्	शृणवाव
बहुवचन	शृण्वन्तु	शृणुत	शृणवाम

* यदि नु व्यन्जन वर्ण में मिला न हो तो वैयाकरण लोग विकल्प से उकार का लोप करते हैं। यथा सुन्वः, सुनुवः इत्यादि।

लङ्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अश्रृणोत्	अश्रृणोः	अश्रृणवम्
द्विवचन	अश्रृणुताम्	अश्रृणुतम्	अश्रृणुव +
बहुवचन	अश्रृण्वन्	अश्रृणुत	अश्रृणुम +

विधिलिङ्

एकवचन	श्रृणुयात्	श्रृणुयाः	श्रृणुयाम्
द्विवचन	श्रृणुयाताम्	श्रृणुयातम्	श्रृणुयाव
बहुवचन	श्रृणुयुः	श्रृणुयात	श्रृणुयाम

५०—धिव्-धातु (परस्मैपदी) तृप्त करना।

(To satisfy)

६४। लट् प्रभृति चार विभक्तियों में धिव् के स्थान में धि होता है।

लट्

एकवचन	धिनोति	धिनोषि	धिनोमि
द्विवचन	धिनुतः	धिनुथः	धिनुवः +
बहुवचन	धिन्वन्ति	धिनुथ	धिनुमः +

तनादि।

६५। लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् इन चार विभक्तियों में तनादिगणीय धातु के उत्तर उ का आगम होता है। और उ अन्त्य वर्ण में मिल जाता है।

६६। ति, सि, मि, तु, आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, द, स् और अम् इन विभक्तियों के परे रहने से उ के स्थान में ओ होता है।

+ यदि नु व्यञ्जन वर्ण में मिला न हो तो वैयाकरण लोग विकल्प से उकार का लोप करते हैं। यथा—अश्रृण्व: अश्रृणुवः इत्यादि।

५१-तनु धातु (उभयपदी) फैलाना

(To spread)

लट्—परस्मैपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	तनोति	तनोषि	तनोमि
द्विवचन	तनुतः	तनुथः	तनुवः +
बहुवचन	तन्वन्ति	तनुथ	तनुमः +

आत्मनेपद

एकवचन	तनुते	तनुषे	तन्वे
द्विवचन	तन्वाते	तन्वाथे	तनुवहे +
बहुवचन	तन्वते	तनुध्वे	तनुमहे +

लोट्—परस्मैपद

एकवचन	तनोतु	तनु	तनवानि
द्विवचन	तनुताम्	तनुतम्	तनवाव
बहुवचन	तन्वन्तु	तनुत	तनवाम

आत्मनेपद

एकवचन	तनुताम्	तनुष्व	तनवै
द्विवचन	तन्वाताम्	तन्वाथाम्	तनवावहै
बहुवचन	तन्वताम्	तनुध्वम्	तनवामहै

लङ्—परस्मैपद

एकवचन	अतनोत्	अतनोः	अतनवम्

+ यदि उ संयुक्त वर्ण में मिला न हो तो वैय्याकरण लोग विकल्प से उकार का लोप करते हैं। यथा—तन्वः, तनुवः इत्यादि।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
द्विवचन	अतनुताम्	अतनुतम्	अतनुव *
बहुवचन	अतन्वन्	अतनुत	अतनुम *

आत्मनेपद

एकवचन	अतनुत	अतनुथाः	अतन्वि
द्विवचन	अतन्वाताम्	अतन्वाथाम्	अतनुवहि *
बहुवचन	अतन्वत	अतनुध्वम्	अतनुमहि *

विधिलिङ्—परस्मैपद

एकवचन	तनुयात्	तनुयाः	तनुयाम्
द्विवचन	तनुयाताम्	तनुयातम्	तनुयाव
बहुवचन	तनुयुः	तनुयात	तनुयाम

आत्मनेपद

एकवचन	तन्वीत	तन्वीथाः	तन्वीय
द्विवचन	तन्वीयाताम्	तन्वीयाथाम्	तन्वीवहि
बहुवचन	तन्वीरन्	तन्वीध्वम्	तन्वीमहि

५२-कृ-धातु (उभयपदी) करना (To do)

६७। ति, सि, म, तु, आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, द्, स्, और अम् इन विभक्तियों के परे रहने से कृ धातु के स्थान में कर् और तद्भिन्न विभक्ति में कुर् होता है।

६८। विभक्ति के म (+) य, व परे रहने से कृ धातु के पर-स्थित उकार का लोप होता है।

---

* यदि उ संयुक्त वर्ण में मिला न हो तो वैयाकरण लोग विकल्प से उकार का लोप करते हैं, यथा—तन्वः, तनुवः इत्यादि।

(+) मि भिन्न।

लट्—परस्मैपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	करोति	करोषि	करोमि
द्विवचन	कुरुतः	कुरुथः	कुर्व्वः
बहुवचन	कुर्व्वन्ति	कुरुथ	कुर्म्मः

आत्मनेपद

एकवचन	कुरुते	कुरुषे	कुर्व्वे
द्विवचन	कुर्व्वाते	कुर्व्वाथे	कुर्व्वहे
बहुवचन	कुर्व्वते	कुरुध्वे	कुर्म्महे

लोट्—परस्मैपद

एकवचन	करोतु	कुरु	करवाणि
द्विवचन	कुरुताम्	कुरुतम्	करवाव
बहुवचन	कुर्वन्तु	कुरुत	करवाम

आत्मनेपद

एकवचन	कुरुताम्	कुरुष्व	करवै
द्विवचन	कुर्व्वाताम्	कुर्व्वाथाम्	करवावहै
बहुवचन	कुर्व्वताम्	कुरुध्वम्	करवामहै

लङ्—परस्मैपद

एकवचन	अकरोत्	अकरोः	अकरवम्
द्विवचन	अकुरुताम्	अकुरुतम्	अकुर्व्व
बहुवचन	अकुर्व्वन्	अकुरुत	अकुर्म्म

आत्मनेपद

एकवचन	अकुरुत	अकुरुथाः	अकुर्व्वि
द्विवचन	अकुर्व्वाताम्	अकुर्व्वाथाम्	अकुर्व्वहि
बहुवचन	अकुर्व्वत	अकुरुध्वम्	अकुर्म्महि

विधिलिङ्—परस्मैपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	कुर्य्यात्	कुर्य्याः	कुर्य्याम्
द्विवचन	कुर्य्याताम्	कुर्य्यातम्	कुर्य्याव
बहुवचन	कुर्य्युः	कुर्य्यात	कुर्य्याम

आत्मनेपद

एकवचन	कुर्व्वीत	कुर्व्वीथाः	कुर्व्वीय
द्विवचन	कुर्व्वीयाताम्	कुर्व्वीयाथाम्	कुर्व्वीवहि
बहुवचन	कुर्व्वीरन	कुर्व्वीध्वम्	कुर्व्वीमहि

कृ with अति to exceed, with अधि to overcome, to hold right, with अनु to copy; with अप to wrong, injure, with आ to call with, उप to be friend, with निर् & आ to expel, with परा & आ to act well, with प्र to begin, with प्रति to counteract, with वि to alter, with वि & आ to explain, with सम् to polish, with परि to polish.

क्र्यादि (9th Conjugatioe)

६६। क्र्यादिभ्यःश्ना। लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् इन चार विभक्तियों में क्र्यादिगणीय धातु के उत्तर ना का आगम होता है।

७०। ति, सि, मि, तु, द्, स् भिन्न व्यञ्जन वर्ण परे रहने से ना के स्थान में नी होता है।

५३—क्री धातु (उभयपदी) खरीदना (To buy)

लट्—परस्मैपद।

एकवचन	क्रीणाति	क्रीणासि	क्रीणामि
द्विवचन	क्रीणीतः	क्रीणीथः	क्रीणीवः
बहुवचन	क्रीणन्ति	क्रीणीथ	क्रीणीमः

आत्मनेपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	क्रीणीते	क्रीणीषे	क्रीणे
द्विवचन	क्रीणाते	क्रीणाथे	क्रीणीवहे
बहुवचन	क्रीणते	क्रीणीध्वे	क्रीणीमहे

लोट्—परस्मैपद

एकवचन	क्रीणातु	क्रीणीहि	क्रीणानि
द्विवचन	क्रीणीताम्	क्रीणीतम्	क्रीणाव
बहुवचन	क्रीणन्तु	क्रीणीत	क्रीणाम

आत्मनेपद

एकवचन	क्रीणीताम्	क्रीणीष्व	क्रीणै
द्विवचन	क्रीणाताम्	क्रीणाथाम्	क्रीणावहै
बहुवचन	क्रीणताम्	क्रीणीध्वम्	क्रीणामहै

लङ्—परस्मैपद

एकवचन	अक्रीणात्	अक्रीणाः	अक्रीणाम्
द्विवचन	अक्रीणीताम्	अक्रीणीतम्	अक्रीणीव
बहुवचन	अक्रीणन्	अक्रीणीत	अक्रीणीम

आत्मनेपद

एकवचन	अक्रीणीत	अक्रीणीथाः	अक्रीणि
द्विवचन	अक्रीणाताम्	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीवहि
बहुवचन	अक्रीणत	अक्रीणीध्वम्	अक्रीणीमहि

विधिलिङ्-परस्मैपद

एकवचन	क्रीणीयात्	क्रीणीयाः	क्रीणीयाम्
द्विवचन	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयातम्	क्रीणीयाव
बहुवचन	क्रीणीयुः	क्रीणीयात	क्रीणीयाम

आत्मनेपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	क्रीणीत	क्रीणीथाः	क्रीणीय
द्विवचन	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीवहि
बहुवचन	क्रीणीरन्	क्रीणीध्वम्	क्रीणीमहि

परस्मैपदी धातु-अश् to eat, क्लिश् to torment, क्षुभ् to disturb, मुष् to steal, पुष् to nourish, मृद् to kill आत्मनेपदी धातु—वृ to cherish उभयपदी धातु—प्री to take delight in, मी to kill, इनके रूप 'क्री' के समान होते हैं।

५४-अश् धातु(परस्मैपदी)भोजन करना (To eat)

लट्

एकवचन	अश्नाति	अश्नासि	अश्नामि
द्विवचन	अश्नीतः	अश्नीथः	अश्नीवः
बहुवचन	अश्नन्ति	अश्नीथ	अश्नीमः

७१ । हि विभक्ति में व्यञ्जन वर्ण के परस्थित ना के स्थान में आन होता है ।

लोट्

एकवचन	अश्नातु	अश्नान	अश्नानि
द्विवचन	अश्नीताम्	अश्नीतम्	अश्नाव
बहुवचन	अश्नन्तु	अश्नीत	अश्नाम

ग्रह, ज्ञा धातु

७२ । लट् आदि चार विभक्तियों मे ग्रह् धातु के स्थान में गृह् और ज्ञा धातु के स्थान में जा होता है ।

५५—ग्रह्धातु(उभयपदी)ग्रहण करना (To take)

लट्—परस्मैपद

एकवचन	गृह्णाति	गृह्णासि	गृह्णामि

	प्रथमपुरुष	मध्ययपुरुष	उत्तमपुरुष
द्विवचन	गृह्णीतः	गृह्णीथः	गृह्णीवः
बहुवचन	गृह्णन्ति	गृह्णीथ	गृह्णीमः

५६--ज्ञा धातु (परस्मैपदी) जानना (To know)

लट्

एकवचन	जानाति	जानासि	जानामि
द्विवचन	जानीतः	जानीथः	जानीवः
बहुवचन	जानन्ति	जानीथ	जानीमः

दीर्घ—ऊकारान्त धातु

७४। ऊदन्तानामुद् ह्रस्वः। लट् आदि चार विभक्तियों में क्र्यादिगणीय धातु का अन्तस्थित दीर्घ ऊकार ह्रस्व होता है।

५७-पू-धातु(उभयपदी)पवित्र करना (To purify)

लट्—परस्मैपद

एकवचन	पुनाति	पुनासि	पुनामि
द्विवचन	पुनीतः	पुनीथः	पुनीवः
बहुवचन	पुनन्ति	पुनीथ	पुनीमः

उपधा में न-युक्त धातु

७५। लट् आदि चार विभक्तियों में क्र्यादिगणीय धातु के उपधा न-कार का लोप होता है।

५८--बन्ध धातु (परस्मैपदी) बान्धना (To tie)

लट्

एकवचन	बध्नाति	बध्नासि	बध्नामि
द्विवचन	बध्नीतः	बध्नीथः	बध्नीवः
बहुवचन	बध्नन्ति	बध्नीथ	बध्नीमः

रुधादि

७६। रुधादिभ्यश्नम्। लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् इन चार विभक्तियों में रुधादिगणीय धातु के अन्त्य स्वर के परे न का आगमन होता है।

७७। ति, सि, मि, तु, आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, द्, स् और अम् इन विभक्तियों में नकार के परे अकार होता है।

५६-रुध धातु (उभयपदी) रोकना (To obstruct)

लट्—परस्मैपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	रुणद्धि	रुणत्सि	रुणध्मि
द्विवचन	रुन्धः	रुन्धः	रुन्ध्वः
बहुवचन	रुन्धन्ति	रुन्ध	रुन्ध्मः

आत्मनेपद

एकवचन	रुन्धे	रुन्त्से	रुन्धे
द्विवचन	रुन्धाते	रुन्धाथे	रुन्ध्वहे
बहुवचन	रुन्धते	रुन्ध्वे	रुन्ध्महे

लोट्—परस्मैपद

एकवचन	रुणद्धु	रुन्धि	रुणधानि
द्विवचन	रुन्धाम्	रुन्धम्	रुणधाव
बहुवचन	रुन्धन्तु	रुन्ध	रुणधाम

आत्मनेपद

एकवचन	रुन्धाम्	रुन्त्स्व	रुणधै
द्विवचन	रुन्धाताम्	रुन्धाथाम्	रुणधावहै
बहुवचन	रुन्धताम्	रुन्ध्वम्	रुणधामहै

लङ्-परस्मैपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अरुणत्	अरुणत् (*)	अरुणधम्
द्विवचन	अरुन्धाम्	अरुन्धम्	अरुन्ध्व
बहुवचन	अरुन्धन्	अरुन्ध	अरुन्ध्म

आत्मनेपद

एकवचन	अरुन्ध	अरुन्धाः	अरुन्धि
द्विवचन	अरुन्धाताम्	अरुन्धाथाम्	अरुन्ध्वहि
बहुवचन	अरुन्धत	अरुन्ध्वम्	अरुन्ध्महि

विधिलिङ्—परस्मैपद

एकवचन	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याः	रुन्ध्याम्
द्विवचन	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्याव
बहुवचन	रुन्ध्युः	रुन्ध्यात	रुन्ध्याम

आत्मनेपद

एकवचन	रुन्धीत	रुन्धीथाः	रुन्धीय
द्विवचन	रुन्धीयाताम्	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीवहि
बहुवचन	रुन्धीरन्	रुन्धीध्वम्	रुन्धीमहि

रुध् with अव to guard, with उप to blockade, with प्रति or वि to oppose, with सम् and नि to shut up.

६०—भुज् धातु (आत्मनेपदी) भोजन करना (To eat)

लट्

एकवचन	भुङ्क्ते	भुङ्क्षे	भुञ्जे
द्विवचन	भुञ्जाते	भुञ्जाथे	भुञ्ज्वहे
बहुवचन	भुञ्जते	भुङ्ग्ध्वे	भुञ्ज्महे

(* वैयाकरण लोग लङ् की सु विभक्ति में धातु के अन्तस्थित स् में विकल्प से विसर्ग कर के दो पद सिद्ध करते है। यथा, अरुणः, अरुणत्।

७८। लट् आदि चार विभक्तियोंमें हिन्स् धातु के स्थानमें हिस् होता है।

६१—हिन्स-धातु(परस्मैपदी)हिंसाकरना (To kill)

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	हिनस्ति	हिनस्सि	हिनस्मि
द्विवचन	हिंस्तः	हिंस्थः	हिंस्वः
बहुवचन	हिंसन्ति	हिंस्थ	हिंस्मः

६२—तृह्-धातु(परस्मैपदी)हिंसाकरना (To kill)

लट्

७९। ति, सि, मि, त, द् और स् इन विभक्तियों में तृह धातु के न् के स्थानमें मूर्द्धन्य ण होता है।

एकवचन	तृणेढ़ि	तृणेक्षि	तृणेह्मि
द्विवचन	तृण्ढः	तृण्ढः	तृंह्वः
बहुवचन	तृहन्ति	तृण्ढ	तृंह्मः

अदादि

६३—अद्-धातु(परस्मैदी)भोजन करना (To eat)

एकवचन	अत्ति	अत्सि	अद्मि
द्विवचन	अत्तः	अत्थः	अद्वः
बहुवचन	अदन्ति	अत्थ	अद्मः

लोट्

एकवचन	अत्तु	अद्धि *	अदानि

* 'हेर्धिः' इस सूत्रसे हि के स्थानमें धि होता है।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
द्विवचन	अत्ताम्	अत्तम्	अदाव
बहुवचन	अदन्तु	अत्त	अदाम

लङ्

८०। अद् धातु के परस्थित लङ् के द् के स्थानमें अत् और स् के स्थानमें अस् होता है।

एकवचन	आदत्	आदः	आदम्
द्विवचन	आत्ताम्	आत्तम्	आद्व
बहुवचन	आदन्	आत्त	आद्म

विधिलिङ्

एकवचन	अद्यात्	अद्याः	अद्याम्
द्विवचन	अद्याताम्	अद्यातम्	अद्याव
बहुवचन	अद्युः	अद्यात	अद्याम

६४·आस् धातु (आत्मनेपदी) बैठना (To sit)

लट्

एकवचन	आस्ते	आस्से	आसे
द्विवचन	आसाते	आसाथे	आस्वहे
बहुवचन	आसते	आद्ध्वे, आध्वे	आस्महे

लोट्

एकवचन	आस्ताम्	आस्स्व	आसै
द्विवचन	आसाताम्	आसाथाम्	आसावहै
बहुवचन	आसताम्	आद्ध्वम्, आध्वम्	आसामहै

लङ्

एकवचन	आस्त	आस्थाः	आसि
द्विवचन	आसाताम्	आसाथाम्	आस्वहि

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
बहुवचन	आसत	आद्ध्वम्, आध्वम्	आस्महि

विधिलिङ्

एकवचन	आसीत	आसीथाः	आसीय
द्विवचन	आसीयाताम्	आसीयाथाम्	आसीवहि
बहुवचन	आसीरन्	आसीध्वम्	आसीमहि

वस् to dress with आ का रूप with 'आस्' के समान होता है।

आ—कारान्त धातु

८१। आकारान्त धातु के परस्थित लङ् के अन् के स्थान में विकल्प से 'उस्' होता है। वही 'उस्' रहनेसे आकार का लोप होता है।

६५-या धातु (परस्मैपदी) जाना (To go)

लट्

एकवचन	याति	यासि	यामि
द्विवचन	यातः	याथः	यावः
बहुवचन	यान्ति	याथ	यामः

लोट्

एकवचन	यातु	याहि	यानि
द्विवचन	याताम्	यातम्	याव
बहुवचन	यान्तु	यात	याम

लङ्

एकवचन	अयात	अयाः	अयाम्
द्विवचन	अयाताम्	अयातम्	अयाव
बहुवचन	अयुः, अयान्	अयात	अयाम

विधिलिङ्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	यायात्	यायाः	यायाम्
द्विवचन	यायाताम्	यायातम्	यायाव
बहुवचन	यायुः	यायात	यायाम

या with अनु to follow, with अभि to approach, with आ to come, with उप to yield, with निर् to go out, with प्रति to go towards, with सम् and आ to arrive.

परस्मैपदी धातु—ख्या to tell. दा to cut. द्रा to fly पा to protect प्रा to fill भा to shine मा to measure. ला to give or take. रा to give वा to blow. प्सा to eat श्रा to cook. स्ना to bathe इनके रूप 'या' के समान होंगे।

८२। ति, सि, मि, तु, आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, दु, सु और अम् इन विभक्तियों में आदादिगणीय धातुके अन्त्य स्वर और उपधा लघु स्वरका गुण होता है।

६६-द्विष्-धातु (परस्मैपदी) द्वेष करना (To hate)

लट्

एकवचन	द्वेष्टि	द्वेक्षि	द्वेष्मि
द्विवचन	द्विष्टः	द्विष्ठः	द्विष्वः
बहुवचन	द्विषन्ति	द्विष्ठ	द्विष्मः

लोट्

एकवचन	द्वेष्टु	द्विड्ढि	द्वेषाणि
द्विवचन	द्विष्टाम्	द्विष्टम्	द्वेषाव
बहुवचन	द्विषन्तु	द्विष्ट	द्वेषाम

लङ्

८३। द्विष् धातु में लङ् के अन् के स्थान में विकल्पसे उस् होता है।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अद्वेट्, अद्वेड्,	अद्वेट्, अद्वेड्,	अद्वेषम्
द्विवचन	अद्विष्टाम्	अद्विष्टम्	अद्विष्व
बहुवचन	अद्विषुः, अद्विषन्	अद्विष्ट	अद्विष्म

विधिलिङ्

एकवचन	द्विष्यात्	द्विष्याः	द्विष्याम्
द्विवचन	द्विष्याताम्	द्विष्यातम्	द्विष्याव
बहुवचन	द्विष्युः	द्विष्यात	द्विष्याम

रुदादि

८४। लट् लोट्, और लङ् इन तीनों की व्यञ्जनादि विभक्तियों (*) के परे रहने से रुद्, स्वप्, श्वस्, अन् और जक्ष् धातुओं के उत्तर इ होता है।

६७ रुद्-धातु (परस्मैपदी) रोना (To weep)

लट्

एकवचन	रोदिति	रोदिषि	रोदिमि
द्विवचन	रुदितः	रुदिथः	रुदिवः
बहुवचन	रुदन्ति	रुदिथ	रुदिमः

लोट्

एकवचन	रोदितु	रुदिहि	रोदानि

(*) लङ् की द् और स् इन दोनों से भिन्न।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
द्विवचन	रुदिताम्	रुदितम्	रोदाव
बहुवचन	रुदन्तु	रुदित	रोदाम

लङ्

८५। रुद् आदि धातुओं में लङ् के द् के स्थान में ईत् और अत् और स् के स्थान में ईस् और अस् होता है।

एकवचन	अरोदीत्, अरोदत्	अरोदीः, अरोदः	अरोदम्
द्विवचन	अरुदिताम्	अरुदितम्	अरुदिव
बहुवचन	अरुदन्	अरुदित	अरुदिम

विधिलिङ्

एकवचन	रुद्यात्	रुद्याः	रुद्याम्
द्विवचन	रुद्याताम्	रुद्यातम्	रुद्याव
बहुवचन	रुद्युः	रुद्यात	रुद्याम

अन् to breathe, स्वप् to sleep श्वस् to breathe इनके रूप 'रुद्' के समान होते हैं।

जक्षादि

८६। लट् आदि चार विभक्तियों में जक्ष्, जागृ, दरिद्रा, चकास् और शास् इन पांच धातुओं की अभ्यस्त संज्ञा होती है।

६८ जक्ष्-धातु (परस्मैपदी) भोजन करना (To eat)

लट्

एकवचन	जक्षिति	जक्षिषि	जक्षिमि
द्विवचन	जक्षितः	जक्षिथः	जक्षिवः
बहुवचन	जक्षति	जक्षिथ	जक्षिमः

लोट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जक्षितु	जक्षिहि	जक्षाणि
द्विवचन	जक्षिताम्	जक्षितम्	जक्षाव
बहुवचन	जक्षतु	जक्षित	जक्षाम

लङ्

एकवचन	अजक्षीत् } अजक्षत्	अजक्षीः } अजक्षः	अजक्षम्
द्विवचन	अजक्षिताम्	अजक्षितम्	अजक्षिव
बहुवचन	अजक्षुः	अजक्षित	अजक्षिम

विधिलिङ्

एकवचन	जक्ष्यात्	जक्ष्याः	जक्ष्याम्
द्विवचन	जक्ष्याताम्	जक्ष्यातम्	जक्ष्याव
बहुवचन	जक्ष्युः	जक्ष्यात	जक्ष्याम

६९-जागृ धातु(परस्मैपदी)जागना (To wake up)

लट्

एकवचन	जागर्त्ति	जागर्षि	जागर्मि
द्विवचन	जागृतः	जागृथः	जागृवः
बहुवचन	जाग्रति	जागृथ	जागृमः

लोट्

एकवचन	जागर्त्तु	जागृहि	जागराणि
द्विवचन	जागृताम्	जागृतम्	जागराव
बहुवचन	जाग्रतु	जागृत	जागराम

लङ्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अजागः	अजागः	अजागरम्
द्विवचन	अजागृताम्	अजागृतम्	अजागृव
बहुवचन	अजगरुः	अजागृत	अजागृम

विधिलिङ्

एकवचन	जागृयात्	जागृयाः	जागृयाम्
द्विवचन	जागृयाताम्	जागृयातम्	जागृयाव
बहुवचन	जागृयुः	जागृयात्	जागृयाम

७१-दरिद्रा धातु (परस्मैपदी) दरिद्र होना

(To be poor)

८७। ति, सि, मि, तु, द् स्,-भिन्न व्यञ्जनादि विभक्तियां परे से दरिद्रा धातु के आ स्थान में इ होता है।

८८। अन्ति, अन्तु, अन् विभक्तियों में दरिद्रा धातु के आकार का लोप होता है।

लट्

एकवचन	दरिद्राति	दरिद्रासि	दरिद्रामि
द्विवचन	दरिद्रितः	दरिद्रिथः	दरीद्रिवः
बहुवचन	दरीद्रति	दरीद्रिथ	दरीद्रिमः

७२-चकास्धातु(परस्मैपदी) चमकना (Toshine)

लट्

एकवचन	चकास्ति	चकास्सि	चकास्मि
द्विवचन	चकास्तः	चकास्थः	चकास्वः
बहुवचन	चकासति	चकास्थ	चकास्मः

लङ्

८६। लङ् के प्रथम और मध्यमपुरुष के एकवचन में धातु के अन्तस्थित स् के स्थान में त् होता है (*)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अचकात्	अचकात्, अचकाः	अचकासम्
द्विवचन	अचकास्ताम्	अचकास्तम्	अचकास्व
बहुवचन	अचकासुः	अचकास्त	अचकास्म

७२-शास्-धातु (परस्मैपदी) शासन करना

(To govern)

६०। ति, सि, मि, तु, स्, भिन्न व्यञ्जनादि विभक्तियां परे रहने से शास् धातु के स्थान में शिष् होता है।

लट्

एकवचन	शास्ति	शास्सि	शास्मि
द्विवचन	शिष्टः	शिष्ठः	शिष्वः
बहुवचन	शासति	शिष्ठ	शिष्मः

लोट्

६१। हि विभक्ति के साथ शास् धातु के स्थान में शाधि होता है।

एकवचन	शास्तु	शाधि	शासानि
द्विवचन	शिष्टाम्	शिष्टम्	शासाव
बहुवचन	शासतु	शिष्ट	शासाम

(*) वैयाकरण लोग मध्यमपुरुष के एकवचन में विकल्प स त करते हैं।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
		लङ्	
एकवचन	अशात्	अशात्, अशाः	अशासम्
द्विवचन	अशिष्टाम्	अशिष्टम्	अशिष्व
बहुवचन	अशासुः	अशिष्ट	अशिष्म
		विधिलिङ्	
एकवचन	शिष्यात्	शिष्याः	शिष्याम्
द्विवचन	शिष्याताम्	शिष्यातम्	शिष्याव
बहुवचन	शिष्युः	शिष्यात	शिष्याम

७३-शी धातु (आत्मनेपदी) सोना (To sleep)

९२। लट् लोट् लङ् और विधिलिङ् इन चार विभक्तियों में शी धातु के स्थान में शे होता है।

९३। अन्ते, अन्ताम् और अन्त विभक्तियों में शी धातु के स्थान में शेर होता है।

		लट्	
एकवचन	शेते	शेषे	शये
द्विवचन	शयाते	शयाथे	शेवहे
बहुवचन	शेरते	शेध्वे	शेमहे
		लोट्	
एकवचन	शेताम्	शेष्व	शयै
द्विवचन	शयाताम्	शयाथाम्	शयावहै
बहुवचन	शेरताम्	शेध्वम्	शयामहै
		लङ्	
एकवचन	अशेत	अशेथाः	अशेय
द्विवचन	अशयाताम्	अशयाथाम्	अशेवहि

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
बहुवचन	अशेरत	अशेध्वम्	अशेमहि

विधिलिङ्

एकवचन	शयीत	शयीथाः	शयीय
द्विवचन	शयीयाताम्	शयीयाथाम्	शयीवहि
बहुवचन	शयीरन्	शयीध्वम्	शयीमहि

शी with अति to exceed, with अधि to abide with सम् to doubt.

७४-सू-धातु (आत्मनेपदी) पैदा करना

(To give birth)

लट्

एकवचन	सूते	सूषे	सुवे
द्विवचन	सुवाते	सुवाथे	सूवहे
बहुवचन	सुवते	सूध्वे	सूमहे

लोट्

६४। लोट् की ऐ, आवहै और आमहै विभक्तियों में सू धातु का गुण नहीं होता।

एकवचन	सूताम्	सूष्व	सुवै
द्विवचन	सुवाताम्	सुवाथाम्	सुवावहै
बहुवचन	सुवताम्	सूध्वम्	सुवामहै

लङ्

एकवचन	असूत	असूथाः	असुवि
द्विवचन	असुवाताम्	असुवाथाम्	असूवहि
बहुवचन	असुवत	असूध्वम्	असूमहि

विधिलिङ्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	सुवीत	सुवीथाः	सुवीय
द्विवचन	सुवीयाताम्	सुवीयाथाम्	सुवीवहि
बहुवचन	सुवीरन्	सुवीध्वम्	सुवीमहि

७५ इ-धातु (परस्मैपदी) आना (To come)

६५। अन्ति और अन्तु विभक्ति में इ धातु के स्थान में य (*) होता है।

एकवचन	एति	एषि	एमि
द्विवचन	इतः	इथः	इवः
बहुवचन	यन्ति	इथ	इमः

लोट्

एकवचन	एतु	इहि	अयानि
द्विवचन	इताम्	इतम्	अयाव
बहुवचन	यन्तु	इत	अयाम

लङ्

एकवचन	ऐत्	ऐः	आयम्
द्विवचन	ऐताम्	ऐतम्	ऐव
बहुवचन	आयन्	ऐत	ऐम

विधिलिङ्

एकवचन	इयात्	इयाः	इयाम्
द्विवचन	इयाताम्	इयातम्	इयाव
बहुवचन	इयुः	इयात	इयाम

(*) मा और मास्म शब्द पूर्ववर्ती होने से अन् विभक्ति में भी य होता है। यथा, मा-यन् मास्म-यन्।

इ with उत् to rise or asdend, with अभि and उत् to prosper, with अनु to go after, with अभि to obtain, with अप to go away, to perish, with अभि and उप to arrive, with उप to receive, with प्रति to trust, with वि to expend, with सम् aud उप to obtain.

लट् आदि चार विभक्तियों में अस् और हन् धातुओं के जो रूप होते हैं, क्रम से लिखे जाते हैं।

७६—अस् धातु (परस्मैपदी) होना ※

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अस्ति	असि	अस्मि
द्विवचन	स्तः	स्थः	स्वः
बहुवचन	सन्ति	स्थ	स्मः
		लोट्	
एकवचन	अस्तु	एधि	असानि
द्विवचन	स्ताम्	स्तम्	असाम
बहुवचन	सन्तु	स्त	असाव
		लङ्	
एकवचन	आसीत्	आसीः	आसम्
द्विवचन	आस्त	आस्तम्	आस्व
बहुवचन	आसन्	आस्त	आस्म

※ संस्कृत में अस् धातु। अदादि। परस्मैपदी। अकर्म्मक वर्त्तमान काल। लट् लकार। कर्तृ वाच्य तिङन्त क्रिया। हिन्दी में होना धातु अकर्म्मक। वर्तमानकाल। कर्तृ प्रधान क्रिया।

संस्कृत में प्रथम आदि पुरुषों के परस्मैपद संज्ञक प्रत्यय।

विधिलिङ्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	स्यात्	स्याः	स्याम्
द्विवचन	स्याताम्	स्यातम्	स्याव
बहुवचन	स्युः	स्यात्	स्याम

७७ हन् धातु (परस्मैपदी) मारना (To kill)

लट्

एकवचन	हन्ति	हन्सि	हन्मि

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	तिप्	सिप्	मिप्
द्विवचन	तस्	थस्	वस्
बहुवचन	झि	थ	मस्

क्रियाओं क रूप

एकवचन	अस्ति	असि	अस्मि
एकवचन	है	है	हूं
द्विवचन	स्तः	स्थः	स्वः
द्विवचन	है	हो	हैं
बहुवचन	सन्ति	स्थ	स्म
बहुवचन	है	हो	हैं

जैसे संस्कृत में ऊपर लिखी हुई क्रियाओं के रूप कर्त्ता के लिंग अनुसार नहीं पलटते वैसे ही हिन्दी में भी नहीं पलटते इसलिये एक २ संस्कृत क्रिया के नीचे एक ही एक हिन्दी क्रिया लिखी गई है। क्योंकि पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों में उनके रूप तुल्य होते हैं।

अनुवादक।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
द्विवचन	हतः	हथः	हन्वः
बहुवचन	घ्नन्ति	हथ	हन्मः

लोट्

एकवचन	हन्तु	जहि	हनानि
द्विवचन	हताम्	हतम्	हनाव
बहुवचन	घ्नन्तु	हत	हनाम

लङ्

एकवचन	अहन्	अहन्	अहनम्
द्विवचन	अहताम्	अहतम्	अहन्व
बहुवचन	अघ्नन्	अहत	अहन्म

विधिलिङ्

एकवचन	हन्यात्	हन्याः	हन्याम्
द्विवचन	हन्याताम्	हन्यातम्	हन्याव
बहुवचन	हन्युः	हन्यात	हन्याम्

हन् with अभि to sound a musical instrument with वि and आ to obstruct, with नि or परि to desurely.

७८ विद् धातु (परस्मैपदी) जानना (To know)

लट्

एकवचन	वेत्ति	वेत्सि	वेद्मि
द्विवचन	वित्तः	वित्थः	विद्वः
बहुवचन	विदन्ति	वित्थ	विद्मः *

* लट् के परस्मैपद में विद् धातु के और भी कई एक प्रकार के रूप होते हैं, यथा—

५

लोट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	वेत्तु	विद्धि	वेदानि
द्विवचन	वित्ताम्	वित्तम्	वेदाव
बहुवचन	विदन्तु	वित्त	वेदाम *

लङ्

९६। विद् धातु के लङ् के अन् के स्थान में विकल्प से उस् होता है। या, द्विष, विद् धातुओं के अन् के स्थान में विकल्प से उस् होता है।

लङ्

एकवचन	अवेत्	अवेत् +	अवेदम्
द्विवचन	अवित्ताम्	अवित्तम्	अविद्व
बहुवचन	अविदुः, अविदन्	अवित्त	अविद्म

एकवचन	वेद	वेत्थ	वेद
द्विवचन	विदतुः	विदथुः	विद्व
बहुवचन	विदुः	विद	विद्म

* पक्षान्तर में लोट विभक्ति में विद् धातु के स्थान में विदाङ्कु होता है और कृ धातु के समान रूप होते हैं। यथा—

एकवचन	विदाङ्करोतु	विदाङ्कुरु	विदाङ्करवाणि
द्विवचन	विदाङ्कुरुताम्	विदाङ्कुरुतम्	विदाङ्करवाव
बहुवचन	विदाङ्कुर्वन्तु	विदाङ्कुरुत	विदाङ्करवाम

+ वैयाकरण लोग लङ् के स् विभक्ति में धातु के अवेवस्थित द् के स्थान में विकल्प से विसर्ग करके दो पद सिद्ध करते हैं। अवेः, अवेत्।

विधिलिङ्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	विद्यात्	विद्याः	विद्याम्
द्विवचन	विद्याताम्	विद्यातम्	विद्याव
बहुवचन	विद्युः	विद्यात	विद्याम

उकारन्त धातु

६७। ति, सि, मि, तु, द् और स् इन विभक्तियों में धातु के अन्तस्थित उकार की वृद्धि होती है।

७६--नु-धातु (परस्मैपदी) स्तुति करना

(To pray)

लट्

एकवचन	नौति	नौषि	नौमि
द्विवचन	नुतः	नुथः	नुवः
बहुवचन	नुवन्ति	नुथ	नुमः
	लोट्	लङ्	विधिलिङ्
एकवचन	नौतु	अनौत्	नुयात्
द्विवचन	नुताम्	अनुताम्	नुयाताम्
बहुवचन	नुवन्तु	अनुवन्	नुयुः

नु with आ to utter a cry of regret परस्मपदी धातु क्षु to sound द्यु to attack स्नु to seize क्ष्णु to sharpen यु to join ष्णु to posses supremacy स्नु to drop out इनके रूप 'नु' के समान होते हैं।

स्तु, रु और तु धातु

६८। ति, सि, मि, तु, द्, स् इन छः विभक्तियों में स्तु, रु, तु, इन्हीं तीन धातुओं के उत्तर विकल्प से ई होता है। उसी ईकार के परे उकार का गुण होता है।

८०-स्तु-धातु (उभयपदी) स्तुति करना

(To praise)

लट्-परस्मैपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	स्तवीति } स्तौति }	स्तवीषि } स्तौषि }	स्तवीमि, स्तौमि
द्विवचन	स्तुतः	स्तुथः	स्तुवः
बहुवचन	स्तुवन्ति	स्तुथ	स्तुमः

आत्मनेपद

एकवचन	स्तुते	स्तुषे	स्तुवे
द्विवचन	स्तुवाते	स्तुवाथे	स्तुवहे
बहुवचन	स्तुवते	स्तुध्वे	स्तुमहे

८१---ब्रू धातु(उभयपदी)बोलना (To speak)

६६। ब्रू, व, ईट्, ति, सि; मि, तु, दू, सू इन छः विभक्तियों में ब्रू धातु के उत्तर ई होता है। ई के परे गुण होना है।

लट्—परस्मैपद

एकवचन	ब्रवीति	ब्रवीषी	ब्रवीमि
द्विवचन	ब्रूतः	ब्रूथः	ब्रूवः
बहुवचन	ब्रूवन्ति	ब्रूथ	ब्रूमः

आत्मनेपद

एकवचन	ब्रुते	ब्रूषे	ब्रुवे
द्विवचन	ब्रवाते	ब्रुवाथे	ब्रूवहे
बहुवचन	ब्रुवते	ब्रूध्वे	ब्रूमहे

(२२) ति, तस्, अन्ति, सि, थस्, इन पांच विभक्तियों के

साथ ब्रू धातु के स्थान में यथाक्रम विकल्प से आह, आहतुः, आहुः आत्थ, आहथुः ये ही पांच पद होते हैं।

	लोट्	लङ्	विधिलिङ्
	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
	परस्मैपद	परस्मैपद	परस्मैपद
एकवचन	ब्रवीतु	अब्रवीत्	ब्रूयात्
द्विवचन	ब्रूताम्	अब्रूताम्	ब्रूयाताम्
बहुवचन	ब्रुवन्तु	अब्रूवत्	ब्रूयुः

८२--दुह् धातु (उभयपदी) दुहना (To milk)

लट्—परस्मैपद

एकवचन	दोग्धि	धोक्षि	दोह्मि
द्विवचन	दुग्धः	दुग्धः	दुह्वः
बहुवचन	दुहन्ति	दुग्ध	दुह्मः

आत्मनेपद

एकवचन	दुग्धेः	धुक्षे	दुहे
द्विवचन	दुहाते	दुहाथे	दुह्वहे
बहुवचन	दुहते	दुग्ध्वे	दुह्महे

लोट्—परस्मैपद

एकवचन	दोग्धु	दोग्धि	दोहानि
द्विवचन	दुग्धाम्	दुग्धम्	दोहाव
बहुवचन	दुहन्तु	दुग्ध	दोहाम

आत्मनेपद

एकवचन	दुग्धाम्	धुक्ष्व	दोहै
द्विवचन	दुहाताम्	दुहाथाम्	दोहावहै
बहुवचन	दुहताम्	दुग्ध्वम्	दोहामहै

लङ्—परस्मैपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अधोक्	अधोक्	अदोहम्
द्विवचन	अदुग्धाम्	अदुग्धम्	अदुह्व
बहुवचन	अदुहन्	अदुग्ध	अदुह्म

आत्मनेपद

एकवचन	अदुग्ध	अदुग्धाः	अदुहि
द्विवचन	अदुहताम्	अदुहाथाम्	अदुह्वहि
बहुवचन	अदुहत	अदुग्ध्वम्	अदुह्महि

८३· लिह् धातु (उभयपदी) चाटना

(To lick, to taste)

लट्—परस्मैपद

एकवचन	लेढि	लेक्षि	लेह्मि
द्विवचन	लीढः	लीढः	लिह्वः
बहुवचन	लिहन्ति	लीढ	लिह्मः

आत्मनेपद

एकवचन	लीढे	लिक्षे	लीहे
द्विवचन	लिहाते	लिहाथे	लिह्वहे
बहुवचन	लिहते	लीढ्वे	लिह्महे

८४· अधि पूर्वक 'इ' धातु (आत्मनेपदी) पढ़ना

(To read)

१०० । 'इ' धातु का प्रयोग करनेसे अधि उपसर्ग लगाना होता है ।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अधीते	अधीषे	अधीये
द्विवचन	अधीयाते	अधीयाथे	अधीवहे
बहुवचन	अधीयते	अधीध्वे	अधीमहे

लोट्

एकवचन	अधीताम्	अधीष्व	अध्ययै
द्विवचन	अधीयाताम्	अधीयाथाम्	अध्ययावहै
बहुवचन	अधीयताम्	अधीध्वम्	अध्ययामहै

लङ्

१०१। विभक्ति का स्वर परे रहने से लङ् विभक्ति में एकार के परे य होता है।

एकवचन	अध्यैत	अध्यैथाः	अध्यैयि
द्विवचन	अध्यैयाताम्	अध्यैयाथाम्	अध्यैवहि
बहुवचन	अध्यैयत	अध्यैध्वम्	अध्यैमहि

विधिलिङ्

एकवचन	अधीयीत	अधीयीथाः	अधीयीय
द्विवचन	अधीयीयाताम्	अधीयीयाथाम्	अधीयीवहि
एकवचन	अधीयीरन्	अधीयीध्वम्	अधीयीमहि

८५ ईश् धातु (आत्मनेपदी) स्वामी होना

(To become lord)

१०२। ईशःसे। इडजनोर्ध्वेच—लट्, लोट्, और लङ् के स् और ध् परे रहने से ईश धातु के उत्तर इ होता है।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ईष्टे	ईशिषे	ईशे
द्विवचन	ईशाते	ईशाथे	ईश्वहे
बहुवचन	ईशते	ईशिध्वे	ईश्महे

लोट्

एकवचन	ईष्टाम्	ईशिष्व:	ईशै
द्विवचन	ईशाताम्	ईशाथाम्	ईशावहै
बहुवचन	ईशताम्	ईशिध्वम्	ईशामहै

लङ्

एकवचन	ऐष्ट	ऐष्ठाः	ऐशि
द्विवचन	ऐशाताम्	ऐशाथाम्	ऐश्वहि
बहुवचन	ऐशत	ऐशिध्वम्	ऐश्महि

विधिलिङ्

एकवचन	ईशीत	ईशीथाः	ईशीय
द्विवचन	ईशीयाताम्	ईशीयाथाम्	ईशीवहि
बहुवचन	ईशीरन्	ईशीध्वम्	ईशीमहि

ईड् (To praise) धातु का रूप भी 'ईश' के समान होता है।

८६-वश्-धातु (परस्मैपदी) इच्छा करना (To wish)

१०३। ति, सि, मि, तु, आनि, आव, आम, ए, अवहै आमहै, द्, स्, अम् इन्हें छोड़ अन्य विभक्तियों में 'वश्' धातु के स्थान में उश् होता है।

लट्

एकवचन	वष्टि	वक्षि	वश्मि
द्विवचन	उष्टः	उष्ठः	उश्वः
बहुवचन	उशन्ति	उष्ठ	उश्मः

लोट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	वष्टु	उड्ढि	वशानि
द्विवचन	उष्ठाम्	उष्टम्	वशाव
बहुवचन	उशन्तु	उष्ट	वशाम

लङ्

एकवचन	अवट्	अवट्	अवशम्
द्विवचन	औष्ठाम्	औष्ठम्	औश्व
बहुवचन	औशन्	औष्ट	औश्म

विधिलिङ्

एकवचन	उश्यात्	उश्याः	उश्याम्
द्विवचन	उश्याताम्	उश्यातम्	उश्याव
बहुवचन	उश्युः	उश्यात	उश्याम

८७-चक्ष् धातु (आत्मनेपदी) स्पष्ट बोलना

(To say clearly)

१०४। स्कोःसंयोगाद्योरन्ते च। त, थ, ध, और स परे रहने से चक्ष् धातु के स्थानमें चष् होता है

लट्

एकवचन	चष्टे	चक्षे	चक्षे
द्विवचन	चक्षाते	चक्षाथे	चक्ष्वहे
बहुवचन	चक्षते	चड्ढ्वे	चक्ष्महे

लोट्

एकवचन	चष्टाम्	चक्ष्व	चक्षै
द्विवचन	चक्षाताम्	चक्षाथाम्	चक्षावहै
बहुवचन	चक्षाथाम्	चड्ढ्वम्	चक्षामहै

लङ्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अचष्ट	अचष्ठाः	अचक्षि
द्विवचन	अचक्षाताम्	अचक्षाथाम्	अचक्ष्वहि
बहुवचन	अचक्षत	अचड्ढ्वम्	अचक्ष्महि

विधिलिङ्

एकवचन	चक्षीत	चक्षीथाः	चक्षीय
द्विवचन	चक्षीयाताम्	चक्षीयाथाम्	चक्षीवहि
बहुवचन	चक्षीरन्	चक्षीध्वम्	चक्षीमहि

८८-इ-इट् ※ विधान

१०५। लुट्, ल्टट् और ळङ् विभक्तियों में धातु के उत्तर इ होता है।

१०६। आशीर्लिङ् के आत्मनेपद में धातुओं के उत्तर इ होता है।

१०७। लिट् की, थ्, व, म, से, ध्वे, वहे और महे विभक्तियों में धातुओं के उत्तर इ होता है।

१०८। लुङ् विभक्तियों विहित स प्रत्यय के परे धातु के उत्तर ई होता है। पर अनट् धातु के उत्तर इ नहीं होता।

विकल्प (Alternative form)

१०९। रध् आदि धातु के उत्तर विकल्प से इ (+) होता है।

※ पाणिनी, कलाप और सुपद्म के मत से इट् मुग्धबोध के मत से इम् और संक्षिप्तसार के मत से इङ् होता है।

इन सब व्याकरणों के मत से कार्य काल में ट् म और ङ् नहीं रहते।

(+) घु धातु के लुङ् के परस्मैपद में सर्व्वदा इ होता है।

११० । इष् रिष्, तुदादि रुष्, लुभ्, और सह धातु के उत्तर लुट् और लङ् विभक्तिमें विकल्प से इ होता है ।

१११ । कृत, चृत्, छृद, और नृत् धातुओं के उत्तर लृट् और लृङ् विभक्तियों में और आशीर्लिङ् के आत्मनेपद में विकल्प से इ होता है ।

११२ । वृ धातु के और दीर्घ ऋकारान्त धातुओं के उत्तर लृङ् के आशीर्लिङ् के आत्मनेपद में विकल्प से इ होता है ।

निषेध (Exeption)

११३ । कई धातुओं के उत्तर इ नहीं होता, उन्हीं सब धातुओं को अनिट् कहते हैं आकारान्त आदि से क्रमसे सब धातु नीचे अनिट् लिखे जाते हैं ।

आकारान्त * दरिद्रा भिन्न समुदाय ।
आकारान्ता दरिद्रा अनिटः परिकीर्त्तिताः ।
इकारान्त-श्री और शिव भिन्न समुदाय ।

---

* आकारान्त—जिसके अन्त में आ हो ।ऐसे ही इकारान्तके अन्त में इ; ईकारान्त के अन्त में ई, उकारान्त के अन्त उ, ऋकारान्त के अन्त में ऋ, कान्त के अन्त में क्, चान्त के अन्त में च्, छान्त के अन्त में छ्, जान्त के अन्त में ज्, दान्त के अन्त में द्, धान्त के अन्त में ध्, नान्त के अन्त में न्, पान्त के अन्त में प्, भान्त के अन्त में भ्, मान्त के अन्त में म्, शान्त के अन्त में श्, षान्त के अन्त में ष्, सान्त के अन्त में स्, हान्त के अन्त में ह्, होता है ।

अनुवादक ।

श्रि-श्विभिन्ना इकारान्ता अनिटः परिकीर्तिताः ।

ईकारान्त—डी, शी, दीधी, वेवी भिन्न समुदाय ।

डी, शी, वेवी, दीधी, भिन्ना ईकारान्तास्तथानिटः ।

उकारान्त—यु रु नु स्नु क्षु क्ष्णु ऊर्णु भिन्न समुदाय ।

वर्ज्जयित्वा युरू नुस्नू क्षुक्ष्णू ऊर्णुञ्च सप्तमम् ।

अनिटः स्युरुकारान्तः ।

ऋकरान्त—वृ और जागृ भिन्न समुदाय ।

अनिटस्तु ऋकारान्त ज्ञेया जागृविवर्जिताः । (*)

कान्त—केवल शक् धातु ।

कान्तेषु शक् एवानिट् ।

चान्त

पच् मुच् रिच् वच् वि वच् सिच् ।

चान्तेषु पच् मुच् रिचो वच्विचौ सिच् एव । अनिटः षच् परिज्ञेयाः ।

छान्त—केवल प्रच्छ् धातु

प्रच्छश्छान्तेत्वनिट् स्मृतः ।

जान्त ।

त्यज् निज् भज् भनज् भुज् भ्रस्ज् मस्ज् मृज् यज् युज् रन्ज् रुज विज् सञ्ज् सृज् स्वन्ज् ।

त्यजो निजो भजो भञ्जो भुज भ्रस्जो मसज् मृज्यजः

---

* वृ धातु की लिट् विभक्ति में इ नहीं होता ।

युजो रन्जो रुजविजेः सृजूसञ्जौ स्वनजू एवच ।
षोड़शैतान जकारान्तान जानीयादिड् विवर्जितान् ।

दान्त ।

अदू क्षुदू खिदू तुदू नुदू पदू भिदू विदू विन्दू शदू सदू स्कन्दू स्विदू हदू ।

अदः क्षुदः खिदश्चैव छिदूतुदौ नुदू पदौ भिदः
विदो विन्दः सदसदौच स्कन्दस्विद हदास्तथा ।
दकारान्तेषु विज्ञेया इमे पंचदशानिटः ॥

धान्त ।

क्रुधू क्षुधू बुधू बन्धू राधू रुधू व्य_ शुधू सधू सिधू ।
क्रुधः क्षुधा बुधो बन्धो युधो राधो रुधो व्यधः ।
शुधः साधः सिधश्चेति धान्तेष्वेकादशानिटः ।

नान्त ।

मनू और हनू धातु ।
अनिटौ मनूहनौ नान्ते ।

पान्त

आपू क्षिपू लुपू तिपू तृपू तपू त्रपू दपू लिपू लुपू वपू शपू स्वपू
आपः क्षिपश्लुश्चैव तपू तिपू तृपू त्रपू दपो लिपः ।
श्लुपू वपू शपू सृपू स्वपः पान्तेष्वनिटः स्युश्चतुर्दश ॥

भान्त ।

यभू रभू लभू ।
यभू रभू लभो भकारान्तेऽत्रनिटः कथितास्त्रयः

मान्त—गम् नम् यम् रम्।

गम्नमौ यम्रमौ चेति मकारान्तेष्विमेऽनिटः।

शान्त।

क्रुश् दन्श् दिश् दृश् मृश् रिश् रुश् लिश् विश् स्पृश्।

क्रुश् दन्श् दिश् दृशिश्चैव मृश् रिश् रुश् लिश् विशस्तथा।

स्पृश्चेति शकारान्तेष्वनिटः कीर्तिता दश।

षान्त।

कृष् तुष् त्विष् दुष् पिष् पुष् मृष् विष् शिष् श्लिष्।

कृष् तुष् त्विष् दुष् द्विषश्चैव पिष् पुष् मृष् विष् शिषस्तथा।

शुष् श्लिषौ चेति कथ्यन्ते षान्तेषु द्वादशानिटः।

सान्त।

अनिटौ घस् वसौ सान्ते।

हान्त।

दह् दिह् दुह् नह् मिह् रुह् लिह् वहः।

दहो दिहो दुहश्चैव नहो मिहरुहौ लिहः।

वहिश्चेति हकारान्तेष्वनिटोऽष्टौ प्रकीर्त्तिताः॥

प्रतिप्रसव। (Counter Exception)

११४। लिट् विभक्ति में द्रु, श्रु, स्रु, स्तु, कृ, भृ, सृ भिन्न अनिट् धातु के उत्तर इ होता है (*)

(*) ह्रस्व ऋकारान्त धातु की थ विभक्ति में इ नहीं होता। ऋ; वृ; स्वृ; धातु में सदा इ होता है।

११५। लिट् की विभक्ति में दृश्, सृज्, स्वरान्त (†) और अकार युक्त (+) धातु में विकल्प से इ होता है।

११६। लट् और लङ् के परस्मैपद में गम् धातु के उत्तर इ होता है।

११७। लुङ् के परस्मैपद में विहित स परे रहने से सु और स्तु धातु के उत्तर इ होता है।

११८। लङ् और आशीर्लिङ् के आत्मनेपद में संयोगादि ह्रस्व-ऋकारान्त धातु के उत्तर विकल्प से इ होता है।

११९। लट् और लङ् विभक्तियों में हन् धातु और ऋकारान्त धातु के उत्तर इ होता है

लुट्, लट् और लङ्

१२०। पूगन्तलघूपधस्य च। लुट् लट् और लङ् विभक्ति में धातु के अन्त्यस्वर और लघुस्वर का गुण होता है।

८९--(परस्मैपदी) भू धातु (To be)

लुट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	भविता *	भवितासि	भवितास्मि
द्विवचन	भवितारौ	भवितास्थः	भवितास्वः
बहुवचन	भवितारः	भवितास्थ	भवितास्मः

(†) ये धातु के उत्तर सर्व्वदा इ होता है।

(+) अद् धातु के उत्तर सर्व्वदा इ होता है।

* (अस् और भू)

एकवचन	भविता	भवितासि	भवितास्मि
एकवचन	होवेगा	होवोगे	होऊंगा
एकवचन	होवेगी	होवोगी	होऊंगी
द्विवचन	भवितारौ	भवितास्थः	भवितास्वः

लृट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	भविष्यति	भविष्यसि	भविष्यामि*
द्विवचन	भविष्यतः	भविष्यथः	भविष्यावः
बहुवचन	भविष्यन्ति	भविष्यथ	भविष्यामः

लृङ्

एकवचन	अभविष्यत्*	अभविष्यः	अभविष्यम्

द्विवचन	होवेंगे	होंगे	होवेंगे
द्विवचन	होवेंगी	होंगी	होवेंगी
बहुवचन	भवितारः	भवितास्थ	भवितास्मः
बहुवचन	होवेंगे	होंगे	होवेंगे
बहुवचन	होवेंगी	होंगी	होवेंगी

लुट् लकार में भी अस् और भू दोनों धातुओंकी क्रियाओं के रूप एक ही होते हैं। परन्तु इन प्रत्येक क्रियाओंके नीचे जो हिन्दी की दो ही क्रियायें लिखी गई हैं इसका कारण यह है कि अस् धातु की वर्तमान कालिक और भूतकालिक क्रियाओंको छोड़कर इतर सकल क्रियाओंके बदलेमें हिन्दीकी वे ही क्रियायें जोड़ी जाती हैं जो भू धातु की क्रियाओं के बदलेमें आती हैं।

* इन प्रत्येक संस्कृत क्रियाओं के बदले में भी हिन्दी की वे ही दो दो क्रियायें आती हैं जो इन धातुओं के लुट् लकार की क्रियाओं के नीचे लिखी गई हैं।

* [अस् और भू।]

एकवचन	अभविष्यत्	अभविष्यः	अभविष्यम्
एकवचन	होता	होता	होता
"	होती	होती	होती
"	होवेगा	होवेगा	होऊंगा
"	होवेगी	होवेगी	होऊंगी

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
द्विवचन	अभविष्यताम्	अभविष्यतम्	अभविष्याव
बहुवचन	अभविष्यन्	अभविष्यत	अभविष्याम

६०—चल् धातु (परस्मैपदी) चलना

(To walk)

	लुट्	लृट्	लृङ्
एकवचन	चलिता	चलिष्यति	अचलिष्यत्
द्विवचन	चलितारौ	चलिष्यतः	अचलिष्यताम्
बहुवचन	चलितारः	चलिष्यन्ति	अचलिष्यन्

६१—शी धातु (आत्मनेपदी) सोना

(To sleep)

एकवचन	शयिता	शयिष्यते	अशयिष्यत

द्विवचन	अभविष्यताम्	अभविष्यन्ति	अभविष्याव
"	होते	होते	होते
"	होती	होतीं	होतीं
"	होवेंगे	होंगे	होवेंगे
"	होवेंगी	होंगी	होवेंगी
बहुवचन	अभविष्यन्	अभविष्यत	अभविष्याम
"	होते	होते	होते
"	होतीं	होतीं	होतीं
"	होवेंगे	होंगे	होवेंगे
"	होवेंगी	होंगी	होवेंगी

लृङ् लकार में भी अस् और भू दोनों धातुओं की क्रियाओं के रूप एक ही से होते हैं। ऊपर लिखी हुई हिन्दी की चार चार क्रियाओं में दो २ भूतकाल और दो दो भविष्यत्काल की हैं।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
द्विवचन	शयितारौ	शयिष्येते	अशयिष्येताम्
बहुवचन,	शयितारः	शयिष्यन्ते	अशयिष्यन्त

९२—ग्रह-धातु; ग्रहण करना (To take)

१२१। ग्रहेरिट् दीर्घः। लुट् लृट् और लृङ् विभक्तियों में ग्रह् धातु के उत्तर विहित, इ दीर्घ होता है।

परस्मैपद

	लुट्	लृट्	लृङ्
एकवचन	ग्रहीता	ग्रहीष्यति	अग्रहीष्यत्
द्विवचन	ग्रहीतारौ	ग्रहीष्यतः	अग्रहीष्यताम्
बहुवचन	ग्रहीतारः	ग्रहीष्यन्ति	अग्रहीष्यन्

१२२। लुट्, लृट् और लृङ्, विभक्तियों में दीर्घ ॠकारान्त धातुओं के उत्तर विहित इ विकल्प से दीर्घ होता है।

९३—तृ धातु (परस्मैपदी) तैरना (To swim)

	लुट्	लृट्
	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष
एकवचन	तरीता, तरिता	तरीष्यति, तरिष्यति
द्विवचन	तरीतारौ, तरितारौ	तरीष्यतः, तरिष्यतः
बहुवचन	तरीतारः, तरितारः	तरीष्यन्ति, तरिष्यन्ति

९४—दरिद्रा धातु, (दरिद्र) होना (To be poor)

१२३। लुट् लृट्, और लृङ्, विभक्तियों में विहित इ परे रहनेसे दरिद्रा धातु के आकार का लोप हो जाता है।

	लुट्	लृट्	लृङ्
एकवचन	दरिद्रिता	दरिद्रिष्यति	अदरिद्रिष्यत्

अनिट् धातु

६५-या-धातु, जाना (To go)

	लुट्	लृट्	लृङ्
एकवचन	याता	यास्यति	अयास्यत्
द्विवचन	यातारौ	यास्यतः	अयास्यताम्
बहुवचन	यातारः	यास्यन्ति	अयास्यन्

६६-जि-धातु जीतना, पराजय करना

(To conquer)

	लुट्	लृट्	लृङ्
एकवचन	जेता	जेष्यति	अजेष्यत्
द्विवचन	जेतारौ	जेष्यतः	अजेष्यताम्
बहुवचन	जेतारः	जेष्यन्ति	अजेष्यन्

६७-श्रु-धातु, सुनना (To listen)

	लुट्	लृट्	लृङ्
एकवचन	श्रोता	श्रोष्यति	अश्रोष्यत्
द्विवचन	श्रोतारौ	श्रोष्यतः	अश्रोष्यताम्
बहुवचन	श्रोतारः	श्रोष्यन्ति	अश्रोष्यन्

९८-वच् धातु (परस्मैपदी) बोलना (To speak)

	लुट्	लृट्	लृङ्
	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	वक्ता	वक्ष्यति	अवक्ष्यत्
द्विवचन	वक्तारौ	वक्ष्यतः	अवक्ष्यताम्
बहुवचन	वक्तारः	वक्ष्यन्ति	अवक्ष्यन्

९९-प्रच्छ् धातु. पूछना (To ask)

	लुट्	लृट्	लृङ्
एकवचन	प्रष्टा	प्रक्ष्यति	अप्रक्ष्यत्
द्विवचन	प्रष्टारौ	प्रक्ष्यतः	अप्रक्ष्यताम्
बहुवचन	प्रष्टारः	प्रक्ष्यन्ति	अप्रक्ष्यन्

१००-मन् धातु(आत्मनेपदी) जानना (To know)

	लुट्	लृट्	लृङ्
एकवचन	मन्ता	मंस्यते	अमंस्यत
द्विवचन	मन्तारौ	मंस्येते	अमंस्येताम्
बहुवचन	मन्तारः	मंस्यन्ते	अमंस्यन्त

१०१-लभ् धातु (आत्मनेपदी) प्राप्त करना

(To gain)

	लुट्	लृट्	लृङ्
एकवचन	लब्धा	लप्स्यते	अलप्स्यत
द्विवचन	लब्धारौ	लप्स्येते	अलप्स्येताम्
बहुवचन	लब्धारः	लप्स्यन्ते	अलप्स्यन्त

१०२-वस् धातु (परस्मैपदी) रहना

(To dwell)

	लुट्	लृट्	लृङ्
	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	वस्ता	वत्स्यति	अवत्स्यत्
द्विवचन	वस्तारौ	वत्स्यतः	अवत्स्याम्
बहुवचन	वस्तारः	वत्स्यन्ति	अवत्स्यन्

१०३-वह् धातु (उभयपदी) ले जाना, ढोना

(To carry)

परस्मैपदी

	लुट्	लृट्	लृङ्
एकवचन	वोढा	वक्ष्यति	अवक्ष्यत्
द्विवचन	वोढारौ	वक्ष्यतः	अवक्ष्यताम्
बहुवचन	वोढारः	वक्ष्यन्ति	अवक्ष्यन्

१०४-दह् धातु (परस्मैपदी) जलाना

(To burn)

	लुट्	लृट्	लृङ्
एकवचन	दग्धा	धक्ष्यति	अधक्ष्यत्
द्विवचन	दग्धारौ	धक्ष्यतः	अधक्ष्यताम्
बहुवचन	दग्धारः	धक्ष्यन्ति	अधक्ष्यन्

दृश् और सृज्

१२४। लट्, लृट्, और लृङ् विभक्तियों में दृश् और सृज् धातुओं के ऋ के स्थानमें र् होता है (*)

(*) कृष्, तृप्, दृप्, सृप्, सृप्, स्पृश्, इन कई धातुओं के ऋ के

१०५-दृश् धातु, देखना (To see)

	लुट्	लृट्	लृङ्
	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	द्रष्टा	द्रक्ष्यति	अद्रक्ष्यत्
द्विवचन	द्रष्टारौ	द्रक्ष्यतः	अद्रक्ष्यताम्
बहुवचन	द्रष्टारः	द्रक्ष्यन्ति	अद्रक्ष्यन्

१०६-सृज् धातु, (परस्मैपदी) उत्पन्न करना

(To create)

	लुट्	लृट्	लृङ्
एकवचन	स्रष्टा	स्रक्ष्यति	अस्रक्ष्यत्
द्विवचन	स्रष्टारौ	स्रक्ष्यतः	अस्रक्ष्यताम्
बहुवचन	स्रष्टारः	स्रक्ष्यन्ति	अस्रक्ष्यन्

१०७-गम्-धातु, जाना (To go)

	लुट्	लृट्	लृङ्
एकवचन	गन्ता	गमिष्यति	अगमिष्यत्
द्विवचन	गन्तारौ	गमिष्यतः	अगमिष्यताम्
बहुवचन	गन्तारः	गमिष्यन्ति	अगमिष्यन्

१०८-हन् धातु, मारना (To kill)

	लुट्	लृट्	लृङ्
एकवचन	हन्ता	हनिष्यति	अहनिष्यत्

* स्थान में विकल्प से र होता है। यथा, कृष् धातु से लुट् क्रष्टा कर्ष्टा, लृट्, क्रक्ष्यति, कर्क्ष्यति, लृङ्, अक्रक्ष्यत, अकर्क्ष्यत् ।

	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
द्विवचन	हन्तारौ	हनिष्यतः	अहनिष्यताम्
बहुवचन	हन्तारः	हनिष्यन्ति	अहनिष्यन्

हृस्व ऋ-कारान्त

१०९-कृ धातु (परस्मैपदी) करना

(To do)

	लुट्	लट्	लङ्
एकवचन	कर्ता	करिष्यति	अकरिष्यत्
द्विवचन	कर्तारौ	करिष्यतः	अकरिष्यताम्
बहुवचन	कर्तारः	करिष्यन्ति	अकरिष्यन्

१२५। लङ् विभक्तियों में अधिपूर्वक इ धातु के स्थान में विकल्प से गी होता है। गी के ईकार का गुण नहीं होता।

११०-इ धातु (आत्मनेपदी) पढ़ना

(To read)

लङ्

प्रथमपुरुष

एकवचन	अध्यगीष्यत्	अध्यैष्यत्
द्विवचन	अध्यगीष्येताम्	अध्यैष्येताम्
बहुवचन	अध्यगीष्यन्त	अध्यैष्यन्त

विकल्पितेट् धातु

१११-रध् धातु (परस्मैपदी) रींधना

(To cook)

	लुट्	लट्
एकवचन	रधिता, रद्धा	रधिष्यति, रत्स्यति

	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
द्विवचन	रधितारौ, रद्धारौ	रधिष्यतः,	रत्स्यतः
बहुवचन	रधितारः, रद्धारः	रधिष्यन्ति,	रत्स्यन्ति

११२-सू-धातु, प्रसव करना

(To give birth to)

	लुट्		लृट्	
एकवचन	सविता	सोता	सविष्यते,	सोष्यते
द्विवचन	सवितारौ,	सोतारौ	सविष्येते,	सोष्येते
बहुवचन	सवितारः,	सोतारः	सविष्यन्ते	सोष्यन्ते

आशीर्लिङ् (Benidiction)

परस्मैपद

११३ भू-धातु होना (To be)

एकवचन	भूयात्	भूयाः	भूयासम्
द्विवचन	भूयास्ताम्	भूयास्ताम्	भूयास्व
बहुवचन	भूयासुः	भूयास्त	भूयास्म

११४--भिद्-धातु, काटना--गम् धातु, जाना

	(To cut)	(To go)
	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	भिद्यात्	गम्यात्
द्विवचन	भिद्यास्ताम्	गम्यास्ताम्
बहुवचन	भिद्यासुः	गम्यासुः

१२६। आशीर्लिङ् के परस्मैपद में दा, पा, मा, गा, सा, हा इन सब धातुओं के आकार के स्थान में एकार होता है। (+)

११५-दा धातु, देना ११६-पा धातु पीना

(To give) (To drink)

	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	देयात्	पेयात्
द्विवचन	देयास्ताम्	पेयास्ताम्
बहुवचन	देयासुः	पेयासुः

१२७। आशीर्लिङ् परस्मैपद में धातु के अन्तस्थित ह्रस्व इकार और ह्रस्व उकार दीर्घ होता है।

११७-जि धातु, जय करना ११८-श्रु धातु, सुनना

(To conquer) (To hear)

एकवचन	जीयात्	श्रूयात्
द्विवचन	जीयास्ताम्	श्रूयास्ताम्
बहुवचन	जीयासुः	श्रूयासुः

१२८। आशीर्लिङ् परस्मैपदी में धातुके अन्तस्थित ह्रस्व ऋ के स्थान में रि होता है।

११९-कृ धातु, करना १२० भृ धातु, रक्षाकरना

(To do) (To protect)

एकवचन	क्रियात्	भ्रियात्

(+) संयुक्त वर्णादि धातुओं के आकार के स्थानमें विकल्प से एकार होता है। यथा, स्ना, धातु—स्नेयात्, स्नायात्, घ्रा धातु—घ्रेयात्, घ्रायात्। स्था धातु को नित्य स्थेयात्।

	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
द्विवचन	क्रियास्ताम्	भ्रियास्ताम्
बहुवचन	क्रियासुः	भ्रियासुः

१२९। जिन सब ऋकारान्त धातुओं के आदि में संयुक्त वर्ण रहता है, उनके आशीर्लिङ् के परस्मैपदी में धातुके ऋ के स्थानमें अर् होता है।

१२१-स्मृ धातु, यादकरना १२२ऋधातु गमनकरना

	(To remember)	(To go)
एकवचन	स्मर्य्यात्	अर्य्यात्
द्विवचन	स्मर्य्यास्ताम्	अर्य्यास्ताम्
बहुवचन	स्मर्य्यासुः	अर्य्यासुः

१३०। आशीर्लिङ् के परस्मैपद में धातु के अन्तस्थित दीर्घ ॠ के स्थानमें ईर् होता है किन्तु दीर्घ ॠ-कार पवर्ग के परस्थित होने से ऊर् होता है।

१२३- तॄ धातु, तैरना १२४-पॄ धातु, पालन करना

	(To swim)	(To protect)
	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	तीर्य्यात्	पूर्य्यात्
द्विवचन	तीर्य्यास्ताम्	पूर्य्यास्ताम्
बहुवचन	तीर्य्यासुः	पूर्य्यासुः

१३१। आशीर्लिङ् के परस्मैपदी में ग्रह् धातु के स्थान में गृह्, प्रच्छ् धातु के स्थानमें पृच्छ्, व्यध् धातु के स्थान में विध् एवं यज् धातु के स्थानमें इज् होता है।

१२५ ग्रह धातु, लेना   १२६ व्यध् धातु तोड़ना

	(To take)	(To obstacle)
	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	गृह्यात्	विध्यात्
द्विवचन	गृह्यास्ताम्	विध्यास्ताम्
बहुवचन	गृह्यासुः	विध्यासुः

१३२। आशिर्लिङ् के वच्, वद्, वप्, वस्, वह्, स्वप्, इन सब धातुओं के आकार सहित व के स्थान में उ होता है।

१२७ वच् धातु, बोलना १२८ वस् धातु, रहना

	(To speak)	(To dwell)
	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	उच्यात्	उष्यात्
द्विवचन	उच्यास्ताम्	उष्यास्ताम्
बहुवचन	उच्यासुः	उष्यासुः

१३३। आशीर्लिङ के परस्मैपद के ह्वे धातु के स्थान में हू होता है।

१२९ ह्वे -धातु, बुलाना (To call)

एकवच	हूयात्
द्विवचन	हूयास्ताम्
बहुवचन	हूयासुः

१३४। आशीर्लिङ् में परस्मैपद के धातु के + उपधा नकार का लोप होता है।

१३० मन्थ् धातु मथना (To churn)

	प्रथमपुरुष
एकवचन	मथ्यात्
द्विवचन	मथ्यास्ताम्
बहुवचन	मथ्यासुः

१३५। आशीर्लिङ् के परस्मैपद में शास् धातु के स्थान में शिष् होता है।

१३१ शास् धातु शासन करना (To govern)

	प्रथमपुरुष
एकवचन	शिष्यात्
द्विवचन	शिष्यास्ताम्
बहुवचन	शिष्यासुः

१३२ सेव् धातु सेवा करना (To serve)

आत्मनेपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	सेविषीष्ट	सेविषीष्ठाः	सेविषीय
द्विवचन	सेविषीयास्ताम्	सेविषीयास्थाम्	सेविषीवहि
बहुवचन	सेविषीरन्	{ सेविषीढ्वम् / सेविषीध्वम्	सेविषीमहि

१३६। आशीर्लिङ् के आत्मनेपद में धातु के अन्त्य स्वर और उपधा लघु स्वर का गुण होता है।

+ कुन्थ प्रभृति भिन्न।

१३३ शी धातु सोना १३४ द्युत् धातु चमकना

	(To sleep)	(To shine)
	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	शयिषीष्ट	द्योतिषीष्ठ
द्विवचन	शयिषीयास्ताम्	द्योतिषीयास्ताम्
बहुवचन	शयिषीरन्	द्योतिषीरन्

१३७। आशीर्लिङ् के आत्मनेपद में ग्रह् धातुके उत्तर विहित इ दीर्घ होता है।

१३५ ग्रह्-धातु, ग्रहण करना (To take)

	प्रथमपुरुष
एकवचन	ग्रहीषीष्ट
द्विवचन	ग्रहीषीयास्ताम्
बहुवचन	ग्रहीषीरन्

अनिट् धातु

१३६ दा धातु देना　१३७ वह् धातु ढोना

	(To give)	(To carry)
	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	दासीष्ट	वक्षीष्ट
द्विवचन	दासीयास्ताम्	वक्षीयास्ताम्
बहुवचन	दासीरन्	वक्षीरन्

१३८। आशीर्लिङ् के आत्मनेपद में अनिट् धातुके अन्तस्थित ॠकारका गुण नहीं होता है।

१३८--कृ धातु करना १३९ मृ धातु मरना

	(To do)	(To die)
एकवचन	कृषीष्ट	मृषीष्ट
द्विवचन	कृषीयास्ताम्	मृषीयास्ताम्
बहुवचन	कृषीरन्	मृषीरन्

१३९। आशीर्लिङ् के आत्मनेपद में अनिट् धातु के उपधा लघु स्वर का गुण होता है।

१४० भुज् धातु, खाना (To eat)

	प्रथमपुरुष
एकवचन	भुक्षीष्ट
द्विवचन	भुक्षीयास्ताम्
बहुवचन	भुक्षीरन्

विकल्पितेट् धातु

१४१ सु-धातु (To eat)

	प्रथमपुरुष	
एकवचन	सविषीष्ट,	सोषीष्ट
द्विवचन	सविषीयास्ताम्	सोषीयास्ताम्
बहुवचन	सविषीरन्,	सोषीरन्

१४२--वृ धातु, वर मांगना (To ask a boon)

एकवचन	वरिषीष्ट	वृषीष्ट
द्विवचन	वरिषीयास्ताम्	वृषीयास्ताम्
बहुवचन	वरिषीरन्	वृषीरन्

लिट् (Perfect)

१४०। अभ्यस्ता धातवो लिटि। लिट् विभक्ति में धातु अभ्यस्त (Reduplicative) होता है अर्थात् द्वित्व होता है।

१४१। अभ्यस्त संज्ञा करने से पूर्व भाग के आदि स्वर के परे जो अंश रहता है उसका लोप होता है।

१४३—दद् धातु (आत्मनेपदी) देना (To give)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	दददे	ददिषे	ददहे
द्विवचन	ददाते	ददाथे	ददिवहे
बहुवचन	ददिरे	ददिढ्वे	ददिमहे

१४२। परस्मैपद में प्रथम और उत्तमपुरुष के एकवचन में धातु के उपधा अकार की और अन्त्यस्वर की वृद्धि होती है।

१४४—शश् धातु (परस्मैपदी) उछलना

(To jump)

एकवचन	शशाश	शशशिथ	शशाश
द्विवचन	शशशतुः	शशशथुः	शशशिव
बहुवचन	शशशुः	शशाथ	शशशिम

१४३। परस्मैपद में प्रथम और उत्तमपुरुष के एकवचन में धातु के उपधा लघुस्वर का गुण होता है।

१४४। परस्मैपद में मध्यम पुरुष के एकवचन में अन्त्यस्वर का और उपधा लघु स्वरका गुण होता है।

१४५—विद् धातु, जानना (To know)

एकवचन	विवेद	विवेदिथ	विवेद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
द्विवचन	विविदतुः	विविदथुः	विविदिव
बहुवचन	विविदुः	विविद	विविदिम

१४५। अभ्यस्त धातु के पूर्व भाग का दीर्घ स्वर ह्रस्व होता है।

१४६ नी धातु, लेना, जाना To carry (उभयपदी) | **१४७, नू धातु, स्तुति करना** To praise (परस्मैपदी) | **१४८ सेव् धातु सेवा करना** To serve (आत्मनेपदी)

	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	निनाय	नुनाव	सिषेवे
द्विवचन	निन्यतुः	नुनुवतुः	सिषेवाते
बहुवचन	निन्युः	नुनुवुः	सिषेविरे

१४६। अभ्यस्त धातु के पूर्व भाग में वर्ग के द्वितीय वर्ण रहने से प्रथम वर्ण होता है और चतुर्थ वर्ण रहने से तृतीय वर्ण होता है।

१४९-छिद् धातु, छेदना (To cut) | **१५० भिद् धातु, विदारण करना** (To separate)

(उभयपदी)

	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	चिच्छेद	बिभेद
द्विवचन	चिच्छिदतुः	बिभिदतुः
बहुवचन	चिच्छिदुः	बिभिदुः

१४७। अभ्यस्त धातु के पूर्वभागस्थित क् और ख् के स्थान में च् होता है, ग् और घ् के स्थान में ज् होता है।

१५१ खद् धातु, खाना (To eat) (परस्मैपदी) } १५२ गद् धातु, कहना (To tell) (परस्मैपदी)

	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	चखाद्	जगाद्
द्विवचन	चखदतुः	जगदतु
बहुवचन	चखदुः	जगदुः

१४८। अभ्यस्त धातु के पूर्वभागस्थित ऋ ॠ के स्थान में अ होता है।

१५३-सृ धातु (परस्मैपदी) घसकना (To move)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ससार	ससर्थ	ससार, ससर
द्विवचन	सस्रतुः	सस्रथुः	सस्रुव
बहुवचन	सस्रुः	सस्र	सस्रुम

१५४-नृत् धातु, नाचना (To dance)

	प्रथमपुरुष
एकवचन	ननर्त्त
द्विवचन	ननृततुः
बहुवचन	ननृतुः

१४९। अभ्यस्त धातु के पूर्वभाग में ह रहने से उसके स्थान में ज् होता है।

१५५-हस् धातु (परस्मैपदी) हंसना (To laugh)

	प्रथमपुरुष
एकवचन	जहास
द्विवचन	जहसतुः
बहुवचन	जहसुः

१५० । अभ्यस्त धातु के पूर्वभाग में संयुक्तवर्ण रहने से अन्त्य व्यञ्जन वर्ण का लोप होता है ।

१५६-श्रु धातु सुनना (To hear) | १५७-श्लिष् धातु आलिंगन करना (To embrace)

(परस्मैपदी)

	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	शुश्राव	शिश्लेष
द्विवचन	शुश्रुवतुः	शिश्लिषतुः
बहुवचन	शुश्रुवुः	शिश्लिषुः

१५१ । अभ्यस्त धातु के पूर्व भाग में स्क स्ख श्च ष्ठ स्त स्थ स्प और स्फ रहने से आदिवर्ण का लोप होता है ।

१५८-स्खल् धातु गिरना (To fall down) | १५९ श्चुत् धातु टपकना, चूना (To drop)

(परस्मैपदी)

एकवचन	चस्खाल	चुश्चोत
द्विवचन	चस्खलतुः	चुश्चुततुः
बहुवचन	चस्खलुः	चुश्चुतुः

१६० स्तु धातु, स्तुति करना (To praise) | **१६१—स्फुर् धातु, चमकना (To shine)**

(परस्मैपदी)

	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	तुष्टाव	पुस्फोर
द्विवचन	तुष्टुवतुः	पुस्फुरतुः
बहुवचन	तुष्टुवुः	पुस्फुरुः

१५२। आकारान्त धातु के परवर्त्ती लिट् के परस्मैपद प्रथम और उत्तमपुरुष के एकवचन के स्थान में औ होता है।

१५३। लिट् विभक्ति में आकारान्त धातु के आकार का लोप होता है। किन्तु थ विभक्ति में इ नहीं होने से लोप नहीं होता।

१६२—या धातु, जाना (To go)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ययौ	ययिथ	ययौ
द्विवचन	ययतुः	ययथुः	ययिव
बहुवचन	ययुः	यय	ययिम

१६३ दा धातु, देना (To give) | **१६४ स्था धातु, ठहरना (To stay)**

	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	ददौ	तस्थौ

द्विवचन	ददतुः	तस्थतुः
बहुवचन	ददुः	तस्थुः

१५४। लिट् विभक्ति परे रहने से भू धातु के स्थान में बभूव होता है।

१६५ भू धातु, होना (To be)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	बभूव+	बभूविथ	बभूव
द्विवचन	बभूवतुः	बभूवथुः	बभूविव
बहुवचन	बभूवुः	बभूव	बभूविम

१५५। लिट् विभक्ति में चि धातु के परभाग के स्थान में कि, और जि धातु के पर भाग के स्थान में गि, और हि धातु के पर भाग के स्थान मे घि होता है।

\+ अस् और भू।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	बभूव	बभूविथ	बभूव
एकवचन	था	था	था
एकवचन	थी	थी	थी
एकवचन	हुआ	हुआ	हुआ
एकवचन	हुई	हुई	हुई
द्विवचन	बभूवतुः	बभूवथुः	बभूविव
द्विवचन	थे	थे	थे
द्विवचन	थीं	थीं	थीं
द्विवचन	हुए	हुए	हुए

१६६ चि धातु	१६७ जि धातु	१६८ हि धातु
बटोरना, चुनना	जीतना	प्रेरणा, गमन
(To collect)	(To conquer)	(To go)
उभयपदी		परस्मैपद

	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	चिकाय	जिगाय	जिघाय
द्विवचन	चिक्यतु:	जिग्यतु	जिघ्यतु
बहुवचन	चिक्यु: [*]	जिग्यु:	जिघ्यु:

१५६। परस्मैपद के प्रथमपुरुष और उत्तम पुरुष के एकवचन भिन्न लिट् विभक्ति में धातु के अन्तस्थित दीर्घ ॠ के स्थान में अर् होता है।

द्विवचन	हुईं	हुईं	हुईं
बहुवचन	बभूवु:	बभूव	बभूविम
बहुवचन	थे	थे	थे
बहुवचन	थीं	थीं	थीं
बहुवचन	हुए	हुए	हुए
बहुवचन	हुईं	हुईं	हुईं

संस्कृत में अस् और भू इन दोनों धातुओं के रूप लिट् लकार में एक ही से होते हैं। इस लिये संस्कृत की एक एक क्रिया के नीचे हिन्दी की चार चार क्रियाएं लिखी गई हैं। ऊपर की दो दो अस् धातु की क्रियाओं के पलटे में और नीचे की दो दो भू धातु की क्रियाओं के बदले में। अनुवादक

(*) वैयाकरण लोग चि धातु के स्थान में विकल्प से कि करते हैं। यथा, चिकाय चिचाय इत्यादि।

१६६—कृ धातु करना (To do)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	चकार	चकरिथ	चकार, चकर
द्विवचन	चक्रतुः	चक्रथुः	चकृव
बहुवचन	चक्रुः	चक्र	चकृम +

+ स्मरण रखना चाहिये कि हिन्दी में यदि धातु अकर्मक हो तो भूत-काल में कर्तृप्रधान क्रिया के कर्त्ता के आगे प्रथमा विभक्ति का कुछ चिन्ह नहीं रहता। परन्तु यदि सकर्मक हो तो सामान्य भूतकाल की क्रिया और उसके योगसे बनी हुई इतर सकल क्रियाओं के कर्त्ता के आगे प्रथम विभक्ति का चिन्ह "ने" आता है। जैसे। यज्ञदत्तो बभूव। यज्ञदत्त हुआ। विष्णु-मित्रश्चकार। विष्णुमित्र ने किया। यहां हिन्दी में जहां धातु अकर्मक है वहां कर्त्ता के आगे कुछ चिन्ह नहीं है, परन्तु जहां सकर्मक है वहां "ने" चिन्ह आया है। हिन्दी में पुल्लिंग वा स्त्रीलिंग शब्दों के एकवचन वा बहु-वचन में जैसे रूप "को" आदि विभक्तियों के योग में होते हैं वैसे ही "ने" के योग में भी होते हैं। जैसे बालक ने, बालकों ने; लड़के ने, लड़कों ने; स्त्री ने, स्त्रियों ने, इत्यादि। सर्वनामों की भी यही व्यवस्था जानो।

"ने" के योग में प्रथम आदि पुरुष सम्बन्धी सर्वनामों के रूप।

पुलिङ्ग

प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
सः	त्वम्	अहम्
उसने	तूने	मैंने
तौ	युवाम्	आवाम्

१५७। जिन ह्रस्व ऋकारान्त धातुओं के आदि में संयुक्त वर्ण रहे, तो परस्मैपद के प्रथम और उत्तमपुरुष के एकवचन भिन्न लिट् विभक्ति में उनके ऋ के स्थानमें अर् होता है।

प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
उन दोनों ने	तुम दोनों ने	हम दोनों ने
ते	यूयम्	वयम्
उनने, उन्होंने	तुमने	हमने

स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग में पुलिंग के तुल्य जानो।

हिन्दी में कर्तृप्रधान क्रिया के कर्म के आगे द्वितीया का चिन्ह "को" कहीं रहता है कहीं नहीं। यदि कर्म्म के आगे द्वितीया का चिन्ह "को" न रहे और उक्त रीति के अनुसार कर्त्ता के आगे प्रथमा का चिन्ह "ने" आवे तो क्रिया के रूप कर्म्म के लिंग और वचन के अनुसार होंगे, कर्त्ता के नहीं। जैसे, कृष्णदत्तो विश्रामञ्चकार। कृष्णदत्त ने विश्राम किया। रामदत्तो विश्रामञ्चकार। रामदत्त ने विश्राम किया। यज्ञदत्तः प्रतिज्ञाञ्चकार। यज्ञदत्त ने प्रतिज्ञाएं कीं। विष्णुमित्रः प्रतिज्ञाञ्चकार। विष्णुमित्र ने प्रतिज्ञाएं कीं। यहां प्रथम वाक्य में कर्म पुलिंग और एकवचनान्त है, इसलिये क्रिया दीर्घ आकारान्त, दूसरे वाक्य में कर्म्म पुलिंग और बहुवचनान्त है, इस लिये क्रिया एकारान्त, तीसरे वाक्यमें कर्म्म स्त्रीलिंग और एकवचनान्त है, इसलिये क्रिया दीर्घ ईकारान्त, चौथे वाक्य में कर्म स्त्रीलिंग और बहुवचनान्त है, इसलिये क्रिया अनुनासिक दीर्घ ईकारान्त हुई है। ऐसे ही सर्वत्र जानो।

यदि कर्म के आगे द्वितीया का चिन्ह "को" रहे और कर्त्ता के आगे प्रथमा का चिन्ह "ने" आवे तो कर्म्म चाहे जिस लिंग और जिस वचन का हो, परन्तु क्रिया केवल दीर्घ आकारान्त होगी। जैसे कृष्णदत्तः पुत्रं पाठयामास। कृष्णदत्त ने पुत्र को पढ़ाया। रामदत्तः पुत्रान् पाठयामास। राम-

१७०—स्मृ धातु, स्मरण करना

(To remember)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	सस्मार	सस्मर्थ	सस्मार, सस्मर
द्विवचन	सस्मरतुः	सस्मरथुः	सस्मरिव
बहुवचन	सस्मरुः	सस्मर	सस्मरिम

दत्त ने पुत्रों को पढ़ाया। यज्ञदत्तो दुहितरं पाठयामास। यज्ञदत्त ने कन्या को पढ़ाया। विष्णुमित्रो दुहितृः पाठयामास। विष्णुमित्र ने कन्याओं को पढ़ाया। इत्यादि।

हमने जो पीछे लिखा है, कि हिन्दी कर्तृप्रधान क्रिया के रूप कर्त्ता के लिङ्ग और वचन के अनुसार पलट जाते हैं, उसका तात्पर्य्य यह है कि जहां कर्त्ता के आगे "ने" चिन्ह नहीं रहता वहां क्रिया के रूप कर्त्ता के लिंग और वचन के अनुसार पलटते हैं और जहां "ने" चिन्ह रहता है वहां कहीं तो कर्म्म के लिङ्ग और वचनके अनुसार पलटते हैं और कहीं केवल दीर्घ आकारान्त होते हैं।

हिन्दी में "लाना" "बोलना" इत्यादि कई एक सकर्मक धातु ऐसे हैं कि उनकी सामान्य भूतकाल की क्रिया और उसके योग से बनी हुई इतर क्रियाओं के भी कर्त्ता के आगे प्रथमा का चिन्ह "ने" नहीं आता। जैसे, नौकर घोड़ा लाया। रामदत्त वचन बोला। रीति के अनुसार करते तो होता:— नौकर ने घोड़ा लाया। रामदत्त ने वचन बोला। परन्तु ऐसे वाक्य हिन्दी में अशुद्ध हैं। और जिन धातुओं के अन्त में चुकना और सकना धातु जोड़े जाते हैं उनकी क्रियाओं की भी यही रीति है। जैसे, मैं ला चुका। मैं पढ़ सका इत्यादि।

१५८। परस्मैपद के एकवचन भिन्न लिट् विभक्ति में धातु के (×) उपधा नकार का विकल्प से लोप होता है।

संस्कृत वाक्य

पुल्लिंग

स	चकार	त्वं	चकर्थ, चकरिथ	अहं	चकार, चकर
तौ	चक्रतुः	युवां	चक्रथुः	आवां	चकृव
ते	चक्रुः	यूयं	चक्र	वयं	चकृम

स्त्रीलिंग

सा	चकार	त्वं	चकर्थ	अहं	चकार, चकर
ते	चक्रतुः	युवां	चक्रथुः	आवां	चकृव
ताः	चक्रुः	यूयं	चक्र	वयं	चकृम

नपुंसक लिंग

तत्	चकार	त्वं	चकर्थ	अहं	चकार, चकर
ते	चक्रतुः	युवां	चक्रथुः	आवां	चकृव
तानि	चक्रुः	यूयं	चक्र	वयं	चकृम

इन प्रत्येक संस्कृत वाक्यों में पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंगों के एकवचनान्त, द्विवचनान्त और बहुवचनान्त कर्म्मवाचकपदों को जोड़कर हिन्दी में उलथा करो। जैसे, स मनोरथञ्चकार। उसने मनोरथ किया। स मनोरथौ चकार। उसने दोनों मनोरथ किये। स मनोरथांश्चकार। उसने मनोरथ किये। स प्रतिज्ञाञ्चकार। उसने प्रतिज्ञा की। स प्रतिज्ञे चकार। उसने दोनों प्रतिज्ञाएं की। स प्रतिज्ञाश्चकार। उसने प्रतिज्ञाएं की। स पुण्यञ्चकार। उसने पुण्य किया। स पुण्ये चकार, उसने दो पुण्य किये। स पुण्यानि चकार। उसने पुण्य किये। इत्यादि।

अनुवादक।

(×) निन्द् प्रभृति भिन्न।

१७१ दन्श् धातु डसना। १७२ सन्ज् धातु लगना।

	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	ददंश	ससञ्ज
द्विवचन	ददशतुः, ददंशतुः	ससजतुः, ससञ्जतुः
बहुवचन	ददशुः, ददंशुः	ससजुः, ससञ्जुः

१५९। अश् (×) धातु, ह्रस्व ऋकारादि धातु और जिन सब आकारादि धातुओं के अन्त में संयुक्त वर्ण रहे उनके पूर्वभाग के स्थान में आन् होता है।

१७३ अश् धातु, व्याप्त होना (To pervade) | १७४ अर्च्च धातु अर्चना, पूजा करना (To worship)

	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	आनशे	आनर्च्च, ऋत, आनर्त्त
द्विवचन	आनशाते	आनर्च्चतुः, आनृततुः
बहुवचन	आनशिरे	आनर्च्चुः, आनृतुः

१६०। लिट् विभक्ति में द्युत् धातु के पूर्व भाग के स्थान में दि होता है।

१७५-द्युत् धातु, चमकना (To shine)

	प्रथमपुरुष
एकवचन	दिद्युते

(×) स्वादिगणीय।

प्रथमपुरुष

द्विवचन	दिद्युताते
बहुवचन	दिद्युतिरे

१६१। लिट् विभक्ति में अध्ययनार्थ इ धातुके स्थान में गा होता है।

एकवचन	अधिजगे
द्विवचन	अधिजगाते
बहुवचन	अधिजगिरे

१६२। जिन धातुओं के आदि में और अन्त में असंयुक्त व्यञ्जन वर्ण रहे और मध्य में अकार रहे तो लिट् विभक्ति में (+) उन सब (*) धातुओं के पूर्व भाग का लोप होता है और पर के भाग के अकार के स्थान में एकार होता है, परस्मैपद के प्रथम और उत्तमपुरुष के एकवचन में नहीं होता।

१७६ चल धातु, जाना (To go)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	चचाल	चेलिथ	चचाल, चचल
द्विवचन	चेलतुः	चेलथुः	चेलिव
बहुवचन	चेलुः	चेल	चेलिम

१६३। लिट् विभक्ति में अभ्यस्त तॄ, फल्, भज् और त्रप् इन

(+) थ विभक्ति में धातु के उत्तर इ नहीं होने से नहीं होता।

(*) शस्, दद्, अन्तःस्थ वकारादि, और जिन सब धातुओं के पूर्व भाग का रूपान्तर होता है उन्हें छोड़ कर।

चार धातुओं के स्थान में क्रम से तेर्, फेल्, भेज् और त्रेप् होता है। परस्मैपद के प्रथमपुरुष और उत्तमपुरुष के एकवचन में नहीं होता।

१७७	१७८	१७९	१८०
तॄ धातु	फल् धातु	भज् धातु	त्रप् धातु
पार करना	फलना	भजना	लज्जित होना
(To cross)	(To burst open)	(To worship)	(To be ashamed)
परस्मैपदी	परस्मैपदी	उभयपदी	आत्मनेपदी
प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन ततार	पफाल	बभाज, भेजे	त्रेपे
द्विवचन तेरतुः	फेलतुः	भेजतुः भेजाते	त्रेपाते
बहुवचन तेरुः	फेलुः	भेजुः भेजिरे	त्रेपिरे

१६४। लिट् विभक्ति में अभ्यस्त भ्रम्, राज्, और वम् धातु के स्थान में यथाक्रम विकल्प से भ्रेम्, रेज् और वेम् होता है। परस्मैपद के प्रथमपुरुष के और उत्तमपुरुष के एकवचन में नहीं होता।

१८१ भ्रम् धातु	१८२ राज् धातु	१८३ वम् धातु
घूमना	चमकना	वमन करना
(To walk)	(To shine)	(To vomit)
परस्मैपदी	उभयपदी	परस्मैपदी
एकवचन बभ्राम	रराज, रेजे	ववाम

	परस्मैपदी	उभयपदी	परस्मैपदी
द्विवचन	भ्रेमतुः, बभ्रमतुः	रेजतुः, रेजाते, रराजतुः	वेमतुः, ववमतुः
बहुवचन	भ्रेमुः, बभ्रमुः	रेजुः, रराजुः	वेमुः, ववमुः

१६५। लिट् विभक्ति में गम, खन, जन, घस और हन् धातुओं के पर भाग के आकार का लोप होता है किन्तु परस्मैपद के एकवचन में नहीं होता।

१८४ गम् धातु, जाना (To go)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जगाम	जगमिथ, जगन्थ	जगाम, जगम
द्विवचन	जग्मतुः	जग्मथुः	जग्मिव
बहुवचन	जग्मुः	जग्म	जग्मिम

	१८५ खन् धातु खोदना (To dig) उभयपदी	१८६ जन् धातु जनना (To give birth to) आत्मनेपदी	१८७ घस् खाना (To eat) परस्मैपदी
	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	चखान, चखने	जज्ञे	जघास
द्विवचन	चख्नतुः, चख्नाते	जज्ञाते	जक्षतुः
बहुवचन	चख्नुः, चख्निरे	जज्ञिरे	जक्षुः

१६६। लिट् विभक्ति में हन् धातु के पर भाग के ह् के स्थान में घ् होता है।

१८८-हन्-धातु, मारना (To kill)

	प्रथमपुरुष
एकवचन	जघान
द्विवचन	जघ्नतुः
बहुवचन	जघ्नुः

१६७। लिट् का थ परे रहने से, दृश् और सृज् धातुओं के पर भाग के ऋ के स्थान में र् होता है। इ होने से नहीं होता।

१८९-दृश् धातु, देखना (To see)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ददर्श	ददर्शिथ, दद्रष्ठ	ददर्श
द्विवचन	ददृशतुः	ददृशथुः	ददृशिव
बहुवचन	ददृशुः	ददृश	ददृशिम

१९०-सृज् धातु (To create)

एकवचन	ससर्ज	ससर्जिथ, सस्रष्ठ	ससर्ज
द्विवचन	ससृजतुः	ससृजथुः	ससृजिव
बहुवचन	ससृजुः	ससृज	ससृजिम *

१६८। लिट् विभक्ति में व्यथ् धातु के पूर्वभाग के स्थान में वि होता है।

(*) कृष्, तृप, दृप, मृश् इन कई धातुओं के ऋ के स्थान में विकल्प से र् होता है। यथा, कृष्, चकर्ष, चकष्ट। मृश्, मम्रष्ट; ममर्ष्ट इत्यादि।

१९१-व्यथ् धातु (आत्मनेपदी) दुखित होना

(To suffer pain)

	प्रथमपुरुष
एकवचन	विव्यथे
द्विवचन	विव्यथाते
बहुवचन	विव्यथिरे

१६९। लिट् विभक्ति में ग्रह धातु के स्थान में गृह होता है। परस्मैपद के एकवचन में नहीं होता।

१९२--गृह धातु, गृहण करना

(To take)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जग्राह	जग्रहिथ	जगाह, जगृह
द्विवचन	जगृहतुः	जगृहथुः	जगृहिव
बहुवचन	जगृहुः	जगृह	जगृहिम

१७०। लिट् विभक्ति में हे धातु के स्थान में हु होता है।

१९३ ह्वे धातु (उभयपदी) पुकारना

(To call)

	आत्मनेपदी	परस्मैपदी
	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	जुहाव	जुहुवे

प्रथमपुरुष

द्विवचन	जुहुवतुः	जुहुवाते
बहुवचन	जुहुवुः	जुहुविरे

१७१। लिट् विभक्ति में वच्, वद्, वप्, वस्, वह् और स्वप् इन सब धातुओं के पूर्वभाग के व् और अ के स्थान में उ होता है। और परस्मैपद में एकवचन भिन्न विभक्ति में पर भाग के व् और अ के स्थान में भी उ होता है।

१९४·वच् धातु (To talk) | १९५·वस् धातु (To dwell) | १९६ स्वप् धातु (To sleep)

(परस्मैपदी)

	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	उवाच	उवास	सुष्वाप
द्विवचन	ऊचतुः	ऊषतुः	सुषुपतुः
बहुवचन	ऊचुः	ऊषुः	सुषुपुः

१७२। लिट् विभक्ति में यज् धातु के पूर्वभाग के य और अ के स्थान में इ होता है और परस्मैपद के एकवचन भिन्न विभक्तियों में पर भाग के य् और अ के स्थान में भी इ होता है।

१९७ यज् धातु (उभयपदी) पूजा करना

(To worship)

	आत्मनेपदी	परस्मैपदी
	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	इयाज	ईजे
द्विवचन	ईजतुः	ईजाते
बहुवचन	ईजुः	ईजिरे

१७३। लिट विभक्ति में अय्, दय् और आस् धातुओं के उत्तर आम् होता है।

१७४। आम् के उत्तर भू, कृ, अस् इन तीन धातुओं के प्रयोग और लिट् के कार्य्य होते हैं *।

१९८ अय् धातु, गमन करना (To go) | **१९९ दय् धातु दया करना (To be kind)** | **२०० आस् बैठना (To sit)**

	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	आयाम्बभूव	दयाम्बभूव	आसाम्बभूव
	अयाञ्चक्रे	दयाञ्चक्रे	आसाञ्चक्रे
	अयामास	दयामास	आसामास

१७५। जिन धातुओं के आदि में आकार भिन्न गुरु स्वर रहे, लिट् विभक्ति में उन सबों के उत्तर आम् और भू आदि का प्रयोग होता है।

२०१ इह् धातु (आत्मनेपदी) चेष्टा करना (To aim) | **२०२ इन्द्र धातु (परस्मैपदी) ऐश्वर्य प्राप्त करना (To acquire wealth)**

	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	ईहाम्बभूव	इन्दाम्बभूव

* कर्तृवाच्य में आस् के उत्तर प्रयुज्यमान भू और अस धातु परस्मैपदी ही रहता है कृ धातु परस्मैपदी धातु में परस्मैपदी, आत्मनेपदी धातु में आत्मनेपदी और उभयपदी धातु में उभयपदी होता है।

ईहाञ्चक्रे	इन्दाञ्चकार
ईहामास	इन्दामास

१७६। लिट् विभक्ति में हु, भी, ह्री, और भृ, धातुओं के उत्तर विकल्प से आम् और भू प्रभृति का प्रयोग होता है। आम् के परे धातु का गुण और अभ्यास (Reduplication) होता है।

२०३ हु-धातु (परस्मैपदी) हवन करना

(To sacrifice)

प्रथमपुरुष

एकवचन	जुहवाम्बभूव	जुहवाञ्चकार,	जुहवामास,	जुहाव
द्विवचन	जुहवाम्बभूवतुः	जुहवाञ्चक्रतुः	जुहवामासतुः,	जुहुवतुः
बहुवचन	जुहवाम्बभूवुः	जुहवाञ्चक्रुः,	जुहवामासुः	जुहुवुः

१७७। लिट् विभक्ति में जागृ, दरिद्रा, काश्, कास् और उष् इन कई एक धातु के उत्तर विकल्प से आम् और भू आदि धातुओं का प्रयोग होता है। आम् परे धातु के अन्त्य और उपधा लघु स्वर का गुण होता है।

१७८। प्रथम और उत्तमपुरुष के एकवचन भिन्न लिट् विभक्ति में जागृ धातु के ऋ के स्थान में अर् होता है।

२०४ जागृ धातु (परस्मैपदी) जागना

(To wake)

प्रथमपुरुष

एकवचन	जागराम्बभूव,	जागराञ्चकार,	जागरामास जजागार
द्विवचन	जागराम्बभूवतुः	जागराञ्चक्रतुः	जागरामासतुः जजागरतुः

बहुवचन	जागराम्बभूवुः	जागराञ्चक्रुः	जागरामासुः जजागरुः

लुङ्

१७९। लुङ् विभक्ति में धातु के उत्तर स् होता है।

१८०। द्, स्, इन दो विभक्तियों में सकार के परे ई होता है।

१८१। इ और ई इन दोनों के मध्यवर्ती स-कार का लोप होता है।

१८२। सकार के परस्थित अन् के स्थान में उस् होता है।

२०५-क्रम् धातु, पैर रखना (To step)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अक्रमीत्	अक्रमीः	अक्रमिषम्
द्विवचन	अक्रमिष्टाम्	अक्रमिष्टम्	अक्रमिष्व
बहुवचन	अक्रमिषुः	अक्रमिष्ट	अक्रमिष्म

१८३। स् परे रहने से परस्मैपद में (*) धातु के उपधा के स्थान में विकल्प से आकार होता है।

२०६ गद् धातु (परस्मैपदी) बोलना

(To speak)

	प्रथमपुरुष	
एकवचन	अगादीत्	अगदीत्

(*) मान्त, यान्त, हान्त, क्षण, श्वस, वध्, एकारेत् भिन्न धातु अनिट् होने से अथवा स्वरादि होने से भी नहीं होता।

द्विवचन	अगादीष्टम्	अगदिष्टाम्
बहुवचन	अगादिषुः	अगदिषुः

१८४। स परे रहने से परस्मैपद में वद् आदि धातुओं के आकार के स्थान में नित्य आकार होता है

	२०७-वद् धातु बोलना (To speak)	२०८-चर् धातु चलना (To walk)	२०९ चल् धातु चलना (To go)
	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	अवादीत्	अचारीत्	अचालीत्
द्विवचन	अवादिष्टाम्	अचारिष्टाम्	अचालिष्टाम्
बहुवचन	अवादिषुः	अचारिषुः	अचालिषुः

१८४। स् परे रहने से परस्मैपद में धातुके अन्तरथित स्वर की वृद्धि होती है।

	२१०स्नु धातु	२११-नू धातु	२१२-वृ धातु	२१३ तृ धातु
	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	अस्नावीत्	अनावीत्	अवारीत्	अतारीत्
द्विवचन	अस्नाविष्टाम्	अनाविष्टाम्	अवारिष्टाम्	अतारिष्टाम्
बहुवचन	अस्नाविषुः	अनाविषुः	अनारिषुः	अतारिषु

१८६। लुङ् के परस्मैपद में धातु के उपधा लघु स्वर का गुण होता है।

२१४ रुद् धातु, रोना (To weep)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अरोदीत्	अरोदीः	अरोदिषम्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
द्विवचन	अरोदिष्टाम्	अरोदिष्टम्	अरोदिष्व
बहुवचन	अरोदिषु	अरोदिष्ट	अरोदिष्म

२१५-शी धातु सोना (To sleep)

१८७। लुङ् के आत्मनेपद में धातु के अन्त्य स्वर और उपधा लघु स्वर का गुण होता है।

एकवचन	अशयिष्ट	अशयिष्ठाः	अशयिषि
द्विवचन	अशयिषाताम्	अशयिषाथाम्	अशयिष्वहि
बहुवचन	अशयिषत	अशयिढ्ढम् / अशयिढ्वम् / अशयिध्वम्	अशयिष्महि

२१६-द्युत् धातु (आत्मनेपदी) चमकना

(To shine)

एकवचन	अद्योतिष्ट	अद्योतिष्ठाः	अद्योतिषि
द्विवचन	अद्योतिषाताम्	अद्योतिषाथाम्	अद्योतिष्वहि
बहुवचन	अद्योतिषत	अद्योतिढ्ढम् / अद्योतिढ्वम्	अद्योतिष्महि

१८८। लुङ् के परस्मैपद में भू धातु के उत्तर सु आदि कार्य्य नहीं होते। केवल अन् के स्थान में वन् और अम् के स्थान में वम् होता है।

एकवचन	अभूत्	अभूः	अभूवम्
द्विवचन	अभूताम्	अभूतम्	अभूव
बहुवचन	अभूवन्	अभूत	अभूम

अनिट् धातु

१८९। स् परे रहने से, परस्मैपद में अनिट् धातु के अन्त्य और उपधा लघुस्वर की वृद्धि होती है।

१९०। स् परे रहनेसे, आत्मनेपद में अनिट् धातु के अन्तस्थित ऋ और उपधा लघु स्वर का गुण नहीं होता।

१९१। त्,थ्, ध्, परे रहने से, वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ण तथा श् ष् स् ह् और ह्रस्व स्वर के परस्थित सकार का लोप होता है।

२१७-कृ धातु (उभयपदी) करना (To do)

परस्मैपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अकार्षीत्	अकार्षीः	अकार्षम्
द्विवचन	अकार्ष्टाम्	अकार्ष्टम्	अकार्ष्व
बहुवचन	अकार्षुः	अकार्ष्ट	अकार्ष्म

आत्मनेपद

एकवचन	अकृत	अकृथाः	अकृषि
द्विवचन	अकृषाताम्	अकृषाथाम्	अकृष्वहि
बहुवचन	अकृषत	अकृढ्वम्	अकृष्महि

२१८—शप् धातु (उभयपदी) शाप देना

(To curse)

परस्मैपद

एकवचन	अशाप्सीत्	अशाप्शाः	अशाप्सम्
द्विवचन	अशाप्ताम्	अशाप्तम्	अशाप्स्व
बहुवचन	अशाप्सुः	अशाप्त	अशाप्स्म

आत्मनेपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अशप्त	अशप्थाः	अशप्सि
द्विवचन	अशप्साताम्	अशप्साथाम्	अशप्स्वहि
बहुवचन	अशप्सत	अशब्ध्वम्	अशप्स्महि

२१९- वस् धातु बसना (To dwell)

एकवचन	अवात्सीत्	अवात्सीः	अवात्सम्
द्विवचन	अवात्ताम्	अवात्तम्	अवात्स्व
बहुवचन	अवात्सुः	अवात्त	अवात्स्म

१९२ । परस्मैपद में नम् यम् रम् और आकारान्त धातु के द्, स् भिन्न विभक्तियों में सकारके पूर्व में स् और इ होता है ।

२२०- नम् धातु नमस्कार करना (परस्मैपदी)

(To salute)

एकवचन	अनंसीत्	अनंसीः	अनंसिषम्
द्विवचन	अनंसिष्टाम्	अनंसिष्टम्	अनंसिष्व
बहुवचन	अनंसिषुः	अनंसिष्ट	अनंसिष्म

२२१-ज्ञा धातु, जानना (To know)

एकवचन	अज्ञासीत्	अज्ञासीः	अज्ञासिषम्
द्विवचन	अज्ञासिष्टाम्	अज्ञासिष्टम्	अज्ञासिष्व
बहुवचन	अज्ञासिषुः	अज्ञासिष्ट	अज्ञासिष्म

१९३ । लुङ् के परस्मैपद में दा, धा, स्था, इन कई एक धातुओं के उत्तर स् का लोप होता है और आत्मनेपद में आकार के स्थान में इकार होता है ।

१९४। लुङ् के अन् स्थान जात उस् विभक्ति परे रहने से आकारान्त धातुओंके आकार का लोप होता है।

२२२-दा धातु, (उभयपदी) देना (To give)

परस्मैपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अदात्	अदाः	अदाम्
द्विवचन	अदाताम्	अदातम्	अदाव
बहुवचन	अदुः	अदात	अदाम

आत्मनेपद

एकवचन	अदित	अदिथाः	अदिषि
द्विवचन	अदिषाताम्	अदिषाथाम्	अदिष्वहि
बहुवचन	अदिषत	अदिढ्वम्,अदिड्ढ्वम्	अदिष्महि

१९५। लुङ् विभक्ति के इ धातु के स्थान में गा होता है।

१९६। परस्मैपद में इ स्थानीय गा और पा धातु के स् का लोप होता है।

२२३-इ धातु, गमन करना } पा धातु, पीना

(To go) (To drink)

	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	अगात्	अपात्
द्विवचन	अगाताम्	अपाताम्
बहुवचन	अगुः	अपुः

१९७। घ्रा, धे, छो, शो और सो धातुओं के परस्मैपद में विकल्प से स् का लोप होता है, स् का लोप होने से दा धातु के

समान रूप होते हैं और लोप नहीं होने से ज्ञा धातु के तुल्य होते हैं।

२२४-घ्रा धातु सूंघना (To smell)

प्रथमपुरुष

एकवचन	अघ्रात्	अघ्रासीत्
द्विवचन	अघ्राताम्	अघ्रासिष्टाम्
बहुवचन	अघ्रुः	अघ्रासिषुः

१९८। लुङ् विभक्ति में अध्ययनार्थ इ धातु के स्थान में विकल्प से गी होता है और गी के ईकार का गुण नहीं होता।

प्रथमपुरुष

एकवचन	अध्यगीष्ट,	अध्यैष्ट
द्विवचन	अध्यगीषाताम्,	अध्यैषाताम्
बहुवचन	अध्यगीषत,	अध्यैषत

पुषादि

१९९। लुङ् विभक्ति में पुषादि धातुओं के उत्तर अ (+) होता है।

२२५-पुष् धातु (परस्मैपदी) (To nourish)

एकवचन	अपुषत्	अपुषः	अपुषाम्
द्विवचन	अपुषताम्	अपुषतम्	अपुषाव
बहुवचन	अपुषन्	अपुषत	अपुषाम

(+) आत्मनेपद में लिप, सिच, ह्वे धातु के उत्तर विकल्प से होता है।

२२६-गम् धातु, जाना (To go)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अगमत्	अगमः	अगमम्
द्विवचन	अगमताम्	अगमतम्	अगमाव
बहुवचन	अगमन्	अगमत	अगमाम

२००। लुङ् विभक्ति में वच् धातु के स्थान में वोच्, पत् धातु के स्थान में पप्त् और अस् धातु के स्थान में अस्थ् होता है।

२२७-वच् धातु बोलना (To speak) } २२८-पत् धातु गिरना (To fall) } २२९-अस् धातु, फेंकना (To throw)

एकवचन	अवोचत्	अपप्तत्	आस्थत्
द्विवचन	अवोचताम्	अपप्तताम्	आस्थताम्
बहुवचन	अवोचन्	अपप्तन्	आस्थन्

२०१। लुङ् विभक्ति में नश् धातु के स्थान में विकल्प से नेश् है।

२३०-नश् धातु (परस्मैपदी) अदृश्य होना

(To disappear)

	प्रथमपुरुष	
एकवचन	अनेशत्,	अनशत्
द्विवचन	अनेशताम्,	अनशताम्
बहुवचन	अनेशन्,	अनशन्

२०२। लुङ् विभक्ति में द्रु, श्रि और स्रु धातु अभ्यस्त होते हैं और अभ्यस्त के सब कार्य्य होते हैं।

२३१-द्रु धातु, गमन करना (To go)	२३२-श्रि धातु, आश्रय लेना (To serve)	२३३-स्रु धातु गिरना (To fall)

	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	अदुद्रुवत्	अशिश्रियत्	असुस्रुवत्
द्विवचन	अदुद्रुवताम्	अशिश्रियताम्	असुस्रुवताम्
बहुवचन	अदुद्रुवन्	अशिश्रियन्	असुस्रुवन्

भिदादि

२०३। लुङ् विभक्ति में भिदादि धातुओं के उत्तर विकल्प से अ होता है।

२३४-भिद् धातु, भेदना (To cut)	२३५ रुध् धातु, घेरना (To hold up)

	प्रथमपुरुष		प्रथमपुरुष	
एकवचन	अभिदत्,	अभैत्सीत्	अरुधत्,	अरौत्सीत्
द्विवचन	अभिदताम्,	अभैत्ताम्	अरुधताम्,	अरौद्धाम्
बहुवचन	अभिदन्,	अभैत्सुः	अरुधन्,	अरौत्सुः

२०४। अ परे रहने से सृ धातु के स्थान में सर् और ऋ धातु के स्थान में अर् होता है।

२३६ सृ धातु गमन करना (To move)		२३७ ऋ धातु गमन करना (To go)	
एकवचन	असरत्, असार्षीत्	आरत्	आर्षीत्
द्विवचन	असरताम्, असार्ष्टाम्	आरताम्	आर्ष्टाम्
बहुवचन	असरन्, असार्षुः	आरन्	आर्षुः

२०५। अ परे रहने से दृश् धातु के स्थान में दर्श होता है, अ-भिन्न पक्ष में द्राश् होता है।

२३८ दृश् धातु, देखना (To see)

प्रथमपुरुष

एकवचन	अदर्शत्	अद्राक्षीत्
द्विवचन	अदर्शताम्	अद्राष्टाम्
बहुवचन	अदर्शन्	अद्राक्षुः

दिशादि

२०६। लुङ् विभक्तियों में दिशादि धातुओं के उत्तर स् होता है, किन्तु स् निमित्तक गुण और इ आदि कार्य नहीं होते।

	२३९ दिश् धातु देना (To grant)	२४० द्विष् धातु द्वेष करना (To hate)	२४१ दुह् धातु दुहना (To milk)
	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष	प्रथमपुरुष
एकवचन	अदिक्षत्	अद्विक्षत्	अधुक्षत्
द्विवचन	अदिक्षताम्	अद्विक्षताम्	अधुक्षताम्
बहुवचन	अदिक्षन्	अद्विक्षन्	अधुक्षन्

२०७। जन्, वुध्, पूर् और दीप् इन धातुओं के लुङ् के आत्मनेपदीय त् के स्थान में विकल्प से ई होता है, और इ के परे वुध् के स्थान में विध् होता है।

२४२ जन् धातु	२४३ वुध् धातु	२४४ पुर् धातु	२४५ दीप् धातु
अजनि, अजनिष्ट	अवोधि, अवुद्ध	अपूरि, अपूरिषत	अदीपि अदीपिष्ट
अजनिषाताम्	अभुत्साताम्	अपूरिषाताम्	अदीपिषाम्
अजनिषत	अभुत्सत	अपूरिषत	अदीपिषत

ह्वादि (Third conjugation)

२०८। लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् इन चार विभक्तियों में ह्वादिगणीय धातु अभ्यस्त होते हैं, और लिट् प्रकरण में अभ्यस्त धातु के पूर्वभाग के जो सब कार्य्य निर्दिष्ट हुए हैं, वे सब होते हैं।

२०९। ति, सि, मि, तु, आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, द्, स्, अम्, इन कई एक विभक्तियों में ह्वादिगणीय धातु के अन्त्य स्वर और उपधा लघुस्वर का गुण होता है।

२४६--हु धातु, हवन करना (To sacrifice)

२१०। अन्ति और अन्तु विभक्ति परे रहने से हु धातु के उकार के स्थानमें व् होता है।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जुहोति	जुहोषि	जुहोमि

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
द्विवचन	जुहुतः	जुहुथः	जुहुवः
बहुवचन	जुह्वति	जुहुथ	जुहुमः

लोट्

२११ । हु धातु के लोट् के हि के स्थान में धि होता है ।

एकवचन	जुहोतु	जुहुधि	जुहवानि
द्विवचन	जुहुताम्	जुहुतम्	जुहवाव
बहुवजन	जुह्वतु	जुहुत	जुहवाम

लङ्

एकवचन	अजुहोत्	अजुहोः	अजुहवम्
द्विवचन	अजुहुताम्	अजुहुतम्	अजुहुव
बहुवचन	अजुहवुः	अजुहुत	अजुहुम

विधिलिङ्

एकवचन	जुहुयात्	जुहुयाः	जुहुयाम
द्विवचन	जुहुयाताम्	जुहुयातम्	जुहुयाव
बहुवचन	जुहुयुः	जुहुयात	जुहुयाम

२४७–ह्री धातु (परस्मैपदी) लजाना

(To feel shame)

लट्

एकवचन	जिह्रेति	जिह्रेषि	जिह्रेमि
द्विवचन	जिह्रीतः	जिह्रीथः	जिह्रीवः
बहुवचन	जिह्रियति	जिह्रीथ	जिह्रीमः

२४८—भी धातु (परस्मैपदी) डरना (To fear)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	बिभेति	बिभीषि:	बिभेमि
द्विवचन	बिभीतः	बिभीथः	बिभीवः
बहुवचन	बिभ्यति	बिभीथ	बिभीमः (†)

२४९-भृ धातु धारण करना, पालना (To protect)

२१२। अभ्यस्त भृ धातु के पूर्वभाग के स्थान में बि होता है।

लट्

एकवचन	बिभर्ति	बिभर्षि	बिभर्मि
द्विवचन	बिभृतः	बिभृथः	बिभृवः
बहुवचन	बिभ्रतिः	बिभ्रथ	बिभृमः

२१३। ति, सि, मि, तु, द्, स्, के अतिरिक्त विभक्ति परे रहने से दा और धा धातु के आकार का लोप होता है।

२५०-दा धातु देना (To give)

लट्—परस्मैपद

एकवचन	ददाति	ददासि	ददामि
द्विवचन	दत्तः	दत्थः	दद्वः
बहुवचन	ददति	दत्थ	दद्मः

आत्मनेपदी

एकवचन	दत्ते	दत्से	ददे

(†) वैयाकरणो लोग अगुण व्यञ्जन वर्ण परे रहने पर विकल्प से ईकार को ह्रस्व करते हैं। यथा, बिभित, बिभीत; बिभिमः, बिभीमः इत्यादि।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
द्विवचन	ददाते	ददाथे	दद्वहे
बहुवचन	ददते	दद्ध्वे	दद्महे

२१४। पर भाग के आकार का लोप होने से और त्, थ्, स् और ध्व परे रहने से धातु के पूर्वभाग के ध के स्थान में द नहीं होता। किन्तु त, थ, स के परे भाग के ध के स्थान में त् होता है।

२५१-धा धातु (उभयपदी) (To hold)

लट्—परस्मैपद

एकवचन	दधाति	दधासि	दधामि
द्विवचन	धत्तः	धत्थः	दध्वः
बहुवचन	दधति	धत्थ	दध्मः

आत्मनेपद

एकवचन	धत्ते	धत्से	दधे
द्विवचन	दधाते	दधाथे	दध्वहे
बहुवचन	दधते	दद्ध्वे	दध्महे

लोट्

२१५। लोट् की हि विभक्ति में अभ्यस्त दा धातु के स्थान में दे और धा धातु के स्थान में धे होता है। यथा—दा-देहि, धा-धेहि।

२५२ हा धातु (परस्मैपदी) त्याग करना

(To abandon)

२१६। अगुण स्वर वर्ण परे रहने से, हा धातुके आकार का लोप होता है।

२१७। अगुण व्यञ्जन वर्ण परे रहने से, हा धातु के आकार के स्थान में इ और ई होता है।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जहाति	जहासि	जहामि
द्विवचन	जहीतः, जहितः	जहीथः, जहिथः	जहिवः, जहीवः
बहुवचन	जहति	जहिथ, जहीथ	जहिमः, जहीमः

लोट्

एकवचन	जहातु	जहिहि, जहीहि +	जहानि
द्विवचन	जहिताम्, जहीताम्	जहितम्, जहीतम्	जहाव
बहुवचन	जहतु	जहित, जहीत	जहाम

हा और मा धातु (आत्मनेपदी)

२१८ । हा और मा धातु के पूर्व्वभाग के आकार के स्थान में इकार होता है ।।

२१९ । अगुण स्वर वर्ण परे रहने से उत्तर भाग के आकार का लोप होता है ।

२२० । अगुण व्यञ्जन वर्ण परे रहने से उत्तर भाग के आकार के स्थान में ई होता है ।

२५३-हा धातु, गमन करना (To go)

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जिहीते	जिहिषे	जिहे

+ वैयाकरणी लोग तीन पद कर देते हैं यथा जहाहि; जहिहि, जहीहि ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
द्विवचन	जिहाते	जिहाथे	जिहीवहे
बहुवचन	जिहते	जिहीध्वे	जिहीमहे

निज्, विज्, विष् धातु

२२१। लट्, लोट्, लङ्, और विधिलिङ् इन विभक्तियों में निज्, विज्, और विष् धातु के पूर्वभाग के इ के स्थान में ए होता है।

२५४ निज् धातु, शुद्ध करना (To clean)

लट्

एकवचन	नेनेक्ति	नेनेक्षि	नेनेज्मि
द्विवचन	नेनिक्तः	नेनिक्थः	नेनिज्वः
बहुवचन	नेनिजति	नेनिक्थ	नेनिज्मः

२२२। आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, और अम् इन कई विभक्तियों में निज्, विज् और विष् धातुओं के इकार का गुण नहीं होता।

आनि	नेनिजानि
आव	नेनिजाव
आम	नेनिजाम
ऐ	नेनिजै
आवहै	नेनिजावहै
आमहै	नेनिजामहै
अम्	अनेनिजम्

णिजन्त प्रकरण (Causative Verbs)

२२३। तत्प्रयोजको हेतुश्च प्रेरण अर्थ में धातु के उत्तर

णिच् होता है। णिच् का (केवल) इ रहता है। णिजन्त धातु उभय-पदी होते हैं।

२२४। णिच् होने से धातु के अन्त्य स्वर और उपधा आकार की वृद्धि होती है। यथा श्रु-इ=श्रावि, प्लु-इ=प्लावि, कृ-इ=कारि, हृ-इ=हारि, चल्-इ=चालि, दुह्-इ=दाहि, पच्-इ=पाचि, वह्-इ वाहि इत्यादि।

२२५। गुण उपधा लघोः णिच् होने से धातु के उपधा लघु-स्वर का गुण होता है। यथा, लिप्-इ=लेपि; सिच्-इ=सेचि, मुच्-इ मोचि, दुह्-इ=दोहि, दृश्-इ=दर्शि, मृष्-इ मर्षि इत्यादि।

२२६। धातु के उत्तर णिच् होने से, वह धातु णिजन्त धातुओं में गिना जाता है। यथा, श्रु धातु के उत्तर णिच् होने से श्रावि होता है। वह श्रावि श्रु धातु में गिना नहीं जाता, वह श्रावि के नाम से एक स्वतन्त्र धातु गिना जायगा और (उसमें) धातु के सब कार्य्य प्राप्त होंगे।

२२७। भ्वादिवत् लकार चतुष्टये। लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् इन चार विभक्तियों में णिजन्त धातु भ्वादिगणीय धातु के तुल्य होता है।

२५७-श्रावि धातु सुनवाना (To cause To hear)

(परस्मैपदी)

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	श्रावयति	श्रावयसि	श्रावयामि
द्विवचन	श्रावयतः	श्रावयथः	श्रावयावः
बहुवचन	श्रावयन्ति	श्रावयथ	श्रावयामः

लोट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	श्रावयतु	श्रावय	श्रावयाणि
द्विवचन	श्रावयताम्	श्रावयतम्	श्रावयाव
बहुवचन	श्रावयन्तु	श्रावयत	श्रावयाम

लङ्

एकवचन	अश्रावयत्	अश्रावयः	अश्रावयाम्
द्विवचन	अश्रावयताम्	अश्रावयतम्	अश्रावयाव
बहुवचन	अश्रावयन्	अश्रावयत	अश्रावयाम

विधिलिङ्

एकवचन	श्रावयेत्	श्रावयेः	श्रावयेयम्
द्विवचन	श्रावयेताम्	श्रावयेतम्	श्रावयेव
बहुवचन	श्रावयेयुः	श्रावयेत	श्रावयेम

२२८। न वृद्धिरमन्त घटादेर्णिच्। णिच् प्रत्यय होने से अमन्त और घटादि धातुओं के अन्त्य स्वर की, और उपधा अकार की वृद्धि नहीं होती। यथा :—

अमन्त

गम्	दम्	नम्	रम्	शम्
गमयति	दमयति	नमयति	रमयति	शमयति

घटादि

घट्	व्यथ्	जन्	त्वर
घटयति	व्यथयति	जनयति	त्वरयति
	ज्ञप्		ज्वल्
	ज्ञपयति		ज्वलयति

२२९। णिच् प्रत्यय होने से जॄ और जागृ धातुओं के स्वर का गुण होता है। यथा, जॄ-जरयति, जागृ-जागरयति।

२३०। णिच् प्रत्यय होने से हन् धातु के स्थान में घात्, दुष् धातु के स्थान में दूष् और मध्ययनार्थक इ धातु के स्थान में आप् होता है। यथा :—

हन्	दुष्	अधि—इ
घातयति	दूषयति *	अध्यापयति

२३१। णिच् प्रत्यय होने से, शद् धातु के द् के स्थान में त् होता है। यथा, शद्—शातयति।

२३२। णिच् प्रत्यय होने से, रुह् धातु के ह् के स्थान में विकल्प से प होता है। यथा, रुह्—रोपयति, रोहयति।

२३३। णिच् प्रत्यय होने से स्फुर् धातु के उकार के स्थान में विकल्प से आकार होता है। यथा, स्फुर्—स्फारयति, स्फोरयति।

२३४। णिच् प्रत्यय होने से, प्री और धू धातु के उत्तर विकल्प से न् होता है। यथा :—

प्री	धू
प्रीणयति, प्राययति	धूनयति, धावयति

धू धातु विभिन्नगणीय होता है और विभिन्नगणों में विभिन्नाकृति होती है। यथा—

धूनोति चम्पकवनानि धुनोत्यशोकम्,
च्यूतम् धुनाति धुवति स्फुटितातिमुक्तम्।

---

* चित्तविराग अर्थात् चित्त की अप्रसन्नता बोध होने पर विकल्प से होता है। यथा क्रोध चित्तं दूषयति दोषयति वा (क्रोध चित्तको अप्रसन्न करता है)।

वायुर्विधूनयति चम्पक पुष्परेणून,
यत्कानने धयति चन्दन मञ्जरीश्च ॥

२३५। णिच् प्रत्यय होने से, ऋ ह्री और आकारान्त धातुओं के उत्तर प् होता है और उसी प् के परे धातु के अन्त्य स्वर का गुण होता है। यथा:—

ऋ	ह्री	स्था	ख्या	ज्ञा
अर्पयति	ह्रेपयति	स्थापयति	ख्यापयति	ज्ञापयति

२३६। णिच् प्रत्यय होने से, पानार्थ पा धातु के उत्तर य् और रक्षार्थ पा धातु के उत्तर ल् होता है यथा, पानार्थ-पाययति, रक्षार्थ-पालयति।

२३७। यदि कर्त्ता अन्य निरपेक्ष होकर भय और विस्मय उत्पन्न करे तो णिच् प्रत्यय के परे रहने से भी धातु के स्थान में भीष् और स्मि धातु के स्थान में स्माप् होता है और आत्मनेपद होता है। यथा, सर्पः शिशु भीषयते। वहां सर्प अन्य की अपेक्षा न करके स्वयं भय उत्पन्न करता है। पुरुषः सर्पेण शिशुं भाययति। यहां पुरुष सर्प द्वारा शिशु को भय दिखाता है, इसलिए अन्य निरपेक्ष होकर भय नहीं उत्पन्न करता है, इस हेतु भीष् आत्मनेपद नहीं हुआ, स्मि धातु भी ऐसा ही होता है।

२३८। णिच् प्रत्यय होने से, मृगया अर्थ में रञ्ज् धातु का न् लोप होता है। यथा—रजयति मृगान् व्याधः (+) मृगया भिन्न अर्थ में न का लोप नहीं होता-रञ्जयति मृगान् तृणदानेन।

(+) मृगया शब्द का अर्थ पशुवध है, इसलिये. पशु भिन्न अन्य जन्तु का वध बोध होने से न का लोप नहीं होता यथा, रञ्जयति पक्षिणो व्याधः।

२३६। णिच् प्रत्यय होने से, इ धातु के स्थान में गम् होता है। यथा, गमयति। ज्ञानार्थ में नहीं होता। यथा प्रति-इ=प्रत्याययति।

२५६ आवि धातु परस्मैपदी

लुट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	आवयिता	आवयितासि	आवयितास्मि
द्विवचन	आवयितारौ	आवयितास्थः	आवयितास्वः
बहुवचन	आवयितारः	आवयितास्थ	आवयितास्मः

लृट्

एकवचन	आवयिष्यति	आवयिष्यसि	आवयिष्यामि
द्विवचन	आवयिष्यतः	आवयिष्यथः	आवयिष्यावः
बहुवचन	आवयिष्यन्ति	आवयिष्यथ	आवयिष्यामः

लृङ्

एकवचन	अआवयिष्यत्	अआवयिष्यः	अआवयिष्यम्
द्विवचन	अआवयिष्यताम्	अआवयिष्यतम्	अआवयिष्याव
बहुवचन	अआवयिष्यन्	अआवयिष्यत	अआवयिष्याम

आशीर्लिङ्

२४०। आशीर्लिङ् के परस्मैपद में णिजन्त धातु के इ का लोप होता है।

एकवचन	आव्यात्	आव्याः	आव्यासम्
द्विवचन	आव्यास्ताम्	आव्यस्तम्	आव्यास्व
बहुवचन	आव्यासुः	आव्यास्त	आव्यास्म

लिट्

२४१ । लिट् विभक्ति में णिजन्त धातु के उत्तर आम् होता है एवं आम् के उत्तर भू, कृ, अस् इन तीन धातुओं का प्रयोग होता है। यथा, लिट्-भावयाम्बभूव, भावयाञ्चकार, भावयामास।

लुङ्

२४२ । लुङ् विभक्ति में णिजन्त धातु के उत्तर अ होता है।

२४३ । अ होने से, णिजन्त धातु अभ्यस्त होता है और लिट् प्रकरणोक्त सब अभ्यस्त कार्य्य प्राप्त होते हैं।

२४४ । अ परे रहने से णिजन्त धातु के पर भाग के अन्तस्थित इकार का लोप होता है।

२४५ । अ परे रहने से णिजन्त धातु के पर भाग का उपधा गुरु स्वर लघु होता है।

२४६ । लुङ् विभक्ति में णिजन्त धातु के पूर्व का लघु स्वर गुरु होता है।

सिच्—इ, सेचि, भिद-इ, भेदि, मुच-इ, मोचि।

एकवचन	असीषिचत्	अबीभिदत्	अमूमुचत्
वचन	असीषिचताम्	अबीभिदताम्	अमूमुचताम्
बहुवचन	असीषिचन	अबीभिदन	अमूमुचन्

परवर्णी गुरुस्वरयुक्त होने से पूर्व भाग का लघु स्वर गुरु नहीं होता। यथा :—

	निन्द्-इ=निन्दि	शिक्ष्-इ=शिक्षि
एकवचन	अनिनिन्दत्	अशिशिक्षत्
द्विवचन	अनिनिन्दताम्	अशिशिक्षताम्

बहुवचन	अनिनिन्दन्	अशिशिक्षन् *

२४७। लुङ् विभक्ति में णिजन्त धातु के पूर्व भाग के अकार के स्थान में ई होता है। यथा: —

चल्-इ=चालि, अचीचलत्; पत्-इ=पाति, अपीपतत्; भज-इ=भाजि, अबीभजत्; हस्-इ=हासि, अजीहसत् +

परवर्ण गुरु स्वरयुक्त होने से ई नहीं होता। यथा—

शास्-इ शासि, अशशासत्; भक्ष्-इ भक्षि, अबभक्षत्; रक्ष्-इ रक्षि, अररक्षत्; लंघ्-इ लंघि, अललंघत्।

संयुक्त वर्ण परे रहने से ह्रस्व इ होता है। यथा—

व्यथ्-व्यथि अविव्यथत्　　　　ज्ञप्-इ=ज्ञपि, अजिज्ञपत्

स्मृ, स्तृ और त्वर् धातु का इ नहीं होता। यथा :—

	स्मृ-इ स्मारि	स्तृ-इ स्तारि	त्वर्-इ त्वरि
एकवचन	असस्मरत्	अतस्तरत्	अतत्वरत्
द्विवचन	असस्मरताम्	अतस्तरताम्	अतत्वरताम्
बहुवचन	असस्मरन्	अतस्तरन्	अतत्वरन्

२४८। णिजन्त भ्राज्, दीप् आदि धातुओं के पर भाग का उपधा गुरु स्वर विकल्प से लघु होता है। यथा :—

* ढौकि, शासि, एजि, काशि, क्रीड़ि, खादि, खेलि, वाधि, पाचि, योधि, एधि, राजि, वेपि, सेव, श्लाघि आदि कई णिजन्त के उपधागुरुस्वर लघु नहीं होता। यथा अडुढौकत्। अशशासत्।

+ दृ धातु का नहीं होता। यथा, दृ-इ=दारि, अददुरत्। अनेक स्वर-विशिष्ट धातु का विकल्प से होता है। यथा, चकास-ई=चकासि, अचीचकासत्, अचचकासत्।

भ्राज्-इ भ्राजि | दीप्-इ दीपि
अबिभ्रजत्, अबभ्राजत् | अदीदिपत्, अदिदीपत्

२४६। ऋकारोपध धातु णिजन्त होने से, लुङ् विभक्ति में विकल्प से धातु की आकृति प्राप्त होती है। यथा, वृत-इ, वर्त्ति, अवीवृतत्, अववर्त्तत्।

२५०। लुङ् विभक्ति में णिजन्त स्वप् धातु के स्थान में सुषि होता है। यथा, स्वप्-इ स्वापि, स्वपस्वापि, असूषुपत्।

२५१। लुङ् विभक्ति में णिजन्त स्था धातु के आकार के स्थान में इकार होता है। यथा स्था-इ=स्थापि। अतिष्ठिपत् * ,

२५२। लुङ् विभक्ति में अभ्यस्त पायि धातु के स्थान में पीप्य होता है। यथा, अपीप्यत्।

२५३। लुङ् विभक्ति में णिजन्त श्रु, स्नु, द्रु, प्रु, प्लु और च्यु धातु के पूर्व भागके अकार के स्थानमें इ और उ होता है। यथा; श्रु अशिश्रवत्, अशुश्रवत्। द्रु—अदिद्रवत्, अदुद्रवत्।

चुरादि +

२५४। चुरादिभ्यो णिच् स्वार्थे। चुरादिगणीय धातु के उत्तर स्वार्थ में णिच् होता है और णिजन्त धातु का कार्य्य प्राप्त होता है।

---

* घ्रा धातु में विकल्प से होता है। यथा, अजिघ्रिपद्, अजिघ्रपत्।

+ चिन्त् यन्त्र् पीड् भक्ष् लुण्ठ् छन्द् श्रुण् तड् खण्ड् क्षल् धल् वट्ट टङ्क चूर्ण् पूज् मार्ज्ज् पञ्च् तिज् कीर्त्त् नूत्न् मन्त्र् तर्ज्ज् लम्फ श्रम् कुत्स् वञ्च् विद् चर्च्च् शब्द् छद् लख् तनूम् दुष् अर्ह् भू पट् लोक् लोच तर्क् पुर युज, अर्च्च वृज् वृ, रिच् शिष् तप् वच् धृप इत्यादि।

२५७—चुर् धातु

लट्	लोट्	लङ्	विधिलिङ्
चोरयति	चोरयतु	अचोरयत्	चोरयेत्
लुट्	लृट्	लृङ्	आशीर्लिङ्
चोरयिता	चोरयिष्यति	अचोरिष्यत्	चोर्यात्
लिट्	लुङ्		
चोरयामास	अचूचुरत्		

आकारान्त धातु (*)

२५५। णिच् होने से धातु के अन्तस्थित अकार का लोप होता है और लोप होने पर गुण-वृद्धि नहीं होती। यथा —

२५८—रच् धातु

लट्	लोट्	लिट्
रचयति	रचयतु	रचयामास

२५६। लुङ् विभक्ति में अकारान्त धातु के पूर्व भाग का लघुस्वर का गुण नहीं होता और आकार के स्थान में इ अथवा ई नहीं होता। यथा, अररचत्।

२५७। लुङ् विभक्ति में कथ् और गण धातु के पूर्व भाग के आकार के स्थान में विकल्प से ई होता है। यथा—

कथ	गण
अचीकथत्, अचकथत्	अजीगणत्, अजगणत्

(*) अंक अश अर्थ अन्ध अवधीर आन्दोल कथ कल कर्त्त कथा केत क्षेप खच गर्या गवेष छिद्र छेद दुःख दण्ड ध्वन पार भाज मृग नह मन्त्र मिश्र रेह रस रूप रत्न रुच रूष वर्ण वराट वीज श्लथ सान स्पृह समाज स्थल सुत्र स्तुन स्तेन स्फुट स्वन हिल्लोल इत्यादि।

२५१–सनन्त प्रकरण (Desiderative verbs)

२५८। इच्छा अर्थ में धातु के उत्तर सन् प्रत्य होता है। सन् का स रहता है।

२५९। सन् प्रत्यय के परे धातु के उत्तर इ होता है। अनिट् धातु के उत्तर नहीं होता।

२६०। सन् प्रत्यान्त धातु अभ्यस्त (reduplicated) होता है और अभ्यस्त के सब कार्य्य प्राप्त होते हैं।

२६१। सन् प्रत्यान्त धातुके पूर्व भागके अकार के स्थान में इकार होता है (+)।

लट्

पठ्	वद्	जीव्
पिपठिषति	विवदिषति	जिजीविषति

अनिट् धातु

नम्	दह्	पा	स्था
निनंसति	दिधक्षति	पिपासति	तिष्ठासति

भिद् बिभित्सति बुध् बुभुत्सति

२६२। सन् प्रत्यय के परे इ होने से धातु के उपधा लघु स्वर का गुण होता है। यथा—

(+) धातु जिस पद का हो सन् प्रत्यय होने पर भी उसी पद का रहता है। णिजन्त की भांति सनन्त भी स्वतन्त्र धातु में गिना जाता है और उनमें धातु के सब कार्य्य प्राप्त होते हैं और लट् लृट् लोट् लङ् और विधि-लिङ् विभक्तियों में भ्वादिगणीय धातु के तुल्य होता है।

लिख् शुभ् नृत् वृत्

लिलेखिषति शुशोभिषते निनर्त्तिषति विवर्त्तिषते

२६३। रुद्, विद् और मुष् धातु के उपधा लघु स्वर का गुण नहीं होता। यथा—

रुद् विद् मुष्

रुरुदिषति विविदिषति मुमुषिषति

२६४। सन् प्रत्यय परे रहने से ग्रह् धातु के उत्तर इट् नहीं होता।

२६५। सन् प्रत्यय परे रहने से ग्रह धातु के स्थान में गृह्, स्वप् धातु के स्थान में सुप् और प्रच्छ धातु के स्थान में पृच्छ होता है। यथा—

ग्रह् = जिघृक्षति, स्वप्-सुषुप्सति।

२६६। सन् प्रत्यय परे रहने से प्रच्छ और गम् धातु के उत्तर इट् होता है। यथा—

प्रच्छ गम्

पिपृच्छिषति जिगमिषति

२६७। सन प्रत्यय परे रहने से धातु का अन्त्य स्वर दीर्घ होता है। यथा—

श्रि द्रु हु

शिश्रीषति दुद्रूषति जुहूषति

२६८। सन् प्रत्यय परे रहने से जि धातु के स्थान में गि होता है। यथा—जि-जिगीषति।

२६९। सन् प्रत्यय परे रहने से हन् धातु के पर भाग के अकार के स्थान में आकार और ह के स्थान में घ होता है। यथा, हन्—जिघांसति।

२७० । सन् प्रत्यय परे रहनेसे धातु के अन्तस्थित ऋ के स्थान में ईर् होता है । यथा (+)

कृ	धृ	हृ	तृ
चिकीर्षति	दिधीर्षति	जिहीर्षति	तितीर्षति

मृ
मुमूर्षते

२७१ । सन् प्रत्ययान्त अभ्यस्त दा धातुके स्थान में दित्स्, धा धातु के स्थान में धित्स्, आप् धातु के स्थान में ईप्स, मा धातु के स्थान में मित्स्, लभ् धातु के स्थान मे लिप्स और रभ् धातु के स्थान में रिप्स होता है ।

दा	धा	आप्	मा	लभ्	रभ्
दित्सति	धित्सति	ईप्सति	मित्सति	लिप्सते	रिप्सते

२७२ । लिट् विभक्ति में सनन्त धातु के उत्तर आम् तथा भू और कृ होता है ।

चिकीर्ष
चिकीर्षाम्बभूव चिकीर्षाञ्चकार चिकीर्षामास

लुट्	लृट्	लृङ्
चिकीर्षिता	चिकीर्षिष्यति	अचिकीर्षिष्यम्

लुङ्	आशिर्लिङ्
अचिकीर्षीत्	चिकीर्ष्यात्

२७३ । कित् तिज् गुप् वध और मान धातु के उत्तर स्वार्थ में सन् होता है एवं वध् और मान् धातु के पूर्व्व भाग के आकार के स्थान में ईकार होता है । यथा—

(+) विकल्प से इट् होता है । यथा, तितरिषति ।

कित्	तिज्	गुप्	बध्	मान्
चिकित्सति	तितिक्षते	जुगुप्सते	बीभत्सते	मीमांसते

यङन्त प्रकरण

(Frequentative verbs)

२७४। एक स्वर युक्त आदि में व्यञ्जनवर्ण विशिष्ट धातु के उत्तर पौनःपुन्य (पुनः पुनः) और अतिशय अर्थ में यङ् होता है। यङ् का य् रहता है। यङन्त धातु आत्मनेपदी होता है (×)

२७५। यङ् होने से धातु अभ्यस्त होता है। और यावतीय अभ्यस्त कार्य्य प्राप्त होते हैं।

२७६। यङ् प्रत्ययान्त धातु के पूर्वभाग के अकार के स्थान में आकार होता है।

लप्	तप्	लष्
लालप्यते	तातप्यते	लालष्यते

२७७। यङ् प्रत्ययान्त धातु के पूर्वभाग का गुण होता है। यथा—

शुच्	दीप्	लुप्
शोशुच्यते	देदीप्यते	लोलुप्यते
रुद्	सिच्	भिद्
रोरुद्यते	सेसिच्यते	बेभिद्यते

(×) णिजन्त और सनन्त की भाँति यङन्त भी स्वतन्त्र धातु में गिना जाता है और उसमें समस्त धातु कार्य्य प्राप्त होते हैं। लट् लोट् लङ् और विधिलिङ् विभक्तियों में भ्वादिगणीय धातु के तुल्य होता है।

२७८। यङ् होने से नान्त, मान्त और लान्त धातु के पूर्वभाग के स्वरवर्ण का अनुस्वार होता है। यथा—

जन्	मन्	क्रम्	गम्	चल्	गल्
जञ्जन्यते	मम्मन्यते	चङ्क्रम्यते	जङ्गम्यते	चञ्चल्यते	जङ्गल्यते

२७९। ऋकारोपध धातु के पूर्वभाग के परे री होता है। यथा,

नृत	सृप्	कृष्
नरीनृत्यते	सरीसृप्यते	चरीकृष्यते

२८०। ऋकारान्त धातु के कृ के स्थान में री होता है। यथा, कृ—चेक्रीयते, स्तृ—सेस्त्रीयते।

लुट्, लृट्, लृङ्, लिट्, लुङ् और आशीर्लिङ्।

२८१। लुट् प्रभृति विभक्ति में व्यञ्जन वर्ण के परस्थित यङ् का लोप होता है। यथा—

लुट्	लृट्	लृङ्
शोशुचिता	शोशुचिष्यते	अशोशुचिष्यत
लिट्	लुङ्	लिङ्
शोशुचाम्बभूव, शोशुचामास, शोशुचाञ्चक्रे	अशोशुचिषत	शोशुचिषीष्ट

नाम धातु (Nominal verb)

नाम अर्थात् शब्द के उत्तर कई एक प्रत्यय होते हैं। उन सब प्रत्ययों के होने से शब्द को धातु का रूप प्राप्त होता है और उसको नामधातु कहते हैं।

२८३। सब नामधातुओं के रूप भ्वादिगणीय धातु के समान होते हैं।

२८४। आत्मसंक्रान्त इच्छा बोध होने से शब्द के उत्तर काम्य और परस्मैपद होता है। यथा, आत्मनः पुत्रमिच्छति, पुत्रकाम्यतिः अत्मनो धनमिच्छति, धनकाम्यति, आत्मनो यश इच्छति, यशःकाम्यति, पुत्रकाम्यति, पुत्रकाम्येत्, पुत्रकाम्यतु, अपुत्रकाम्यत्, अपुत्रकाम्यत्, पुत्रकाम्याम्बभूव, पुत्रकाम्यामास, पुत्रकाम्याञ्चकार, पुत्रकाम्यता, पुत्रकाम्यात, पुत्रकाम्यष्यति, अपुत्रकाम्मिष्वत् (*)

२८५। आत्मसंक्रान्त इच्छा बोध होने से शब्द के उत्तर क्यच् और परस्मैपद होता है। क्यच् का य रहता है।

२८६। क्यच् प्रत्यय करने से शब्द के अन्तस्थित अकार का ई होता है और ह्रस्व दीर्घ होता है। यथा—आत्मनः पुत्रमिच्छति, पुत्रीयति। (+)

२८७। बुभुक्षा अर्थ में अशन् शब्द के उत्तर क्यच् होता है और अशन् शब्द के अन्त्य अकार के स्थान में आकार होता है। यथा—अशनायति, (He wishes to eat).

२८८। पिपासा अर्थ में उदक् शब्द के उत्तर क्यच् होता है और उदक् शब्द के स्थान में उदन् होता है। यथा, उदन्यति।

२८९। नमस् तपस् और वरिवस् शब्दों के उत्तर करण अर्थ में क्यच् होता है। यथा--नमः करोति, नमस्यति, तपः करोति,तपस्यति; वरिवः करोति, वरिवस्यति।

---

* अन्यसंक्रान्त इच्छा बोध होने से नहीं होता। यथा पुत्रस्य पुत्रमिच्छति इत्यादि। यहां पुत्रकाम्यति अथवा पुत्रीयति ऐसा प्रयोग नहीं होगा।

+ ह्रस्व स्वर दीर्घ होता है। यथा—आत्मनः पतिमिच्छति, पतीयति। शूर्पनखा रामं पतीयति।

२९० । आचरण अर्थ में कर्मवाचक उपमान के उत्तर क्यच् होता है। यथा, शिष्यं पुत्रमिव आचरति,पुत्रीयति शिष्यम्, (Considers a pupil as his son)

भृत्यं शखायमिव आचरति, सखीयति भृत्यम्; मित्रं रिपुमिव आचरति, रिपूयति मित्रम् (Looks upon a friend as a foe)

अन्तस्थित ॠ के स्थान में री होता है। यथा उपाध्यायं पितरमिव आचरति, पित्रीयति उपाध्यायम्(Considers a teacher as father)

२९१ । आचरण अर्थ में कर्तृवाचक उपमानके उत्तर क्यङ् और आत्मनेपद होता है। क्यङ् का य् रहता है।

क्यङ् प्रत्यय करने से शब्द के अन्तस्थित नकार और सकार का लोप होता है।

२९२ । क्यङ् परे रहने से, शब्द के अन्तस्थित ह्रस्व स्वर का दीर्घ होता है। और पयस् शब्द के सकार का विकल्प से लोप होता है। यथा पुत्र इव आचरति पुत्रायते, शिष्य इव आचरति शिष्यायते, हंस इव आचरति हंसायते, सखा इव आचरति सखायते, पय इव आचरति पयायते, पयस्यते। अन्तस्थित ऋ के स्थान में री होता है। यथा--पितेव आचरति पित्रीयते।

२९३ । करण अर्थ में, शब्द, वैर और कलह इन शब्दों के उत्तर क्यङ् होता है। यथा शब्दं करोति शब्दायते (Makes noise), वैरं करोति वैरायते। कलहं करोति कलहायते (Quarrels).

२९४ । अनुभव अर्थ में सुख, दुःख, और कृच्छ् शब्द के उत्तर क्यङ् होता है। यथा—सुखमनुभवति, सुखायते। दुःखमनुभवति दुःखायते। कृच्छ्मनुभवति कृच्छ्रायते। (Feels pain)

२९५ । उद्वमन अर्थ में वाष्प, फेन, धूम और उष्मन् शब्द के

उत्तर क्यङ् होता है। यथा—वाष्पमुद्विमति वाष्पायते। (Emits vapour) फेनमुद्विमति, फेनायते। धूममुद्विमति, धूमायते। ऊष्माणमुद्विमति, ऊष्मायते।

२९६। उद्गार पूर्वक चर्वण अर्थ में रोमन्थ शब्द के उत्तर क्यङ् होता है। यथा—रोमन्थायते। उद्गीर्य्य चर्व्वयतीत्यर्थः। (Ruminates.)

२९७। भृश, शीघ्र, चपल, मन्द, पण्डित, उत्सुक, सुमनस्, दुर्मनस्, और उन्मनस् इन शब्दों के उत्तर अभूततद्भाव * अर्थ में क्यङ् होता है। यथा, अभृशो, भृशो भवति भृशायते। अशीघ्रः शीघ्रो भवति, शीघ्रायते। अचपलश्चपलो भवति चपलायते; अमन्दो मन्दो भवति, मन्दायते; अपण्डितः पण्डितो भवति पण्डितायते; अनुत्सुक उत्सुको भवति, उत्सुकायते, असुमना सुमना भवति, सुमनायते, अदुर्मना दुर्मना भवति दुर्मनायते; अनुन्मना उन्मना भवति उन्मनायते।

२९८। आचरण अर्थ में कर्तृवाचक उपमान के उत्तर क्विप् होता है। क्विप का कुछ नहीं रहता और क्विप करनेसे परस्मैपद होता है। यथा, पुत्र इव आचरति पुत्रति; शिष्य इव आचरति शिष्यति, सखा इव आचरति, सखयति; कविरिव आचरति, कवयति, वन्धुरिव आचरति वन्धुयति, गुरुरिव आचरति, गुरुवति, पितेव आचरति पितरति, मातेव आचरति मातरति (Acts as a mother).

२९९। कारण अर्थ में शब्द के उत्तर णिच् होता है। णिजन्त प्रकरण में जो सब विधान होते हैं, यहां भी यथा सम्भव वे ही सब होते हैं। यथा, प्रश्न करोति प्रश्नयति (Questions). शब्दं करोति शब्दयति ।

---

* वस्तु वा व्यक्ति जो भावापन्न न रहे तो वह भावापन्न होता है।

३००। णिच् करने से पृथु, मृदु और दृढ़ इन शब्दों के ऋकार के स्थान में र और अन्त्य स्वर का लोप होता है। यथा पृथु करोति, प्रथयति। मृदु करोति मृदयति; दृढं करोति, दृढयति (Strengthens)

३०१। णिच् करने से स्थूल के स्थान में स्थव, दूर के स्थान में दव, अन्तिक के स्थान में नेद और बहुल के स्थान में वह होता है। यथा, स्थूलं करोति स्थवयति, दूरं करोति दवयति, अन्तिकं करोति, नेदयति, बहुलं करोति, वहयति (Multiplies).

परस्मैपद विधान

३०२। व्याङ्परिभ्यो रमः। वि, आ, परिपूर्व्वक रम् धातु परस्मैपद होता है। यथा, विरमति (stops), आरमति (rests) परिरमति (is pleased).

३०३। उपाद्वा—उप पूर्व्वक रम् धातु का विकल्प से परस्मैपद होता है। यथा, उपरमति, उपरमते।

३०४। अनुपराभ्यां कृञः अनु और परा पूर्व्वक कृ धातु का परस्मैपद होता है। यथा—अनुकरोति, पराकरोति।

३०५। अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः—अभि,प्रति और अति पूर्व्वक क्षिप् धातु का परस्मैपद होता है। यथा—अभिक्षिपति (Throws excels), प्रतिक्षिपति (Throws, hurts) अतिक्षिपति।

३०६। प्राद्वहः। प्र पूर्व्वक वह् धातु का परस्मैपद होता है। यथा—प्रवहति (Bears, flows). उक्त नियमानुसारः कृ, क्षिप्, वह्, मृष् इन चार धातुओं का क्यङ् प्रत्यय होने पर भी आत्मनेपद नहीं होता।

३०७। मृङो लिट्-लुट्-लट्-लङ्‌षु—लिट्, लुट्, लट्, और लङ् विभक्तियों में मृ धातु का परस्मैपद होता है यथा, लिट्-ममार, लुट्-मर्त्ता, लट्-मरिष्यति, लङ्-अमरिष्यत।

३०८। बुध् युध् नश् जनेङ् प्र-द्रु-स्रुभ्यो योः। णिजन्त बुध्, युध्, नश् जन् और अध्ययनार्थक धातुओं का परस्मैपद होता है। यथा, योधयति, बोधयति, नाशयति, जनयति, अध्यापयति।

३०९। निगरणचलनार्थेभ्यश्च। णिजन्त भोजनार्थ और चलनार्थ धातुओं का परस्मैपद होता है। यथा भोजयति, आशयति, चालयलति, कम्पयति।

३१०। णिजन्त प्रु द्रु और स्रु धातुओं का परस्मैपद होता है। यथा—प्रावयति, द्रावयति, स्रावयति।

३११। अणावकर्म्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात्। यदि अणिजन्त काल में प्राणी कर्ता हो, तो अकर्मक णिजन्त धातु का परस्मैपद होता है। यथा, पुत्रः शेते, माता पुत्रं शाययति, शिशुर्जागर्ति, माता शिशुं जागरयति, वत्सः क्रीड़ति, गोपो वत्सं क्रीड़यति।

प्राणी कर्त्ता न होने से नहीं होता। यथा, जलं शुष्यति, सूर्य्यो जलं शोषयति, शोषयते; नदी वर्द्धते, जलदकालो नदीं वर्द्धयति, वर्द्धयते। The rainy season makes the river increase)

स्यन्त बुध् युध् नश् जन् इङ् प्रु द्रु और स्रु धातु का परस्मैपद होता है।



आत्मनेपद विधान

३१२। नेर्विशः। नि पूर्व्वक विश धातु का आत्मनेपद होता है यथा, निविशते (Sits down, enters)

३१३। परिव्यवेभ्यः क्रियः। वि, परि और अव् पूर्वक क्री धातु का आत्मनेपद होता है। यथा, विक्रीणीते, (Sells) अवक्रीणीते, (Buys).

३१४। विपराभ्याम्जेः। वि और परा पूर्व्वक जि धातु का आत्मनेपद होता है। यथा, विजयते (conquers), पराजयते (defeats)।

३१५। आङोदोऽनास्यविहरणे। आपूर्व्वक दा धातु का आत्मनेपद होता है। यथा, विद्यामादत्ते, वस्त्रमादत्ते। स्वकीय अंग के विस्तार अर्थ में नहीं होता। यथा, मुखं व्याददाति सिंहः, नदी कूलं व्याददाति (extends), वैद्या विस्फोटकं व्याददाति।

३१६। क्रीड़ोऽनु-संपरिभ्यश्च। आ, अनु और परि पूर्व्वक क्रीड़् धातु का आत्मनेपद होता है। यथा—आक्रीड़ते, परिक्रीड़ते (Plays).

३१७। समोऽकूजने। संपूर्व्वक क्रीड़् धातु का आत्मनेपद होता है। यथा, संक्रीड़ते (Plays). कूजन अर्थ में नहीं होता। यथा, संक्रीड़ति चक्रम् (wheel crakes) संक्रीड़न्ति विहङ्गमः (The birds are chirping)।

३१८। अपाच्चतुष्पाच्छकुनिष्वालेखने। पक्षी अथवा चतुष्पद जन्तु होने से और हर्ष प्रकाश, आहारान्वेषण, वासग्रहणेच्छा अर्थ का बोध होने से अप् पूर्व्वक कृ धातु का आत्मनेपद और आदि में सकार

-का आगम होता है। यथा, हर्ष प्रकाश, अपस्किरते वृषभः अहारान्वे-षण-अपस्किरते कुक्कुटः, वासग्रहणेच्छा, अपस्किरते सारमेयः।

३१९। आङिनुप्रच्छयोः। आपूर्व्वक प्रच्छ धातु का आत्मने-पद होता है। यथा आपृच्छते बन्धून् (Asks his friends).

३२०। समवप्रविभ्यः स्थः। प्र, वि, अव् और शम् पूर्व्वक स्था धातु का आत्मनेपद होता है। यथा प्रतिष्ठते, वितिष्ठते, सन्तिष्ठते (stays).

३२१। उदोऽनूर्ध्वकर्मणि। उत्पूर्वक स्था धातु का आत्मनेपद होता है। यथा, उत्तिष्ठते। उत्थान अर्थ में नहीं होता, यथा, आसना-दुत्तिष्ठति (Rises from his seat)।

३२२। उपाद् देवपूजा संगतिकरणमित्रकरण पथिषु वाच्यम्। देवपूजा, मिलन और मैत्रीकरण अर्थ में उप् पूर्वक स्था धातु का आत्मनेपद होता है। यथा देवपूजा, विष्णुमुपतिष्ठते वैष्णवः, विष्णु पूजयतीत्यर्थः। मिलन, यमुनामुपतिष्ठते गंगा, यमुनया सह मिलतीत्यर्थः। मैत्रीकरण, साधुमुपतिष्ठते साधुः, साधुना मैत्री करोती-त्यर्थः (Makes friends hip with)

३२३। वा लिप्सायाम्। लाभेच्छा का बोध होने से उप् पूर्वक स्था धातु का विकल्प से आत्मनेपद होता है। यथा, धनिनमुपतिष्ठते उपतिष्ठति वा भिक्षुः धनलाभेच्छया धनिसमीपं गच्छतीत्यर्थः।

३२४। अकर्म्मकाच्च। उप् पूर्वक अकर्म्मक स्था धातु का आत्मनेपद होता है। यथा, भोजनकाल उपतिष्ठते। सकर्म्मक होने से नहीं होता है। यथा, शिष्यो गुरुमुपतिष्ठति।

३२५। आङोयमहनः। आपूर्व्वक अकर्म्मक हन् और यम्

धातुओं का आत्मनेपद होता है। यथा, आहते, आयच्छते। सकर्म्मक का नहीं होता। यथा, आयच्छति कूपाद्रज्जुम्, आहन्ति शत्रुम्। आत्मअवयव कर्म होने से आत्मनेपद होता है। यथा, आयच्छते पाणिमात्मीयम्। आहते स्वीयं शिरः। उरः आहते (strikes).

३२६। समोगम्यृच्छिभ्याम्। सम् पूर्वक अकर्म्मक गम् और श्रु धातुओं का आत्मनेपद होता है। यथा, संगच्छते, संशृणुते। सकर्म्मक का नहीं होता। यथा संगच्छति मित्रम्, संशृणोति शास्त्रम्।

३२७। स्पर्धायामाङः। स्पर्द्धा * भिन्न अर्थ में आपूर्व्वक ह्वे धातु का आत्मनेपद होता है। यथा, मल्लमाह्वयते मल्लः। स्पर्द्धा भिन्न अर्थ में नहीं होता। यथा, पिता पुत्रमाह्वयति (Calls).

३२८। वृद्धि संगतायनेषुक्रमः। वृद्धि, उत्साह और अप्रतिबन्ध अर्थ बोध होने से क्रम् धातु का आत्मनेपद होता है। यथा, सतां श्रीः क्रमते, वर्द्धते इत्यर्थः। अध्ययनाय क्रमते शिष्यः, धर्माय क्रमते साधुः, उत्सहते इत्यर्थः। शास्त्रेषु क्रमते बुद्धिः, न श्रुक्ष (वेदेषु) बुद्धिः क्रमते अप्रतिहता भवति। न प्रति हन्यते इत्यर्थः +

३२९। आङ उद्गमने। ग्रह नक्षत्रादि ज्योतिः पदार्थ में ऊर्द्ध्वगमन बोध होने से आपूर्व्वक क्रम धातु का आत्मनेपद होता है। यथा आक्रमते (rises) सूर्य्यः। नभोमण्डलमारोहतीत्यर्थः। ज्योतिर्भिन्न अन्य पदार्थ का ऊर्द्ध्वगमन बोध होने से नहीं होता। यथा, आकाशमाक्रामति धूमजालम्।

३३०। वेः पादविहरणे। पदविक्षेप अर्थ में विपूर्व्वक क्रम धातु

---

* युद्धार्थ आह्वान (challenging).

+ परा और उप भिन्न उपसर्ग के योग में नहीं होता।

का आत्मने पद होता है। यथा, साधु विक्रमते वाजी। अन्य अर्थ में नहीं होता। यथा, विक्रामति सन्धिः। द्विधा—भवतीत्यर्थः।

३३१। **प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम्**। आरम्भ अर्थ में प्र और उप-पूर्वक क्रम धातु का आत्मनेपद होता है। यथा, प्रक्रमते भोक्तुम्, उपक्रमते भोक्तुम् आरभते (Commences) इत्यर्थः।

३३२। **अनुपसर्गाद्वा**। उपसर्गहीन क्रम धातु का विकल्प से आत्मनेपद होता है। यथा, क्रमते, क्रामति।

३३३। **अपह्नवे ज्ञः**। अपह्णव अर्थ में ज्ञा धातु का आत्मनेपद होता है। यथा, उक्तमपजानीते, अपलपतीत्यर्थः।

३३४। **सं-प्रतिभ्या मनाध्याने**। सम् और प्रति पूर्वक ज्ञा धातु का आत्मनेपद होता है। यथा, संजानीते, प्रतिजानीते, अङ्गीकरोतीत्यर्थः। स्मरण अर्थ में नहीं होता। यथा, पुत्रं संजानाति (Remembers) स्मरतीत्यर्थः

३३५। **अनुपसर्गाद्वा**। उपसर्गहीन ज्ञा धातु का विकल्प से आत्मनेपद होता है। यथा, जानीते, जानाति।

३३६। **समःप्रतिज्ञाने**। प्रतिज्ञा अर्थ में संपूर्वक गृह धातु का आत्मनेपद होता है। यथा, सतं संगिरते प्रतिजानीते इत्यर्थः। (Promises).

३३७। **उदश्चरः सकर्म्मकात्**। उत् पूर्वक सकर्मक चर् धातु का आत्मनेपद होता है। यथा, गुरुवचनमुच्चरते उलंघयतीत्यर्थः। अकर्मक का नहीं होता। यथा उच्चरति (Rises) धूमः।

३३८। **समस्तृतीयायुक्तात्**। तृतीयान्त पद के योग में सं-

पूर्वक चर् धातु का आत्मनेपद होता है। यथा, अश्वेन सञ्चरते, रथेन सञ्चरते।

३३९। उपाद्यमः स्वकरणे। विवाह अर्थ बोध होने से उप् पूर्वक यम् धातु का आत्मनेपद होता है। यथा, सुलक्षणा कन्या— मुपयच्छते (Marries)।

३४०। प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु। उपसर्ग पूर्वक युज् धातु का आत्मनेपद होता है। यथा, प्रयुङ्क्ते, नियुङ्क्ते, वियुङ्क्ते, उद्युङ्क्ते, अनुयुङ्क्ते, विनिङ्युक्ते *

३४१। भुजोऽनवने। रक्षा भिन्न अर्थ में भुज् धातु का आत्मनेपद होता है। यथा, शालीन् भुङ्क्ते गौः। रक्षार्थ-नहीं भुनक्ति राजा।

३४२। स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले। यदि कर्त्ता स्वप्रयोजनोद्देश से क्रिया का अनुष्ठान करे तो उभयपदी और णिजन्त धातु के उत्तर केवल आत्मनेपद होता है। यथा, यजते विप्रः। यजति याजकः। यहाँ याजक ब्राह्मण यजमान के निमित्त यज्ञ करता है, अतएव आत्मनेपद नहीं हुआ।

३४३। ज्ञा-श्रु-स्मृ-दृशां सनः। सनन्त ज्ञा, श्रु, स्मृ, और दृश् धातुओं का आत्मनेपद होता है। यथा, धर्म्मं जिज्ञासते, गुरुं शुश्रूषते, नष्टं सुस्मूर्षते, चन्द्रं दिदृक्षते। अनु पूर्वक ज्ञा धातु का नहीं होता। यथा, अनुजिज्ञासति। प्रति और आपूर्वक श्रु धातु का नहीं होता। यथा, प्रतिशुश्रूषति, आशुश्रूषति।

---

* निर् दुर् सम् पूर्व यज् का नहीं होता।

कर्मवाच्य और भाववाच्य प्रकरण

Transitive passive and Intransitive passive voice.

३४४। कर्मवाच्य और भाववाच्य में धातु आत्मनेपदी होता है। अतएव केवल आत्मनेपद की विभक्तियां होती हैं।

३४५। कर्मवाच्य के कर्मपद में जो पुरुष और जो वचन रहता है, क्रियापद में भी वही पुरुष और वही वचन रहता है। अर्थात् कर्म्मपद अस्मद् होने से क्रिया में उत्तम पुरुष की विभक्ति होती है। युष्मद् होनेसे मध्यम पुरुष की और तद्भिन्न होने से प्रथम पुरुष की विभक्ति होती है। इसी प्रकार कर्मपद में एकवचन रहने से क्रियापद में एकवचन, द्विवचन रहने से क्रियापद में द्विवचन और बहुवचन रहने से क्रियापद में भी बहुवचन होता है।

३४६। भाववाच्य क्रिया में केवल प्रथमपुरुष का एकवचन होता है।

३४७। कर्मवाच्य और भाववाच्य में लट्, लोट्, लङ् और विधि-लिङ्, इन चार विभक्तियों में सर्वगणीय धातुओं के उत्तर य होता है। यथा—

गम्	पठ्	त्यज्	भुज्	भिद्	
गम्यते	पठ्यते	त्यज्यते	भुज्यते	भिद्यते	
छिद्	शुच्	स्पर्श	लभ्	नी	
छिद्यते	शुच्यते	स्पृश्यते	लभ्यते	नीयते	
हन्	ज्ञा	सृज्	म्ना	सेव्	लुप्
हन्यते	ज्ञायते	सृज्यते	म्नायते	सेव्यते	लुप्यते

य परे रहने से शी धातु के स्थान में शय् होता है। यथा, शय्यते।

३४८। य परे रहने से दा, धा, मा, गा, हा, पा,* सा और स्था धातुओं के आकार के स्थान में ई होता है।

दा	धा	मा	गा	हा	पा	सा	स्था
दीयते	धीयते	मीयते	गीयते	हीयते	पीयते	सीयते	स्थीयते

३४९। १२७ से १३५ पर्यन्त ९ सूत्रों के आशीर्लिङ् परस्मैपद में जिस धातु के जो कार्य्य होते हैं, य प्रत्यय के परे रहने से भी उस धातु के वे ही कार्य्य होते हैं।

१२७ सूत्रानुयायी उदाहरण

जि	चि	श्रि	श्रू	स्तु	क्षि
जीयते	चीयते	श्रीयते	श्रूयते	स्तूयते	क्षीयते

[१२८ सूत्रानुयायी]

कृ	भृ	हृ	मृ
क्रियते	भ्रियते	ह्रियते	म्रियते

१२९ सूत्रानुयायी

स्मृ	स्तृ	ऋ
स्मर्य्यते	स्तर्य्यते	अर्य्यते

१३० सूत्रानुयायी

तॄ	कॄ	पॄ
तीर्य्यते	कीर्य्यते	पूर्य्यते

१३१ सूत्रानुयायी

ग्रह्	प्रच्छ्	व्यध्	यज्
गृह्यते	पृच्छ्यते	विध्यते	इज्यते

१३२ सूत्रानुयायी

वच्	वद्	वप्	वस्	वह्	स्वप्
उच्यते	उद्यते	उप्यते	उष्यते	उह्यते	सुप्यते

---

* पानार्थक।

१३३ सूत्रानुयायी, ह्वे—हूयते

१३४ सूत्रानुयायी

दन्श्	भ्रन्श्	शन्स्	मन्थ्	भन्ज्	बन्ध्
दश्यते	भ्रश्यते	शस्यते	मथ्यते	भज्यते	बध्यते

१३५ सूत्रानुयायी, शास्—शिष्यते

३५० । य परे रहने से णिजन्त धातुओं के अन्तस्थित इकार का लोप होता है। यथा—

कारि	स्थापि	दूषि	दर्शि
कार्य्यते	स्थाप्यते	दूष्यते	दर्श्यते

लिट्, लुट्, लृट्, लङ् आशीर्लिङ् ।

२५९ सेव्-धातु

लिट्	लुट्	लृट्
सिषेवे	सेविता	सेविष्यते
सिषेवाते	सेवितारौ	सेविष्येते
सिषेविरे	सेवितारः	सेविष्यन्ते
लृङ्	आशीर्लिङ्	
असेविष्येत	सेविषीष्ट	
असेविष्येताम्	सेविषीयास्ताम्	
असेविष्यन्त	सेवीषीरन्	

२६० भुज् धातु

लिट्	लुट्	लृट्
बुभुजे	भोक्ता	भोक्ष्यते
बुभुजाते	भोक्तारौ	भोक्ष्येते

बुभुजिरे	भोक्तारः	भोक्ष्यन्ते
लङ्	आशीर्लिङ्	
अभोक्ष्यत	भुक्षीष्ट	
अभोक्ष्येताम्	भुक्षीयास्ताम्	
अभोक्ष्यन्त	भुक्षीरन्	

३५१। लुट्, लृट्, लृङ् और आशीर्लिङ् इन चार विभक्तियों में स्वरान्त, ग्रह्, दृश् और हन् धातुओं के उत्तर पक्षान्तर में इ होता है।

३५२। इ परे रहने से धातु के अन्त्यस्वर की और उपधा अकार की वृद्धि होती है। यथा—

स्वरान्त

२६१—श्रु धातु

लिट्	लुट्	लृट्	लृङ्	आशीर्लिङ्
शुश्रुवे	श्रोता	श्रोष्यते	अश्रोष्यत	श्रोषीष्ट
	श्राविता	श्राविष्यते	अश्राविष्यत	श्राविषीष्ट

२६२ ग्रह्—धातु

जगृहे	ग्रहीता	ग्रहीष्यते	अग्रहीष्यत	ग्रहीषीष्ट
	ग्राहिता	ग्राहिष्यते	अग्राहीष्यत	ग्राहिषीष्ट

३५३। इ परे रहने से, उपधा लघु स्वर का गुण होता है। यथा—

२६३ दृश् धातु

ददृशे	द्रष्टा	द्रक्ष्यते	अद्रक्ष्यत	द्रक्षीष्ट
	दर्शिता	दर्शिष्यते	अदर्शिष्यत	दर्शिषीष्ट

३५४। इ परे रहने से हन् धातु के ह के स्थान में घ होता है।
यथा—

२६४--हन् धातु

जघ्ने	हन्ता	हनिष्यते	अहनिष्यत	वधिषीष्ट
	घानिता	घानिष्यते	अघानिष्यत	वाधिषीष्ट

३५५। इ परे रहने से, अकारान्त धातुओं के उत्तर य होता है।
यथा—

२६५ दा--धातु

ददे	दाता	दास्यते	अदास्यत	दासीष्ट
	दायिता	दायिष्यते	अदायिष्यत	दायिषीष्ट

३५६। कर्मवाच्य में और भाववाच्य में लुङ् की त विभक्ति के स्थान में इ होता है। इ परे रहने से अन्त्य स्वर उपधा अकार की वृद्धि होती है और उपधा लघु स्वर का गुण होता है। यथा—

२६६--वद् धातु

अवादि
अवादिषाताम्
अवादिषत

२६७--सिव् धातु

असेवि
असेविषाताम्
असेविषत

२६८--भज् धातु

अभाजि
अभक्षाताम्
अभक्षत

२६९--मन् धातु

अमानि
अमंसाताम्
अमंसत

२६७। स्वरान्त, ग्रह्, दृश् और हन् धातुओं के लुङ् के त भिन्न विभक्तियों में लुट् प्रभृति की भांति कार्य्य होते हैं। यथा—

२७०·श्रु धातु ·२७१·ग्रह् धातु २७२ दृश् धातु

अश्रावि	अग्राहि	अदर्शि
{ अश्रोषाताम्	{ अग्रहीषाताम्	{ अदृक्षाताम्
{ अश्राविषाताम्	{ अग्राहिषाताम्	{ अदर्शिषाताम्
अश्रोषत	अग्रहीषत	अदृक्षत
अश्राविषत	अग्राहिषत	अदर्शिषत

२७३·हन् धातु २७४·दा धातु

{ अवधि	{ अदायि
{ अघानि	{ अदिषाताम्
{ अवधिषाताम्	{ अदायिषाताम्
{ अहसाताम्	{ अदिषत
{ अघानिषाताम्	{ अदायिषत
{ अवधिषत	
{ अहसत	
{ अघानिषत	

कर्म्म कर्तृवाच्य प्रकरण

Passive and Active voices.

कर्म्म कर्तृवाच्य में कर्मपद कर्त्ता पद हो जाता है, कर्म्मपद नहीं रहता एवं लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् इन चार विभक्तियों में सर्व्वगणीय धातुओं के उत्तर य होता है। इस वाच्य में धातु आत्मनेपदी होता है अतएव केवल आत्मनेपदी की विभक्ति हो जाती है।

यथा—स्वयमेव भिद्यते वृक्षः, काष्ठं स्वयमेव भिद्यते, स्वयमेव पच्यते भक्तुम्।

द्विकर्मक के स्थान में एक कर्म कर्त्ता होने से अन्य कर्म वर्तमान नहीं रहता। यथा—याच्यते राजा स्वयमेव भूमिम्।

लकारार्थ निर्णय

(Rules for the use of Tenses and moods)

३५८। वर्तमाने लट्। वर्तमान काल में धातु के उत्तर लट् होता है। यथा भवति, तिष्ठति, गच्छति, पश्यति, जागर्ति।

३५९। अनद्यतने लङ्—अतीतकाल में धातु के उत्तर लिट्, लङ् और लुङ् होते हैं। यथा—

	गम्	भू	दृश्	स्था
लिट्	जगाम	बभूव	ददर्श	तस्थौ
लङ्	अगच्छत्	अभवत्	अपश्यत्	अतिष्ठत्
लुङ्	अगमत्	अभूत्	अदर्शत्	अस्थात्

३६०। भविष्यत् काल में धातु के उत्तर लुट् और लृट् होते हैं। यथा—

लुट्	गन्ता	भविता	द्रष्टा	स्थाता
लृट्	गमिष्यति	भविष्यति	द्रक्ष्यति	स्थास्यति

३६१। लट् स्मे। स्म शब्द के योग में अतीतकाल में लट् होता है। यथा—

स मद्गृहमागच्छति स्म। वह मेरे घर में आता था।

स व्याकरणमधीते स्म। वह व्याकरण अध्ययन करता था।

३६२। माङि लुङ्। मा शब्द के योग में सर्वकालों में विकल्प

से लुङ् होता है। यथा—मा भूत् दुःखम्। मा भवतु दुःखम्। मा भविष्यति दुःखम्।

३६३। स्मोत्तरे लङ् च। मास्म शब्द के योग में सर्वकाल में लङ् और लुङ् होते हैं। यथा, मास्म भवतः शोकः। मास्म भूत शोकः।

३६४। यावत् पुरानिपातयोर्लट्। यावत् और पुरा शब्दों के योग में भविष्यत् काल में लट् होता है। यथा, स यावत् आगच्छति तावत् अहं गमिष्यामि।

वह जितनी देर में आवेगा मैं उतनी ही देर में जाऊंगा।

३६५। विभाषा कदाकर्ह्योः। कदा और कर्हि शब्दों के योग में भविष्यत् काल में विकल्प से लट् होता है। यथा, कदा ददामि न जाने, कदा दास्यामि न जाने। कब दूंगा नहीं जानता।

३६६। विभाषा कथमि लिङ् च। कथं शब्द के योग में सर्व्व कालों में विकल्प से लट् और विधिलिङ् होते हैं। यथा, कथं गच्छति, कथं गच्छेः।

३६७। यदायद्योर्लिङ्। यदा और यदि शब्दों के योग में भविष्यत्काल में विधिलिङ् होता है। यथा, वक्ष्यामि, यदा स आगच्छेत्। दास्यामि, यदि स आगच्छेत्।

३६८। आशिषि लिङ्—लोटौ। आशीर्वाद अर्थ में धातु के उत्तर आशीर्लिङ् और लट् होता है। यथा—

तव सुखं भूयात्। सज्जनश्चिरं जीव्यात्।

तव सुखं भवतु। सज्जनश्चिरं जीवतु।

३६९। आशीर्वाद अर्थ में लोट् के तु और हि के स्थान में विकल्प से तात् होता है। यथा—

तव कुशलं भवतात्।　　　　　　ईश मां पा ात्।
तव कुशलं भवतु।　　　　　　ईश मां पाहि।

३७०। विधि निमंत्रणामन्त्रणाधीष्ट संप्रश्न प्रथनेषुलिङ् विधि अर्थ में धातु के उत्तर विधिलिङ् होता है। विधि दो प्रकार की है, प्रवर्त्तना और निवर्त्तना। सत्कर्म्म में प्रवृत्तिदान का नाम प्रवर्त्तना है, असत्कर्म्म से निवर्त्तन का नाम निवर्त्तना है। यथा, प्रवर्त्तना-सत्यं वदेत्; प्रियं ब्रूयात्; गुरूनभ्यर्च्चयेत्; दीने दयां कुर्य्यात्, क्षुधिताय अन्नं दद्यात्। निवर्त्तना-नानृतं वदेत्; न गुरून् निन्देत्; परस्वं नापहरेत्; क्रोधं यत्नेन वर्ज्जयेत्; अहङ्कारं परिहरेत्; आलस्यं परित्यजेत्।

३७१। लोट् च। अनुज्ञा (command), नियोग (permission), निमन्त्रण (Invitation), अनुरोध (Entreaty), प्रार्थना (prayer) और जिज्ञासा (As king questions) इन सब अर्थों में विधिलिङ् और लोट् होते हैं। यथा, अनुज्ञा—गच्छतु भवान्। नियोग-करोतु भवान्। निमन्त्रण—इह भुञ्जीत भवान्। अनुरोध-इह शयीत भवान्। प्रार्थना...मत् पुत्रमध्यापयेद्भवान्। जिज्ञासा···किं भो व्याकरणमधीयीय उत साहित्यम्।

३७२। हेतु हेतुमतोर्लिङ्। दो क्रियाओं का कार्य्यकारण भाव बोध होने से दोनों क्रियाओं के भविष्यत् काल में विधिलिङ् होता है। यथा, यदि बाल्ये अधीयीत यावज्जीवनं सुखं लभेत्। यहां बाल्यकाल का अध्ययन यावज्जीवन सुखलाभ का कारण होता है, इसलिये दोनों क्रियाओं में विधिलिङ् हुआ। इसी प्रकार यदि प्रियं वदेत् सर्वस्य प्रियो भवेत्।

३७३। शकि-लिङ्-च। समर्थना अर्थ में धातु के उत्तर लोट् होता है। यथा, सिन्धुमपि शोषयाणि। समुद्र को भी शुष्क कर सकता हूं। (I can dry or suck up even a sea)

३७४। इच्छार्थेषु लिङ् लोटौ। इच्छार्थ धातु के योग में विधिलिङ् और लोट् होते हैं। यथा, इच्छामि भवान् भुञ्जीत भुङ्क्तां वा। इच्छामि स आगच्छेत् आगच्छतु व।

३७५। लिङ् निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ। क्रिया की अनिष्पत्ति (असमाप्ति) बोध होने से भूतकाल में धातु के उत्तर लृङ् होता है। यथा, स चेत् आगमिष्यत् तदाहमगमिष्यम्। वह यदि आता तो मैं जाता। अर्थात् वह आया ही नहीं इस लिये मैं नहीं गया। ज्ञानं चेत् अभविष्यत् तदा सुखमभविष्यत्। यदि ज्ञान होता तो सुख होता। अर्थात् ज्ञान नहीं है; इस कारण सुख नहीं हुआ।

३७६। मुहुर्भृशार्थे हि-त-स्व ध्वम् ।पौनः पुन्य और अतिशय अर्थ बोध होने से सब धातुओं के उत्तर सब कालों में सब पुरुषों में और सब विभक्तियों में लोट् की हि, त, स्व, ध्वम्, ये कई विभक्तियां होती हैं। यथा. पुनः पुनः अतिशयेन वा हरति, जहार, हरिष्यति, इन अर्थों में हर, हरत, हरस्व, हरध्वम्।

॥ इति ॥

Patna University Questions.

1. Conjugate हन in लोट् second person singular जन् in लङ् third person plural आस् in third person plural. 1918.

2 Conjugate हन or इ in लट् third person plural, आस् or शास् in लोट् second person singular, व्यध् or श्नु in विधिलिङ् first person singular and घ्रा or सद् in लङ् third person plural. 1919.

3. Frame short sentences using any three of the following Verbs in Atmanepada वद्, स्था, ज्ञा, क्रम्। 1919

4. Conjugate ज्ञा or बन्ध् in विधिलिङ् First person singular रुध् or हिंस् in लङ् third person singular, क्रु or शास् in लोट् second person singular. अधि इ or ईश् in लट् third person plural. 1920.

5. Use any two of the following roots in आत्मनेपद in short sentences of your own :—भुज्, गल् चर, नी। 1920

6 Illustrate by short Sanskrit sentences the difference between the use of लङ्, लुङ् and लिट्। 1920

7. Derive भुञ्जानानाम् and सिद्धि and Conjugate their roots in लट् and लृट् third person singular. 1921.

8. Conjugate any three of the following roots in लिट् and लृट् third person, all number, स्था, वस्, हन्, रुध् and नी. 1921

9. Conjugate any of the following roots either in लङ् or लिट् third person singular—गम्, प्रच्छ्, स्तृ and वह्. 1921

10. Conjugate the roots of any three of the following words in लट् or लङ् third person singular चिन्त्यताम्, सन्दीपितम्, पलायति:, यास्यति and अत्वगाम्. 1922

11. Conjugate any four of the following :— प्रच्छ् in लङ्, सृ in लट्, सिच् in लट्, दृश् in लोट्, घ्रा in लोट्, प्र, आप in लोट्, अस् (to be) in लङ्, दुह in लङ् all in third person singular. 1922

12. Give the third person forms in लिट् of the root राज्. 1922

13. Give the present participle forms of any three of the following—हिंनस्, हन्, अस्, कृ, and विद्. 1922

14 Conjugate the root of प्रस्तुवन्ति, उपविष्ट: and कुर्याम् in लिट् or लङ् third person, singular. 1923

15. Illustrate the cases when the roots जि and क्रम् take the आत्मनेपद termination. 1923

16 Conjugate the roots of स्थापयिष्यति, नियोक्ष्यति and उपैति in लिट् and लङ् third person, singular. 1924

17. Derive अभिवृष्य and give the लिट् third person singular form of its root.

1919

1. Compose short Sanskrit sentences to illustrate any two of the following :—

Use of नाम धातु

1920

2. Conjugate the roots of रुदित्, प्राप्य and वत्स्यामि in लिट् or लङ् third person, singular.

1925

3. Conjugate the root of संश्रिता and उन्मुच्य in लट् and लिट् third person singular.

1926

4. Conjugate घ्रा in लट्, श्रु in लिट्, ब्रू in लङ् प्रथम-पुरुष।

1927

Conjugate नी (परस्मैपद) or दा (आत्मनेपद) in लङ् and लिट्।

1928

Make short sentences illustrating the use of the following roots (with the aid of the उपसर्ग if necessary) in आत्मनेपदी—जि, विश् and स्था।

Conjugate क्षिप् in लट् third person singular and कृ in लोट् second person plural.

1929

Conjugate स्था+णिच् in लिट् third person only and तुष् second person only.

Conjugate विश् and जि in लङ् and लट् ।

Conjugate any five of दा, पा, पा, गम्, श्रु and रुध् in लट् third person, singular.

Conjugate the root of उपैति in लङ् ।

Derive श्रुतम् and सुप्तः and give the third person singular लट् forms of their roots.



Approved as a Text Book by the Directors of Public Instruction Bihar & Orissa, Central Provinces and the Punjab and by the Patna University.

Pandit Ishwar Chandra Vidyasagar's

SANSKRIT-VYAKARAN-KAUMUDI

PART III.

Translated with notes, text exercises, university questions and New additions.

JUST ADOPTED TO THE REQUIREMENTS OF THE INDIAN UNIVERSITIES

BY

SHIVAPRASAD KHANNA 'VISARADA'

Edited by

PANDIT GOPINATH UPADHYAY.

संस्कृत-व्याकरण-कौमुदी

तृतीय भाग

अनुवादक

श्रीशिवप्रसाद खन्ना 'विशारद'

सम्पादक

श्री पण्डित गोपीनाथ उपाध्याय

साहित्य-व्याकरणाचार्य्य

Published by

BURMAN & CO.,

MuzaffarPur. (Bihar)

मूल्य ।๵)

Publishers
BURMAN & CO.,
Muzaffarpur.

संशोधित-परिवर्द्धित नवीन संस्करण

मुद्रक श्री प्रवासीलाल वर्म्मा
सरस्वती प्रेस, बनारस सिटी

महामहोपाध्याय प० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर प्रणीत

संस्कृत

व्याकरण-कौमुदी

तृतीय भाग

कृत् प्रकरण

साधारण नियम

१। धातु के उत्तर तव्य निष्ठा आदि कई एक प्रत्यय होते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय (Primary Suffixes) कहते हैं।

२। कृत् प्रत्यय होने से धातु के अन्त्य स्वर का और उपधा (Penultimate) लघुस्वर का गुण होता है, क् ङ् इत् होने से गुण नहीं होता है।

३। कृत् प्रत्यय का ण् अथवा ञ् इत् होने से धातु के अन्त्य स्वर और उपधा अकार की वृद्धि होती है और आकारान्त धातु के उत्तर य् होता है।

४। कृत् प्रत्यय (१) परे रहने से णिच् का लोप होता है।

---

(१) इत्न, आलुप् अय्य, अन्त, और शित् प्रत्यय परे रहने से और इट् व्यवधान में नहीं होता। जिन प्रत्ययों का श् इत् होता है उनको शित् कहते हैं।

५। कृत् प्रत्यय का घ् इत् होने से धातु के अन्तस्थित च के स्थान में क् और ज् के स्थान में ग् होता है।

६। कृत् प्रत्यय का ख् इत् होने से पूर्व पद द्वितीया का एक वचनान्त होता है।

७। कृत् प्रत्यय का च् इत् होने से ह्रस्व स्वरान्त धातु के उत्तर त् होता है।

८। कृत् प्रत्यय का य् परे रहने से धातु के अन्तस्थित ओ के स्थान में अव् और औ के स्थान में आव् होता है।

कृत्यप्रत्यय (Krit Affixes)

तव्य, अनीय, ण्यत्, क्यप, केलिम, ये कृत्य प्रत्यय हैं।

तव्य

Future-Past Participle.

९। तव्यतव्यानीयरः—कर्म्मवाच्य और भाववाच्य में धातु के उत्तर भविष्यत् काल में तव्य होता है।

१०। लुट् विभक्ति में इट् आदि जो सब कार्य होते हैं वे ही सब तव्य प्रत्यय परे रहने से होते हैं यथा, दा-दातव्य, what must or ought to be given स्था स्थातव्य, जि-जेतव्य, शी-शयितव्य, श्रु-श्रोतव्य, स्तु-स्तोतव्य भू-भवितव्य, कृ-कर्त्तव्य, स्मृ-स्मर्तव्य, वच्-वक्तव्य, याच्-याचितव्य, प्रच्छ्-प्रष्टव्य,

---

सकर्मक धातु से कर्म्मवाच्य में और अकर्मक धातु से भाववाच्य में तव्य होता है।

वाञ्छ्-वाञ्छितव्य, त्यज्-त्यक्तव्य, यत्-यतितव्य, नृत्-नर्तितव्य, छिद्-छेत्तव्य, विद्-वेदितव्य, बुध्-बोधव्य, मन्-मन्तव्य, हन्-हन्तव्य, आप्-आप्तव्य, लभ्-लब्धव्य, क्षम्-क्षन्तव्य, गम्-गन्तव्य, चल् चलितव्य, जीव् जीवितव्य सेव् सेवितव्य, दृश्-द्रष्टव्य, विश्-वेष्टव्य, स्पृश्-स्प्रष्टव्य, भक्ष्-भक्षितव्य, श्वस्-श्वसितव्य, हस्-हसितव्य, ग्रह्-ग्रहीतव्य,* दुह्-दोग्धव्य, वह्-वोढव्य, कारि-कारयितव्य, योजि-योजयितव्य, चिकीर्ष-चिकीर्षितव्य, मीमांस्-मीमांसितव्य ।

अनीय

११ । कर्मवाच्य और भाववाच्य में धातु के उत्तर अनीय होता है । अनीयर् के र् का लोप होता है और अनीय रह जाता है, यथा पा-पानीय, (what must or ought to be drunk) चि-चयनीय, शी-शयनीय, श्रु-श्रवणीय, कृ करणीय, स्मृ-स्मरणीय, हृ-हरणीय, वच्-वचनीय, सिच्-सेचनीय, शुच्-शोचनीय, भुज्-भोजनीय, युज्-योजनीय, छिद् छेदनीय, विद्-वेदनीय, मन्-मननीय, शुभ-शोभनीय, रम्-रमणीय, सेव-सेवनीय, दृश्-दर्शनीय, रक्ष्-रक्षणीय, तुष-तोषणीय, पूजि-पूजनीय, अर्चि-अर्चनीय, यापि-यापनीय, स्थापि-स्थापनीय, रोप-रोपणीय, ख्यापि-ख्यापनीय, ज्ञापि-ज्ञापनीय, अध्यापि-अध्यापनीय (Teachable), पालि-पालनीय (maintainable) ।

---

* छात्रों को विदित रहना चाहिये कि ग्रह धातु के उत्तर जो इ होता है वह दीर्घ हो जाता है किन्तु लिट् का रूप छोड़ के ।

ण्यत् (य)

१२। ऋहलोर्ण्यत् कर्मवाच्य और भाववाच्य में ऋकारान्त और व्यञ्जन वर्णान्त धातुओं के उत्तर ण्यत् होता है। ण्यत् प्रत्यय होने पर ऋकारान्त धातुओं के ऋ के स्थान में अर् होता है। ण और त् इत् होता है य रहता है। ऋकारान्त—कृ-कार्य्य (what is fit to be done), धृ-धार्य्य, सृ-सार्य्य, स्मृ-स्मार्य्य, हृ-हार्य्य। व्यञ्जन वर्णान्त—वच्-वाच्य, सिच्-सेच्य, त्यज्-त्याज्य, यज्-याज्य, युज्-योज्य, भुज्-भोज्य, बुध्-बोध्य; छिद्-छेद्य, भिद्-भेद्य, विद्-वेद्य, मन्-मान्य, भक्ष्-भक्ष्य, श्वस्-श्वास्य, हस्-हास्य, वह्-वाह्य।

१३। चजोः कु घिण्यतोः—ण्यत् परे रहने से पच्, रुज आदि धातुओं के च् के स्थान में क् और ज् के स्थान में ग् होता है। यथा, पच्-पाक्य, रुज्-रोग्य।

१४। वचो शब्द संज्ञायाम; भोज्यं भक्ष्ये, प्रयोज्यू नियोज्यौ शक्यार्थे।

अर्थ विशेष में ण्यत् प्रत्यय परे रहने से वच् प्रभुज, युज् आदि धातुओं के च् के स्थान में क् और ज् के स्थान में ग् होता है। यथा, वच शब्दार्थ में वाक्य, भुज-भोग अर्थ में भोग्य, युज् अर्ह अर्थ में योग्य, निपूर्वक युज् कर्तृवाच्य में ण्यत् (प्रभु अर्थ में) नियोग्य (A Lord or master)।

यत् (य)

१५। अचोयत्-कर्मवाच्य और भाववाच्य में स्वरान्त धातु

के उत्तर भविष्यत् काल में यत् होता है त् इत् होता है य रहता है। यथा, चि-चेय, (what is fit or ought to be collected) जि-जेय, नी-नेय, श्रु-श्रव्य, भू भव्य ।

१६। ईद यति—यत् परे धातु के अन्तस्थित आकार के स्थान में एकार होता है। यथा, दा-देय, गा-गेय, पा-पेय, स्था-स्थेय, मा-मेय, हा-हेय, धा-धेय ।

१७। परोदुपधात् शकिसहोश्च—कर्मवाच्य और भाववा में शक, सह्, और पवर्गान्त धातुओं के उत्तर यत् होता है। यथा, शक्-शक्य, सह्-सह्य, शप्-शप्य, रभ्-रभ्य, लभ्-लभ्य, गम्-गम्य, नम्-नम्य, रम्-रम्य ।

१८। ※ कर्मवाच्य और भाववाच्य में उपसर्गहीन गद्-मद् यम् और चर धातुओं के उत्तर यत् होता है, यथा, गद् गद्य, मद् मद्य, यम्-यम्य, चर् चर्य्य। उपसर्ग पूर्वक रहने से यत होता है। यथा, नि गद् निगाद्य, प्रमद् प्रमाद्य, नि-यम् नियाम्य, वि चर् विचार्य्य ।

क्यप् (Noun)

१९। एतिस्तु शास्पृदृजुषः क्यप् ह्रस्वस्यपिति कृति, तुक्—कर्मवाच्य और भाववाच्य में इ, दृ, भृ, कृ, जुष्, शास् और स्तु धातुओं के उत्तर क्यप् होता है। क् प् इत् होता है, य रहता है। यथा, इ-इत्य, दृ-दृत्य, भृ-भृत्य, (Servant) जुष्, जुष्य, स्तु स्तुत्य। कृ धातु का विकल्प से होता है। यथा कृत्य। पक्षान्तर

※ गद्मद् चरयमश्चानुपसर्गे—

में ण्यत् यथा कार्य्य शास् धातु के आकार के स्थान में इकार होता है। यथा, शिष्य (Pupil, Scholar)

क्यप् प्रत्ययों में ह्रस्वस्वरान्तधातुके उत्तर त् जोड़ा जाता है।

२०। **वदः सुपि क्यप् च।** कर्मवाच्य और भाववाच्य में सुवन्त पद के परवर्ती वद् धातु के उतर क्यप् और यत् होता है और जब क्यप् होता है, तब व के स्थान में उ होता है। यथा ब्रह्मोद्य, ब्रम्हवद्य (Knowldge of Brahama), मृषा शब्द के परवर्ती होने से केवल क्यप् होता है। यथा, मृषोद्य (Falsehood)

२१। **भुवोभावे**—भाववाच्य में सुवन्त पद के परवर्ती भू धातु के उत्तर क्यप् होता है। यथा, ब्रह्मभूय, (Identification with Brahma) देवभूयः।

२२। **हनस्तु च।** भाववाच्य में सुवन्तपदके परवर्ती हन् धातु के उत्तर क्यप् होता है और न् के स्थान में त् होता है (हन् × क्यप् = हत्य) और (वह शब्द) स्त्रीलिंग होता है। यथा, स्त्रीहत्या, गोहत्या, ब्रह्महत्या, पितृहत्या (Parricide.)

केलिम

२३। **केलिमर् उपसंख्यानम्**—कर्म्मकर्तृवाच्य में, धातु के उत्तर केलिम होता है, और केलिम प्रत्यय से बने हुए शब्दों में संज्ञा की तरह क इत् एलिम रहता है और व्यवहृत होता है। [१] यथा, भिद्-भिदेलिम पच्-पचेलिम, छिद्-छिदेलिम।

---

१. कभी-कभीक्रिया में भी व्यवहार किये जाते हैं।

२४। कृत्य प्रत्यय करने से जो शब्द बनते हैं उनका जब क्रिया की तरह प्रयोग किया जाता है तब, वे भाववाच्य में क्लीव [अर्थात् नपुंसक] लिंग की प्रथमा के एक वचनान्त होते हैं और कर्मवाच्य में कर्म के विशेषण होते हैं, इसलिये कर्म के जो लिंग, वचन और विभक्ति रहती है वही उस [शब्द] में भी होता है। यथा, भाववाच्य में, मया स्थातव्यम्, त्वया स्नातव्यम्, शिशुना शयितव्यम्। कर्मवाच्य में, त्वया वृक्षः सेचनीयः, वृक्षौ सेचनीयौ, वृक्षाः सेचनीयाः, मया नदी द्रष्टव्या, नद्यौद्रष्टव्ये, नद्यो द्रष्टव्याः, तेन पुष्पं चेयम, पुष्पे चेये, पुष्पाणि चेयानि, इत्यादि।

२५। कृत्यप्रत्यय से बने हुए सब शब्द जब विशेषण होते हैं तब उनमें विशेष्य के लिंग विभक्ति और वचन प्राप्त होते हैं। यथा गन्तव्यो ग्रामः, गन्तव्यं ग्रामम्, गन्तव्येन ग्रामेण, गन्तव्याय ग्रामाय, गन्तव्यात् ग्रामात्, गन्तव्यस्य ग्रामस्य, गन्तव्ये ग्रामे, दृश्यां नदीं, दृश्यां नदीम्, दृश्यया नद्या इत्यादि।

२६। कृत्यप्रत्यय सब भविष्यत् कालमें औचित्य और अनुज्ञा अर्थ में होते हैं। यथा, भविष्यत् काल में—मया गन्तव्यम्, (मैं जाऊँगा) त्वया कार्य्यम्, (तुम करोगे,) तेन शयनीयम, (वह सोवेगा)। औचित्य अर्थ में—असत् सङ्ग परिहर्तव्यः, (असत् का सङ्ग परित्याग करना उचित है,) दीनेभ्यो धनं देयम्, (दीन व्यक्ति को धन देना उचित है,)पर-निन्दा न कर्तव्या (दूसरे की निन्दा करनी उचित नहीं,) अनुज्ञा अर्थ में—त्वया

अध्ययनीयम्, (तुम अध्ययन करो) त्वया इह भोक्तव्यम् (तुम यहाँ भोजन करना,) त्वया प्रातस्तत्रगन्तव्यम्, (तुम सबेरे वहाँ जाना) ।

शतृ और शानच्

(Present Participle.)

२७। शतृशा न चावप्रथमा—सामानाधिकारेण—कर्तृ-वाच्यमें परस्मैपदी धातु के उत्तर वर्तमान काल में शतृ प्रत्यय होता है। श् ऋ इत् होता है। अत् रहता है। शतृ प्रत्यय से बने शब्द विशेषण होते हैं।

२८। लट् की अन्तिम विभक्ति में जिस धातु के जो कार्य्य होते हैं शतृ प्रत्यय होने पर भी वे सब कार्य्य होते हैं।* यथा भ्वादिगणीय—धाव्-धावत् (running), वद् वदत्, रस्-रसत् भू भवत्, जि-जयत्, कृष्-कर्षत्, शुच्-शोचत्, ग्लै-ग्लायत्, ध्यै-ध्यायत्, गै-गायत्, तॄ-तरत्, तप्-तपत्, नम्-नमत् चल्-चलत्, फल्-फलत्, पत्-पतत्, स्था-तिष्ठत्, पा-पित्, घ्रा-जिघ्रत्, गम्-गच्छत् दृश-पश्यत्, सद्-सीदत्, क्रम-क्रामत्, सञ्ज-सजत् दंश्-दशत्। दिवादिगणीय–दिव्-दीव्यत्, सिव्-सीव्यत्, नश्-नश्यत्, जॄ-जीर्य्यत्, व्यध्-विध्यत्, शम्-शाम्यत् भ्रम-भ्राम्यत्, नृत् नृत्यत्, शिलष्-शिलष्यत्

---

* लट् लकार के प्रथम पुरुष बहु वचन में जो रूप होते हैं उनमें से इ और त हटा देने से जो रूप बच जाता है वही शतृ प्रत्यय का रूप है। शतृ प्रत्यय से बना हुआ शब्द विशेषण होता है।

पुष्-पुष्यत, मुह्-मुह्यत्। तुदादिगणीय—सृज्-सृजत्, इष्—इच्छत्, प्रच्छ-पृच्छत्, मस्ज्-मज्जत्; मुच्-मुञ्चत्, सिञ्च-सिञ्चत्, कॄ-किरत्, स्पृश्-स्पृशत्, मृश्-मृशत । क्र्यादिगणीय—अश् अश्नत्, ज्ञा-जानत् । स्वादिगणीय—सु-सुन्वत्, श्रु-शृण्वत्, आप्-आप्नुवत्, चि-चिन्वत् । रुधादिगणीय—हिन्स-हिंसत्, छिद्-छिन्दत्, भिद्-भिन्दत् । अदादिगणीय—अद्-अदत्, रुद्-रुदत्, हन्-घ्नत्, इण-यत्, या-यात्, अस्-सत्, स्वप्-स्वपत्, श्वस्-श्वसत्, शास्-शासत्, रु-रुवत् । ह्वादिगणीय—हु-जुह्वत्, भी-बिभ्यत्, हा-जहत् । णिजन्त-कारि-कारयत्, स्मारि-स्मारयत्, स्थापि स्थापयत्, पालि-पालयत्, जनि-जनयत्, सनन्त-चिकीर्षत्, जिघृक्ष-जिघृक्षत् ।

२९ । अदादिगणीय—विद् धातु से परे शतृ के स्थान में विकल्प से वस् होता है, यथा-विद्वस्, विदत् (Knowing).

३० । कर्तृवाच्य में आत्मनेपदी धातु के उत्तर वर्त्तमान काल में शानच् होता है, श् च् इत् होता है आन् रहता है ।

३१ । धातु के उत्तर शानच् प्रत्यय होने पर लट् के आते (अन्ते) विभक्ति के सब कार्य्य होते हैं ।

३२ । आने मुक्—भ्वादि, दिवादि और तुदादि गणीय धातुओं के उत्तर शानच् के स्थान में मान होता है । यथा, भ्वादिगणीय-सेव्-सेवमान, वृत्-वर्त्तमान, वृध बर्द्धमान, व्यथ्-व्यथमान,

---

* उनमें से ई और त निकाल देने से जो बचता है वही शतृ प्रत्यय का रूप है ।

सह्-सहमान । दिवादिगणीय—जन्-जायमान, दीप्-दीप्यमान, पद्-पद्यमान, बुध्-बुध्यमान, विद्-विद्यमान । तुदादिगणीय—मृ-म्रियमाण, दृ-द्रियमाण, धृ-ध्रियमाण । अदादिगणीय—शी-शयान अधि-इ-अधीयान । तनादिगणीय—मन्, मन्वान । ह्वादिगणीय—मा-मिमान (Measuring)

३३ । अदादिगणीय आस् धातु के शानच् के स्थान में ईन् होता है । यथा-आस्-आसीन (Sitting)

३४ । कर्तृवाच्य में उभयपदी धातुओं के उत्तर वर्तमान काल में शतृ और शानच् दोनों होते हैं । यथा, भ्वादिगणीय—श्रि-श्रयत् , श्रयमाण ; नी-नयत्-नयमान ; हृ-हरत् हरमाण ; राज्-राजत्, राजमान; भज्-भजत्, भजमान ; यज्-यजत्, यजमान; वह् वहत्, वहमान; अदादिगणीय—द्विष्-द्विषत्, द्विषाण; दिह्-दिहत्, दिहान ; दुह्-दुहत्, दुहान ; स्तु-स्तुवत् स्तुवान्; ब्रू-ब्रुवत्, ब्रुवाण । ह्वादिगणीय—ददा-ददत्, ददान् ; धा-दधत्, दधान; भृ-बिभ्रत, बिभ्राण; रुधादिगणीय—रुन्ध-रुन्धत्, रुन्धान । तुदादिगणीय—तन्-तन्वत्, तन्वान; कृ, कुर्वत् कुर्वाण (Doing) । क्र्यादिगणीय—क्री-क्रीणत्, क्रीणान; (Parchasing) ग्रह-गृह्णत्, गृह्णान (Taking)

३५ । कर्म्मवाच्य में धातु के उत्तर वर्तमान काल में शानच् होता है ।

३६ । कर्म्मवाच्य के शानच् के स्थान में मान होता है । यथा, कृ-क्रियमाण, वच्-उच्यमान, दा-दीयमान, पा-पीयमान;

ग्रह्-गृह्यमाण, सेव्-सेव्यमान, वह् उह्यमान, दृश् दृश्यमान, कृष्-कृष्यमाण, सृज्-सृज्यमाण, ज्ञा ज्ञायमान ।

३७। शतृ और शानच् प्रत्यय द्वारा जो शब्द सिद्ध होते हैं वे सब विशेषण होते हैं, इस लिये विशेष्य पद के लिङ्ग विभक्ति और वचन प्राप्त होते हैं । यथा पश्यन् पुरुषः, पश्यन्तं पुरुषम्, पश्यता पुरुषेण, गच्छन्ती स्त्री, गच्छन्तीं स्त्रियम्, गच्छन्त्या स्त्रिया, पतत् फलम्, पतता फलेन, पततः फलस्य इत्यादि ।

क्वसु और कानच्

(Past Participle)

३८। लिटः कानज्वा क्वसुश्च। अतीत [भूत] काल में धातुओं के उत्तर परस्मैपद में क्वसु होता है। क, उ इत् होता है और वस् रहता है।

३९ । लिट् के उत्तम पुरुष के द्विवचन में जो सब कार्य्य होते हैं क्वसु होने पर भी धातु के इट् भिन्न वे ही सब कार्य्य होते हैं। यथा, श्रु शुश्रुवस (having heard) विद् विविद्वस् मृद्-ममृद्वस् स्तु-तुष्टवस्, भू-बभूवस् कृ-चकृवस् ।

४०। वस्वेकाजाद्घसाम्—क्वसु होने से घस्, इन् और आकारान्त धातु के उत्तर इट् होता है। यथा घस्-जक्षिवस्, इन्-इयिवस्, स्था- तस्थिवस् दा-ददिवस्, पा-पपिवस् ।

४१। अभ्यस्त कार्य होने पर जो सब धातु एक स्वरविशिष्ट रहते हैं क्वसु प्रत्यय होने पर उन सब धातुओं के उत्तर इट्

होता है यथा, पच्-पेचिवस्, सद्-सेदिवस्, अद्-आदिवस्, पत्-पेतिवस्, वच्-ऊचिवस्, वस्-उषिवस्, यज् ईजिवस्

४२। विभाषागम् हन् विद्ध विशाम दृशेश्च। क्वसु प्रत्यय होने पर गम्, हन्, विश्, दिश् और विन्द् धातु के उत्तर विकल्प से इट् होता है। यथा, गम्-जग्मिवस्; जगन्वस्; हन्-जघ्निवस्, जघन्वस्; विश्- विविशिवस्, विविश्वस्; दृश- ददृशिवस्, ददृश्वस्; विन्द्-विविदिवस् विविद्वस्।

४३। अतीत काल में लकारके उत्तर आत्मनेपद में कानच् होता है क्, च्, इत् होता है और आन रहता है।

४४। कानच् होने पर लिट् धातु के आते विभक्ति के सब कार्य होते हैं। यथा, युध्-युयुधान, रुच्-रुरुचान, वन्द्-ववन्दान, शिक्ष, शिशिक्षाण, व्यथ-विव्यथान, सह्-सेहान, कृ-चक्राण, वच्-ऊचान।

४५। क्वसु और कानच् प्रत्यय द्वारा जो सब शब्द सिद्ध होते हैं वे सब विशेषण होते हैं, इस लिए (उनमें) विशेष्य के लिङ्ग, विभक्ति और वचन प्राप्त होते हैं। यथा शुश्रुवान् पुरुषः, शुश्रुवांस पुरुषम्, शुश्रूषा पुरुषेण, विविदुषी कन्या, विविदुषीं कन्याम्, विवदुष्या कन्यया; पेतिवः पत्रम्, पेतुषा पत्रेण इत्यादि।

स्यतृ और स्यमान

Future, Past Participle.

४३। भविष्यत् काल में परस्मैपदी धातु के उत्तर कर्तृ-वाच्य में स्यत होता है। ऋ इत्, स्यत् रहता है।

४७। लृट् विभक्ति में गुण इट् आदि जो सब कार्य्य होते हैं वेही सब कार्य स्यतृ प्रत्यय होने पर भी होते हैं। यथा, भू-भविष्यत्; गम्-गमिष्यत्; श्रु-श्रोष्यत् जि-जेष्यत्; या-यास्यत्, स्था-स्थास्यत्, पा-पास्यत्, दृश्-द्रक्ष्यत्, हन्-हनिष्यत्, मृ-मरिष्यत्, पत्-पतिष्यत्, कारि-कारयिष्यत्, दर्शि-दर्शयिष्यत्, योजि-योजयिष्यत्।

४८। भविष्यत् काल में आत्मनेपदी धातु के परे कर्तृ-वाच्य में स्यमान होता है। स्यमान परे रहने से भी लट् विभक्ति के सब कार्य होते हैं। यथा सेव्-सेविष्यमाण, वृत्-वर्तिष्यमाण, व्यथ्-व्यथिष्यमाण, जन्-जनिष्यमाण, पद्-पत्स्यमाण, सह्-सहिष्यमाण।

४९। भविष्यत् काल में उभयपदी धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में स्यत् और स्यमान दोनों होते हैं। यथा, स्तु-स्तोष्यत् स्तोष्यमाण; दा-दास्यत्, दास्यमान; धा-धास्यद्-धास्यमान्; ग्रह-ग्रहीष्यत् ग्रहीष्यमाण; कृ-करिष्यत्, करिष्यमाण।

५०। भविष्यत् काल में धातु के उत्तर कर्म्मवाच्य में स्यमान होता है। यथा, ज्ञा-ज्ञायिष्यमाण, ज्ञास्यमान; श्रु-श्राविष्यमाण, श्रोष्यमाण; कृ-करिष्यमाण, करिष्यमाण; दृश् दर्शिष्यमाण, द्रक्ष्य-

माण; दह्-धक्ष्यमाण, वच्-वक्ष्यमाण।

५१। स्यतृ और स्यमान प्रत्यय द्वारा जो शब्द सिद्ध होते हैं वे विशेषण होते हैं। इस लिये [उनमें] विशेष्य लिङ्ग विभक्ति और वचन होते हैं। यथा, गमिष्यन् पुरुषः, गमिष्यन्तौ पुरुषौ, गमिष्यन्तः पुरुषाः, गमिष्यन्तं पुरुषम्, गमिष्यता पुरुषेण, जनिष्यमाणा कन्या जनिष्यमाणां कन्याम्, जनिष्यमाणया कन्यया; पतिष्यत् पत्रम्, पतिष्यता पत्रेण, पतिष्यतः पत्रस्य इत्यादि। करिष्यमाणंकर्म्म, करिष्यमाणे कर्म्मणि, करिष्यमाणानि कर्म्माणि, करिष्यमाणेन कर्म्मणा, करिष्यमाणात् कर्म्मणः करिष्यमाणे कर्म्मणि। वक्ष्यमाणं वचनम्, वक्ष्यमाणेन वचनेन, वक्ष्यमाणात् वचनात्, वक्ष्यमाणस्य वचनस्य, वक्ष्य माणेषु, वचनेषु इत्यादि।

तुमुन् - Adverb

५२। **तुमन् णमुलौ क्रियायां क्रियार्थाम्। सामान कर्तृकेषु तुमन्**—यदि दो क्रियाओं में एक कर्ता हो तो दोनों क्रियाओं के मध्य में निमित्त अर्थ बोधक धातु के परे तुमुन् होता है। उ न् इत्, तुम् रहता है।

५३। लुट् विभक्ति में धातु के परे जो सब कार्य्य होते हैं वे सब कार्य तुमुन होने पर भी होते हैं। यथा; दृश-द्रष्टुम् याति, भुज्-भोक्तुमभिलषति, अधीङ्-अध्येतुमिच्छति, पत्-पतितुम्, भू-भवितुम्; शी-शयितुम, बुध-बोद्धुम्, कृ-कर्तुम्, ग्रह्-ग्रहीतुम्,

दा-दातुम् , स्था-स्थातुम् , ज्ञा-ज्ञातुम् , जि-जेतुम् , यज्-यष्टुम् , सृज्-स्रष्टुम् , वह्-वोढुम् , श्रु-श्रोतुम् , स्तु-स्तवितुम, स्तोतुम् , सह्-सहितुम् , सोढुम् , क्रम् क्रमितुम् , खद्-खदितुम, पत्-पतितुम् , फल्-फलितुम् , गम्-गन्तुम् , हन्-हन्तुम् , तृ-तरितुम् , तरीतुम् , सेव्-सेवितुम् , वृत्-वर्तितुम् , भ्रम् , भ्रमितुम् , विद्-वेदितुम् ; रुद्-रोदितुम, शास्-शासितुम् नृत्-नर्तितुम् , कारि-कारयितुम् , स्थापि-स्थापयितुम् , मोचि-मोचयितुम् ।

५४ । **पर्य्याप्तवचनेनष्वलमर्थेषु**—समार्थार्थक शब्द के योग में धातु के परे तुमुन् होता है । यथा, वोढुं समर्थः , भोक्तुं पटुः, वक्तुं निपुणः , कारयितुं कुशलः योजयितुं प्रवीणः ।

५५ । **काल समयवेलासुतुमुन्**—कालवाचक शब्द के योग में धातु के उत्तर तुमुन होता है । यथा; गन्तुं—समयोऽयम् , अध्येतुं कालोऽयम् , शयितुं वेलेयम् ।

णमुल्

५६ । **आभीक्ष्ण्ये णमुल्च** पौनः पुन्य अर्थ बोध होने से पूर्व-कालिक क्रियावाचक धातु के उत्तर णमुल् होता है । ण उल् इत् , अम् रहता है । यथाः-स्मृ-स्मारम् , श्रु-श्रावम् , स्तु-स्तावम् , नम् नामम् , ग्रह-ग्राहम् , भुज्-भोजम् , भिद्-भेदम् , क्षिप् क्षेपम् , मृश् मर्शम्, स्पृश्-स्पर्शम् , हस्-हासम, गाह्-गाहम, सेव्-सेवम् ।

५७ । णमुल् प्रत्यय परे रहने से हन् धातु के स्थान में घात् होता है । यथा, घातम् ।

५८। णमुल् प्रत्यय से बने पद का प्रयोग के समय द्वित्व प्राप्त होता है। यथा, स्मारं स्मारम् Having repeatedly remembered ग्राहं ग्राहम्, घातं घातम्।

५९। अन्यथा एवम्, कथम् और इत्थम् शब्द के परवर्ती कृ धातु के उत्तर णमुल् होता है। यहाँ, अन्यथा कारम् Differently एवं कारम्, कथं कारम् in this manner इत्थं कारम्।

६०। कर्म्मणि दृशिविदो साकल्ये:—साकल्य अर्थबोध होने से कर्मपद से परे दृश् और विद् धातु के उत्तर णमुल होता है। यथा, दरिद्रदर्शंददाति, सर्वान् दरिद्रान् दृष्टा ददातीत्यर्थं, दरिद्रवेदम, विप्र वेदम्।

६१। यावति विन्दजिवोः—यावत् शब्द के परवर्ती जीव् धातु के उत्तर णमुल होता है यथा, यावज्जीवमधीते। (Studies to the last moment of one's life)

६२। चर्म्मोदिरयोः पूरेः—उदर (१) शब्द के परवर्ती पूरी धातु के उत्तर णमुल् होता है। यथा, उदरपूरं भुङ्क्ते, उदरं पूरयित्वा भुङ्क्ते इत्यर्थः।

६३। मिर्मूल समूलयोः कषः। समूलाकृतजीवेषुहन् कृञ् ग्रहः—समूल (१) शब्द के परवर्ती कष और हन् धातु के उत्तर णमुल होता है। यथा समूलकासं कषति हन् धातु के हकार के

(१) कर्म्मवाचक।

स्थान में घ् और न् के स्थान में त् होता है समूल घातं हन्ति (Kills totally) (२) ।

६४ । जीव शब्द के परवर्ती ग्रह् धातु के उत्तर णमुल् होता है । यथा, जीव ग्राहं गृह्णाति (captures him alive)

६५ । हस्तेवर्त्ति 'ग्रहो:—हस्तवाचक (३) शब्द के परवर्ती ग्रह् धातु के उत्तर णमुल् होता है । यथा-हस्तग्राहं गृह्णाति,—हस्तेन गृह्णातीत्यर्थः, पाणिग्राहम्, करग्राहम् । (Takes one by the hand)

६६ । स्वेपुषः—स्ववाचक (३) शब्द के परवर्ती पुष् धातु के उत्तर णमुल् होता है । यथा, स्वपोषंपुष्णाति, स्वेन पुष्णातीत्यर्थः । धनपोषम्, अन्नपोषम्, मातृपोषम्, स्वधनेन, स्वान्नेन, स्वमात्रा, पुष्णातीत्यर्थः ।

६७ । उद्ध्वें शुषिशुषिपूरोः—कर्तृ विशेषण ऊद्ध्व शब्द के परवर्ती शुष् धातु के उत्तर णमुल् होता है । यथा, उद्ध्वशोषं शुष्यति तरुः, तरुरुद्ध्वएव तिष्ठन् शुष्यतीत्यर्थः ।

६८ । उपमानेकर्म्मणिच—उपमानवाचक कर्तृपद तथा

---

१ क्रिया विशेषण वाचक । (१६पृष्ट के समूल का नोट)

२ यहाँ से जिस धातु के परे णमुल् विहित होगा । उस धातु का फिर प्रयोग करना होगा । इस लिये सब उदाहरणों में फिर उन्हीं धातुओं का प्रयोग देखा जायगा ।

३ करणबोधक ।

कर्मपद के परवर्ती धातु के उत्तर णमुल् होता है। यथा, विद्युत् प्रणाशं प्रणष्टः विद्युदिव क्षणेनैव विनष्ट इत्यर्थः, शलभनाशं नश्यति, शलभइव अविमृश्यकारी पुरुषो नश्यतीत्यर्थः (पितृवेदंवेत्ति गुरुम्, गुरु, पितरमिवजानातीत्यर्थः) पुत्रदर्शं पश्यति शिष्यम् शिष्यं पुत्रमिवस्नेहेनपश्यतीत्यर्थः।

ल्यप् (Adverb)

६९। **समासेऽनञ् पूर्वोक्तो ल्यप्**—नञ् भिन्न अव्यय-पद के साथ समास होने से पूर्व्वकालिक क्रियावाचक धातु के उत्तर ल्यप् होता है। ल् प् इत् (Drop) होता है य रहता है। यथा, आ-घ्रा-आघ्राय, आ दा-आदाय, वि-धा-विधाय, अपि-धा-अपिधाय, प्र-स्था-प्रस्थाय, वि-हा-विहाय, वि-आ-ख्या व्याख्याय, वि-ज्ञा-विज्ञाय, आ-लिङ्ग-आलिङ्ग्य, सम्-त्यज्-सन्त्यज्य, वि-भज्-विभज्य, प्रनि प्रत्-प्रणिपत्य; प्र-आप्-प्राप्य; प्र-कम्प्-प्रकंप्य, आ-रभ् आरभ्य; नि-शम्-निशाम्य; वि-श्रम्-विश्रम्य, आ सेव्-आसेव्य, शम्-रक्ष संरक्ष्य; उत्-अस्-उदस्य, अभि-अस्-अभ्यस्य, नि-श्वस् निश्वस्य; वि-हस् विहस्य, वि-गर्ह्-विगर्ह्य।

७०। ल्यप् प्रत्यय के परे धातु के अन्त्यस्वर का और उपधा लघुस्वर का गुण नहीं होता। * यथा; वि-जि-विजित्य, सम्-चि-सञ्चित्य, अधि-ई-अधीत्य, प्र-इ-प्रेत्य, आ-श्रि-आश्रित्य, सम्-श्रि-

* ह्रस्व स्वरान्त धातुओं के परे तु जोड़ा जाता है। तु में उ का लोप होता है और त रहता है।

संश्रित्य, वि-स्मि-विस्मित्य, आ-नी आनीय, वि-नी-विनीय, सम-श्रु-संश्रुत्य, सम्-स्तु-संस्तुत्य, उत् प्लु, उत्प्लुत्य, वि-धू-विधूय, सम्-भू सम्भूय, प्र-सू प्रसूय, आ-हृ-आहृत्य, वि-धृ-विधृत्य, आ-वृ-आवृत्य, प्र हृ-प्रहृत्य, सम्-सृ-संसृत्य, सम् स्मृ-संस्मृत्य, प्र-कृ-प्रकृत्य, द्विधा-कृ-द्विधाकृत्य, नाना-कृ-नानाकृत्य, आ-लिख्-आलिख्य, उत्-मुच्-उन्मुच्य, सम्-भुज्-सम्भुज्य, नि-युज्-नियुज्य, वि सृ-विसृत्य, आ-छिद् आछिद्य, वि-भिद्-विभिद्य, नि-रुध्-निरुध्य, सम्-क्षिप्-संक्षिप्य, प्र-कुप्-प्रकुप्य, विलुप्-विलुप्य, वि-सृप्-विसृप्य, प्र-विश्-प्रविश्य, सम्-स्पृश्-संस्पृश्य- आ-कृष्-आकृष्य, निर्-पिष-निष्पिष्य, वि-शिष्- विशिष्य, आ-श्लिष् आश्लिष्य, सम्-दिह् सन्दिह्य, आ-रुह्-आरुह्य वि-सह्-विसह्य, वि-गाह् विगाह्य, अव-गाह्-अवगाह्य।

७१। ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्—ल्यप् प्रत्यय परे रहने से हन् मन् तन् आदि धातुओं के न के स्थान में त् होता है। यथा, आ-हन्-आहत्य, सम्-मन् सम्मत्य, वि-तन्-वितत्य।

७२। वाल्यपि—ल्यप् परे रहने से यम्, रम, गम् आदि धातुओं के म् के स्थान में विकल्प से त् होता है। यथा, सम्-यम् संयत्य, संयम्य, वि-रम्-विरम्य, विरत्य, प्र-नम्-प्रणम्य प्रणत्य, आ गम्-आगम्य, आगत्य।

७३। ल्यप् परे रहने से सन् ज् आदि धातुओं के उपधा नकार का लोप होता है। यथा, आ-सन् ज् आसज्य, प्र शंस्-

प्रशस्य, सम्-दन्श् संदश्य, वि-स्रन्स् विस्रस्य, प्र-भ्रन्श प्रभ्रुश्य, प्र-मन्थ्-प्रमथ्य।

७४। ल्यप् परे रहने से शी के स्थान में शय, प्रच्छ के स्थान में पृच्छ और ग्रह् के स्थान में गृह होता है। यथा, अधि-शी-अधिशय्य, आ-प्रच्छ-आपृच्छ्य, सम् ग्रह संगृह्य, वि-ग्रह्-विगृह्य नि-ग्रह्-निगृह्य।

७५। टिप:—ल्यप् परे रहने से ह्वे धातु के स्थान में हू और चि धातु के स्थान ची होता है। यथा, आ-ह्वे-आहूय, प्र-चि-प्रचीय।

७६। ल्यप् परे रहने से स्वप्, वच्, वप्, वस्, वह् और वद् धातु के अकार सहित व के स्थान में उ होता है। यथा, सम्-स्वप्-संसुप्य, प्र-वच्-प्रोच्य, सम्-वच्-समुच्य, अधि वस् अध्युष्य, प्र-वह्-प्रोह्य, अनु-वद्-अनुद्य।

७७। ल्यप् परे रहने से धातु के दीर्घ ॠ के स्थान में ईर होता है। यथा, वि-कॄ-विकीर्य्य, उत् गॄ-उद्गीर्य्य वि-तॄ-वितीर्य्य, वि दॄ-वि दीर्य्य, वि-शॄ-विशीर्य्य, विस्तॄ-विस्तीर्य्य।

७८। ल्यप् परे रहने से णिच् का लोप होता है। यथा-नि मीलि-निमील्य, वि-चारि-विचार्य्य, सम्-प्र-धारि-सम्प्रधार्य्य् सम्-स्थापि-संस्थाप्य, प्र-काशि प्रकाश्य, वि-नाशि विनाश्य, आ-श्वासि-आस्वाश्य, उत्-सारि-उत्सार्य्य, अधि-आपि अध्याप्य, सम्-अर्पि-समर्प्य, वि-दारि-विदार्य्य, आ-लोचि आलोच्य, सम्-पीडि-सम्पीड्य,

निर्-पीडि-निष्पीड्य, आ-छादि-आच्छाद्य, आ-स्वादि-आस्वाद्य, आ-राधि-आराध्य ।

७९ । ल्यपि लघुपूर्व्वात्—णिच् का पूर्ववर्ती स्वर यदि लघु हो तो ल्यप् परे रहने से णिच् के स्थान में अय् होता है । यथा-वि-गणि विगणय्य, वि-रचि विरचय्य, प्र-नमि-प्रणमय्य, वि-रमि-विरमय्य, सम्-घटि-संघटय्य, वि-रहि-विरहय्य ।

८० । विभाषायाः—ल्यप् परे रहने से, आप् धातु के णिच् के स्थान में अय् होता है और पक्षान्तर में णिच् का लोप भी होता है । यथा, प्र-आपि-प्रापय्य, प्राप्य, सम्-आपि-समापय्य, समाप्य ।

८१ । तुमुन्, णमुल् और ल्यप् प्रत्यय से बने शब्द अव्यय होते हैं, इस लिये उनके उत्तर विभक्ति नहीं रहती । ये असमापिका क्रिया हैं । इस लिये इसको असमापिका क्रिया या पूर्व्व-कालिक क्रिया कहते हैं ।

निष्ठा

Past Participle.

(क्त क्तवतु)

८२ । क्त क्तवतू निष्ठा—धातु के उत्तर अतीतकाल में क्त और क्तवतु प्रत्यय होते हैं क उ इत्, त और तवत् रहता है; इन दोनों प्रत्ययों का नाम निष्ठा है ।

८३। तिङन्त प्रकरण में जो सब धातु अनिट् नाम से निर्दिष्ट हैं, निष्ठाप्रत्यय परे रहने से उन धातुओं के उत्तर इट् नहीं होता। यथा, ख्या-ख्यातः, (famous,) ख्यातवान्। ज्ञा-ज्ञातः ज्ञातवान्, ध्या-ध्यातः, ध्यातवान्, या-यातः, यातवान्, स्ना स्नातः स्नातवान्, इ-इतः इतवान्; चि-चितः चितवान्, जि-जितः जितवान, स्मि-स्मितः स्मितवान्; क्री-क्रीतः क्रीतवान्, नी-नीतः नीतवान्, प्री-प्रीतः प्रीतवान्, भी-भीतः भीतवान्; द्रु-द्रुतः द्रुतवान्; धू-धूतःधूतवान्, श्रु-श्रुतः श्रुतवान्, स्तु-स्तुतः स्तुवान्, स्नु-स्नुतः स्नुतवान्, हु हुतः हुतवान्, कृ कृतः कृतवान्, हृ हृतः हृतवान्, धृ-धृतः धृतवान्, भृ भृतः भृतवान्, मृ-मृतः मृतवान्, स्तृ-स्तृतः स्तृतवान्, स्तृ-स्तृतः स्तृतवान्, स्मृ-स्मृतः स्मृतवान्, ह्व-ह्वृतः ह्वृतवान्।

८४। तिङन्त प्रकरण में साधारण नियमों से जो सब कार्य्य होते हैं वे सब निष्ठा प्रत्यय परे रहने से भी यथा, सम्भव होते हैं (१) यथा, शक्-शक्तः शक्तवान्; मुच्-मुक्तः मुक्तवान्; रिच्-रिक्तः रिक्तवान्; सिच्-सिक्तः सिक्तवान्; त्यज्-त्यक्तः त्यक्तवान्; भज्-भक्तः भक्तवान्; भुज्-(२) भुक्तः भुक्तवान्; युज्-युक्तः युक्तवान्; सृज्- सृष्टः सृष्टवान्; क्रुध् क्रुद्धः क्रुद्धवान्; बुध्-बुद्धः बुद्धवान्; युध्-युद्धः युद्धवान्; राध्-राद्धः राद्धवान्;

(१) क्त्वा और क्तिन् प्रत्यय के स्थान में भी यही नियम है।

(२) रुधादिगणीय भोजनार्थक।

रुध्-रुद्धः रुद्धवान्; शुध्-शुद्धः शुद्धवान्; सिद्ध-(१) सिद्धः सिद्धवान्; आप्-आप्तः आप्तवान्; क्षिप्-क्षिप्तः क्षिप्तवान्; तप्-तप्तः तप्तवान्; तृप्-तृप्तः तृप्तवान्; दृप्-दृप्तः, दृप्तवान्; लिप्-लिप्तः लिप्तवान्; लुप्-लुप्तः लुप्तवान्; शप्-शप्तः शप्तवान्; रभ्-(२) रब्धः रब्धवान्; लभ् लब्धः लब्धवान्; दिश्-दिष्टः दिष्टवान्; दृश्-दृष्टः दृष्टवान्; विश विष्टः विष्टवान्; स्पृश्-स्पृष्ट', स्पृष्टवान्, कृष-कृष्टः कृष्टवान्; तुष् तुष्टः तुष्टवान्; दुष्-दुष्टः-दुष्टवान्; पिष्-पिष्टः पिष्टवान्; पुष्-पुष्टः पुष्टवान्; मृष्-मृष्टः मृष्टवान्, शिष्-शिष्टः शिष्टवान्; श्लिष्-श्लिष्टः श्लिष्टवान्; दह्-दग्धः दग्धवान्; दिह्-दिग्धः दिग्धवान्; नह्-नद्धः नद्धवान्; रुह्-रूढः रूढवान्; लीह्-लीढः लीढवान्।

८५। तिङन्त प्रकरण में जिन सब धातुओं के उत्तर इट् होता है, निष्ठा प्रत्यय के परे होने से उन्हीं सब धातुओं के उत्तर इट् होता है। यथा, लिख्-लिखितः लिखितवान्; लिङ्ग-लिङ्गितः लिङ्गितवान्; लङ्घ-लङ्घितः लङ्घितवान्; श्लाघ्-श्लाघितः श्लाघितवान्; अर्च्-अर्चितः अर्चितवान्; चर्च्-चर्चितः चर्चितवान्

---

(१) दिवादिगणीय सिद्धार्थ।

(२) जिन धातुओं के अन्त में भ् रहता है क्त प्रत्यय करने से त स्थान में ध और भ के स्थान मे व होता है जिन धातुओं के अन्त में च् एवं ज् रहता है क्त प्रत्यय करने से च् के स्थान में क और ज के स्थान में ग होता है। जैसे—भुज्—भुग्नः भज्—भग्नः मुच्—मुक्तः। रिच्-रिक्तः।

याच्-याचितः याचितवान्; वञ्च्-वञ्चितः वञ्चितवान्; तर्ज्-तर्जितः तर्जितवान्; राज्-राजितः राजितवान्; उज्झ्-उज्झितः उज्झितवान्; घट्-घटितः घटितवान् चेष्ट्-चेष्टितः; चेष्टितवान्; त्रुट्-त्रुटितः त्रुटितवान्; वेष्ट्-वेष्टितः वेष्टितवान्; स्फुट्-स्फुटितः स्फुटितवान्; कुण्ठ्-कुण्ठितः कुण्ठितवान्; पठ्-पठितः पठितवान्; लुण्ठ्-लुण्ठितः लुण्ठितवान्; क्रीड् क्रीड़ितः क्रीड़ितवान्; पिण्ड्-पिण्डितः पिण्डितवान्; मुण्ड्-मुण्डितः मुण्डितवान्; लोड्-लोड़ितः लोड़ितवान्; घूर्ण्-घूर्णितः घूर्णितवान्; पण्-पणितः पणितवान्; पत्-पतितः पतितवान्; प्रथ्-प्रथितः प्रथितवान्; व्यथ्-व्यथितः व्यथितवान्; क्रन्द्-क्रन्दितः क्रन्दितवान्; नर्द्-नर्दितः नर्दितवान्; निन्द्-निन्दितः निन्दितवान्; नन्द्-नन्दितः नन्दितवान्; मुद् मुदितः मुदितवान्; रुद्-रुदितः रुदितवान्; विद्-विदितः विदितवान् बाध्-बाधितः बाधितवान्; स्पर्द्ध-स्पर्द्धितः स्पर्द्धितवान्; कुप्-कुपितः कुपितवान्; कम्प्-कम्पितः कम्पितवान्; जल्प्-जल्पितः जल्पितवान्; गुम्फ्; गुम्फितः गुम्फितवान्; चुम्ब्-चुम्बितः चुम्बितवान्; लम्ब्-लम्बितः लम्बितवान्; क्षुभ्-क्षुभितः क्षुभितवान्; जृम्भ्-जृम्भितः जृम्भितवान्; स्तिम्-स्तिमितः स्तिमितवान्; श्रय्-श्रयितः श्रयितवान्; त्वर्-त्वरितः त्वरितवान्; चर्-चरितः चरितवान्; त्वर्-त्वरितः त्वरितवान्; स्फुर्-स्फुरितः स्फुरितवान्; गल्-गलितः गलितवान्; चल्-चलितः चलितवान्; ज्वल्-ज्वलितः ज्वलितवान्; दल्-दलितः दलितवान्; मिल्-

मिलितः मिलितवान्; मील-मीलितः मीलितवान्; वेल्ल-वेल्लितः वेल्लितवान्; शल्-शलितः शलितवान्; शील्-शीलितः शीलितवान्; स्खल-स्खलितः स्खलितवान्; खर्व्-खर्वितः, खर्वितवान्; गर्व्-गर्वितः गर्वितवान्; जीव्-जीवितः जीवितवान्; धाव् धावितः धावितवान्; सेव्-सेवितः सेवितवान्; अश् (१) अशितः अशितवान्; काश्-काशितः काशितवान्; ईक्ष्-ईक्षितः, ईक्षितवान्; काङ्क्ष्-काङ्क्षितः काङ्क्षितवान्; तृष्-तृषितः तृषितवान्; भिक्ष्-भिक्षितः भिक्षितवान्; रक्ष्-रक्षितः रक्षितवान्; लक्ष्-लक्षितः लक्षितवान्; शिक्ष् शिक्षितः शिक्षितवान्; भर्त्स्-भर्त्सितः भर्त्सितवान्; रस्-रसितः रसितवान्; लस्-लसितः, लसितवान्; श्वस् श्वसितः श्वसितवान्; शंस्-शंसितः शंसितवान्; हस्-हसितः हसितवान्; हिंस्-हिंसितः हिंसितवान्; ईह्-ईहितः ईहितवान्; ऊह्-ऊहितः ऊहितवान्; गर्ह्-गर्हितः गर्हितवान्; रह्-रहितः रहितवान्।

८६। निष्ठा प्रत्यय के योग में इट् परे रहने से णिच् का लोप होता है। यथा, कारि-कारितः कारितवान्; (२) चालि-चालितः चालितवान्; पालि पालितः पालितवान्; अर्पि-अर्पितः अर्पितवान्; स्थापि-स्थापितः स्थापितवान्; श्रावि-श्रावितः श्रावितवान्; रोपि-रोपितः रोपितवान्; जनि-जनितः जनितवान्।

---

१ क्र्यादिगणीय भोजनार्थक।

२ Caused to be made.

८७। **निष्ठा शीङ् स्विदिमिदिक्ष्विदिधृषः**—निष्ठा प्रत्यय परे रहने से शी धातु के स्थान में शय् होता है। यथा, शयितः, शयितवान्।

८८। निष्ठा प्रत्यय परे रहने से श्रि, उकारान्त, ऊकारान्त और वृ धातु के उत्तर इट् नहीं होता। यथा, श्रि-श्रितः श्रितवान्; यु-युतः युतवान्; रु-रुतः रुतवान्; नु-नुतः नुतवान्; स्नु-स्नुतः स्नुतवान्; धू-धूतः धूतवान्; पू-पूतः पूतवान्; भू-भूतः भूतवान्; सू-(१) सूतः सूतवान्; वृ-वृतः वृतवान्।

८९। गण पाठ के समय जो सब धातु ईकार संयुक्त रहते हैं निष्ठा प्रत्यय के परे उन सब धातुओं के उत्तर इट् नहीं होता। यथा, दीप-दीप्तः दीप्तवान्; त्रस्-त्रस्तः त्रस्तवान्; पृच् पृक्तः पृक्तवान्।

९०। दूसरे प्रकरणों में जिन सब धातुओं के उत्तर विकल्प से इट् विधान है निष्ठा प्रत्यय के परे उनके उत्तर इट् नहीं होता। यथा, इष्-इष्टः इष्टवान्, गुप्-गुप्तः गुप्तवान्, दृप-दृप्तः दृप्तवान्; लुप्-लुप्तः लुप्तवान्; अस्-[२] अस्तः अस्तवान्; गस्-गस्तः गस्तवान्; वृष्-वृष्टः वृष्टवान्; घृष् घृष्टः घृष्टवान; मृज्-मृष्टः मृष्टवान्; गाह्-गाढः गाढ़वान्; गुह्-गूढ़ः गूढ़वान्; स्निह्-स्निग्धः; स्निग्धवान्; मुह्-मुग्धः मुग्धवान्; मूढ़ मूढ़ः मूढ़वान्; सह्-सोढ़ः सोढ़वान्।

---

१ अदादिगणीय।

२ दिवादिगणीय क्षेपणार्थक।

९१। निष्ठा प्रत्यय परे रहने से दिव्-ष्ठिव् और सिव धातु के व के स्थान में ऊकार होता है (१) यथा, दिव्-द्यूतः द्यूत वान्; ष्ठिव्-ष्ठियूतः ष्ठ्यूतवान; सिव्-स्यूतः स्यूतवान्।

९२। निष्ठा प्रत्यय परे रहने से क्रम् आदि धातु के अ के स्थान में आ होता है (२) यथा, क्रम्-क्रान्तः क्रान्तवान्; क्लम्-क्लान्तः क्लान्तवान्; क्षम्-क्षान्तः क्षान्तवान्; चम्-चान्तः चान्तवान्; तम-तान्तः तान्तवान्, दम-दान्तः- दान्त-वान्; वम् वान्तः वान्तवान्; शम्-शान्तः, शान्तवान्; श्रम्-श्रान्तः, श्रान्तवान्।

९३। **अनुदात्तोपदेशवनति तनोत्यादी नामनुनासिकलोपो झलिक्ङिति।** निष्ठा प्रत्यय परे रहने से गम्, नम्, यम्, रम्, क्षण, तन्, मन् और हन् धातुओं के अन्त्यतवर्ण का लोपहोता है। यथा, गम्-गत गतवान्; नम्-नतः नतवान्; यम्-यतः यतवान्; मन मतः मतवान्; हन्-हतः हतवान्।

९४। निष्ठा प्रत्यय परे रहने से, खन्, जन्, और सन् धातु के स्थान में क्रम से खा, जा, सा होता है। यथा खन-खातः खातवान्; जन्-जातः जातवान्; सन्-सातः सातवान्।

९५। निष्ठा प्रत्यय परे रहने से, दन्श् आदि धातुओं के उपधा नकार का लोप होता है। यथा दन्श् दष्टः दष्टवान्;

---

(१) क्तिन प्रत्यय के स्थान में भी यही नियम है। क्त्वा के स्थान में इट् होने से नहीं होता।

(२) क्तिन् प्रत्यय के स्थान में भी यही नियम है। क्त्वा के स्थान में इट होने से नहीं होता।

रन्ज्-रक्तः रक्तवान्; सञ्ज् सक्तः सक्तवान्; बन्ध-बद्धः बद्धवान्; स्तम्भ-स्तब्धः स्तब्धवान्; भ्रंश भ्रष्टः भ्रष्टवान्; स्रुम्भ स्रब्ध-स्रब्धवान्; ध्वन्स-ध्वस्तः ध्वस्तवान्; स्रन्स-स्रस्तः स्रस्तवान्; शन्स-शस्तःशस्तवान्; ग्रन्थ ग्रथितःग्रथितवान्; मन्थ-मथितःमथितवान्।

९६। निष्ठा प्रत्यय परे रहने से दकारान्त धातु के द् और उसके परवती निष्ठा के त के स्थान में न होता है। यथा क्लिद्-क्लिन्नः क्लिन्नवान्; क्षुद्-क्षुण्णः क्षुण्णवान्; खिद्-खिन्नः खिन्नवान्; छिद्-छिन्नः छिन्नवान्; भिद्-भिन्नः भिन्नवान्; पद्-पन्नः, पन्नवान्; सद्-सन्नः सन्नवान्। मद् का धातु का नहीं होता। यथा, मत्तः, मत्तवान्।

९७। ओदितश्च-ल्वादिभ्यः—गणपाठ के समय जो सब धातु उकार सयुक्त रहते हैं, उनके उत्तर निष्ठा प्रत्यय के त का न हो जाता है यथा रुज्-रुग्णः, रुग्णवान्; विज्-विग्नः, विग्नवान्; भुज्- (१) भुग्नः भुग्नवान्; भञ्ज्-भग्नः, भुग्नवान्; सस्जज् धातु के स का लोप होता है। मग्नः, मग्नवान्; दू-दूनः दूनवान; सू- (२) सूनः, सूनवान्; लू-लूनः लूनवान; दी-दीनः दीनवान; जी-डीनः डीनवान्। क्षि धातु का इकार दीर्घ होता है। क्षीणः क्षीणवान्।

९८। रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्व्वस्य च दः। र पूर्व में

(१) तुदादिगणीय वक्राणार्थक।

(२) दिवादिगणीय।

रहने से निष्ठा के त के स्थान में न होता है । यथा, गूर्-गूर्णः, गूर्णवानः; पूर्-पूर्णः, पूर्णवान्; चूर्-चूर्णः चूर्णवान् ।

९९। निष्ठा प्रत्यय परे रहने से दीर्घ ऋकारान्त धातु के ऋ के स्थान में ईर् होता है । यथा, कॄ-कीर्णः कीर्णवान्; गॄ-गीर्णः गीर्णवान्; जॄ-जीर्णः जीर्णवान्; तॄ-तीर्णः तीर्णवान्; दॄ-दीर्णः दीर्णवान्, शॄ-शीर्णः शीर्णवान्, स्तॄ-स्तीर्णः स्तीर्णवान् ।

१००। **संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः**—ग्ला, म्ला, द्रा, और स्त्या धातु के निष्ठा सम्बन्धी त के स्थान में न होता है । यथा, ग्ला-ग्लानः ग्लानवान्; म्ला म्लानः म्लानवान्, द्रा-द्राणः द्राण्-वान्, स्त्या-स्त्यानः स्त्यानवान् ।

१०१। **नुदविदोन्दत्राघ्राह्रीभ्योऽन्यतरस्याम्**—ह्री, घ्रा, त्रा, नुद् और विन्द् (विद्) धातु के निष्ठा का त और उसका पूर्व-वर्ती द् विकल्प से न होता है । यथा, ह्री-ह्रीणः ह्रीतः, ह्रीणवान्, ह्रीतवान्; घ्रा घ्राणः, घ्रातः, घ्राणवान् घ्रातवान्; त्रा-त्राणः, त्रातः, त्राणवा , त्रातवान्; नुद्-नुन्नः, नुत्तः, नुन्नवान, नुतवान्; विन्द्, विन्नः, वित्तः, विन्नवान्, वित्तवान् ।

१०२। **क्लिशः क्त्वानिष्ठयोः रुष्यमत्वरसंघुषास्वनाम्—हृषेर्लोमसु** । निष्ठा प्रत्यय परे रहने से, क्लिश्, जप, वम्, हृष्, मुष्, रुष्, सपूर्वक घुष् और वि आ पूर्वक श्वस् धातु के उत्तर विकल्प से इट् होता है । यथा, क्लिश्-क्लिष्टः, क्लिशितः क्लिष्ट-वान्, क्लिशितवान्; जप्-जप्तः, जपितः, जप्तवान्, जपितवान्;

वम्-वान्तः, वमितः, वान्तवान्, वमितवान्; हृष्-हृष्टः, हृषितः, हृष्टवान्, हृषितवान्; मुष-मुष्टः, मुषितः, मुष्टवान्, मुषितवान्; रुष्-रुष्टः, रुषितः, रुष्टवान्, रुषितवान्; घुष्-(संपूर्वक) संघुष्टः, सघुषितः, संघुष्टवान्, सघुषितवान्; श्वस्- [वि और आपूर्वक] विश्वस्तः, विश्वसितः; विश्वस्तवान्, विश्वसितवान्; आ-श्वस् श्वस्तः, आश्वसितः, आश्वस्तवान्। आश्वसितवान्।

१०३। **वा दान्तशान्तपूर्ण दस्तस्पष्टच्छन्नज्ञप्ताः**—निष्ठा प्रत्यय परे रहने से, छादि और ज्ञपि के स्थान में विकल्प से से छद् और ज्ञप् होता है और इट् नहीं होता। यथा, छादि-छन्नः, छादितः, छन्नवान्, छादितवान्; ज्ञपि-ज्ञप्तः, ज्ञपितः, ज्ञप्तवान्, ज्ञपितवान्।

१०४। **स्फाय स्फी निष्ठायाम् प्यायः पी**—निष्ठा प्रत्यय परे रहने से, स्फाय् धातु के स्थान में स्फी और स्फा और प्याय् धातु के स्थान में पी और प्या होता है। यथा, स्फीतः, स्फात-Swollen, स्फीतवान्, स्फातवान्; पीनः, प्यानः, पीनवान, प्यानवान्।

१०५। **द्यतिस्यतिमास्थामिति किति**—निष्ठा क्त्वा, क्तिन प्रत्यय परे रहने से मा, सा, (सो) और स्था धातु के आकार के स्थान इकार होता है (१) यथा; मा मितः, मितवान्; दा-दितः दितवान्; सो-सितः, सितवान्, स्था-स्थितः, स्थितवान्।

---

(१) क्त्वा और क्तिन् प्रत्यय के स्थान में भी यही नियम है।

शाच्छोरन्यतरस्याम—शोधनु का विकल्प से होता है। यथा, शितः शातः,शितवान्,शातवान्;छितः,छातः,छितवान्;छातवान्।

१०६। दो दद् घोः द्घातेर्हिः—निष्ठा प्रत्यय परे रहने से दा धातु के स्थान में दत् और धा धातु के स्थान में हि होता है (१)। यथा, दा-दत्तः, दत्तवान्, धा-हितः हितवान्।

१०७। अच उपसर्गात्तः—स्वरान्त उपसर्ग के परवर्ती दा धातु के स्थान में दत् और त् होता है। यथा, आदत्तः, आत्तः, आदत्तवान्, आत्तवान्।

१०८। निष्ठा प्रत्यय परे रहने से, यज् और व्यध् धातु के य और अ के स्थान में इ होता है। यथा, यज्-इष्टः, इष्टवान्; व्यध्-विद्धः, विद्धवान्।

१०९। निष्ठा प्रत्यय परे रहने से, प्रच्छ् और भ्रस्ज धातु के र और अ के स्थान में ऋ होता है (१)। यथा, ग्रह्-गृहीतः, गृहीतवान्, प्रच्छ, पृष्ट, पृष्टवान्। भ्रस्ज् धातु के स का लोप हो जाता है। भृष्टः, भृष्टवान्।

११०। निष्ठा प्रत्यय परे रहने से, श्वि और ह्वे धातु के स्थान में शू और हू होता है। (२) यथा, श्वि-शूनः, शूनवान्; ह्वे-हूतः हूतावान्।

---

(१) इट् का इ दीर्घ होता है; क्त्वा के स्थान में भी यही नियम है।

(२) क्त्वा और क्तिन् प्रत्यय के स्थान में भी यही नियम है।

१११ । वसति क्षुधोरिट् । निष्ठा प्रत्यय परे रहने से, क्षुध् और वस् धातु के उत्तर इट् होता है । यथा, क्षु-क्षुधितः, क्षुधितवान् ।

११२ । निष्ठा प्रत्यय परे रहने से, वस्, वच; वद्, वप् वह और स्वप् धातु के वकार और अकार के स्थान में उ होता है [१] । यथा, वस्-उषितः, उषितवान्; वच्-उक्तः, उक्तवान्; वद्-उदितः-उदितवान्, वप्-उप्तः, उप्तवान; वह्-ऊढ़ः, ऊढ़वान; स्वप्-सुप्तः, सुप्तवान ।

११३ । निष्ठा प्रत्यय परे रहने से गा गे (२) पा (३) और हा धातु के आ के स्थान में ई होता है [४] यथा, गा गीतः गीतवान्; पा-पीतः, पीतवान्; हा-हीनः हीनवान् ।

११४ । शुषः कः । पचोवः । क्षायो मः—निष्ठा सहित क्षै; पच् और शु ष् धातु के स्थान में क्रम से क्षाम; पक्व और शुष्क होता है । यथा, क्षै-क्षामः क्षामवान्; पच्-पक्वः, पक्वावान्; शुष्-शुष्कः, शुष्कवान् ।

११५ । कर्तृवाच्य में क्तवतु प्रत्यय होता है, इसी लिये इस से

---

(१) क्त्वा और क्तिन् प्रत्यय के स्थल में भी यही नियम है ।

(२) दिवादिगणीय गानार्थक ।

(३) भ्वादिगणीय पानार्थक ।

(४) क्त्वा और क्तिन् प्रत्यय के स्थल में भी यही नियम है । प्रायः जिन धातुओं के अन्त में च हो क्त प्रत्यय करने से च् के स्थान में क् होता है यथा पच्-पक्वः ।

बना हुआ शब्द कर्त्ता का विशेषण होता है, अतएव (उस में) कर्त्ता के लिङ्ग वचन और विभक्ति को प्राप्त होती है। यथा सः पुस्तकं पठितवान्, तौ पुस्तकं पठितवन्तौ, ते पुस्तकं पठितवन्तः, सा चन्द्रं दृष्टवती, ते चन्द्रं दृष्टवत्यौ, ताश्चन्द्रं दृष्टवत्यः। वृक्षात् फलानि पतितवन्ति।

११६। सकर्मक धातु के उत्तर कर्मवाच्य में क्त होता है। इस लिये कर्मवाच्य में क्त प्रत्यय से बना शब्द कर्म का विशेषण होता है, और कर्म को लिङ्ग विभक्ति और वचन (उसमें) को प्राप्त होता है। यथा, कुम्भकारेण घटः कृतः, घटौ कृतौ, घटाः कृताः। मित्रेण पत्री लिखिता, पत्र्यौ लिखिते, पत्र्यः लिखिताः; मालिना पुष्पं चितम्, पुष्पे चिते, पुष्पाणि चितानि। (Plucked)

११७। अकर्मक धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में भी क्त होता है इसलिये कर्तृवाच्य के क्त से बना शब्द कर्त्ता का विशेषण होता है यथा, स जागरितः, सा भीता, जलं शुष्कम्, शिशुः शयितः वृद्धो मृतः।

११८। गमनार्थक धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में भी क्त होता है। यथा, स ग्रामं गतः, गृहं प्रस्थितः, स विद्यालयं प्रयातः।

११९। शी, स्था, अस्, वस्, श्लिष् और रुह् इन सब धातुओं के साथ उपसर्ग के योग से सकर्मक होने पर इनके उत्तर कर्तृवाच्य में भी क्त होता है। और इनसे बने शब्द विशेषण होते हैं। यथाः—स गृहमधिशयितः, स शय्यामधिष्ठितः, मुनिराश्रम-

मध्यासितः, सः ग्राममध्युषितः, पिता पुत्रमाश्लिष्टतः, वानरो वृक्षमारूढः ।

१२० । जब क्तवतु और क्त प्रत्यय से बने शब्द समापिका क्रिया की भाँति युक्त न होकर केवल विशेषण स्वरूप प्रयुक्त होते हैं तब [उनमें] विशेषण का लिङ्ग विभक्ति और वचन प्राप्त होता है । यथाः—अधीतवान् छात्रः, आधीतवन्त छात्रम् । अधीतवता छात्रेण, अधीतवते छात्राय इत्यादि । भीतः शिशुः, भीतं शिशुम्, भीतेन शिशुना इत्यादि ।

१२१ । सब धातुओं के उत्तर भाववाच्य में क्त होता है । भाववाच्य के (प्रत्यय) से बना हुआ शब्द जब समापिका क्रिया की नाईं व्यवहृत होता है तब सदा नपुंसकलिङ्ग प्रथमा का एक वचनान्त होता है । यथा तेन कृतम्, ताभ्यां कृतम्, तैः कृतम्, त्वया कृतम्, युवाभ्यां कृतम्, अस्माभिः कृतम्, मया कृतम्, आवाभ्यां कृतम्, अस्माभिः कृतम्, शिशुना रुदितम्, तेन भुक्तम्, मया ज्ञातम्, त्वया दृष्ट, कन्या हसितम् । और जब विशेष्य शब्द की नाईं व्यवहृत होता है तब उसका रूप अकारान्त क्लीवलिङ्ग शब्द के समान होता है । यथा, गतम्, गते, गतानि; कृतम्, कृते, कृतानि; रुदितम्, रुदिते, रुदितानि ।

मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च—मति, बुद्धि और पूजा अर्थ वाले धातु के उत्तर वर्तमान काल में क्त होता है । यथा राज्ञां मतः, इष्टः बुद्धि पूजितः ।

क्त्वा (क्त्वाच्)

१२२। समान कर्तृकयोः पूर्वकाले—जब दो क्रियाओं का एक कर्ता होता है तब पूर्व कालिक क्रिया बोधक धातु के उत्तर क्त्वा प्रत्यय होता है। क इत और त्वा रहता है।

१२३। निष्ठा प्रत्यय के परे जिस नियम से इट् होता है क्त्वा प्रत्यय के परे भी उसी नियम से इट् होता है। यथा, ज्ञ ज्ञात्वा, (Knowing) ध्यै-ध्यात्वा, स्ना-स्नात्वा, पा-पीत्वा, स्था-स्थित्वा, दा-दत्वा, धा-हित्वा, चि-चित्वा, जि-जित्वा, श्रि श्रित्वा, क्री-क्रीत्वा, नी-नीत्वा, श्रु-श्रुत्वा, हु-हुत्वा, भू-भूत्वा, कृ कृत्वा, धृ-धृत्वा, स्मृ-स्मृत्वा, मुच्-मुक्त्वा, सिच् सिक्त्वा, त्यज्-त्यक्त्वा, भुज्-भुक्त्वा, सृज्-सृष्ट्वा, छिद्-छित्वा, भिद्-भित्वा, बुध्-बुध्वा, क्षिप्-क्षिप्त्वा, तप्-तप्त्वा, लभ्-लब्ध्वा, दृश-दृष्ट्वा, स्पृश्-स्पृष्ट्वा, दह्-दग्ध्वा, याच्-याचित्वा, गर्ज्-गर्जित्वा, पठ्-पठित्वा, क्रीड्-क्रीडित्वा, पत्-पतित्वा, व्यथ् व्यथित्वा, सेव् सेवित्वा, भिक्ष्-भिक्षित्वा, व्यध्-विद्ध्वा, यज्-इष्ट्वा, ग्रह्-गृहीत्वा, प्रच्छ्-पृष्ट्वा, प्रवस्-उषित्वा, स्वप्-सुप्त्वा, गम्-गत्वा, नम्-नत्वा, मन्-मत्वा हन्-हत्वा, बन्ध-बध्वा, स्तन्भ-स्तब्ध्वा।

क्त्वा प्रत्यय से बने हुए शब्दों का रूपान्तर नहीं होता वे अव्यय की भाँति होते हैं। और कई एक अकारान्त धातुओं के क्त्वा प्रत्यय करने पर आ के स्थान में ई होता है।

१२४। क्त्वा प्रत्यय के परे इट् होने से, धातु के अन्त्य स्वर और उपधा लघु स्वर का गुण होता है। यथा, शी-शयित्वा, अर्पि-अर्पयित्वा, कारि-कारियित्वा, स्थापि-स्थापयित्वा, आपि-आपयित्वा, वृत्-वर्त्तित्वा, नृत्-नर्तित्वा।

१२५। मृडमृद बुधकुप क्लिशवदवसः क्त्वा—मृड्, मृद्, रुद्, विद्, मुष् और क्लिश् धातु का गुण नहीं होता है। यथा, मृडित्वा, मृदित्वा, रुदित्वा, मुषित्वा।

१२६। तृषिमृषिकृशेः काश्यपस्य—मिल्, लिख्, स्तिम्, कुप्, त्रुट्, क्षुध्, द्युत, रुध्, स्फुट्, कृश्, तृष्, और मृष्, धातुओं का विकल्प से गुण होता है। यथा; मिल्-मिलित्वा, मेलित्वा; लिख्-लिखित्वा, लेखित्वा; स्तिम्-स्तिमित्वा, स्तेमित्वा; कुप्-कुपित्वा, कोपित्वा; क्षुध्-क्षुधित्वा, क्षोधित्वा; त्रुट्-त्रुटित्वा, त्रोटित्वा; द्युत्-द्युतित्वा, द्योतित्वा; रुच्-रुचित्वा, रोचित्वा; स्टफु-स्फुटित्वा, स्फोटित्वा; कृश्-कृशित्वा, कर्शित्वा; तृष्-तृषित्वा, तर्षित्वा; मृष्-मृषित्वा, मर्षित्वा।

१२७। नोपधात् थफान्ताद्वा। जान्तनशां विभाषा—क्त्वा प्रत्यय होने से जान्त, शान्त, और फान्त धातु के उपधा नकार का विकल्प से लोप होता है। यथा, भञ्ज-भक्त्वा, भङ्क्त्वा; रञ्ज रक्त्वा, रङ्क्त्वा; ग्रन्थ् ग्रथित्वा, ग्रन्थित्वा; मन्थ्-मथित्वा, मन्थित्वा; गुम्फ्-गुम्फित्वा, गुम्फित्वा। (१)

(१) जान्त धातु अनिट् नहीं होता—यथा, अन्ज अञ्जित्वा।

१२८। वञ्चिलुञ्च्पृतश्च—क्त्वा प्रत्यय परे रहने से, वन्च् और लुन्च् धातु का न विकल्प से लोप होता है। यथा, वन्च् वचित्वा, वञ्चित्वा; लुन्च्-लुचित्वा, लुञ्चित्वा।

१२९। क्त्वा प्रत्यय होने से पू और क्लिश् धातु के उत्तर में विकल्प से इट् होता है। यथा, पू-पवित्वा, पूत्वा; क्लिश्-क्लिशित्वा, क्लिष्ट्वा।

१३०। उदितोवा क्रमश्चक्त्वि—गणपाठ में जो सब धातु उकारयुक्त रहते हैं क्त्वा प्रत्यय होने पर उन (धातुओं) के उत्तर विकल्प से इट् होता है। यथा, क्रम् क्रमित्वा, क्रान्त्वा ; क्षम्-क्षमित्वा, क्षान्त्वा, भ्रम्-भ्रमित्वा, भ्रान्त्वा; शम्-शमित्वा, शान्त्वा; दिव्-देवित्वा, द्यूत्वा, सिव्-सेवित्वा, स्यूत्वा; इष्-एषित्वा, इष्ट्वा।

१३१। जहान्तेश्चक्त्वि—क्त्वा प्रत्यय होने से त्यागार्थक हा धातु के स्थान में हि होता है। यथा, हित्वा।

१३२। अलं खल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा—निषेध अर्थ बोध होने से अलं और खलु शब्द के योग में धातु के उत्तर क्त होता है। यथा, अलं गत्वा, अलं स्थित्वा; अलं दृष्ट्वा, अलं स्पष्टवा, अल श्रुत्वा; खलु कृत्वा, खलु कृत्वा ; खलु भुक्त्वा, खलु क्षिप्त्वा।

१३३। क्त्वा प्रत्यय से बना हुआ शब्द अव्यय और असमापिका क्रिया होता है।

क्तिन् (क्ति) ।

१३४ । स्त्रियां क्तिन्—भाववाच्य में धातु के उत्तर क्तिन् होता है क और न इत् अर्थात् लोप हो जाता है और ति रहता है । क्तिन् प्रत्यय से बने शब्द स्त्री लिङ्ग होते हैं । यथा, ख्या-ख्यातिः, गै-गीतिः , मा-मितिः, स्था-स्थितिः, इ-इतिः, चि-चितिः,नी-नीतिः, प्री-प्रीतिः, भी-भीतिः, च्यु-च्युतिः, द्रु-द्रुतिः, नु-नुतिः, श्रु-श्रुतिः, स्तु-स्तुतिः, स्रु-स्रुतिः, कृ-कृतिः, धृ-धृतिः, भृ-भृतिः, मृ-मृतिः, वृ-वृतिः, सृ-सृतिः, स्मृ-स्मृतिः, शक्-शक्तिः, मुच्-मुक्तिः, वच्-उक्तिः, भज्-भक्तिः, भुज्-भुक्तिः, यज्-इष्टिः, युज् युक्तिः, सृज्-सृष्टिः, कृत्-कृत्तिः, वृत्-वृत्तिः, छिद्-छित्तिः, पद्-पत्तिः, (Foot-soldier) भिद्-भित्तिः, विद्-वित्तिः, Discussion सद्-सत्तिः, ऋध्-ऋद्धिः, बुध्-बुद्धिः, वृध-वृद्धिः, शुध्-शुद्धिः, सिधि-सिद्धिः, क्षण्-क्षतिः, तन्-ततिः, (line) मन्-मतिः, आप्-आप्तिः, गुप्-गुप्तिः, तप्-तप्तिः, दीप-दीप्तिः, स्वप्-सुप्तिः, लभ्-लब्धिः, कम्-कान्तिः, क्लम्-क्लान्तिः, क्षम्-क्षान्तिः Forbearance, गम् गतिः, नम्-नतिः, भ्रम्-भ्रान्तिः, रम्-रतिः, शम-शान्तिः, श्रम्-श्रान्तिः, दृश्-दृष्टिः, कृप्-कृष्टिः, तुष्-तुष्टिः, पुष्-पुष्टिः, वृष्-वृष्टिः, रुह्-रूढ़िः ।

१३५ । ग्ला, म्ला, हा आदि धातुओ के उत्तर ति के स्थान में नि होता है । यथा, ग्लानिः, म्लानिः हानिः (loss) ।

णक् (ण्वुल्)

१३६ । ण्वुल् तृचौ । धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में णक् होता

है, ण्-इत् अक रहता है। यथा, नी-नायकः, श्रु-श्रावकः, पू-पावकः, कृ-कारकः, तृ-तारकः, स्मृ-स्मारकः, नश्-नाशकः, पच्-पाचकः, पठ्-पाठकः, रिच्-रेचकः, सिच्-सेचकः, मुच्-मोचकः, क्षिप्-क्षेपकः, रुध्-रोधकः, शुष्-शोषकः, दा-दायकः, गा-गायकः, जनि-जनकः, पालि-पालकः, योजि-योजकः।

१३७। निमित्त अर्थ बोध होने से भविष्यत् काल में धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में णक् होता है। यथा, भुज्-भोज को व्रजति (भोजन करने के निमित्त जाता है), पच्-पाचकोव्रजति (पाक करने के निमित्त जाता है)।

षक्

१३८। शिल्पकर्म बोध होने से नृत्, खन् और रन्ज् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में षक् होता है, ष इत् होता है और अक् रहता है। यथा, नृत्-नर्तकः खन्-खनकः। रन्ज्-धातु का न लोप हो जाता है रजकः (Washerman)।

णनट् और थक्

१३९। शिल्पकारी बोध होने से गा धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में णनट् और थक् होता है, ण् और ट् इत्, अन् रहता है। यथा, गायनः, गायकः।

तृच्

१४०। ण्वुलतृचौ—धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में तृच् होता

है, च् इत् तृ रहता है [१] यथा, दा-दाता, पा-पाता, मा-माता, जि-जेता, नि-नेता, श्रु-श्रोता, कृ-कर्त्ता, हृ-हर्ता, क्षि-क्षेप्ता, सच्-सेक्ता, विद्-वेत्ता, बुध्-बोद्धा, (Intelligent) युध्-योद्धा, रुध-रोद्धा, गम्-गन्ता, हन्-हन्ता (Killer)

१४१। लुट् विभक्ति में जिन सब धातुओं के उत्तर जिस नियम से इट् होता है तृच् प्रत्यय के परे भी इन सब धातुओं के उत्तर उसी नियम से इट् होता है। यथा—भू-भविता, वद्-वदिता, फल्-फलिता, चल्-चलिता, दिव्-देविता, नुद्-नोदिता, नृत्-नर्तिता, दीप्-दीपता, सेव्-सेविता, कारि-कारयिता, स्थापि-स्थापयिता, जनि-जनियता, सू-सविता, सोता ; स्तु-स्तविता, स्तोता, इष्-एशिता एष्टा; शुच्-शोचिता शोक्ता; रुष्-रोषिता-रोष्टा।

अण् (षण्)

१४२। कर्म्मण्यण—कर्म्मवाचक पद के परवर्त्ती धातु के उत्तर कर्तृ-वाच्य में अण् होता है, ण इत् होता है और अ रहता है यथा, कुम्भंकरोति इति कुम्भकारः। तन्तून् वयति तन्तुवायः, (weaver) तन्त्र वयति तन्त्रवायः, शास्त्राणि करोति शास्त्रकारः, सूत्रकारः, सूत्रधारः, मालाकारः, भाष्यकारः, कर्मकारः, वारिवाहः (cloud)

अट्

१४३। दिवा आदि कर्मवाचक पद के परवर्ती कृ धातु के उत्तर

(१) शील, धर्म और सम्यक करण अर्थ में भी तृच् होता है।

कर्त्तृवाच्य में अट् होता है, ट् इत्, अ रहता है। यथा, दिवाकरः, विभाकरः, निशाकरः, प्रभाकरः, भास्करः। अन्तकरः, किङ्करः, लिपिकरः, बलिकरः, भक्तिकरः, अहस्करः, चित्रकरः (A painter) कर्मकरः [१] (A hired labourer)

१४४। हेतु और अनुकूल अर्थ बोध होने से, कर्मवाचक पद के परवर्ती कृ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अट् होता है ट् इत् अ रहता है। यथा, हेतु अर्थ में—शोककरः, बन्धु नाशः, बन्धु-नाश शोक का हेतु है, अर्थकरः, यशस्करः, विद्या-लाभः, विद्यालाभ अर्थ और यश का हेतु है; क्लेशकरः, क्षोभ-करः, रोगकरः। अनुकूल अर्थ में—बलकरम्, पुष्टिकरम् अन्नम्; अन्न बल और पुष्ट के विषय में अनुकूल है। हितकरः, प्रीतिंकरः, मंगलकरः (Auspicious)।

१४५। पुरः, अग्र, अग्रे, अग्रतः, इन कई शब्दों के परवर्ती सृ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अट् होता है, ट् इत् अ रहता है। यथा, पुरःसरः, अग्रसरः अग्रेसरः, अग्रतःसरः (going in front, Taking the lead).

१४६। चरेष्टः—अधिकरण वाचक पद के परवर्ती चर् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अट् होता है ट् इत्, अ रहता है। यथा, जले चरति जलचरः, वारिणि चरति वारिचरः(Aquatic) स्थले चरति स्थलचरः, भुवि चरति भूचरः, वने चरति वनचरः,

---

(१) भृत्य अर्थ बोध होने से अन्यत्र अण् होता है।

निशायां चरति निशाचरः, पार्श्वे चरति पार्श्वचरः, खे चरति खेचरः। रात्रि शब्द का रूप विकल्प से द्वितीया के एकवचनान्तवत् होता है। यथा, रात्रौ चरति रात्रिचरः, रात्रिञ्चरः [१] (A night rover)।

१४७। कर्म्मवाचक पद के परवर्ती गै धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अट् होता है, ट् इत्, अ रहता है। यथा, साम गायति सामगः (A Brahman chanting Sama-Veda)।

१४८। कर्म्मवाचक पद के परवर्ती हन् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अट् होता है, ट् इत्, अ रहता है और हन् के स्थान में घ्न होता है। यथा, शत्रुं हन्ति शत्रुघ्नः, पापं हन्ति पापघ्नः, पित्तं हन्ति पित्तघ्नः, वातं हन्ति वातघ्नः, कृतं हन्ति कृतघ्नः, मित्रं हन्ति मित्रघ्नः, गां हन्ति गोघ्नः, पशून् हन्ति पशुघ्नः, त्रिदोषं हन्ति त्रिदोषघ्नः।

अ [अच्]

१४९। नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः—पच् आदि धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है। यथा, पच्-पचः (Cook) चल्-चलः, (Going, Moving) सृप्-सर्पः, दिव्-देवः, चर्-चरः, धृ-धरः (Holding)।

१५०। हरतेरनुद्यमनेऽच—कर्म्मवाचक पद के परवर्ती हृ

(१) कभी २ अधिकरणवाचक पद विभक्त्यन्त होता है। यथा, वनेचरः, खेचरः इत्यादि।

धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है। यथा, अंशं हरति अंशहर (Sharer) भागं हरति भागहरः, रोगहरः, शोकहरः, दुःखहरः, क्लेशहरः (१)।

१५१। कर्म्मवाचक पद के परवर्ती अर्ह् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है। यथा, पूजाम् अर्हति पूजार्हः, तद् अर्हति तदर्हः, सत्कारम् अर्हति, सत्कारार्हः, निन्दाम् अर्हति निन्दार्हः (Reproachable)।

१५२। **अधिकरणेशेते**—अधिकरणवाचक पद के परवर्ती शी धातु के उत्तर कर्तृवाच्य मे अ होता है। यथा, शिलायां शेते शिलाशयः, भूमौ शेते भूमिशयः, शय्यां शेते शय्याशयः (Lying on or Confined to a bed)।

१५३। पार्श्व आदि शब्द के परवर्ती शी धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है। यथा, पार्श्वेन शेते पार्श्वशयः, पृष्ठेन शेते, पृष्ठशयः (Sleeping on the back) उदरेण शेते उदरशयः उत्तानः, शेते उत्तानशयः, अवमूर्द्धा शेते अवमूर्द्धशयः।

१५४। **आतोऽनुपसर्गेकः**—कर्म्मवाचक पद के परवर्ती आकारान्त धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ (क) होता है और धातु का आकार लोप हो जाता है। यथा, अन्नं ददाति अन्नदः, भूमिं ददाति भूमिदः, करं ददाति करदः, धनं ददाति धनदः, जलं

[१] भारवहन अर्थ में नहीं होता। यथा, भारं हरति भारहारः, A burden-Bearer इस स्थान में अण् हुआ।

ददाति जलदः, वारिं ददाति वारिदः, तनुं त्रायते तनुत्रम्; (१) धर्म्मं जानाति धर्म्मज्ञः, रसं जानाति रसज्ञः, सर्व्वं जानाति सर्व्वज्ञः, नृन् पाति नृपः, भुवं पाति भूपः, भूमिं पाति भूमिपः, मधु पिबति मधुपः (२)

१५५। सुपिस्थः—सुवन्त पद व उपसर्ग के परवर्त्ती स्था धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है और धातु का आकार लोप हो जाता है यथा, गृहे तिष्ठति गृहस्थः, मध्ये तिष्ठति मध्यस्थः (Anumpire) वने तिष्ठति वनस्थः, प्रकृतौ तिष्ठति प्रकृतिस्थः, सुस्थः, स्वस्थः, दुःस्थः, सस्थः, उत्थः, निष्ठः (Skilledin)

१५६। सप्तम्यां जनेर्ड.। उपसर्गे च संज्ञायाम्—उपसर्ग वा सुवन्त पद के परवर्ती जन् धातु के उत्तर कर्तृव्याच्य में अ होता है और धातु के आकार और नकार का लोप होता है। यथा, सरसि जायते सरोजम्, मनसि जायते मनोजः (३) अप्सु जायते अब्जम्, अंगात् जायते अङ्गजः, जले जायते जलजम्, पङ्कात् जायते पङ्क-जम्, स्वेदात् जायते स्वेदजः, अण्डात् जायते अण्डजः,

---

[१] त्रा धातु में अपादान के उत्तर भी होता है, यथा, आतपात् त्रायते आतपत्रम्।

[२] उपसर्ग के परवर्ती आकारान्त धातु के उत्तर भी होता है यथा, विज्ञः, प्रदः, प्रतिपः, व्याघ्रः, प्रभः, निभः (Like, Similar)

[३] कभी कभी पूर्वपद विभक्त्यन्त होता है। यथा, सरसिजम्, मनसिजः।

जरायोर्जायते जरायुजः, सह जायते सहजः, अनु जायते अनुजः, अग्रे जायते अग्रजः, द्विः जायते द्विजः, आत्मनो जायते आत्मजः (A son) प्रजायन्ते प्रजाः।

१५७। **अन्तात्यन्ताध्वदूरपारसर्व्वानन्तेषुडः**—सुबन्त पद के परवर्ती गम् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है और धातु के अकार और मकार का लोप होता है। यथा, अन्तं गच्छति अन्तगः, अध्वानं गच्छति अध्वगः, दूरं गच्छति दूरगः, पारं गच्छति पारगः, सर्व्व गच्छति सर्व्वगः, सर्व्वत्र गच्छति सर्व्वत्रगः, गृहं-गच्छति गृहगः, ग्रामात् गच्छति ग्रामगः, तल्पं गच्छति तल्पगः, खे गच्छति खगः (Moving inthe air)।

१५८। **गमश्च**—पत्, भुज्, त्वरा सरस् और विहायस् शब्द के परवर्ती गम् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है और निम्न-लिखित समस्त पद निपातन में सिद्ध होते हैं। यथा पतेनपक्षेण गच्छति पतगः पतङ्गः, पतङ्गमः, भुजं वक्रं गच्छति भुजगः, भुजङ्गः, भुजङ्गमः, त्वरया गच्छति तुरगः, तुरंगः, तुरङ्गमः, उरसा गच्छति उरगः, उरङ्ग, उरङ्गमः; (Snake) विहायसा गच्छति विहगः, विहङ्गः विहङ्गमः, (Bird)।

१५९। **अपेक्लेशतमसोः**—क्लेश, शोक और तमस् शब्द के परवर्त्ती अप् पूर्वक हन् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ होता है और धातु का अकार और नकार का लोप होता है। यथा, क्लेशम् अपहन्ति क्लेशापहः, शोकम् अपहन्ति शोकापहः, तमः अपहन्ति तमोपहः।

अङ् (क)

१६०। इगुपधज्ञाप्रीकिरः—जिन धातुओं के उपधा स्थल में इ, उ और ऋ रहता है उनके उत्तर कर्तृवाच्य में अङ् होता है, ङ् इत् अ रहता है यथा, विद् विदः बुध् बुधः, तुद् तुदः नृत् नृतः ।

१६१। प्री, कृ और गृ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अङ् होता है। ई के स्थान में इय् और ऋ के स्थान में इर् होता है। यथा, प्री प्रियः, कृ किरः, गृ गिरः ।

१६२। दुहः कपधश्च—सुवन्त पद के परवर्ती दुह् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अङ् होता है। दुहँ के हँ के स्थान में घ् होता है। यथा, धातु कामं दोग्धि कामदुहा धेनुः ।

णिन् (* णिनि)

१६३। नन्दिग्रहिपचादिभ्योल्युणिन्य चः—धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में णिन् होता है, ण इत् इन् रहता है यथा, मन्त्र मन्त्री, वद्-वादी, प्रतिवादी, परिवादी, वस्-वासी, प्रवासी, अधिवासी, राध-अपराधी; चर्-व्यभिचारी, सञ्चारी, स्था-स्थायी, सृ-संसारी, द्विष्-द्वेषी, विद्वेषी, रुध-रोधी, विरोधी प्रतिरोधी; द्रुह्-द्रोही, विद्रोही; दिव्-परिदेवी, कृ-अधिकारी, मथ्-प्रमाथी, लष्-अभिलाषी ।

* ग्रहादि धातुओं के उत्तर ही णिनि प्रत्यय होता है ।

१६४। सुप्य जातौणिनिस्ताच्छील्ये। व्रतेबहुलमाभीक्ष्ण्ये—उपसर्ग और सुवन्त पद के परवर्ती धातु के उत्तर व्रत, शील और पौनः पुन्य अर्थ में णिन् होता है यथा व्रत अर्थ में—स्थाण्डिले शेते स्थण्डिलशायी, अश्राद्धभोजी। शील अर्थ में उष्णं भुङ्क्ते उष्णभोजी; अनुयाति अनुयायी, अनुजीवति अनुजीवी, सोमं पिवति सोमपायी, अग्रे याति अग्रयायी, साधु करोति साधुकारी, प्र माद्यति प्रमादी, सत्यं वदति सत्यवादी, प्रियं वदति प्रियवादी, वि कत्थते विकत्थी, मनो हरति मनोहारी, वि करोति विकारी, वि वदते विवादी, उत् सहते उत्साही, हृदयं गृह्णाति हृदयग्राही, कणान् वहति कणवाही, पण्डित मन्यते पण्डितमानी, सुभगं मन्यते सुभगमानी, अनु गच्छति अनुगामी, सह गच्छति सहगामी। पौनः पुन्य (बारम्बार) अर्थ में—पुनः पुनः मिथ्या वदति मिथ्यावादी; पुनः पुनः पापं करोति पापकारी, पुनः पुनः कलहं करोति कलहकारी, पुनः पुनः मित्राय द्रुह्यति मित्रद्रोही।

१६५। करणे यजः—करणवाचक पद के परवर्ती युज् धातु के उत्तर के कर्तृवाच्य भूतकाल में णिन् होता है। यथा, सोमेन इष्टवान् सोमयाजी, अग्निष्टोमेन इष्टवान् अग्निष्टोमयाजी।

१६६। कर्म्मणि हनः—कर्म्मवाचक पद के परवर्ती हन् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य भूतकाल में णिन् होता है; और हन् धातु के ह के स्थान में घ और न के स्थान में त होता है यथा,

पितरं जघान पितृघाती; (A patricide) पितृव्यं जघान पितृव्यघाती; पुत्रं जघान पुत्रघाती, मित्रं जघान मित्रघाती।

१६७। भविष्यत् काल बोध होने से भू, या, स्था, गम्, बुध्, युध् और रुध् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में णिन् होता है। यथा; भू-भावी, या यायी, स्था-स्थायी, प्रास्थायी; गम्-गामी What will be आगामी, युध-प्रतियोधी, बुध प्रतिबोधी, रुध्-प्रतिरोधी।

घिनुण्

१६८। युज्, त्यज्, भज्, रन्ज्, विपूर्वक विच् और सं पूर्वक पृच् और सृच् धातु के उत्तर शील अर्थ में कर्तृवाच्य में घिनण् होता है, उ घ् ण् इत् होता है और इन् रहता है। यथा, युज्-योगी, वियोगी, प्रतियोगी, त्यज्-त्यागी, परित्यागी; भज्-भागी, विभागी। रन्ज् धातु का न लोप हो जाता है। रागी, विरागी (Indifferent to worldly attachments) अनरागी; वि-विच् विवेकी (Discreet) सम्पृच् सम्पर्की संसृज्; संसर्गी।

इन्

१६९। इन् कर्मणीनी विक्रियः—निन्दा बोध होने से कम वाचक पद के परवर्ती वि पूर्वक क्री धातु के उत्तर कर्तृवाच्य भूतकाल में इन होता है। यथा, मासं विक्रीतवान मांस विक्रियी, (Who sold Flesh) सुतविक्रयी, तैलविक्रयी, घृतविक्रयी, शुक्रविक्रयी, सोमविक्रयी।

१७०। शमित्यष्टाभ्यो घिनुण्—शम् आदि धतुओं के उत्तर शील अर्थ कर्तृवाच्य में इन् होता है। यथा, शम् शमी; श्रम् श्रमी, परिश्रमी; दम् दमी, क्लम् क्लमी, भ्रम भ्रमी, क्षि क्षयी, प्रसू-प्रसवी।

खङ्

१७१। विध्वरुषोस्तुदः—विधु और अरुस् शब्द के परवर्ती तुद् धातु के तथा पर और ललाट् शब्द के परवर्ती तप् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में खङ् होता है। ख ङ् इत् होता है और अ रहता है। यथा, विधुं तुदति विधुन्तुदः। अरुस् शब्द के स् के स्थान में म् होता है। यथा, अरुस्तुदति अरुन्तुदः (Wounding the vital parts) परं तपति परन्तपः (An enemy) (१) ललाटं तपति ललाटन्तपः।

१७२। असूर्य्यललाटयोर्द्दशितपोः। उग्रम्पश्येरम्मदपाणिधमाश्च—असूर्य्य और उग्र शब्द के परवर्ती दृष धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में खङ् होता और दृश् के स्थान में पश्य होता है। यथा असूर्य्यम्पश्यः, उग्रम्पश्य (Fierce looking)।

१७३। प्रियवशे वदः खच्। वभ्रमेलिहः—प्रिय और वश शब्द के परवर्ती वद् धातु के और अभ्र शब्द के परवर्ती लिह् धातु

(१) पर शब्द के परवर्ती तापि धातु के उत्तर 'खङ्' होता है और आकार के स्थान में अकार होता है। यथा, परं तापयति परन्तपः।

के उत्तर कर्तृवाच्य में खच् होता है। यथा, प्रियंवदः, वशम्वदः, अभ्रंलिहः। (Touching the cloud)।

१७४। वाचयमपुरन्दरौ च—व्रत अर्थ में वाच् शब्द में परवर्ती यम् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में खच् होता है। यथा, वाचयमः, (Perfectly silent) (मौनव्रती)।

१७५। सर्व्वकुलाभ्रकरीषेषु कषः—सर्व्व, कुल, अभ्र और करीष शब्द के परवर्ती कष् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में खच् होता है। यथा, सर्व्वङ्कषः, कूलङ्कषः, अभ्रंकषः, करीषङ्कषः।

१७६। उदिकूलेरुजिवहोः—कूल शब्द के परवर्ती उत् पूर्वक रुज् और वह् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में खच् होता है। यथा, कूलमुद्रुजः (Breaking down the bank), कूलमुद्वहः।

ख

१७७। संज्ञायाम् भृवृतजिधारिसहितपिदमः—संज्ञा बोध होने से 'विश्व' शब्द के परवर्ती भृ पति और स्वयम् शब्द के परवर्ती वृ, सर्व्व शब्द के परवर्ती सह्, और वसु शब्द के परवर्त्ती धृ धातुओं के उत्तर कर्तृवाच्य में ख होता है, ख इत् (लोप) हो जाता है और अ रहता है। यथा; विश्वम्भरो विष्णु, विश्वम्भरा पृथिवी, पतिंवरा स्वयम्वरा कन्या, सर्व्वंसहा पृथिवी। वसु शब्द के उत्तर न् होता है वसुन्धरा (Containing riches), पृथिवी।

खट्

१७८। मेघर्तिभयेषु कृञः क्षेमप्रियमद्रे हण् च—भय, प्रिय और क्षेम शब्द के परवर्ती कृ धातु के कर्तृवाच्य मे खट् होता है। ख् ट् इत् (लोप) होता है और अ रहता है। यथा, भयङ्करः, प्रियङ्करः, क्षेमङ्करः। (Propitious)

१७९। नासिकास्तनयोध्माधेटो—स्तन शब्द के परवर्त्ती धे धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में खट् होता है। यथा, स्तनन्धयः शिशुः, स्तनन्धयी (Sucking the breast) कन्या।

खि

१८०। आत्मनोदरकुक्षिषुइति चान्द्रा—आत्मन् कुक्षि और उदर शब्द के परवर्त्ती भृ धातु के उत्तर खि होता है; ख इत् होता है और इ रहता है। यथा, कुक्षिम्भरिः उदरम्भरिः (Feeding one's own belly.) आत्मम्भरिः (Selfish)।

खश

१८१। मन आत्माने खश्च—आत्ममनन अर्थ में कर्म्म-वाचक पद के परवर्त्ती मन् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में खश होता है, ख् इत् य रहता है। यथा, आत्मनं पण्डितं मन्यते पण्डितम्म-न्यः, कृतार्थम्मन्यः, सुभगमन्यः, धन्यम्मन्यः।

इ

१८२। स्तम्बशकृतोरिन्—शकृत् और स्तम्भ शब्द के पर-वर्त्ती कृ धातु के उत्तर कर्तृवाक्य में इ होता है। यथा, शकृत्-

करिः स्तम्बकरिः ।

१८३। फलेग्रहिरात्मम्भरिश्च—इ प्रत्यय होने से फलेग्रहि और आत्मम्भरि ये दोनों पद निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, फलानि गृह्णाति फलेग्रहिः, (Fruitful) आत्मानं बिभर्ति आत्मम्भरिः ।

खनट्

१८४। आढ्यसुभगस्थूलपलितनग्नान्धप्रियेषुच्व्यर्थेष्वच्वौ कृञः करणे ख्युन्—अभूततद्भाव बोध होने से प्रिय आदि शब्द के परवर्ती कृ धातु के उत्तर करणवाच्य में खनट् होता है ; ख् और ट् इत्, अन् रहता है। यथा, अप्रियः प्रियः क्रियतेऽनेन प्रियङ्करणम्, पलितंकरणम्, नग्नंकरणम्, अन्धंकरणम्, स्थूलंकरणम्, सुभगंकरणम् (Bespeaking fortune) आढ्यंकरणम् ।

खिष्णु और खुकञ्

१८५। कर्त्तरिभुवः खिष्णुश्च खुकञौ—'अभूततद्भाव' अर्थ में प्रिय आदि शब्द के परवर्ती भू धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में खिष्णु और खुकञ् होता है, खिष्णु का ख् इत्, इष्णु रहता है। खुकञ् का खु का ञ् इत् उक् रहता है। यथा, अप्रियः प्रियो भवति प्रियम्भविष्णुः (Endearing oneself) आढ्यम्भविष्णुः, सुभगम्भविष्णुः, प्रियम्भावुकः, आढ्यम्भावुकः, सुभगम्भावुकः ।

णि

१८६। भजोणिः—सुवन्त पद के परवर्ती भज् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में णि होता है और सब का इत् होता है कुछ भी नहीं रहता। यथा, अंश भजते अन्शभाक् दुःखं भजते दुःखभाक्।

क्विप्

१८७। सत्सद्विषद्रुहदुह–युजविदभिदछिदजिनीराजाम् उपसर्गेपि क्विप्—धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में क्विप् होता है और सब इत् हो जाता है। यथा, सद् सभासद्, परिषद्, सु-पुत्रसः वीरसूः, प्रसूः, द्विष्-धर्मद्विट्, मित्रद्विट्, विद्-शास्त्रविद्, धर्म्मविद्, ब्रह्मविद्, भिद्-गोत्रभिद्, मर्म्मभिद्, छिद् पक्षः च्छिद्, मर्मच्छिद्, जि-शत्रुजित, इन्द्रजित्; नी सनानीः, अग्रणीः राज् विराट्, स्वराट्, सम्राट्, स्पृश्-जलस्पृक् (१)।

१८८। सुकर्म्मपापमन्त्रपुण्येषुकृञः—सु, कर्म्मन्, पाप, मन्त्र और पुण्य शब्द के परवर्त्ती कृ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य भूतकाल में क्विप् होता है। यथा, सु कृतवान् सुकृत्कर्म्म कृतवान्, कर्मकृत, पापकृत् मन्त्रकृत्, पुण्यकृत्।

१८९। ब्रह्मभ्रूण वृत्रेषु क्विप्—भ्रूण, ब्रह्म और वृत्र शब्द के परवर्ती हन् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य भूतकाल में क्विप् होता

(१) उदक् शब्द के उत्तर नहीं होता। उदक् स्पृशः, इस जगह अङ् हुआ।

है। यथा, भ्रूणं जघान, भ्रूणहा, वृत्रहा।

१९०। सोमेसुञः अग्नौचः—अग्नि शब्द के परवर्ती चि और सोम शब्द के परवर्त्ती सु धातु के उत्तर कर्तृवाच्य भूतकाल में क्विप् होता है यथा, अग्निं चितवान् अग्निचित्, सोमम सूतवान् सोमसुत्। (A soma Distiller)

क्विप् और षङ्

१९१। त्यदादिषुदृशोनालोचनेकञ्च—उपमानवाचक तद् यत्, एतद्, भवत्, अस्मद्, युष्मद्, अदस्, इदम्, अन्य और समान शब्द के परवर्त्ती दृश् धातु के उत्तर कर्म्मवाच्य में क्विप् और षङ् होता है, क्विप् का सब इत् होता है, षङ् का षङ् इत् होता है और अ रहता है।

१९२। क्विप् और षङ् प्रत्ययान्त दृश् धातु परे रहने से तद्, यद्, एतद्, अस्मद् और युष्मद् शब्द का द् लोप हो जाता है और उसके पूर्ववर्त्ती अ के स्थान में आ होता है। यथा, स इव दृश्यते तादृक् तादृशः, यादृक्, यादृशः, एतादृक्, एतादृशः, अस्मादृक्, अस्मादृशः, युष्मादृक्, युष्मादृशः (१)।

१९३। क्विप् और षङ् प्रत्ययान्त दृश् धातु परे रहने से अदस् के स्थान में अमू, इदम् के स्थान में ई, किम् के स्थान में

(१) अस्मद् और युष्मद् शब्द के स्थान में एकवचन में मद् और त्वद् होने पर भी होता है। यथा मादृक् मादृशः त्वादृक् त्वादृशः (Like you)

की, भवत् के स्थान में भवा, समान के स्थान में स और अन्य शब्द के स्थान में अन्या होता है। यथा, असौ इव दृश्यते अमूदृक अमूदृशः, अयमिव दृश्यते ईदृक्, ईदृशः, क इव दृश्यते कीदृक् कीदृशः, भवानिव दृश्यते भवादृक्, भवादृशः, समान इव दृश्यते सदृक् सदृशः, अन्य व दृश्यते अन्यादृक् अन्यादृशः।

क्वनिप्

१९४। दृशेःक्वनिपः—कर्म्मवाच्य पद के परवर्त्ती दृश् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य भूतकाल में क्वनिप् होता है, इ क् और प् इत्, वन् रहता है। यथा, पा दृष्टवान् पारदृश्वा (One that has seen the other side of the thing).

इष्णु

१९५। अनलङ्कृञ्, निराकृञ्प्रजनोत्पचोत्पतोन्मद-रुच्यपत्रप्वृतुवृधुसहचर ष्णुच्। भुवश्च—शील, धर्म्म और सम्यक् करण अर्थ में सह् आदि (१) धातुओं के उत्तर कर्तृ-वाच्य में इष्णु होता है। यथा, सह सहिष्णुः, रुच् रोचिष्णुः, वृध् वर्द्धिष्णुः अलङ्कृ, अलङ्करिष्णुः, निराकृ निराकरिष्णुः, प्रजन् प्रजनिष्णुः, उत्पच् उत्पचिष्णुः, उत्पत् उत्पतिष्णुः, उन्मद् उन्मदिष्णुः अप त्रप् अपत्रपिष्णुः, वृत् वर्तिष्णुः, चर् चरिष्णुः, प्रभू प्रभविष्णुः (Powerful)

---

(१) सह्, रुच्, वृध्, अलङ्कृ निराकृ प्रजन, उत्पच्, उत्पत्, उन्मद, अपत्रप्, वृत्, चर्, प्रभ।

स्नुक्

१९६। ग्लाजिस्थै-श्चस्नुक्—शीलादि अर्थ में जि, भू, स्था और ग्ला धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में स्नुक् होता है, क् इत् स्नु रहता है। यथा, जिष्णुः, (Victorious) भूष्णुः, स्थास्नुः, ग्लास्नु (Languid)

क्नु

१९७। त्रसिगृधिधृषिक्षिपेः क्नुः—शीलादि अर्थ में त्रस्, गृध् धृष् और क्षिप् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में क्नु होता है। क् इत् होता है और नु रहता है। यथा, त्रस्नुः, गृध्नुः, धृष्णुः, क्षिप्नुः (Throwing)।

उकञ्

१९८। लषपतपदस्थाभूवृषहनकमगमशॄभ्य उकञ्—शीलादि अर्थ में कम् आदि (१) धातुओं के उत्तर कर्तृवाच्य में उकञ् होता है, ञ् इत् उक् रहता है। यथा, कम् कामुकः, लष् लाषुकः, पत् पातुकः, पद् पादुकः, स्था स्थायुकः, भू भावुकः, वृष् वाषु कः, गम् गामुक., शॄ शारुकः; हन् के स्थान में घात होता है, घातुकः (Killing)

आलु

१९९। स्पृहिगृहिपतिदयिनिद्रातन्द्राश्रद्धाभ्य आलुच्—

(१) कम्, लष्, पत्, स्था, भू, वृष्, हन्, गम्, शॄ।

शीलादि अर्थ में दय् आदि (१) धातुओं के उत्तर कर्तृवाच्य में आलु होता है। यथा, दय् दयालुः, निद्रा निद्रालु, तन्द्रा तन्द्रालुः, शी शयालु· (Sleepy) गृहि गृहयालुः, स्पृहि स्पृहयालुः, पति पतयालुः (Falling) ।

घुर्

२०० । भञ्जभासमिदो घुरच—शीलादि अर्थ में भञ्; भास् और भिद् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में घुर् होता है; घ् इत् होता है और उर रहता है। यथा, भङ्गुरः (Brittle) भासुरः मेदुरः (Soft, smooth)

क्वरप्

२०१ । इण्नश्जिसर्त्तिभ्यः क्वरप्—शीलादि अर्थ में, नश्, इ, जि, सृ, और गम् धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में क्वरप् होता है क् ष् प् इत्, वर रहता है। यथा, नश्वरः, इत्वरः, जित्वरः, सृत्वरः, । गम् धातु के म् के स्थान में त् होता है यथा गत्वरः (Transitory)

र

२०२ । नमिकम्पिषम्यजसकमहिंसदीपोरः—शीलादि अर्थ में नम् आदि (२) धातुओं के उत्तर कर्तृवाच्य में र होता

---

(१) दय् नि और तन् पूर्व्वक द्रा, अत् पूर्व्वक धा, शी, गृहि, स्पृहि पति ।

(२) नम्, कम्, हिन्स, कम्प् स्मि, अजस्, दीप् ।

है। यथा, नम् नम्रः (Yielding) हिंस् हिंस्रः, स्मि स्मेरः, कम्प् कम्प्रः, अजस् अजस्रः, दीप् दीप्रः (Shining.)

उ

२०३। सनाशंसभिक्ष उः। विन्दुरिच्छुः—शीलादि अर्थ में आ पूर्वक शंस्, इष्, भिक्ष्, और सनन्त धातुओं के उत्तर कर्तृवाच्य में उ होता है। यथा, आशंसुः (desirous)। इष् के स्थान में इच्छ होता है, इच्छुः, भिक्षुः, जिज्ञासुः, पिपासुः, बुभुक्षुः, चिकीर्षुः, विवक्षुः, जिघृक्षुः (Wishing to take) जिघांसुः, तितीर्षुः ईप्सुः, दित्सुः, लिप्सुः, जिगीषुः (Wishing to Conquer)

वर

२०४। स्थेशभासपिसकसो वरच्। यश्च यङः—शीलादि अर्थ में स्थान आदि (१) धातुओं के उत्तर कर्तृवाच्य में वर होता है। यथा; स्था स्थावरः, ईश् ईश्वरः, भास् भास्वरः। यङ का लोप हो जाता है। यायाय यायवर (Vagrant, house)

ऊक

२०५। जागुरुकः। यजजपदशां यङः—शीलादि अर्थ में जागृधातु और यङन्त यज्, जप्, वद् और दन्श् धातु के उत्तर ऊक होता है। यङ् का लोप हो जाता है। यथा, जागरूकः, यायजूकः (One who performs sacrifices frequently), जञ्जपूकः, वावदूकः (Talkative) दन्दशूकः।

---

(१) स्था, ईश्, भास्, पिस्, कस्, प्रमद्, यङन्तया। पाणिनि ने प्र-पूर्वक मद्-धातु का उल्लेख नहीं किया है।

इत्नु

२०६। शीलादि अर्थ में स्तनि, मदि, दूषि, गदि, और हृदि धातु के उत्तर इत्नु होता है। यथा, स्तनयित्नुः, (cloud) मदयित्नु (A mad man), दूषयित्नुः (vitiating), गदयित्नुः (talkative), हृदयित्नुः।

क्मर

२०७। सृघस्यदः क्मरच्—शीलादि अर्थ में घस्, अद्, और सृ धातु के उत्तर क्मर होता है, क् इत् मर रहता है यथा घस्मरः (Voracious), अद्मरः, सृमरः (Moving.)

कुर

२०८। विदिभिदिच्छिदेः कुरच्-शीलादि अर्थ में छिद्, भिद् और विद् धातु के उत्तर कुर होता है, क् इत् होता है और उर रहता है। यथा, छिदुरः, भिदुरः, विदुरः। (Knowing)

त्र

२०९। दाम्नीशसयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे-करण अर्थ मे नी आदि [१] धातुओं के उत्तर कर्तृवाच्य में त्र होता है। यथा, नयति अनेन नेत्रम्, द्युति अनेन दात्रम् शसति अनेन शस्त्रम्, स्तौति अनेन स्तोत्रम्, पतति अनेन पत्रम् दशति अनया दंष्ट्रा। (Gawt)

इत्र

२१०। अर्त्तिलूधूसूखनसहचर इत्र —करणवाच्य में पू

---

(१) नी, दा, स्तु, यद्र यतुद्र सि, सिच्, निह्, पत, दन्श नह्

आदि (१) धातु के उत्तर इत्र होता है यथा, पूयते अनेन पवित्रम्; चर् चरित्रम् वह् वहित्रम्, खन् खनित्रम्।

इ (कि)

२११। उपसर्गेघ्वोः किः—उपसर्ग और अन्तर शब्द के परवर्ती धा धातु के उत्तर भाववाच्य में इ होता है और (उस) धातु के अकारका लोप हो जाता है। यथा, विधिः, निधिः, सन्धिः, (Joints) आधिः अन्तर्द्धि (Disappearance)।

२१२। कर्मण्यधिकरणे च—कर्मवाचक पद के परवर्त्ती धातु के उत्तर अधिकरण-वाच्य में कि होता है और धा धातु का आकार लोप हो जाता है। यथा; जलानि धीयन्तेऽस्मिन् जलधिः, वारिधि, पयोधिः; जलनिधिः, वारनिधिः; पयोनिधिः।

त्रिम

२१३। ड्वितः क्त्रि—गणपाठ काल में जो सब धातु डु के साथ मिले रहते हैं। उनके उत्तर तन्निर्वृत्त अर्थ में त्रिमक् होता है और क् इत होता है और त्रिम् रहता है। यथा, कृ क्रियया निर्वृत्तम् कृत्रिमम् (Artificial) दा के स्थान में दत् होता है। दानेन निर्वृत्तम् दत्रिमम् (Received by gift) पच् पाकेन निर्वृत्तम् पक्त्रिमम् (Cooked)

अथु

२१४। ट्वितोऽथुच्—गणपाठ काल में जो धातु टु संसृष्ट रहते हैं। उनके उत्तर भाववाच्य में अथु होता है। यथा वेप् वेपथुः वम् वमथुः, श्वि श्वयथुः (Sweling.)।

[१] पु, चर्, वह्, खन्, लु, श्रु, सू, धू, सह्।

अनि

२१५। आक्रोशे नञ्यनिः—नञ के परवर्त्ती धातु के उत्तर भाववाच्य आक्रोश अर्थ में अनि होता है। अनि प्रत्यय निष्पन्न शब्द स्त्री लिङ्ग होता है यथा जीव् अजीवनिः, (Death) जन् अजननिः (Cessation ofexistence)

अन् *

२१६। ल्युट् च। भाववाच्य में धातु के उत्तर अन् होता है और यह अन् प्रत्ययान्त शब्द क्लीवलिङ्ग होता है। यथा, गम् गमनम्, भुज् भोजनम्, शी शयनम्, वम् वमनम्, आरुह् आरोहणम्, ईक्ष ईक्षणम्, चल् चलनम्, पत् पतनम्, त्वर् त्वरणम्, स्खल स्खलनम्, रक्ष् रक्षणम्, भक्ष् भक्षणम्, गर्ज्ज गर्ज्जनम्, लङ्घ लङ्घनम्, स्पन्द् स्पन्दनम्, तर्प् तर्पणम्, मन् मननम्, अधि इ अध्ययनम्, वञ्च वञ्चनम्, खण्ड खण्डनम्, पा पानम्, दा दानम्, गा गानम्, घ्रा घ्राणम्, ज्ञा ज्ञानम्, विधा विधानम्, आधा आधानम्, (Taking) मा मानम्, स्ना स्नानम्, चि चयनम्, श्रि श्रयणम्, श्रु श्रवणम्, कृ करणम्, भृ भरणम्, मृ मरणम्, वृ वरणम्, स्मृ स्मरणम्, हृ हरणम्, दृश् दर्शनम्, स्पृश् स्पर्शनम्, सिच् सेचनम्, रञ्ज रञ्जनम्, नर्त नर्त्तनम्, मन्थ् मन्थनम्, रुद् रोदनम् (Crying)।

२१७। नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः—नन्दि आदि धातुओ के उत्तर कर्तृवाच्य में अन् होता है। यथा, नन्दि नन्दनः, मदि मदनः, साधि साधनः, वर्द्धि वर्द्धनः, शोभि शोभनः, सह्

* अन् प्रत्ययान्त शब्द प्रायः नपुंसक लिङ्ग होता है।

सहनः, तप् तपनः (The sun) दम् दमनः, रमि रमणः, सूदि सूदनः, भीषि भीषणः, नाशि नाशनः ।

२१८ । क्रुधमण्डनार्थेभ्यश्च—क्रोधार्थ और भूषार्थ धातु के उत्तर कर्तृवाच्य शीलादि अर्थ में अन् होता है । यथा, क्रुध् क्रोधनः, रुष् रोषणः, कुप् कोपनः, अमृष् अमर्षणः, मण्डि मण्डनः अलङ्क अलङ्करणः (Beauti fying) ।

२१९ । जु चङ् क्रम्य दन्द्रम्य सृ गृधि ज्वल शुच् लष्-पत्-पदः—शीलादि अर्थ में ज्वल् प्रभृति धातुओं के उत्तर कर्तृ-वाच्य में अन् होता है । यथा, ज्वल् ज्वलनः, (Fire) शुच शोचनः, वृध् वर्द्धनः, चल् चलनः, दह् दहनः ।

अनट्

२२० । करण और अधिकरण अर्थ में धातुओं के उत्तर अनट् होता है, ट् इत् अन रहता है । यथा, करण अर्थ में नीयते अनेन नयनम्, लोच्यते अनेन लोचनम्, चर्य्यते अनेन चरणम्, क्रियते अनेन करणम्, साध्यते अनेन साधनम्, भूष्यते अनेन भूषणम्, मण्ड्यते अनेन मण्डनम्, यायते अनेन यानम्, वाह्यते अनेन वाहनम्, अधिरुह्यते अनया अधिरोहणी (Ladder) अधिकरण अर्थ में—शय्यते अस्मिन् शयनम्, (Bed) भूयते अस्मिन् भवनम्, (House) स्थीयते अस्मिन् स्थानम् (Place) ।

घञ् *

२२१ । भावे अकर्त्तरिच कारके संज्ञायाम्—भाववाच्य में और कर्तृभिन्न करणवाच्य में धातु के उत्तर घञ् होता है, घ् ञ्

* घञ प्रत्ययान्त शब्द प्रायः पुलिङ्ग होते हैं ।

इत् अ रहता है। यथा, पच् पाकः, त्यज् , त्यागः, नश्ः, नाश्ः, शुच् शोकः, भुज् भोगः, रुज् रोगः, वस् वासः, पत् पातः, वद् वादः, शप् शापः, तप् तापः, दह् दाहः, श्रु श्रावः, लभ् लाभः, लष् लाषः, पठ् पाठः, युज् योगः, हस् हासः, वह् वाहः, स्वद् स्वादः, सद् सादः, मद् मादः, हृ हारः, लस् लासः, यज् यागः, भज् भागः, रञ्ज धातु का न लोप होता है। रागः, भञ्ज् भंग, सञ्ज् संग (Companion Ship)

अ अल्

२२२। भाववाच्य और कर्तृभिन्न कारक वाच्य में धातु के उत्तर अ रहता है। यथा, जि जयः, क्षि क्षयः, स्मि स्मयः, ली लयः, नी नयः, द्रु द्रवः, रु रवः, स्रु स्रव , स्तु स्तवः, भू भवः, भी भयम् , वृष्-वर्षम् , जप् जपः, श्रि श्रवः, चि चयः, ग्रह्-ग्रहः, मद् मदः, मुद मोदः शिलष् श्लेषः, रुष् रोषः, मुह् मोहः, द्रु द्रोहः, क्रुध् क्रोधः, कुप् कोपः, क्षुभ् क्षोभः, तुष् तोषः (Satisfaction) बुध् बोधः, खिद् खेदः, मृश् मर्शः, स्पृश् स्पृशः (Touch) भ्रन्श् भ्रंशः, भिद् भेदः, हृष् हर्षः। (Joy)

खल्

२२३। ईषद्दुः सुषुककृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल्—सु, दुर् और ईषत् शब्द के परवर्ती धातुओं के उत्तर कर्मवाच्य और भाववाच्य में खल् होता है। ख् ल् इत्, अ रहता है। यथा, कृ-सुकरः, दुष्करः, ईषद्रत्करः, गम्-सुगमः, दुर्गमः, ईषद्गमः, वह्-सुवहः, दुर्वहः, ईषद्वहः, त्यज्-सुत्यजः, दुस्त्यजः, ईषत्त्यजः, लभ्-सुलभः, दुर्लभः, ईषल्लभः।

खल और अन (युच्)

२२४। **आतो युच् भाषायां शासियुधिदृषिधृषिमृषिभ्यो युज्वाच्यः**—सु, दुर् और ईषत् शब्द के परवर्ती आस् युध् दृश् धृष् और मृष् धातु के उत्तर कर्मवाच्य में खल् और अन् होता है। यथा, शास् सुशासः, सुशासनः, दुःशासः दुशासनः, युध् सुयोधः सुयोधनः, दुर्य्योधः दुर्योधनः, दृश् सुदर्शः सुदर्शनः, दुर्दर्शनः, धृष् सुधर्षः सुधर्षणः, दुर्धर्षः दुधर्षणः, मृष सुमर्षः सुमर्षणः दुर्मर्षः दुर्मर्षणः।

अ

२२५। **अ-अप्रत्ययात्**—प्रत्ययान्त धातु और नाम धातु के उत्तर भाववाच्य मे अ होता है और अ प्रत्ययनिष्पन्न शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है। यथा, सनन्त-जिज्ञासा, पिपासा, चिकीर्षा, जिगीषा, लिप्सा, जिघांसा, चिकित्सा, मीमांसा, जुगुप्सा; नामधातु तपस्या वरिवस्या (Worship); अशनाया (Hunger), पुत्रकाम्या, कण्डूया (Itching)

२२६। (१) गुरुस्वरविशिष्ट व्यञ्जनान्त धातु के उत्तर भाववाच्य में अ होता है। अ प्रत्ययनिष्पन्न शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है। यथा, भिक्ष् भिक्षा, सेव् सेवा, काङ्क्ष् आकाङ्क्षा, परि ईक्ष परीक्षा, दीक्ष दीक्षा, निन्द् निन्दा, खेल् खेला (Play), रक्ष् रक्षा, शङ्क शङ्का, अर्च्च अर्चा, मूर्च्छ मूर्छा, लज्ज् लज्जा, व्रीड् व्रीडा, क्रीड् क्रीडा, मन्थ मन्था, बाध् बाधा, कम्प् अनुकम्पा, ईर्ष्य ईर्ष्या, हिन्स् हिंसा, असूय असूया, वाञ्छ वाञ्छा, ईह् ईहा, शन्स् आशंसा, प्रशंसा।

(१) गुरोश्चहलः।

२२७। चिन्ति पूजि, कथि, चचर्च्चि, स्पृहि, दोलि, पीड़ि और शोभि धातु के उत्तर भाववाच्य में अ होता है। अ प्रत्यय निष्पन्न शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है। यथा; पूजा, (Worship) कथा, चर्च्चा; स्पृहा, दोला, पीड़ा. (Disease) शोभा।

२२८। जो सब धातु गणपाठ काल में यकार संसृष्ट रहते हैं उनके उत्तर भाववाच्य में अ होता है। अप्रत्यय निष्पन्न शब्द स्त्रीलिङ्ग हो ता है। यथा; त्रपा (Shame), व्यथा, जरा, त्वरा पचा, मृज् धातु का गुण नही होता ; मृजा (Purification)

२२९। भिद् धातुओं के उत्तर भाववाच्य में अ होता है गुण नहीं होता। और अ प्रत्यय निष्पन्न शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है। यथा, भिदा, (Separation) कृपा, तृषा, त्तमा, दया।

२३०। अ प्रत्यय होने से इष् के स्थान में इच्छ और प्रच्छ धातु के स्थान में पृच्छ होता है। यथा, इष् इच्छा, प्रच्छ पृच्छा (Questioning)

२३१। **आनश्चोपसर्गे**—उपसर्ग. के परवर्ती आकार धातु के उत्तर भाववाच्य में अ होता है। अ प्रत्यय निष्पन्न शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है। यथा, भा-आभा, प्रभा, प्रतिभा; प्रमा-उपमा, अनुमा; प्रतिमा, धा-विधा, व्यवधा, अभिधा, सन्ध्या, उपधा, ज्ञा-अभिज्ञा, प्रज्ञा, अनुज्ञा, सज्ञा, अवज्ञा, प्रतिज्ञा, उपज्ञा, आज्ञा, ख्या, आख्या, संख्या, अभिख्या, स्था-संस्था, अवस्था, निष्ठा, प्रतिष्ठा, आस्था (१) (Ragard)।

अन्

२३२। **रायासश्चस्थो युच्**—णिजन्त धातु के उत्तर भाववाच्य

(१) धा धातु के सत् और अन्तर शब्द के परवर्ती होने से भी होता है। यथा, श्रद्धा, अन्तर्द्धा।

में अन् होता है अन् प्रत्ययनिष्पन्न शब्द स्त्रीलिंग होता है। यथा, अर्चि अर्च्चना, कल्पि कल्पना; कारि कारणा; गणि गणना, घटि घटना; पतारि प्रतारणा; धारि धारणा; पारि पारणा; विमानि विमानना; यन्त्रि यन्त्रणा; याति यातना; वासि वासना। किसी किसी स्थान में नपुसकलिङ्ग होता है। यथा; प्रेरि प्रेरणम् ; प्रीणि प्रीणनम् ; तर्पि-तर्पणम्, शोध शोधिनम् (Puaification); साधि साधनम् ; गोपि गोपनम्।

२३३। विन्द्: विद्; आस् ; ईष्; ग्रन्थ; और श्रन्थ् , धातु के उत्तर भाववाच्य में अन् होता है। अन् प्रत्ययनिष्पन्न शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है। यथा; वन्द वन्दना; विद्, वेदना; आस, आसना ईष् ईषणा; ग्रन्थ ग्रन्थना; श्रन्थ श्रन्थना (Loosing)।

न (नङ्)

२३४। यज यत; स्वप् ; प्रच्छ; याच् ; और तृष् , धातुओं के उत्तर भाववाच्य में न होता है। यथा, यज्ञः, यत्नः, स्वप्नः, प्रश्नः, याच्ञाः, तृष्णा (Thirst)।

यक्

२३५। व्रज् , चर् , मृग् , और विद् धातुओं के उत्तर भाववाच्य में यक् होता है क् इत, य रहता है यक् प्रत्यय निष्पन्न शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है। यथा व्रज व्रज्या, प्रव्रज्या ; चर् चर्य्या, परिचर्य्या; मृग मृगया (Hunting) विद् विद्या।

२३६। कृ, शी और यज् धातु के उत्तर यक् होता है और निम्नलिखित समस्त पद निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा; कृ कृया कृत्या, शी शय्या; यज् इज्या।

Approved as a Text Book by the Vice Chanciellior of the Patna University, Directers of Public Instruction, Bihar and Orissa, The Punjab and Central Provinces

SANSKRIT VYAKARAN KAOMUDI,

PART IV.

संस्कृत-व्याकरण-कौमुदी

चौथा भाग।



(मैट्रीकुलेशन, आई० ए०, बी० ए० के विद्यार्थियों के लिये)

अनुवादक

शिवप्रसाद खन्ना (विशारद)

सम्पादक

पण्डित गोपीनाथ उपाध्याय,

साहित्य-व्याकरणाचार्य्य।

प्रकाशक

बर्म्मन कम्पनी (पुस्तक विभाग) मुज़फ़्फ़रपुर

बाबू बिश्वम्भरनाथ भार्गव के प्रबन्ध से स्टैन्डर्ड प्रेस, इलाहाबाद में छपा।

नूतन परिवर्धित संस्करण

{ मू० १)

सूचना।

व्याकरण कौमुदी का शेष भाग प्रकाशित होगया है। इस भाग में नूतन प्रणाली का अवलम्बन किया गया है। अनेक सज्जनों ने व्याकरण-कौमुदी में संस्कृत सूत्र देने के निमित्त विशेष अनुरोध किया है। इस अनुरोध का तात्पर्य यही है कि बङ्गला भाषा में संकलित सूत्र की अपेक्षा अल्पाक्षर ग्रथित संस्कृत सूत्र अनायास कंठस्थ किया जा सकता है तथा स्मरण रक्खा जा सकता है। उनका अनुरोध युक्ति युक्त बोध होने के कारण इस भाग में संस्कृत सूत्र दे दिये गये हैं एवं आवश्यक होने से पहिले के तीन भागों में भी क्रम से इस प्रणाली का अवलम्बन किया जायगा। सब सूत्र नूतन संकलित नहीं हैं अनेक स्थानों पर पाणिनी प्रणीत सूत्र उद्धृत किये गये हैं।

कलकत्ता
संवत १९०७, ५वीं फाल्गुन। } श्री ईश्वरचन्द्र शर्मा।

वक्तव्य।

मुझे आपके कर कमलों में व्याकरण कौमुदी चतुर्थ भाग का नूतन संस्करण देते हुये अत्यन्त हर्ष होता है। इस संस्करण में यथा साध्य पहिले संस्करणके प्रेसकी भूलोंकापूर्ण रूप से संशोधन कर दिया है। बहुत सी नयी उपयोगी बातें भी बढ़ा दी गई हैं तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रश्न भी दे दिये गये हैं और आकार भी बढ़ा दिया गया है।

यह पुस्तक भारतवर्ष के अधिकांश विद्यालयों में पाठ्य पुस्तक के रूप पढ़ाई जाती हैं तथा इसका प्रचार प्रतिदिन बढ़ता ही जाता है। इसकी उपयोगिता इसीसे सिद्ध होती है।

मुज़फ़्फ़रपुर
ता० १-१-२०

विनीत—
शिवप्रसाद खन्ना
(विशारद)।

सूचीपत्र ।

व्याकरणकौमुदी।

चौथा भाग।

विभक्तिनिर्णय।

१। संख्याकारकबोधयित्री विभक्तिः।

जिसके द्वारा संख्या और कारक का निश्चय होता है, उसे विभक्ति कहते हैं। यथा, घटः, घटौ घटाः। यहां घट, शब्द में प्रथमा विभक्ति का योग रहने से एक घट, दो घट अनेक घट, इत्यादि पदों में एकादि संख्या का बोध होता है। चन्द्रं पश्यति, यहां चन्द्र में द्वितीया विभक्ति का योग रहने से, चन्द्र शब्द से कर्म्म कारक का बोध होता है।

२। विभक्तयः सप्त।

प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, और सप्तमी, ये सात विभक्तियां हैं।

(१) प्रथमा (First Class)

३। अभिधेयमात्रे प्रथमा।

---

(१) प्राति पदिकार्थ लिङ्ग परिमाण वचन मात्रे प्रथमा। २। ३। ४६

जहां क्रिया पद आदि न रहे, केवल अभिधेय (२) के बोध निमित्त, शब्द का प्रयोग किया जाय; वहां उस शब्द के उत्तर प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, वृक्षः लता, पुष्पम्, गिरिः, नदी, जलम्, रामः, सीता, लक्ष्मणः एकः, द्वौ, त्रयः, द्रोणः, खारी, ग्रन्थः।

४ । कर्त्तरि ।

कर्तृकारक में प्रथमा विभक्ति होती है यथा, शिशुः क्रीड़ति, गौः शब्दायते, मेघो गर्ज्जति ।

५ । सम्बोधने च ।२।३।४१।

सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, हे पितः, हे भ्रातरौ, हे पुत्राः।

६ । अव्यययोगे च ।

इति आदि कई एक अव्यय शब्दों के योग में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, अयोध्या नगरे दशरथ इति ख्यातो नृपतिरासीत् । पापात्मनां सङ्गः परित्यक्तुं साम्प्रतम्; विषवृक्षोऽपि संवर्द्धय स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम् ।

द्वितीया (Second Class.)

७ । कर्म्मणि द्वितीया ।

कर्म्म कारक में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा, पुष्पं-चिनोति, अन्नं भुङ्क्ते, जलं पिबति ।

(२) जिस शब्द से जिसका बोध हो, वही उस शब्द का अभिधेय है।

८ । क्रिया विशेषणे च । (१)

क्रिया के विशेषण में द्वितीया विभक्ति होती है। एक वचन में और क्लीव लिङ्ग में ही उसका प्रयोग होता है। यथा, सत्वरं धावति, द्रुतं पलायते, मृदु हसति, साधु भाषते।

९ । अध्वकालाभ्यामत्यन्तसंयोगे । (२)

अत्यन्त संयोग अर्थात् व्याप्ति बोध होने से अध्व वाचक और काल वाचक शब्दों के उत्तर द्वितीया विभक्ति होती है। यथा, अध्ववाचकः—क्रोशं गिरिः स्थितः, योजनं भृत्येनानु गतः। कालवाचकः—दिवसमुपवसति, मासमधीते (३)। मासम् कल्याणी, मासम् गुड़धानाः। क्रोशं योजनं दिवसं मासं व्याप्येत्यर्थः। (४) अत्यन्त संयोग बोध नहीं होने से मासस्य द्विरधीते, क्रोशस्येक देशे पर्व्वतः।

१० । अभिपरिसर्व्वो भयैस्तसन्तैः ।

तस् प्रत्ययान्त अभि, परि, सर्व्व, उभय, इन कई शब्दों के योग में, द्वितीया विभक्ति होती है। यथा, ग्राममभितः, गृहं परितः, उद्यानं सर्व्वतः, नदीमुभयतः।

११ । प्रत्यनुधिङ्निकषान्तरान्तरेण यावद्भिः ।

---

(१) क्रिया विशेषणं कर्म्म तद्वन्तम् नपुंसकं।

क्रिया विशेषण पद कर्म्मकारक, द्वितीया का एक वचन और क्लीव लिङ्ग होता है।

(२) कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे। २। ३। ५

प्रति, अनु, धिक्, निकषा अन्तरा (१), अन्तरेण (२), यावत्, इन कई शब्दों के योग में, द्वितीया विभक्ति होती है। यथा दीनं प्रति दया उचिता। राममनुजातो लक्ष्मणः, कृपणंधिक्, ग्रामं निकषा नदी, स त्वां मां च अन्तरा उपविष्टः (३) श्रममन्तरेण विद्या न भवति, (४) वनं यावदनु सरति (५),

शुद्ध करो।

स वारिं पिवति। ते मृदुं हसन्ति। असौ ग्रामस्य अभितः धावन्ति। गृहस्य परितः चरन्ति शिशवः। वालकाः वाटिकायाः सर्वतः क्रीडन्ति। नदीस्य उभयतः वृक्षा सन्ति। दीनात् प्रति दया उचितः। कृष्णस्य अनुजातः बलरामः। कृपणस्यधिक्। ग्रामात् निकषा कन्याः भ्रमन्ति। श्रमस्य अन्तरेण विद्यान भवन्ति। अरसयस्य अनुसरन्तिवाला।

तृतीया (Third Class.)

१२। तृतीया करणे। (६)

करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। यथा, हस्तेन गृह्णाति, चक्षुषा पश्यति, कर्णेन शृणोति।

१३। सहार्थैः।

---

(१) मध्य अर्थ में।

(२) विना अर्थ में।

(३) अन्तराऽन्तरेणायुक्त।२।३।४ यथा:—अन्तरा त्वाम्यां हरि.।

(४) अन्तरेण हरिन्न सुखम्।

(५) हीने।१।४।८६। अनु हरिं सुराः हरेर्हीना इत्यर्थः।

उपोऽधिके च।१।४।८७। हीने उपहरिं सुराः। अर्थात् हरि से हीन।

सहार्थक शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा, रामः सीतया लक्ष्मणेन सह वनं जगाम, केनापि सार्द्धं विरोधो न कर्त्तव्यः। सहार्थ शब्द के अप्रयोग में भी तृतीया विभक्ति होती है। यथा, पिता पुत्रेण गच्छति, पुत्रेण सहेत्यर्थः।

१४। ऊनवारणप्रयोजनार्थैश्च।

ऊनार्थ, वारणार्थ और प्रयोजनार्थ शब्दों के योग में, तृतीया विभक्ति होती है। यथा, ऊनार्थः–एकेन ऊनः, विद्यया हीनः, अहङ्कारेण शून्यः। वारणार्थ—अलं विवादेन, कलहेन-किम्। प्रयोजनार्थः—धनेन प्रयोजनम्, कोऽर्थः कलहेन।

१५। अध्वकालाभ्यामपवर्गे।

अपवर्ग अर्थात् क्रिया-समाप्ति और फल-प्राप्ति का बोध होने से, अध्व-वाचक और काल-वाचक शब्दों के उत्तर तृतीया विभक्ति होती है। यथा, अध्व-वाचक—क्रोशेनानुवाकोऽधीतः। काल-वाचक, त्रिभिरहोभिः कृतम्, मासेन व्याकरणमधीतम्। किन्तु मासं व्याकरणमधीतं न तु स्फुरति, यहाँ अध्ययन की फल-प्राप्ति का बोध नहीं होता, इसलिये मास शब्द के उत्तर तृतीया विभक्ति नहीं हुई।

१६। येनाङ्गेनाङ्गिनो विकारः।

जिस अङ्ग के विकृत होने से अङ्गी का विकार लक्षित होता है, उस अङ्ग वाचक शब्द के उत्तर तृतीया विभक्ति होती है। यथा, चक्षुषा काणः पादेन खञ्जः, कर्णेन वधिरः, पृष्ठेन कुब्जः।

१७ । लक्षणात् ।

जिस लक्षण अर्थात् चिह्न द्वारा कोई व्यक्ति सूचित होता है उस लक्षण बोधक शब्द के उत्तर तृतीया विभक्ति होती है। यथा, जटाभिः तापसमपश्यम्, भूषाभिः शिशुः अदृश्यत, छत्रेण छात्रं अद्राक्षम्।

१८ । प्रकृत्यादिभ्यश्च ।

स्थल विशेष में प्रकृति आदि शब्दों के उत्तर तृतीया विभक्ति होती है। यथा, प्रकृत्या चारुः, स्वभावेन सरलः, आकृत्या सुन्दरः जात्याब्राह्मणः, गोत्रेण शाण्डिल्यः, नाम्ना सोमरातः, प्रायेण दुःखिनः, वेगेन गच्छति, त्वरया धावति, यत्नेन लिखति, सुखेन स्वपिति, दुःखेन याति, क्लेशेन वदति ।

शुद्ध करो ।

चतुर्भ्यः दिनेभ्यः इयं शिशुः स्वकार्य्यं कुर्वन्ति ।
ते अक्ष्णात्काणः । सचरणौ खञ्जः । श्रवणात् वधिरः ।
जटायै अहं तापसं अयश्यम् । छत्रात् छात्रं अद्राक्षम् ।
प्रकृत्येन चपलः । सस्वभावात् सरलः आकृत्यात् सुन्दरः जात्यं ब्राह्मणः ।

चतुर्थी (Fourth Class.)

१९ । चतुर्थी सम्प्रदाने ।

सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा, दरिद्राय दानं ददाति, भिक्षवे भिक्षां ददाति।

२०। तादर्थ्ये।

तादर्थ्य बोध होने से अर्थात् कोई वस्तु वा क्रिया जिसके निमित्त होती है, उसके उत्तर चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा, यूपाय दारु, कुण्डलाय हिरण्यम्, अश्वाय घासः, रन्धनाय स्थाली, ज्ञानायाध्ययनम्, दानाय धनोपार्ज्जनम्, स्नानाय नदीं याति, पाकाय अग्निमाहरति। मुक्तये हरिम्भजति (क) उत्पातेन ज्ञापिते। यथा वाताय कपिला विद्युत।

२१। निवृत्तौ निवर्तनीयात्।

निवृत्ति बोध होने से निवर्त्तनीय (जिसको निवारण करे) के उत्तर चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा. मशकाय धूमः, मशकनिवृत्तये इत्यर्थः; आतपाय छत्रम्, आतपनिवृत्तये इत्यर्थः; पिपासायै जलम्, पिपासा निवृत्तये इत्यर्थः; तापाय स्नानम्, ताप निवृत्तये इत्यर्थः; रोगाय औषधम्, रोग निवृत्तये इत्यर्थः; पापाय प्रायश्चित्तम्, पापनिवृत्तये इत्यर्थः।

२२। सम्पद्यमानात् क्लृप्यादेः। (क्लृपि सम्पद्यमाने)

क्लृपि आदि धातुओं के प्रयोग में सम्पद्यमान के उत्तर चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा, भक्तिर्ज्ञानाय कल्पते, ज्ञानं सुखाय सम्पद्यते, धर्म्मः स्वर्गाय भवति, अधर्म्मो नरकाय भवति।

२३। हितसुखनमोभिः। (हितयोगे च)

हित, सुख और नमस् शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति

होती है। यथा, हितं पुत्राय, सुखं शिष्याय, नमो गुरवे। क्रिया के योग में विकल्प से होती है। यथा, गुरवे नमस्कृत्य, गुरुं नमस्कृत्य।

२४। स्वस्तिस्वाहास्वधावषड्भिः। (नमः स्वस्ति स्वाहा, स्वधा अलं वषड्योगाश्च)।

स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा और वषट् शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा, स्वस्ति प्रजाभ्यः अग्नये, स्वाहा, पितृभ्यः स्वधा, इन्द्राय वषट्।

२५। समर्थार्थकैश्च।

समर्थार्थक शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा, समर्थो मल्लो मल्लाय, अलं मल्लो मल्लाय, शक्तो मल्लो मल्लाय, प्रभुर्मल्लो मल्लाय। समर्थार्थक क्रिया के योग में भी चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा, प्रभवति मल्लो मल्लाय, शक्नोति मल्लो मल्लाय।

२६। मन्यकर्म्मण्यनादरेविभाषा। (ऽप्राणिषु)

अवज्ञा बोध होने से दिवादि गणीय मन् धातु के अवज्ञा-बोधक कर्म्म में विकल्प से चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा, स त्वां तृणाय मन्यते, नाहं त्वां कुक्कुराय मन्ये। पक्ष में द्वितीया। शृगालादि (१) कर्म्म में चतुर्थी विभक्ति नहीं होती। यथा, त्वामहं शृगालं मन्ये।

(१) शृगाल, काक शुक, नौ, अन्न।

२७। वा गत्यर्थकर्मणि चेष्टायाम्। (गत्यर्थकर्मणि द्वितीया चतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि)।

चेष्टाबोध होने से गत्यर्थक धातुओं के कर्म्म में विकल्प से चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा, ग्रामाय गच्छति, व्रजाय व्रजति। पक्ष में द्वितीया। चेष्टा नहीं बोध होने से नहीं होता। यथा, मनसा मथुरां गच्छति। अध्ववाचक शब्द कर्म्म होने से नहीं होता। यथा, अध्वानं गच्छति, पन्थानं गच्छति।
(क) तुमर्थाच्च भाव वचनात्। समापिका क्रिया के पूर्ववर्ती तुम प्रत्यय से बनी हुई असमापिका क्रिया के कर्म में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे फलेभ्यो याति, फलेभ्योहेतु यातीत्यर्थ।

पंचमी (Fifth class)।

२८। अपादाने पंचमी।

अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा अश्वात् पतितः, गृहाच्चलितः, जलादुत्थितः।

२९। ल्यब्लोपे कर्म्मण्यधिकरणे च।

ल्वप् प्रत्ययान्त पद के अप्रयोग में कर्म और अधिकरण में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, प्रासादात् प्रेक्षते, प्रासाद-मारुह्यइत्यर्थः, आसनादवलोकयति, आसने उपविश्य इत्यर्थः।

३०। कालाध्वनोरवधेः।

काल परिमाण और अध्वपरिमाण बोध होने से अवधि-

(२) अन्यत्र कर्मणि द्वितीया चतुर्थ्यौ चेष्टामनध्वनां।

बोधक शब्द के उत्तर पञ्चमी, विभक्ति होती है। यथा, काल-परिमाण—अग्रहायणात् पञ्चमासाः, माघात् तृतीये मासि, विवाहात् सप्तमे दिने। अध्वपरिमाण–पाटलिपुत्रात शतं क्रोशाः प्रयागात् त्रिंशत् क्रोशाः कुरुक्षेत्रात् दश योजनानि ।

२१ । निकृष्टादेकोत्कर्षे ।

दो वा अनेक में से एक का उत्कर्ष बोध होने से निकृष्ट के उत्तर पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, धनात् विद्या गरीयसी, चैत्रो मैत्रात् बलीयान्, माथुराः पाटलिपुत्रकेभ्यः आढ्यतराः ।

३२ । मर्य्यादाभिविध्योराङ्योगे । (पञ्चम्याङ्-परिभिः ।)

मर्य्यादा और अभिविधि बोध होने से, 'आ' इस अव्यय शब्द के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, मर्य्यादा—आ जन्मनः आ शैशवात्, आ समुद्रात्, आ हिमाचलात्। अभिविधि—आ वनात्, दृष्टोदेवः वनं व्याप्य इत्यर्थः। आ सकलात् ब्रह्म, सकलं व्याप्य इत्यर्थः। अप हरेः, परिहरे आ भुक्तेः संसारः।

३३ । अन्यार्थैः ।

अन्यार्थक शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, मित्रादन्य. कः परित्रातुं समर्थः; घटः पटादितरः, इदमस्माद्भिन्नम्। अन्यार्थक क्रिया के योग में भी पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, स्वर्णं रजताद्भिद्यते ।

३४। दिग्देशकालवाचिभिः।

दिग्वाचक, देशवाचक और काल वाचक शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, दिग्वाचक—पूर्व्वोग्रामात्, उत्तरोगृहात्। देशवाचक-चैत्रोमैत्रात् पूर्व्वदेशे। काल वाचक-चैत्रात् पूर्व्वः फाल्गुनः, भोजनात् प्राक्, शयनात् पूर्व्वम्, उत्थानात् परतः, प्रस्थानादनन्तरम्।

३५। वहिराराात्प्रभृतिभिः।

वहिस्, आरात् और प्रभृति शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, गृहात् वहिः, ग्रामात् वहिः (१), आरात् वनात्, आरात् उद्यानात्, जन्मनः प्रभृति, शैशवात् प्रभृति।

३६। आ आहिभ्याञ्च।

आ और आहि प्रत्ययान्त शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, उद्यानादुत्तरागृहम्, गृहादुत्तराहि सरः हिमालयात् दक्षिणा भारतवर्षम् प्रयागात् दक्षिणाहि विन्ध्यः।

३७ ऋतेयोगे द्वितीया च।

ऋते शब्द के योग में पञ्चमी और द्वितीया विभक्ति होती है यथा, ज्ञानादृते, ज्ञानमृते।

क्रमदीश्वर ने वहिः शब्द के योग में पञ्चमी और षष्ठी दोनों ही विभक्तियों का विधान किया है।

३८ । पृथग्विनाभ्यां द्वितीयातृतीये च ।

पृथक् और बिना शब्दों के योग में पञ्चमी एवं द्वितीया और तृतीया विभक्ति होती है । यथा, चैत्रात् पृथक्, चैत्रं पृथक्; चैत्रेण पृथक् श्रमात् बिना, श्रमं बिना, श्रमेण बिना ।

३९ । स्तोक कृच्छ्राल्पकतिपयेभ्यस्तृतीया च ।

स्तोक, कृच्छ्र, अल्प, कतिपय शब्दों के उत्तर पञ्चमी और तृतीया विभक्ति होती हैं । यथा, स्तोकान्मुक्तः; स्तोकेन मुक्तः, कृच्छ्रान्मुक्तः, कृच्छ्रेण मुक्तः, अल्पान्मुक्तः, अल्पेन मुक्तः; कतिपयान्मुक्तः, कतिपयेन मुक्तः । विशेषण होने से नहीं होती । यथा, स्तोकः पाकः, स्तोकं पचति ।

४० । हेतौ च ।

हेतु बोध होने से, तद्-बोधक शब्दों के उत्तर पञ्चमी और तृतीया विभक्ति होती है । यथा, धनात् कुलम्, धनेन कुलम्; भयात् कम्पः, भयेन कम्पः; हर्षात् नृत्यति, हर्षेण नृत्यति, दुःखात् रोदिति, दुःखेन रोदिति ।

(क) दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च । दूरार्थ और अन्तिकार्थ शब्दों के आगे द्वितीया, तृतीया और पंचमी विभक्ति होती है । जैसे, ग्रामस्य दूरं दूरात दूरेणवा, ऐसे ही अन्तिकम अन्तिकात् अन्तिकेनवा ।

षष्ठी (Sixth Class). ।

४१ । षष्ठी सम्बन्धे ।

सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा मम पिता, तव पुत्रः, तस्य भ्राता, महिषस्य शृङ्गम्, गोर्दुग्धम्, नद्या जलम्, वृक्षस्य छाया, अग्नेः शिखा, वायोर्वेगः, जलस्य प्रवाहः।

४२। कर्त्तृकर्म्मणोः कृति।

कृत् प्रत्यय के प्रयोग में कर्त्ता और कर्म्म में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा, कर्ता में—शिशोः शयनम्, अश्वस्य गतिः, तव पिपासा, मम बुभुक्षा। कर्म्म में–अन्नस्य पाकः, पयसः पानम्, सुखस्य भोगः, धनस्य दाता, वृक्षस्य छेदकः।

४३। उभयप्राप्तौ कर्म्मणि।

कर्त्ता और कर्म्म दोनों में षष्ठी की सम्भावना होने से, केवल कर्म्म ही में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा, गवां दोहो गोपेन, पयसः पानं शिशुना, धनस्य दानं नृपेण, जलस्य शोषणं सूर्य्येण, अर्थस्य हरणं चोरेण।

४४। क्वचिद्विभाषा कर्त्तरि।

कहीं २ कर्त्ता में विकल्प से षष्ठी विभक्ति होती है। यथा, घटस्य कृतिः कुम्भकारेण कुम्भकारस्य वा, चन्द्रस्य दिदृक्षा· मया मम वा, शिष्यस्य प्रशंसा गुरुणा गुरोर्वा, शब्दानाम-नुशासनम्, आचार्य्यस्य आचार्येण वा। मया मम वासेव्यो हरिः।

४५। नशत्रादेः। (१)

शतृ, शानच्, क्वसु, कानच्, स्यतृ और स्यमान प्रत्ययों के प्रयोग में षष्ठी विभक्ति नहीं होती। यथा, शतृ--गृहं गच्छन्, जलं पिबन् (२)। शानच्--अन्नं भुञ्जानः, व्याकरण मधीयानः। क्वसु-ओदनं पेचिवान्, ग्रामं जग्मिवान्। कानच्-गुरुं ववन्दानः, शास्त्रं शुश्रुवाणः। स्यतृ-गृहं गमिष्यन्, वेदं पठिष्यन्। स्यमान- गुरुं सेविष्यमाणः, धनंदास्यमानः।

४६। न तुमुनादेः।

तुमुन्, क्त्वा ल्यप् और णमुल् प्रत्ययों के प्रयोग में, षष्ठी विभक्ति नहीं होती। यथा तुमुन्- गृहं गन्तुम्, चन्द्रं द्रष्टुम्। क्त्वा-जलं पीत्वा, फलं गृहीत्वा। ल्यप्—व्याकरणमधीत्य, गृहमागत्य। णमुल्—गुरुं सेवं सेवम्, शास्त्रं श्रावं श्रावम्।

४७। नोदन्तस्य।

उकारान्त कृत् प्रत्यय के प्रयोग में षष्ठी विभक्ति नहीं होती। यथा, जलं पिपासुः, रिपून् जिष्णुः, शिलां क्षिप्नुः, विपक्षं निराकरिष्णुः, फलं ग्रहयालुः।

४८। नोकशीलतृणभविष्यणिनाम्।

उक्, शीलार्थक तृन् और भविष्यदर्थक णिन् प्रत्ययों के

---

(१) न लोकाव्य निष्ठा खलर्थतृणाम्।

(२) द्विषो विभाषा। द्विषधातु, के योग से विकल्प से षष्ठी विभक्ति होती है। यथा, सुरं द्विषन्, सुरस्य द्विषन्।

प्रयोग में षष्ठी विभक्ति नही होती। यथा, उक्-गृहं गामुकः, जलं वर्षुकः, शत्रुंघातुकः (१) शीलार्थक तृन्-धनं दाता, अन्नं भोक्ता, विपक्षं निराकर्त्ता। भविष्यदर्थक णिन्-धनं दायी, घृ भोजी, गृहं गामी, व्रजं गामी।

४६। न खलर्थानाम्।

खलर्थ प्रत्यय के प्रयोग में (२) षष्ठी विभक्ति नहीं होती। यथा, नैतत् सुकरं भवता, नैतद्दुष्करं तेन, सर्व्वमीषत्करं सुधिया, मया सुमर्षणः शत्रुः, त्वया दुःशासनोरिपुः।

५०। ननिष्ठायाः।

निष्ठा प्रत्यय (३) के प्रयोग में षष्ठी विभक्ति नहीं होती। यथा, क्त-तेन व्याकरणमधीतम्, मया जलं पीतम्, त्वया चन्द्रोदृष्टः। क्तवतु-स गृहं गतवान्, अहं चन्द्रं दृष्टवान्, त्वं वेदमधीतवान्।

५१। क्तस्य वर्तमाने।

वर्तमान काल में विहित क्त प्रत्यय के प्रयोग में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा, राज्ञां मतः, राजभिर्मन्यते इत्यर्थः, सतां पूजितः, सद्भिः पूज्यते इत्यर्थः।

---

[१] कामुक शब्द के प्रयोग में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा, धनस्य कामुक। [२] सु, दुर् और इषत् शब्दों के योग में धातु के उत्तर जो अ और अन् होते हैं, उन्हें खलर्थ प्रत्यय कहते हैं।

[३] क्त और क्तवतु प्रत्ययों को निष्ठा प्रत्यय कहते हैं। अनुवादक।

५२। अधिकरणवाचिनश्च।

अधिकरण कारक में विहित क्त प्रत्यय के प्रयोग में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा इदमेषां शयितम्, एतदेषामासितम्।

५३। विभाषा भावे।

भाववाच्य में विहित क्त प्रत्यय के प्रयोग में विकल्प से षष्ठी विभक्ति होती है। यथा, मम स्नातम्, मम स्थितम्, मम शयितम्। मम जागरितम्, पक्षे तृतीया।

५४। कृत्यानां कर्तरि।

कृत्य प्रत्यय के प्रयोग में, कर्त्ता में विकल्प से षष्ठी विभक्ति होती है। यथा, पुस्तकं तव पाठ्यम्, चन्द्रो मम द्रष्टव्यः, गुरुस्तस्यार्च्चनीयः। पक्षे तृतीया।

५५। कर्म्मणि जासिपिषनिप्रहणां हिंसायाम्। (जासिनि प्रहणनाटक्राथपिषां हिंसायाम्)

हिंसा अर्थ बोध होने से, जासि, पिष्, नि और प्र पूर्वक हन् धातु के कर्म्म में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा, चौरस्य उज्जासयति, शत्रोः पिनष्टि। नि और प्र के व्यस्त, समस्त और विपर्य्यस्त (उलटे पुलटे) भाव रहने से भी होती है। यथा, निहन्ति प्रहन्ति निप्रहन्ति प्रणिहन्ति वा चौरस्य। चारस्योन्नाटन क्राथनं वृषलस्य पेषणम्।

५६। वा स्मृत्यर्थदयेशां कर्म्मणि।

स्मरणार्थक दय् और ईश् धातुओं के कर्म्म में विकल्प से षष्ठी विभक्ति होती है। यथा, पुत्रो मातुः स्मरति, दाता दरिद्रस्य दयते, पिता पुत्रस्य इष्टे। पक्षे द्वितीया।

५७। तृप्त्यर्थानां विभाषा करणे।

तृप्यत्यर्थक धातु के करण कारक में विकल्प से षष्ठी विभक्ति होती है। यथा, नाग्निस्तृप्यति काष्ठानाम्, अपां हि तृप्ताय न वारिधारास्वादुः, सुगन्धिः स्वदते तुषारा। पक्षे तृतीया।

५८। अस्तादस्यात्यत सुभिः।

अस्तात्, असि, आति और अतसु प्रत्ययों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा, अस्तात्—पुरस्तादुद्यानस्य, उपरिष्टात् मञ्चस्य। असि—पुरो नगरस्य, अधो वृक्षस्य। आति—उत्तरात् समुद्रस्य, दक्षिणात् हिमालयस्य। अतसु—दक्षिणतो ग्रामस्य, उत्तरतो गृहस्य।

५९। कृत्वसुसुचोः कालाधिकरणे।

कृत्वसु और सुच् प्रत्ययों के प्रयोग में कालवाचक शब्द के अधिकरण में षष्ठी विभक्ति (१) होती है। यथा कृत्वसु—पञ्चकृत्वो दिवसस्याधीते, सप्तकृत्वो दिवस्यागच्छति, सुच्—द्विर्दिवसस्य भुङ्क्ते, त्रिर्दिवसस्य स्वपिति, द्विरह्नोभोजनम्।

६०। एनपा द्वितीया च।

---

(१) वोपदेव और क्रमदीश्वर के मत से विकल्प करके होती है।

एनप् प्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी और द्वितीया विभक्ति होती हैं। यथा, दक्षिणेन वृक्षवाटिकायाः सरः, दक्षिणेन वृक्षवाटिकां सरः।

६१। तुल्यार्थैस्तृतीया च।

तुल्यार्थक शब्दों के योग में षष्ठी और तृतीयाविभक्ति होती है। यथा, मम तुल्यः, मया तुल्यः, तव समः, त्वया समः, तस्य सदृशः, तेन सदृशः। तुला और उपमा शब्दों के योग में नहीं होती। तुला उपमा वा कृष्णस्य नास्ति।

६२। आशिषि कुशलादिभिश्चतुर्थी च।

आशीर्वाद बोध होने से कुशल आदि (१) शब्दों के योग में षष्ठी और चतुर्थी विभक्ति होती हैं। यथा, कुशलं देवदत्तस्य भूयात्, कुशलं देवदत्ताय भूयात्, निरामयं देवदत्तस्य भूयात्, निरामयं देवदत्ताय भूयात्; सुखं देवदत्तस्य भूयात्, सुखं देवदत्ताय भूयात्। आयुष्यंचिरञ्जीवितं कृष्णाय कृष्णस्य वा भूयात्। आशीर्वाद बोध न होने से—देवदत्तस्यायुष्यमस्ति।

६३। दूरान्तिकार्थैः पंचमी च।

दूरार्थ और अन्तिकार्थ शब्दों के योग में षष्ठी और पञ्चमी विभक्ति होती हैं। यथा, दूरं ग्रामस्य, दूरं ग्रामात्, अन्तिकं नगरस्य, अन्तिकं नगरात्।

६४। निमित्ताद्धेतुप्रयोगे।

हेतु शब्द के प्रयोग में निमित्तबोधक शब्द के उत्तर षष्ठी

(१) कुशल, निरामय, हित, सुख, अर्थ, आयुष्य और एतदर्थक शब्द।

विभक्ति होती है। (२) यथा, अन्नस्य हेतोवर्सति, अल्पस्य हेतो र्वहु हातुमिच्छन्।

६५। सर्व्वनाम्नस्तृतीया च।

हेतु शब्द के प्रयोग होने से निमित्तबोधक सर्वनाम शब्द के उत्तर षष्ठी और तृतीया विभक्ति होती है (३) यथा, कस्य हेतोः स आगतः, केन हेतुना स आगतः।

सप्तमी (Seventh Class)।

६६। सप्तम्यधिकरणे।

अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है। यथा, गृहे तिष्ठति, शय्यायां शेते, नद्यां स्नाति।

६७। यस्य च भावेन भावलक्षणम्।

जिस क्रिया के काल से दूसरी क्रिया का काल निरूपित होता है, उसके उत्तर सप्तमी विभक्ति होती है। यथा, रवावस्तं गते गतः, रवेरस्तगमनसमकालं गत इत्यर्थः। विधावुदिते समागतः, विधूदयसमकालं समागत इत्यर्थः। रजन्यां

---

(२) वोपदेव और भट्टोजी दीक्षित ने यहां तृतीयादि पांच विभक्तियों का विधान किया है।

(३) वोपदेव, क्रमदीश्वर और भट्टोजी दीक्षित ने प्रथम प्रभृति सात विभक्तियों का विधान किया है।

प्रभातायां प्रस्थितः, रजनीप्रभातसमकालं प्रस्थित इत्यर्थः। गोषुदुह्यमानासुगतः, गोदोहसमकालं गत इत्यर्थः।

६८। साधुनिपुणाभ्यामर्चायाम्।

प्रशंसाबोध होने से, साधु और निपुण शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। यथा व्याकरणे साधुः, साहित्ये निपुणः (१)। प्रशंसा नहीं बोध होने से—निपुणो राज्ञो भृत्यः। परि, प्रति, और अनु शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति नहीं होती। साधुर्निपुणोवा मातरं प्रति पर्य्यनुवा।

६९। क्तस्य सहेनिना कर्म्मणि।

इनि सहित क्त प्रत्यय के प्रयोग में कर्म्म में सप्तमी विभक्ति होती है। यथा, अधीतमनेन अधीती व्याकरणे, अवकीर्णमनेन अवकीर्णी व्रते।

७०। अध्वनो व्यवधौ प्रथमा च।

व्यवधान बोध होने से, अध्ववाचक शब्द के उत्तर सप्तमी और प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, ग्रामो वनात् पञ्चसु क्रोशेषु पञ्चक्रोशा वा, पञ्चक्रोशव्यवधाने विद्यते इत्यर्थः; प्रयागः पाटलिपुत्रात् दशसु योजनेषु दश योजनानि वा, दशयोजन व्यवधाने विद्यते इत्यर्थः।

७। प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च।

प्रसित और उत्सुक शब्दों के योग में सप्तमी और तृतीया

(१) बोपदेव के मत से षष्ठी सप्तमी दोनों विभक्तियां होती हैं।

विभक्ति होती है। यथा, धनेषु प्रसितः, धनैः प्रसितः; विद्यायामुत्सुकः, विद्ययोत्सुकः। प्रसित उत्सुको वा हरिणा हरौ वा।

७२। क्रियामध्येऽध्वकालाभ्यां पञ्चमीच।*

दो क्रियाओं के मध्यवर्ती अध्ववाचक और कालवाचक शब्दों के उत्तर सप्तमी और पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, अध्ववाचक—अयमिह स्थित्वा क्रोशे क्रोशाद्वा लक्ष्यं विध्येत्; कालवाचक—अयमद्य भुक्त्वाद्व्यहे द्व्यहाद्वा भोक्ता।

७३। दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीयातृतीयापंचम्यश्च।

दूरार्थ और अन्तिकार्थ शब्दों के उत्तर सप्तमी, द्वितीया, तृतीया और पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, दूरे ग्रामस्य, दूरं ग्रामस्य, दूरेण ग्रामस्य, दूरात् ग्रामस्य; अन्तिके गृहस्य, अन्तिकं गृहस्य, अन्तिकेन गृहस्य, अन्तिकात् गृहस्य। विशेषण होने से नहीं होता। यथा, दूरोग्रामः दूरः पन्थाः।

७४। षष्ठी चानादरे।

क्रिया द्वारा अवज्ञा (अनादर) बोध होने से, अवज्ञेय (जिस का अनादर हो) के उत्तर सप्तमी, षष्ठी विभक्ति होती है। यथा, रुदति शिशौ जगाम, रुदतः शिशोर्जगाम; रुदन्तं शिशुमनामनादृत्येत्यर्थः।

७५। साक्षिप्रभृतिभिश्च।

---

* शक्तिद्वय मध्येयौकालाध्वानौ ताभ्यामेषेतेस्तः।

साक्षिन्, प्रतिभू, कुशल, स्वामिन्, ईश्वर, अधिपति, प्रसूत, आयुक्त और दायाद, इन शब्दों के योग में सप्तमी और षष्ठी विभक्ति होतीहै। यथा, विवादे साक्षी, विवादस्य साक्षी; व्यवहारे प्रतिभूः, व्यवहारस्य प्रतिभूः; मीमांसाया कुशलः, मीमांसायाः कुशलः; स्त्रियां प्रसूतः, स्त्रियाः प्रसूतः।

७६। यतश्च निर्द्धारणम्।

जाति, गुण, क्रिया अथवा संज्ञा द्वारा जातिसमूह में से एक को पृथक् करने को निर्द्धारण कहते हैं। जिसके द्वारा निर्द्धारण किया जाता है उसके उत्तर सप्तमी और षष्ठी विभक्ति होती हैं। यथा, जाति द्वारा—मनुष्येषु क्षत्रियः शूरः, मनुष्याणां क्षत्रियः शूरः; गुण द्वारा—गोषु कृष्णा बहुक्षीरा, गवां कृष्णा बहुक्षीरा; क्रिया द्वारा—अध्वगेषु धावन्तः शीघ्रगामिनः, अध्वगानां धावन्तः शीघ्रगामिनः; संज्ञाद्वारा—छात्रेषु मैत्रः प्रवीणः, छात्राणां मैत्रः प्रवीणः।

७७। निमित्तात् कर्म्मसमवाये (१) विभाषा।

कर्म्म के साथ सम्बन्ध रहने से निमित्त-बोधक शब्दों के उत्तर विकल्प से सप्तमी विभक्ति होती है। यथा, चर्म्मणि द्वीपिनं हन्ति, दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम्, केशेषु चमरीं हन्ति,

---

(१) निमित्तं फलं। योगः-संयोग समवायात्मकः। (घटादीनाम कपालादौ द्रव्येषु गुण कर्म्मणोः। तेषु जातेश्च सम्बन्धः समवायः प्रकीर्तितः)

सीम्नि पुष्पलको हतः । पक्षे चतुर्थी । यथा मुक्ताफलाय करिणं हरिणं पलाय इत्यादि (१४)।

कारक । (Case)

७८ । क्रियान्वयि कारकम् ।

क्रिया के साथ जिसका अन्वय होता है, उसे कारक कहते हैं।

७९ । षट् कारकाणि ।

कर्त्ता, कर्म्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण, येही छः कारक हैं।

(Ablative) अपादान ।

८० । यतो विश्लेषोऽपादानम् ।

जिससे विश्लेष (जुदाई) होता है उसको अपादान कारक कहते हैं। यथा, अश्वात् पतितः, हस्ताद्भ्रष्टः, जलादुत्थितः, गृहात् प्रस्थितः, विदेशात् प्रत्यागतः।

८१ । भीत्रार्थानां भयहेतुः ।

भयार्थक और त्राणार्थक धातुओं के प्रयोग में भय हेतु में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा, भयार्थक—व्याघ्राद्बिभेति महिषात् त्रस्यति; त्राणार्थक-आतपात् त्रायते, भल्लूकाद्रक्षति।

(१४) वैयाकरणलोग केवल सप्तमी विधान करके मुक्ताफलाय करिणं हरिणं पलाय इत्यादि को अप्रयोग कहते हैं। अर्थात् सप्तमी के स्थान पर चतुर्थी लिखना युक्तियुक्त नहीं है।

८२। हेतुरुत्पत्तेः।

उत्पत्ति का कारण अपादान होता है। यथा, वीजादङ्कुरो जायते, पितुः पुत्रो जायते, दुग्धात् घृतमुत्पद्यते, धर्म्मात् सुखं भवति, अधर्म्मात् दुःखमुद्भवति।

८३। आविर्भवनभूर्भुवः। (भुवः प्रभवः)।

भू धातु के प्रयोग में, आविर्भाव की भूमि अर्थात् प्रकाश-स्थान अपादान होता है। यथा, हिमवतो गङ्गा प्रभवति, वल्मीकाग्रात प्रभवति धनुःखण्डमाखण्डलस्य ; आविर्भवतीत्यर्थः।

८४। विरामार्थानां यतो विरतिः।

जिससे विरति होती है विरामार्थक धातु के प्रयोग में यह अपादान होता है। यथा, अध्ययनाद्विरमति, कलहान्निवर्तते।

८५। पराजेरसह्यम् (पराजेरसोढुः)।

परापूर्वक जि धातु के प्रयोग में असह्य विषय अपादान होता है। यथा, अध्ययनात् पराजयते, पापात् पराजयते; अध्ययनं पापञ्च सोढुमसमर्थ इत्यर्थः।

८६। यस्यादर्शनमिच्छति।

जिस के अदर्शन की अर्थात् वह न देख सके ऐसी इच्छा करे तो वह अपादान होता है*। यथा, गुरोरन्तर्धत्ते, पितुर्नि-

* जिससे छिपने की इच्छा करे उसमें पंचमी विभक्ति होती है। अनुवादक।

लीयते, दस्योर्लुक्कायते; गुरूः पिता दस्युर्वा न मां पश्येदिति लज्जया भयेन वा तद्दर्शनपथादपसरतीत्यर्थः। ऐसा अर्थ न होने से चौरान्न दिदृक्षते।

८७। यतो जुगुप्सा तदर्थानाम्।

जिससे जुगुप्सा हो, वह जुगुप्सर्थक धातु के प्रयोग में अपादान होता है। यथा, पापाज्जुगुप्सते, नरकात् वीभत्सते।

८८। त्रपार्थानां यतस्त्रपा।

जिसके निकट लज्जित हो वह लज्जार्थक धातु के प्रयोग में अपादान होता है। यथा, गुरोर्लज्जते, पितुस्त्रपते, मातुर्जिह्रेति। श्वशुराज्जिह्रेति, श्वसुरं वीदयेत्यर्थः।

८९। अधीत्यर्थानामध्यापयिता।

अध्ययनार्थक धातु के प्रयोग में अध्यापयिता अर्थात् पढ़ानेवाला अपादान होता है। यथा, उपाध्यायादधीते, गुरोः पठति।

९०। वाराणार्थानामीप्सितः।

वारणार्थक धातु के प्रयोग में निवार्यमाण (जिसका निवारण किया जाय) का ईप्सित अपादान होता है। यथा, अन्नेभ्यः काकं वारयति, यवेभ्यश्छागं निषेधति, व्यसनात् पुत्रं निवारयति।

९१। श्रुत्यर्थानां श्रावयिता।

श्रवणार्थक धातु के प्रयोग में श्रावयिता (सुनानेवाला)

अपादान होता है। यथा, गुरोः शास्त्रंशृणोति, नटाग्दीति माकर्णयति, कस्मात् श्रुतं भवता, मया श्रुतमिदं तातात्।

९२। ग्रहणप्राप्त्यर्थानां तत्स्थानम्।

ग्रहणार्थक और प्राप्त्यर्थक धातुओं के प्रयोग में ग्रहणस्थान और प्राप्तिस्थान अपादान होते हैं। यथा, ग्रहणार्थक–आचार्य्या दुपदेशं गृह्णाति, प्रजाभ्यः करमादत्ते। प्राप्त्यर्थक–उपाध्याया-द्विद्यां प्राप्नोति, गुरोर्ज्ञानं लभते।

९३। प्रमादार्थानां यतः प्रमादः।

जिस विषय में प्रमाद हो वह प्रमादार्थक धातु के प्रयोग में अपादान होता है। यथा, धर्म्मात् प्रमाद्यति, अध्ययनादनवधानम्।

सम्प्रदान (Dative)।

९४। यस्मै दानं सम्प्रदानम्।

जिसको कोई वस्तु दी जाय उसको सम्प्रदान कारक कहते हैं। यथा, दरिद्राय धनं ददाति, भिक्षवे भिक्षां ददाति, सर्व्वस्वं गुरवे दद्यात्।

९५। रुच्यर्थानां प्रीयमाणः।

रुच्यर्थक धातु के प्रयोग में प्रियमाण (जिसको चाहते हैं) सम्प्रदान होता है। यथा, मोदकः शिशवे रोचते, हरये रोचतेभक्तिः। इदं मह्यं स्वदते।

९६। स्पृहेरीप्सितः।

स्पृहि धातु के प्रयोग में कर्त्ता का ईप्सित सम्प्रदान होता है। यथा, धनाय स्पृहयति पुष्पेभ्यः स्पृहयति।

९७ धारेरुत्तमर्णः।

धारि धातु के प्रयोग में उत्तमर्ण (देनेवाला) सम्प्रदान होता है। यथा, स तुभ्यं शतं धारयति, त्वं मह्यं सहस्रं धारयसि।

९८ क्रियया यमाभिप्रैति।

क्रिया के द्वारा जिसको अभिप्रेत करे, अर्थात् जिसकी प्रीति होने के लिये क्रिया करे वह सम्प्रदान होता है। यथा, शिशवे क्रीड़नकमानयति, गुरवे दक्षिणामाहरति, पुत्राय चन्द्रं दर्शयति।

तस्तद्भूमिपतिः पत्न्ये दर्शयन् प्रियदर्शनः।
अपि लङ्घितमध्वानं बुबुधे न बुधोपमः॥ रघुवंशम्।

९९ क्रोधद्रोहेर्ष्यासूयार्थानां तदुद्देश्यः

क्रोधार्थक द्रोहार्थक, ईर्ष्यार्थक असूयार्थक धातुओं के प्रयोग में, क्रोधादि का उद्देश्य सम्प्रदान होता है। यथा, भृत्याय क्रुध्यति, शत्रवे द्रुह्यति प्रतिवेशिने ईर्ष्यति, प्रतिद्वन्द्विने असूयति।

१०० प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः प्रवर्त्तकः,

प्रति पूर्व्वक और आङ्पूर्व्वक श्रुधातु के प्रयोग में प्रवर्त्तक सम्प्रदान होता हैं। यथा दरिद्राय धनं प्रतिश्रृणोति, आश्रृणोति वा, दरिद्रेण, 'मह्यं धनं देहीति' प्रवर्त्तितः प्रतिजानीते इत्यर्थः।

विप्रायगां प्रतिश्रृणोति आश्रृणोतिवा, विप्रेण 'मह्यंदेहीति' प्रवर्तितः प्रतिजानीत इत्यर्थः ।

करण (Instrumental case.) ।

१०१ । साधकतमं करणम् ।

क्रिया के साधन के लिए जो सब से प्रधान उपाय हो उसको करण कारक कहते हैं । यथा, चक्षुषा पश्यति, कर्णेन श्रृणोति, हस्तेन गृह्णाति, दात्रेण लुनाति, यष्ट्या प्रहरति, शरेण विध्यति, अश्वेन सञ्चरते, वस्त्रेण आच्छादयति ।

(Locative case) अधिकरण ।

१०२ । आधारोऽधिकरणम् ।

कर्त्ता और कर्म्म का जो आधार हो उसे अधिकरण कारक कहते हैं । आधार तीन प्रकार के हैं—एकदेशकि वा औपश्लेषिक, वैषयिक और अभिव्यापक । यथा, एकदेशिक—वने वसति, वनैकदेशे इत्यर्थः; नद्यां स्नाति, नद्या एकदेशे इत्यर्थः; गृहे स्वपिति, गृहैकदेशे इत्यर्थः, शय्यायां शिशुं शाययति, शय्यैकदेशे इत्यर्थः । वैषयिक–जले इच्छा, जल विषये इत्यर्थः; विद्यायामनुरागः, विद्याविषये इत्यर्थः । अभिव्यापक—दुग्धे माधुर्य्यमस्ति, दुग्धस्य सर्व्वानवयवान् व्याप्य इत्यर्थः; तिलेषु तैलमस्ति, तिलस्य सर्व्वानवयवान् व्याप्येत्यर्थः; वह्नौ दाहिका शक्तिरस्ति, वह्नेः सर्व्वानवयवान् व्याप्येत्यर्थः ।

कर्म्म (Accusative Case)

१०३। क्रियया क्रान्तं कर्म्म।

कर्त्ता की क्रिया के द्वारा जो अक्रान्त अर्थात् गृहीत हो उसे कर्म्मकारक कहते हैं। यथा, गृहं प्रविशति, चन्द्रं पश्यति, ग्रामं गच्छति, अन्नं भुङ्क्ते, जलं पिबति, पुष्पं चिनोति, वस्त्रं ददाति, वेदमधीते, वृक्षम् आरोहति ; शाखां छिनत्ति, काष्ठं भिनत्ति।

१०३। अधिशीस्थासामधिकरणम्। (अधिशीङ्-स्थासां कर्म्म)

अधि पूर्वक शी, स्था और आस् धातुओं के अधिकरण कारक को कर्म्म संज्ञा होती है। यथा, शय्यामधिशेते, गृह-मधितिष्ठति, ग्राममध्यास्ते।

१०५। उपान्वध्याङ्वसः।

उप्, अनु, अधि, आङ् पूर्व्वक वस् धातु के अधिकरण कारक को कर्म्म संज्ञा होती है। यथा, ग्राममुपवसति (१५) गृहमनुवसति, नगरमधिवसति, गुरोरालयमावसति।

१०६। अभिनिविशो विभाषा। (अभिनिवि-शश्च)

---

[१५] उपवास अर्थ में नहीं होता है। यथा, उपवसति वने।

अभि और नि पूर्व्वक विश् धातु के अधिकरण कारक को विकल्प से कर्म्म संज्ञा होती है। यथा, धर्म्ममभिनिविशते धर्म्मेऽभिनिविशते।

१०७ । क्रुध द्रुहोरुपसृष्टयोः सम्प्रदानम् । (क्रुध द्रुहोरुसृष्टयोः कर्म्म) ।

उपसर्ग-पूर्व्वक क्रुध और द्रुह् धातुओंके सम्प्रदानकारक-को कर्म्म संज्ञा होती है। यथा, भृत्यमभिक्रुध्यति, शत्रुमभि-द्रुह्यति ।

१०८ । विभाषा दिवः करणम् । (दिवः कर्मच)

दिव् धातु के करण कारक को विकल्प से कर्म्म संज्ञा होती है। यथा, अक्षान् दीव्यति अक्षैर्दीव्यति ।

१०९ । द्वे कर्म्मणी दुहादेः ।

दुह्, याच् (१६), चि, प्रच्छ्, नी और मन्थ् आदि कई एक धातुओं के दो कर्म्म होते हैं। एक का नाम 'प्रधान' और दूसरे का नाम 'अप्रधान' जिसका अन्वय क्रियाके साथ प्रधान होता है उसे 'प्रधान कर्म्म' और जिसका अन्वय अप्रधान होता है उसे 'अप्रधान कर्म्म' कहते हैं। यथा, गोपो गां दुग्धं दोग्धि, दरिद्रो राजानं धनं याचते, मालाकारो वृक्षं पुष्पं चिनोति, शिष्यो गुरुं धर्म्मं पृच्छति, पिता पुत्रं गृहं नयति, देवाः जलधि-ममृतं ममन्थुः । इन वाक्यों में दुग्ध, धन, पुष्प, धर्म्म और पुत्र

[१६] याचनार्थ, अर्थ, नाथ, भिक्ष आदि ।

आदि प्रधान कर्म्म हैं। और गो, राजा, वृक्ष, गुरु, गृह और जलधि अप्रधान कर्म्म हैं। इसी अप्रधान कर्म्म को अकथित और अविवक्षित कर्म्म कहते हैं। अर्थात् दोनों कर्म्मों में से जिसमें दूसरे कारकोंकी सम्भावना हो और कर्त्ताकी अनिच्छा से वे सब कारक न होकर कर्म्म कारक हो तो उसी को अकथित, अविवक्षित और अप्रधान कर्म्म कहते हैं। ऊपर के उदाहरणों में गो आदि को कर्म्म संज्ञा हुई है। किन्तु विवक्षा रहने से, गोर्दुग्धं दोग्धि, राज्ञो धनं याचते, वृक्षात् पुष्पं चिनोति, गुरोर्धर्म्मं पृच्छति, पुत्रं गृहे नयति, जलधेरमृतं ममन्थुः ; इसी प्रकार यथा सम्भव अपादानादि कारक भी हो सकते हैं।

११० । कर्म्मणि वाच्ये प्रथमा ।

कर्म्मवाच्य प्रयोग में, कर्म्म कारक में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा ग्रामो गम्यते, चन्द्रो दृश्यते, वृक्ष आरुह्यते, शत्रुरभिद्रुह्यते ।

१११ । न्यादेः प्रधाने ।

कर्म्मवाच्य प्रयोग में नी आदि (१७) धातुओं के प्रधान कर्म्म में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, गौर्ग्रामं नीयते, ह्रियते, कृष्यते, उह्यते वा ।

---

(१७) नी, हृ, कृष्, वह्। प्रायः चारों धातु ही एकार्थ बोधक है।

११२ । दुहादेरप्रधाने ।

कर्म्मवाच्य प्रयोग में दुह् आदि (१८) धातुओं के प्रधान कर्म्म में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा. गौर्दुग्धं दुह्यते, राजा धनं याच्यते, चौरः शतं दण्ड्यते, गुरुर्धर्म्मं पृच्छ्यते, वृक्षः पुष्पं चीयते, शिष्यो धर्म्ममनुशिष्यते, जलधिरमृतं ममन्थे।

कर्त्ता (Nominative case)

११३ । क्रियासम्पादकः कर्त्ता ।

जिस के प्रयत्न से क्रिया सम्पन्न होती है, उसे कर्तृ कारक कहते हैं। यथा, शिशुः क्रीड़ति, गौः शब्दायते, मेघो गर्ज्जति, गोपो दुग्धं दोग्धि, मालाकारः पुष्पं चिनोति, वानरो वृक्षमारोहति, राजा प्रजाः पालयति।

११४ । प्रयोजकश्च ।

प्रयोजक अर्थात् जो दूसरे को क्रिया में लगाता है उसको भी कर्तृकारकार कहते हैं।

११५ । तृतीया प्रयोज्ये ।

क्रिया की अणिजन्त अवस्थाके (अर्थात् भ्वादि प्रभृति नवगणी में) कर्त्ता को णिजन्त अवस्था में प्रयोज्य कहते हैं। प्रयोज्य कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है। यथा देवदत्त

(१८) दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध् प्रछ् चि, वृ, (कथनार्थक कथ्, वच, वद्, भाष् आदि) शास्, जि, मन्थ्, मुष्।

ओदनं पचति, यज्ञदत्तो देवदत्तेन ओदनं पाचयति । यहां 'देवदत्ते' पाक क्रिया की अणिजन्त अवस्था में कर्त्ता था, णिजन्तअवस्था में उस की प्रयोज्य संज्ञा हुई और उस में तृतीया विभक्ति हुई । और 'यज्ञदत्त' देवदत्त को पाकक्रिया में लगाता है, इसलिए वह प्रयोजक हुआ । इससे उस की कर्तृ-संज्ञा हुई और उस में प्रथमा विभक्ति हुई ।

११६ । गत्यर्थानां कर्म्मसंज्ञा प्रयोजस्य ।

गमनार्थक धातुओं के प्रयोग में प्रयोज्य कर्त्ता को कर्म्म संज्ञा होती है । यथा, देवदत्तो गृहं गच्छति, यज्ञदत्तो देवदत्तं गृहं गमयति ।

११७ । ज्ञानाशनार्थानाञ्च ।

ज्ञानार्थक और अशनार्थक (१) धातुओं के प्रयोग में प्रयोज्य कर्त्ता को कर्म्म संज्ञा होती है । यथा ज्ञानार्थक— शिष्यो धर्म्मं बुध्यते, गुरुः शिष्यं धर्म्मं बोधयति; भोजनार्थक- पुत्रोऽन्नमश्नाति, माता पुत्रमन्नम् आशयति ।

११८ । शब्दकर्म्मकाणामकर्म्मकाणाञ्च ।

शब्द (२) कर्म्मक (२) और अकर्म्मक धातुओं के प्रयोग

---

(१) अद्, खाद् और भज् धातुओं को छोड़कर ।

(२) शब्दात्मक विषय, पद, वाक्य, ग्रन्थ, उपदेश, तिरस्कार प्रशंसा आदि ।

(३) ह्वे, क्रन्द, शब्दाय, जल्प, भाष्, लप्, श्रु, विज्ञा और उपलभ धातुओं के अतिरिक्त ।

में प्रयोज्य कर्त्ता को कर्म्म संज्ञा होती है। यथा, शब्द कर्म्मक— शिष्यो वेदमधीते, गुरुः शिष्यं वेदमध्यापयति। अकर्म्मक शिशुः शेते, माता शिशुं शाययति।

११९। विभाषा हृञ्कृञोः।*

हृञ् और कृञ् धातुओं के प्रयोग में प्रयोज्य कर्त्ता को विकल्प से कर्म्म संज्ञा होती है। यथा, भृत्यो भारं हरति, प्रभुर्भृत्यं भृत्येन वा भारं हारयति। कुम्भकारो घटं करोति, यज्ञदत्तः कुम्भकारं कुम्भकारेण वा घटं कारयति।

१२०। कर्म्मभावयोस्तृतीया।

कर्म्मवाच्य और भाववाच्य प्रयोग में, कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है। यथा, कर्म्मवाच्य—गोपेन दुग्धं दुह्यते, मालाकारेण पुष्पं चीयते, राज्ञा धनं दीयते; भाववाच्य-शिशुना रुद्यते, यूना हस्यते, वृद्धेन सुप्यते।

१२१। कर्म्मसंज्ञायां प्रयोज्यकर्म्मणोः प्रथमा द्वितीये कर्म्मणि।

जहाँ प्रयोज कर्त्ता को कर्म्म संज्ञा होती है, वहाँ कर्म्मवाच्यप्रयोग में प्रयोज्य कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति और कर्म्म में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा, शिष्येण वेदोऽधीयते, गुरुणा शिष्यो वेद मध्याप्यते। यहाँ प्रयोज्य कर्त्त 'शिष्य' में प्रथमा विभक्ति और कर्म्म 'वेद' में द्वितीया विभक्ति हुई। तद्भिन्न

---

* हृक्रोरन्यतरस्याम्।

स्थानों में, देवदत्तेन ओदनं पच्यते, यज्ञदत्तेन देवदत्तेन ओदनं पच्यते।

—:o:—

१२२। निवृत्तौ च प्रवृत्तिवत् क्रियायाः।

क्रिया की प्रवृत्ति के स्थान में उन उन कारकों का विधान हुआ है; किन्तु उसी प्रकार क्रिया की निवृत्ति के स्थान में भी, जहां कुछ विशेषता नहीं है उन उन कारकों का विधान होता है। यथा, अश्वात् पतितः, अश्वान्न पतितः; अध्ययनाद्विरमति, अध्ययनान्न विरमति; भिक्षवे भिक्षां ददाति, भिक्षवे भिक्षां न ददाति; मह्यमिदं स्वदते, मह्यमिदं न स्वदते; हस्तेन गृह्णाति, हस्तेन न गृह्णाति; वस्त्रेणाच्छादयति, वस्त्रेण नाच्छादयति; गृहे तिष्ठति, गृहे न तिष्ठति; शय्यायां शेते, शय्यायां न शेते; जलं पिबति, जलं न पिबति; चन्द्रं पश्यति, चन्द्रं न पश्यति; मेघो वर्षति, मेघो न वर्षति; नदी वहति, नदी न वहति।

१२३। विवक्षावशात् कारकाणि।

जहां जो कारक विहित हुआ है वहाँ विवक्षा से अर्थात् वक्ता की इच्छा से उसका दूसरा भाव लक्षित होता है। यथा, गृहं गच्छति, गृहे गच्छति; गृहं प्रविशति; गृहे प्रविशति; पुष्पेभ्यः स्पृहयति, पुष्पाणि स्पृहयति; पुष्पेभ्यः स्पृहा, पुष्पेषु स्पृहा; अरये कुप्यति, अरौ कुप्यति; गो दुग्धं दोग्धि, गोभ्यो दुग्धं दोग्धि; नृपं धनं याचते, नृपाद्धनं याचते; वृक्षं पुष्पं चिनोति, वृक्षात् पुष्पं चिनोति; पुत्रं गृहं नयति, पुत्रं गृहे नयति,

जलधिममृतं ममन्थुः, जलधेरमृतंममन्थुः; शिष्याय विद्यां वितरति, शिष्ये विद्यां वितरति; हिमवतो गङ्गा प्रभवति, हिमवति गङ्गा प्रभवति।

तद्धित।

Seceondaiy Affixes.

१। तद्धितः।

इस प्रकरण में जो सब प्रत्यय विहित होते हैं, उनका नाम तद्धित है।

२। णिति वृद्धिराद्यस्य।

मूर्द्धन्य ण् जिसका इत् हो ऐसा तद्धित प्रत्यय परे रहने से, प्रातिपदिक के आद्य स्वर की वृद्धि होती है।

३। सुभगादेरुभयोः।

सुभगा, दुर्भगा, अधिदेव, अधिभूत, परलोक, सर्वलोक, अकुशल और परस्त्री आदि प्रातिपदिकों के अन्तर्गत उभय पद के आद्य स्वर की वृद्धि होती है।

४। सुपंचालादेर्द्वितीयस्य।

सुपञ्चाल, अर्द्धपञ्चाल, अग्निदेवता, पितृदेवता, द्विवर्ष, त्रिवर्ष, चतुर्वर्ष और पञ्चवर्ष आदि प्रातिपदिकों के अन्तर्गत द्वितीय पद के आद्य स्वर की वृद्धि होती है।

५। न णित्कार्य्यं सर्व्वत्र।

मूर्द्धन्य ण् इत् होने से आद्यस्वर की वृद्धिरूप जो कार्य्य हुआ है, वह सर्व्वत्र नहीं होता।

६। लोपोऽवर्णेवर्णयोर्यस्वरयोः।

तद्धित प्रत्यय का य और स्वरवर्ण परे रहने से प्रातिपदिक के अन्तस्थित अ और इ का लोप होता है।

७। गुण उवर्णस्य।

तद्धित प्रत्यय का य और स्वरवर्ण परे रहने से, प्रातिपदिक के अन्तस्थित उ को गुण होता है।

८। ऋदोदौदद्भ्योयः स्वरत्।

ऋकार, ओकार और औकार के परस्थित तद्धित प्रत्यय का य स्वर का काम करता है।

९। टेर्लोपो डिति।

जिसका डकार इत् हो ऐसा पद्धित प्रत्यय परे रहने से प्रातिपदिक के टि (१) का लोप होता है।

१०। तेर्विंशतेः।

विंशति शब्द के ति का लोप होता है।

११। इयुयौ अवयोराद्यचः पदान्ते णिति।

(१) अन्त्य स्वर और तदवधि (इसके आगे का हल्) वर्ण को टि कहते हैं।

जिसका णकार इत् हो ऐसा तद्धित प्रत्यय होने से पद के अन्तस्थित आद्यस्वर के स्थान में उत्पन्न य के स्थान में इय और व के स्थान में उव होता है ।

१२ । द्वारादीनाञ्च ।

द्वार आदि (१) प्रातिपदिक के आद्य य और व के स्थान में क्रम से इय और उव होता है ।

१३ । न स्वागतादीनाम् ।

स्वागत आदि (२) प्रातिपदिक के आद्य य और व के स्थान में इय और उव नहीं होता ।

१४ । वा श्वापदन्यङ्क्वोः ।

श्वापद और न्यङ्कु इन दोनों प्रातिपदिकों के विकल्प से होता है ।

१५ । अव्ययाश्रितः ।

जिन सब तद्धित प्रत्ययों का च् इत् होता है, वे जिन शब्दों के अन्त में हों सो सब अव्यय होते हैं ।

१६ । अपत्ये ।

सब वक्ष्यमाण प्रत्यय अपत्य अर्थ में विहित होते हैं ।

१७ । अदन्तात् षिण् ।

---

(१) द्वार, स्वर, स्वाध्याय, व्यल्कस, स्वस्ति, स्वर स्वयकृत, स्वादु, मृदु, श्वस्, श्वन्, स्व ।

(२) स्वागत, स्वध्वर, स्वङ्ग, व्यङ्ग व्यड़, व्यवहार, स्वपति ।

अपत्य अर्थ में, अकारान्त प्रातिपदिक के उत्तर षिण् होता है, जिसमें स, ण् इत् हो जाता है और इ रहता है। यथा, शूरस्यापत्यं शौरिः, दशरथस्यापत्यं दाशरथिः, द्रोणस्यापत्यं द्रौणिः, गवल्गणस्यापत्यं गावल्गणिः, युधिष्ठिरस्यापत्यं यौधिष्ठिरिः, अर्ज्जुनस्यापत्यं आर्ज्जुनिः, विकर्णस्यापत्यं वैकर्णिः, कुषीतकस्यापत्यं कौषीतकिः, मण्डूकस्यापत्यं माण्डूकिः, कृष्णस्यापत्यं कार्ष्णिः, प्रद्युम्नस्यापत्यं प्राद्युम्निः।

१८। बाह्वादिभ्यश्च।

अपत्य अर्थ में बाहु आदि प्रातिपदिकों के उत्तर षिण् होता है। यथा, बहोरपत्यं बाहविः, उपबाहोरपत्यम् औपबाहविः, उपबिन्दोः अपत्यम् औपविन्दविः, वृषल्या अपत्यम् वार्षलिः, वृकलाया अपत्यम् वाकीलः छगलाया अपत्यं छागलिः, सुमित्राया अपत्यं सौमित्रा, दुर्म्मित्राया अपत्यं दौर्म्मित्रिः, उदञ्चोरपत्यम् औदञ्चविः, उडुलोमस्यापत्यं औडुलोमिः।

१६। डको व्याससुधात्रोः षिणि।

षिण् प्रत्यय होने से, व्यास और सुधातृ इन दो प्रातिपदिकों के उत्तर डक् होता है। ड् इत् हो जाता है और अक् रहता है। यथा, व्यासस्यापत्यं वैयासकिः, सुधातुः अपत्यम् सौधातिकिः (१)।

२०। नड़ादिभ्यः षायनण्।

---

१ व्यास वरुड़ निषाद चाण्डाल विम्वानाञ्चेति वक्तव्यम् न ख्वाभ्याम्-पदान्ताभ्वां पूर्व्वौतु ताभ्यामैच्।

अपत्य अर्थ में नड़ आदि प्रातिपदकों के उत्तर षायनण होता है ; ष् ण् इत् हो जाते हैं और आयन् रहता है । यथा नड़स्यापत्यम् नाड़ायनः, चरस्यापत्यं चारायणः, मुञ्जस्यापत्यं मौञ्जायनः, सप्तलस्यापत्यं साप्तलायनः, नरस्यापत्यं नारायणः, दासस्यापत्यं दासायनः, कातलस्यापत्यं कातलायनः, शकट-स्यापत्यं शाकटायनः जलन्धरस्यापत्यं जालन्धरायणः, द्रोण-स्यापत्यं द्रौणायनः, पर्व्वतस्यापत्यं पार्व्वतायनः, युगन्धरस्या-पत्यं यौगन्धरायणः अश्वलस्यापत्यम् आश्वलायनः वदरस्या-पत्यं वादरायणः, उदुम्बरस्यापत्यम् औदुम्बरायणः, दक्षस्या-पत्यं दाक्षायणः ।

२१ । गर्गादिभ्यः षण् ।

अपत्य अर्थ में गर्ग आदि प्रातिपदकों के उत्तर ष्यण् होता है ; ष् ण् इत् हो जाते हैं और य रहता है । यथा, गर्ग-स्यापत्यं गार्ग्यः, वत्सस्यापत्यं वात्स्यः, अगस्तेरपत्यम् आ-गस्त्यः, पुलस्तेरपत्यं पौलस्त्यः, विश्ववसोरपत्यं वैश्वावस्व्यः, लोहितस्यापत्यं लौहित्यः, वभ्रोरपत्यं वाभ्रव्यः, मण्डोरपत्यं माण्डव्यः, मधोरपत्यं माधव्यः, जिगीषोरपत्यं जैगीषव्यः, कुण्डिन्या अपत्यं कौण्डिन्यः, यज्ञवल्कस्यापत्यं याज्ञवल्क्यः, शण्डिलस्यापत्यं शाण्डिल्यः, चणकस्यापत्यं चाणक्यः, चुलुक-स्यापत्यं चौलुक्यः, मुद्गलस्यापत्यं मौद्गल्यः, जमदग्नेरपत्यं जामदग्न्यः, पराशरस्यापत्यं, पराशर्य्यः, जातूकर्णस्यापत्यं जातू-कर्ण्यः, अश्वरथस्यापत्यं आश्वरथ्यः, पूतिमाषस्यापत्यं पौति-माष्यः, उलूकस्यापत्यम् औलूक्यः, अग्निवेशस्यापत्यम् आग्नि-

वैश्यः, दितेरपत्यं दैत्यः, अदितेरपत्यम् आदित्यः, प्रजापतेरपत्यं प्राजापत्यः।*

२२। शिवादिभ्यः षण्।

अपत्य अर्थ में शिव आदि प्रातिपदिकों के उत्तर षण् होता है। ष् ण् इत् हो जाते हैं और अ रहता है। यथा, शिवस्यापत्यं शैवः ककुत्स्थस्यापत्यं काकुत्स्थः कहोडस्यापत्यं काहोड़ः, कुपिञ्जलस्यापत्यं कौपिञ्जलः, विश्रवणस्यापत्यं वैश्रवणः, रवणस्यापत्यं रावणः, ऊर्णनाभस्यापत्यम् और्णनाभः, पृथाया अपत्यं पार्थः, यस्कस्यापत्यं यास्कः, द्रुह्यस्यापत्यं द्रौह्यः, लह्यस्यापत्यं लाह्यः, अयः स्थूणस्यापत्यं आयःस्थूणः, इलाया अपत्यम् ऐलः, सपत्न्या अपत्यं सापत्नः।

२३। विदादेः।

अपत्य अर्थ में विद आदि प्रातिपदिकों के उत्तर षण् होता है। यथा, विदस्यापत्यं वैदः, उर्व्वस्यापत्यम् और्व्वः, कश्यपस्यापत्यं काश्यपः, कुशिकस्यापत्यं कौशिकः, भरद्वाज स्यापत्यं भारद्वाजः, उपमन्योः अपत्यम् औपमन्यवः, विश्वानरस्यापत्यं वैश्वानरः, ऋष्टिषेणस्य अपत्यम् आर्ष्टिषेणः, शरद्वतोऽपत्यं शारद्वतः, शुनकस्यापत्यं शौनकः, अर्क लूषस्यापत्यम् आर्कलूषः, पुनर्भ्वा अपत्यं पौनर्भवः, पुत्रस्यापत्यं पौत्रः, दुहितुरपत्यं दौहित्रः।

---

* दिन्य दिन्या दिन्य पत्युत्तरपदाण्यः।
बाह्वादिराकृतिगणत्वादिम्—वैदिः।

२४। भृग्वादेश्च।

अपत्य अर्थ में भृगु आदि प्रातिपदिकों के उत्तर षण् होता है। यथा, भृगोरपत्यं भार्गवः, मरीचेरपत्यं मारीचः, वशिष्ठस्यापत्यं वाशिष्ठः, कुत्सस्यापत्यं कौत्सः, गोतमस्यापत्यं गौतमः, अङ्गिरसोरपत्यम् आङ्गिरसः, विश्वामित्रस्यापत्यं वैश्वामित्रः, धृतराष्ट्रस्यापत्यं धार्त्तराष्ट्रः, पाण्डोरपत्यं पाण्डवः, वासुदेवस्यापत्यम् वासुदेवः। यादोरपत्यं यादवः, पूरोरपत्यं पौरवः, रघोरपत्यं राघवः, कुरोरपत्यं कौरवः, मनोरपत्यं मानवः, द्रुपदस्यापत्यं द्रौपदः, पर्व्वतस्यापत्यं पार्व्वतः।

२५। ऐक्ष्वाककौरव्यमनुष्यमानुषाः।

ऐक्ष्वाक, कौरव्य और मनुष्य, मानुष ये चार पद निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, इक्ष्वाकोरपत्यम् ऐक्ष्वाकः, कुरोरपत्यं कौरव्यः, मनोरपत्यं मनुष्यः मानुषः।

२६। मातुर्डुर् संख्यायाः।

षण् प्रत्यय होने से संख्यावाचक शब्द के परवर्ती मातृ शब्द के उत्तर डुर् होता है। ड् इत् हो जाता है और उर् रहता है। यथा, द्वयोर्मात्रोरपत्यं द्वैमातुरः, षण्णां मातॄणामपत्यं षाण्मातुरः। (१) संख्या बोध नहीं होने से सौमात्रः।

२७। कन्यायाः कनीनः। (कन्यायाः कनीनच)

(१) सम और भद्र शब्दों के परे रहने से भी होता है। साम्मातुरः भाद्रमातुरः।

षण् प्रत्यय के परे कन्या शब्द के स्थान में कनीन होता है। यथा, कन्याया अपत्यं कानीनः।

२८। स्त्रीभ्यः षेयण्।

अपत्य अर्थ में स्त्री प्रत्ययान्त प्रातिपदिकों के उत्तर षेयण् होता है; ष् ण् इत् हो जाते हैं और एय रहता है। यथा, गंगाया अपत्यं गांगेयः, राधाया अपत्यं राधेयः, विनताया अपत्यं वैनतेयः, * ताड़काया अपत्यं ताड़केयः, सरमाया अपत्यं सारमेयः, सुपर्णाया अपत्यं सौपर्णेयः, भगिन्या अपत्यं भागिनेयः, मह्या अपत्यं माहेयः, कुन्त्या अपत्यं कौन्तेयः, रोहिण्या अपत्यं रौहिणेयः, रुक्मिण्या अपत्यं रौक्मिणेयः, कुमारिकाया अपत्यं कौमारिकेयः, अम्बिकाया अपत्यम् आम्बिकेयः, गोधाया अपत्यं गौधेयः।

२९। गौधेरगौधारौ।

गोधाया अपत्यम्, इस अर्थ में, गौधेर और गौधार ये दो शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं।

३०। शुभ्रादिभ्यश्च।

अपत्य अर्थ में शुभ्र आदि प्रातिपदिकों के उत्तर षेयण होता है। यथा, शुभ्रस्यापत्यं शौभ्रेयः, अत्रेरपत्यम् आत्रेयः, विमातुरपत्यं वैमात्रेयः, शकुनेरपत्यं शाकुनेयः शतलस्यापत्यं शातलेयः, इतरस्यापत्यम् ऐतरेयः।

---

* बाहूदितादिञ् सौमित्रः। शिवादित्वादन् सा पलः

३१। लोपः षेयण्युवर्णस्य।

षेयण प्रत्यय होने से प्रातिपदिकों के अन्तस्थित उकार का लोप होता है। यथा, मृकण्डोरपत्यं मार्कण्डेयः, कमण्डल्वा अपत्यं कामण्डलेयः।

३२। न पाण्डुकद्र्वोः।

पाण्डु और कद्रु शब्दों के उ का लोप नहीं होता है। यथा, पाण्डोरपत्यं पाण्डवेयः, कद्र्वा अपत्यं काद्रवेयः।

३३। सुभगादेरिन् षेयणि।

षेयण् प्रत्यय होने से सुभगा आदि प्रातिपदिकों के उत्तर इन् होता है। यथा, सुभगाया अपत्यं सौभागिनेयः, दुर्भगाया अपत्यं दौर्भागिनेयः, बन्धक्या अपत्यं बान्धकिनेयः, कनिष्ठाया अपत्यं कानिष्ठिनेयः, मध्यमाया अपत्यं माध्यमिनेयः, परस्त्रिया अपत्यं पारस्त्रैणेयः।

३४। कुलटाया वा।

कुलटा (१) शब्द के उत्तर विकल्प से होता है। यथा, कुलटाया अपत्यं कौलटिनेयः कौलटेयः।

३५। स्वस्रादिभ्यः षीयण्।

अपत्य अर्थ में स्वसृ आदि प्रातिपदिकों के उत्तर षीयण्

(१) यहां कुलटा शब्द से सती भिक्षोपजीवनी स्त्री का बोध होता है, व्यभिचारिणी का नहीं। व्यभिचारिणी अर्थ में कौलटेयः, कौलटेरः ये दो शब्द होते हैं।

होता है। ष् और ण् इत् होते हैं और ईय रह जाता है। यथा, स्वसुरपत्यं स्वस्रीयः।

३६। पितृमातृष्वस्रोः षेयण् वा ऋलोपश्च।

पितृष्वसृ और मातृष्वसृ शब्दों के उत्तर विकल्प से षेयण् होता है। और षेयण् होने से ऋकार का लोप होता है। यथा, पितृष्वसुरपत्यं पैतृष्वसेयः, पैतृष्वस्रीयः मातृष्वसुरपत्यं मातृष्वसेयः, मातृष्वस्रीयः।

३७। रेवत्यादिभ्यः षिकण्।

अपत्य अर्थ में रेवती आदि प्रातिपदिकों के उत्तर षिकण् होता है, ष् और ण इत् होते हैं और इक रह जाता है। यथा, रेवत्या अपत्यं रैवतिकः, अश्वपाल्या अपत्यम् आश्वपालिकः, कर्णग्राहस्यापत्यं कार्णग्राहिकः, दण्डग्राहस्यापत्यं दाण्डग्राहिकः।

३८। लोपो गर्गादेर्बहुवचने।

बहुवचन में गर्गादि के उत्तर विहित अपत्य प्रत्यय का लोप होता है। यथा, गर्गस्यापत्यानि गर्गाः, वत्सस्यापत्यानि वत्साः, अगस्तेरपत्यानि अगस्तयः, विश्वावसोरपत्यानि विश्वावसवः, बभ्रोरपत्यानि बभ्रवः, मुद्गलस्यापत्यानि मुद्गलाः, जमदग्नेरपत्यानि जमदग्नयः, जातूकर्णस्यापत्यानि जातूकर्णाः, पूतिमाषस्यापत्यानि पूतिमाषाः;

३९। यस्कादेः। (यस्कादिभ्योगोत्रे)

बहुवचन में यस्कादि के उत्तर विहित अपत्य प्रत्यय का लोप होता है। यथा, यस्कस्यापत्यानि यस्काः, लह्यस्यापत्यानि लह्याः, द्रुह्यस्यापत्यानि द्रुह्याः, तृणकर्णस्यापत्यानि तृणकर्णाः, जङ्घारथस्यापत्यानि जङ्घारथाः।

४० । विदादेः ।

बहुवचन में विदादि के उत्तर विहित अपत्य प्रत्यय का लोप होता है। यथा, विदस्यापत्यानि विदाः, उर्व्वस्यापत्यानि उर्व्वाः, कश्यपस्य अपत्यानि कश्यपाः, कुशिकस्यापत्यानि कुशिकाः, भरद्वाजस्य अपत्यानि भरद्वाजाः, उपमन्योरपत्यानि उपमन्यवः, विश्वानरस्य अपत्यानि विश्वानराः, ऋतभागस्यापत्यानि ऋतभागाः, हर्य्यश्वस्यापत्यानि हर्य्यश्वाः, शरद्वतोऽपत्यानि शरद्वतः, शुनकस्य अपत्यानि शुनकाः।

४१ । अत्र्यादेश्च ।

बहुवचन में अत्रिआदि के उत्तर विहित अपत्य प्रत्यय का लोप होता है। यथा, अत्रेरपत्यानि अत्रयः, भृगोरपत्यानि भृगवः, कुत्सस्य अपत्यानि कुत्साः, वशिष्ठस्यापत्यानि वशिष्ठाः गोतमस्यापत्यानि गोतमाः, अङ्गिरसोऽपत्यानि अङ्गिरसः।

४२ । राजसंज्ञाभ्यो विभाषा ।

बहुवचन में राज—संज्ञा के प्रातिपदिकों के उत्तर विहित अपत्य प्रत्यय का विकल्प से लोप होता है। यथा, रघोरपत्यानि रघवः, राघवाः ; कुरोः अपत्यानि कुरवः, कौरवाः ;

यदोरपत्यानि यदवः यादवाः, इक्ष्वाकोरपत्यानि इक्ष्वाकवः, ऐक्ष्वाकाः; वृष्णेरपत्यानि वृष्णयः वार्ष्णेयाः ; निमेरपत्यानि निमयः, नैमेयः ।

४३ । न स्त्रियाम् ।

स्त्रीलिङ्ग में अपत्य प्रत्यय का लोप नहीं होता । यथा, यस्कस्यापत्यानि स्त्रिय. यास्क्यः, विदस्यापत्यानि स्त्रियः वैद्यः, अत्रेरपत्यानि स्त्रियः आत्रेय्यः, रघोरपत्यानि स्त्रियः राघव्यः ।

४४ । अर्थविशेषे चापत्यानि ।

अपत्य अर्थ में जितने प्रत्यय विहित हुए हैं वे सब अर्थ विशेष में भी होते हैं ।

४५ । इय-कण्-णीन-षीकणश्च ।

अर्थ विशेष में इय, कण्, णीन, षीकण, ये सब प्रत्यय भी यथासम्भव होते हैं । कण् का ण् इत् होता है और क रहता है, णान का ण् इत् होता है और ईन रहता है तथा षीकण का ष ण इत् होता है और ईक रह जाता है ।

४६ । तद्वेति 'तदधीते' । (तदधीते तद्वेद)

'तत् वेत्ति' तत् अधीते इन दोनों अर्थों में प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे हुए सब प्रत्यय होते हैं । यथा, तर्कं वेत्ति अधीते वा तार्किकः, न्यायं वेत्ति अधीते वा नैयायिकः वेदान्तं वेत्ति अधीते वा वैदान्तिकः, पुराणं वेत्ति अधीते वा पौराणिकः, वेदं वेत्ति अधीते वा वैदिकः, अलङ्कारं

वेत्ति अधीते वा आलङ्कारिकः ज्यौतिषं, वेत्ति अधीते वा ज्यौतिषिकः, व्याकरणं वेत्ति अधीते वा वैयाकरणः, क्रमं वेत्ति अधीते वा क्रमकः, पदं वेत्ति अधीते पा पदकः।

४७। ह्रस्वोऽन्त्यः शिक्षादेः।

शिक्षा आदि प्रातिपदिक को अन्त्य स्वर का ह्रस्व होता है। यथा, शिक्षां वेत्ति अधीते वा शिक्षकः, मीमांसां वेत्ति अधीते वा मीमांसकः।

४८। तेन प्रोक्तम्।

'तेन प्रोक्तम्,' इस अर्थ में प्रतिपादकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, ऋषिणा प्रोक्तम् आर्षम्, मनुना प्रोक्तं मानवं मानवीयम्, विष्णुना प्रोक्तं वैष्णवम्, पतञ्जलिना प्रोक्तं पातञ्जलम्, कणादेन प्रोक्तं काणादम्, पाणिनिना प्रोक्तं पाणिनीयम्, जैमिनिना प्रोक्तं जैमिनीयम्, अत्रिणा प्रोक्तम् आत्रेयम्, उशनसा प्रोक्तम्, औशनसम्, अङ्गिरसा प्रोक्तम् आंगिरसम्, पराशरेण प्रोक्तम् पाराशरं पाराशरीयम्, बृहस्पतिना प्रोक्तं बार्हस्पत्यम्, नारदेन प्रोक्तं नारदीयम्, वाल्मीकिना प्रोक्तं वाल्मीकीयम्, बोधायनेन प्रोक्तं बौधायनीयम्।

४९। तेन कृतम्।

'तेन कृतम्' इस अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं यथा, कायेन कृतं कायिकम्,

अंगेन कृतम् आंगिकम्, शरीरेण कृतं शारीरिकम् वाचा कृतं वाचिकम्, वचनेन कृतं वाचनिकम्, मनसा कृतं मानसिकम् सहसा कृतं साहसिकम्, पुरुषेण कृतं पौरुषेयम्, मक्षिकाभिः कृत माक्षिकम्, क्षुद्राभिः कृतं क्षौद्रम् भ्रमरैः कृतं भ्रामरं पादयै कृतं पादयम्।

५०। तेन रक्तम्।

'तेन रक्तम्', इस अर्थमें प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, कषायेण रक्तं काषायाम् कुसुम्भेन रक्तं कौसुम्भम्, नील्या रक्तं नीलम्, हरिद्रया रक्तं हारिद्रम्, मञ्जिष्ठया रक्तं माञ्जिष्ठम्, लाक्षया रक्तं लाक्षिकम्, रोचनया रक्तं रौचनिकम्, पीतेन रक्तं पीतकम्।

५१। सास्य देवता*।

'सा अस्य देवता', इस अर्थमें प्रातिपदिकों के उत्तर यथा सम्भव ऊपर लिखे हुए सब प्रत्यय होते हैं। यथा, शिवोऽस्य देवता शैवः, विष्णुरस्य देवता वैष्णवः, शक्तिरस्य देवता शाक्तः गणपतिरस्य देवता गाणपत्यः, प्रजापतिरस्य देवता प्राजापत्यः, वायुरस्य देवता वायव्यः, अग्निरस्य देवता आग्नेयः, सोमोऽस्य देवता सौम्यः, द्यावापृथिव्यौ अस्य देवते द्यावापृथिवीयं द्यावापृथिव्ययम्, अग्नीषोमावस्य देवते अग्नीषोमीयम् अग्नीषोम्यम्। इन्द्रो देवतास्येति ऐन्द्रोमन्त्रः ऐन्द्रहविः।

---

* त्येज्यमान द्रव्ये उद्देश्य विशेषो देवता।

५२। तस्य समूहः।

'तस्य समूहः', इस अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे हुए सब प्रत्यय होते हैं। यथा, भिक्षाणां समूहः भैक्षम्* गर्भिणीनां समूहः गार्भिणम्, अङ्गाराणां समूहः आङ्गारम्, मयूराणां समूहः मायूरम्, धेनूनां समूहः धैनुकम्, कलापानां समूहः कालापकम्, राजन्यानां समूहः राजन्यकम्, राजपुत्राणां समूहः राजपुत्रकम्, मनुष्याणां समूहः मानुष्यकम् अपूपानां समूहः आपूपिकम्, गणिकानां समूहः गाणिक्यम्, ब्राह्मणानां समूहः ब्राह्मण्यम्, वृद्धानां समूहः वार्द्धिकम्।

५३। समूहे खण्ड-काण्ड-तलः।

समूह अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव, खण्ड काण्ड और तल प्रत्यय होते हैं। यथा, कमलानां समूहः कमल खण्डम्, कुमुदानां समूहः कुमुदखण्डम्; दुर्व्वाणां समूहः दुर्व्वाकाण्डम्, कर्म्मणां समूहः कर्म्मकाण्डम्। तल प्रत्ययान्त शब्द स्त्री लिङ्ग होते हैं। जनानां समूहः जनता, बन्धूनां समूहः बन्धुता।

५४। तत्र भवः।

'तत्र भवः', (१) इस अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, मथुरायां

---

* भिक्षादिभ्योऽणिति।

(१) यहां भव शब्द से जात, स्थित, संक्रान्त और आविर्भूत आदि अनेक अर्थ बोध होते हैं।

भवः माथुरः, कलिङ्गे भवः कालिङ्गः, ग्रामे भवःग्राम्यः ग्रामीणः (ग्रामादखञौ) नगरे भवः नागरिकः, वर्षासु भवः वार्षिकः, शरदि भवः शारदः, वसन्ते भवः वासन्तिकः, हेमन्ते भवः हैमन्तिकः हैमन्तः, समुद्रे भवः सामुद्रिकः, द्वीपे भवः द्वैपायनः द्वैप्यः, अकाले भवः आकालिकः शश्वद्भवः शाश्वतिकः, कुले भवः कुलीनः, दुष्कुले भवः दौष्कुलेयः दुष्कुलीनः, प्राचि भवं प्राच्यम् दिशि भवं दिश्यम् (दिगादिभ्योयत्) वर्गे भवं वर्ग्यम्, कण्ठे भवं कण्ठ्यम्, दन्ते भवं दन्त्यम् (शरीरावयवाच्च) तालौ भवं तालव्यम्, ओष्ठे भवम् औष्ठ्यम्, जिह्वामूले भवं जिह्वामूलीयम्, अन्तरे भवम् आन्तरिकम्, मनसि भवं मानसं मानसिकम्, शरीरे भवं शरीरं शारीरिकम्, अरण्ये भवः आरण्यको मनुष्यः आरण्यः पशुः, कोशे भवं कौशेयम्, इह भवम् ऐहिकम्, लोके भवं लौकिकम्, भूमौ भवः भौमः, दिवि भवः दिव्यः, अग्रे भवम् अग्र्यम्, आदौ भवम्, आद्यम् अन्ते भवम् अन्त्यम्, वेशे भवः वेश्या, सर्व्वकाले भव सार्व्वकालिकम्, कदाचिद्भवं कादाचित्कम्, सम्प्रति भवं साम्प्रतिकम्, अध्यात्मं भवम् आध्यात्मिकम्, अधिभूतं भवम् आधिभौतिकम्, अधिदेवं भवम् आधिदैविकम्, मध्यन्दिने भवं माध्यन्दिनम्।

५५। टिलोपोऽकस्माद्वहिषोः।

अकस्मात्, वहिस् इन दोनों प्रातिपदिकों के टि का लोप होता है। यथा, अकस्माद्भवम् आकस्मिकम्, वहिर्भवम् वाह्यं वाहीकम्।

५६। स्त्रीपुम्भ्यां नञ्।

स्त्री और पुमस् शब्द के उत्तर भव आदि अर्थ में नञ् होता है, ञ् इत् होता है और न रह जाता है। यथा, स्त्रीषु भवं स्त्रैणम्, पुंसु भयं पौंस्नम्।

५७। हैमन-शौवस्तिक-पौनः पुनिकाः।

हैमन, शौवस्तिक और पौनः पुनिक ये शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, हेमन्ते भवं हैमनम्, श्वो भवं शौवस्तिकम् पुनःपुनर्भवं पौनःपुनिकम्।

५८। प्रतीच्योदीच्यतिरश्यचीनाः।

प्रतीच्य, उदीच्य और तिरश्चीन ये तीन शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, प्रतीचि भवं प्रतीच्यम्, उदीचि भवम् उदीच्यम्, तिरश्चि भवं तिरश्चीनम्।

५९। तत्र साधुः।

'तत्र साधुः', इस अर्थमें प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे हुए सब प्रत्यय होते हैं। यथा, सभायां साधुः सभ्यः,* समाजे साधुः सामाजिकः† अतिथौ साधुः आतिथेयः वेदे साधुः वैदिकः, संग्रामे साधुः सांग्रामिकः, संयुगे साधुः सांयुगीनः, वितण्डायां साधुः वैतण्डिकः, संकथायां साधुः सांकथिकः, संग्रहे साधुः सांग्रहिकः।

---

* सभाया यः † "समाज रक्षेति"
इस अर्थ में भी सामाजिक शब्द होता है।

६० । देये कालादवश्यम्भावे ।

अवश्यम्भाव बोध होने से देय अर्थ में कालवाचक प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, मासे देयं मासिकम्, वर्षे देयं वार्षिकम्, अब्दे देयम् आब्दिकम्, संवत्सरे देयं सांवत्सरिकम्, अग्रहायणे देयम् आग्रहायणिकम्, श्रावणे देयं श्रावणिकम्।

६१ । निर्वृत्ते (तेन निवृत्तम्)

निर्वृत्त अर्थ में भी होता है। यथा, दिनेन निर्वृत्तं दैनिकम्, मासेन निर्वृत्तं मासिकम्, वर्षेण निर्वृत्तं वार्षिकम्, संवत्सरेण निर्वृत्तं सांवत्सरीयं सांवत्सरिकम्।

६२ । अह्नोऽह्नः ।

अहन् शब्द के स्थानमें अह्न होता है। यथा, अह्ना निर्वृत्तम् आह्निकम्।

६३ । व्याप्तौ च ।

व्याप्ति अर्थ में भी होता है। यथा, दिनं व्याप्य स्थितं दैनिकम्, मासं व्याप्य स्थितं मासिकम्, वर्षं व्याप्य स्थितं वार्षिकम् चतुरो मासान् व्याप्य स्थितं चातुर्मास्यम्।

६४ । वयसि च ।

वयस् अर्थ में भी होता है। यथा, द्वे वर्षे अस्य वयः द्विवर्षीणः, द्विवर्षीय, द्विवार्षिकः, द्विवर्षः; पञ्च वर्षाण्यस्य वयः

पञ्चवर्षीणः पञ्चवर्षीयः, पञ्चवार्षिकः, पञ्चवर्षः; षोड़श वर्षाण्यस्य वयः षोड़शवर्षीणः, षोड़शवर्षीयः, षोड़शवार्षिकः, षोड़शवर्षः।

६५। तत आगतः।

'तत् आगतः' इस अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, मथुराया, आगतः माथुरः, नगरादागतः नागरिकः, आपणादागतः आपणिकः, उपाध्यायादागतम् औपाध्यायकम्, पितामहादागतं पैतामहकम्, मातुरागतम् मातृकम्, सवितुरागतं सावित्रम्, भ्रातुरागतं भ्रातृकम्, पितुरागतं पैतृकं पित्र्यम्, स्त्रिया आगतं स्त्रैणम्, पुंस आगतं पौंस्नम्।

६६। तदर्हति।

'तत् अर्हति', इस अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, शतमर्हति शतिकः, सहस्रमर्हति साहस्रिकः, छेदमर्हति छेद्यः, भेदमर्हति भेद्यः, दण्डमर्हति दण्ड्यः, अर्घमर्हति अर्घ्यः, बधमर्हति बध्यः यज्ञमर्हति यज्ञियः दक्षिणामर्हति दक्षिणीयः दक्षिण्यः।

६७। तस्मादनपेतम् (धर्म्मपथ्यर्थन्यायादनपेते)

'तस्मात् अनपेतम्', इस अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, धर्म्मादनपेतं धर्म्म्यम् न्यायादनपेतं न्याय्यम्, अर्थादनपेतं अर्थ्यम्,

पथोऽनपेतं पथ्यम्, शास्त्रादनपेतं शास्त्रीयम्, विधेरनपेतं वैधम्।

६८। तस्येदम्।

'तस्य इदम्', इस अर्थमें प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, विष्णोरिदं वैष्णवम्, शिवस्येदं शैवम्, जनपदस्येदं जानपदम्, तस्येदं तदीयम्, एतस्येदम् एतदीयम्, देवस्येदं दैवम्, असुरस्येदम् आसुरम् सम्राज इदं साम्राज्यम्, इन्द्रस्येदम् ऐन्द्रम्, महेन्द्रस्येदं माहेन्द्रम्, मनस इदं मानसम्, शरीरस्येदं शारीरम्, पितुरिदं पित्र्यम्, गोरिदं गव्यम्, महिषस्येदं माहिषम् वेणोरिदं वैणवम्, पलासस्येदं पालासम्, खदिरस्येदं खादिरम् बिल्वस्येदं बैल्वम्, मुञ्जानामिदं मौञ्जम्, स्त्रियाः इदंस्त्रैणम्, पुंस इदं पौंस्नम्, गंगाया इदं गांगम्, हिमवत इदं हैमवतम्, पशुपतेरिदं पाशुपतम्, शंकरस्येदं शांकरम्, सूरस्येदं सौरम्, चन्द्रस्येदं चान्द्रम्, वेदस्येदं वैदिकम्, उपनिषद इदम् औपनिषदम्, पृथिव्या इदं पार्थिवम्, जलस्येदं जलीयम्, तेजस इदं तैजसम्, वायोरिदं वायवीयम्, शत्रोरिदं शात्रवम्, रुरोरिदं रौरवम्, न्यङ्कोरिदं नैयङ्कवं न्यङ्कवम्, श्वापदस्येदं शौवापदं श्वापदम्, भरतस्येदं भारतम्, भारतवर्षस्येदं भारतवर्षीयम्, युष्माकमिदं युष्मदीयम्, अस्माकमिदम् अस्मदीयम्।

६९। त्वन्मदावेकवचने।

एक वचन में युष्मद् के स्थान में त्वद् और अस्मद् के स्थान में मद् होता है। यथा, तव इदं त्वदीयम्, मम इदं मदीयम्।

७०। युष्माकास्माकौ खीनषणोः।

खीन और षण् प्रत्यय परे रहने से युष्मद् के स्थान में युष्माक और अस्मद् के स्थान में अस्माक होता है। यथा, युष्माकमिदं यौष्माकीणं यौष्माकम्, अस्माकमिदम् आस्माकीनम् आस्माकम्।

७१। तवकममकावेकवचने।

एकवचन में तवक और ममक होता है। यथा, तव इदं तावकीनं तावकम्, मम इदं मामकीनं मामकम्।

७२। परादेः कन् षीयणि।

षीयण् प्रत्यय होने से, पर, स्वर, राजन् आदि प्रातिपदिकों के उत्तर कन् होता है। न इत् होता है और क रह जाता है यथा, परस्यदं परकीयम्। राज्ञ इदं राजकीयम्। स्व शब्द के उत्तर विकल्प से होता है। यथा, स्वस्येदं स्वकीयं स्वीयम्।

७३। सौरसारवस्वायम्भुवाः।

सौर, सारव और स्वायम्भुव ये शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, सूर्य्यस्येदं सौरं–दिनम्, सरय्वा इदं सारवं जलम्, स्वयम्भोरिदं स्वायम्भुवं–धाम।

७४। भवदीयान्यदीयौ।

भवदीय और अन्यदीय निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, भवत इदं भवदीयम्, अन्यस्येदम् अन्यदीयम्।

७५। तस्य विकारः।

तस्य विकारः इस अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, सुवर्णस्य विकारः सौवर्णः, रजतस्य विकारः राजतः, सीसस्य विकारः सैसः, दारोर्विकारः दारवः, देवदारोर्विकारः दैवदारवः, पयसां विकारः पायसः, अग्नेः विकारः आग्नेयः, मुद्गस्य विकारः मौद्गः, इक्षोर्विकारः ऐक्षवः, गुड़स्य विकारः गौड़ः, पिष्टस्य विकारः पैष्टः, तिलस्य विकारः तैलम्।

७६। तदस्य पण्यम्।

'तत् अस्य पण्यम्' इस अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, लवणमस्य पण्यं लावणिकः, तैलमस्य पण्यं तैलिकः, अपूपा अस्य पण्यम् आपूपिकः,* तण्डुलमस्य पण्यं ताण्डुलिकः, मोदका अस्य पण्यं मौदकिकः, उशीरमस्य पण्यम् औशीरिकः, ताम्बूलमस्य पण्यं ताम्बूलिकः।

७७। तदस्य प्रहरणम्।

तत् अस्य प्रहरणम् इस अर्थ में प्रातिपदिक के उत्तर

---

* शीलार्थ में भी होता है। अपूप भक्षणम् शील मस्य आपूपिकः।

यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, धनुरस्य प्रहरणं धानुष्कः, असिः अस्य प्रहरणम् आसिकः, प्रासोऽस्य प्रहरणं प्रासिकः, परश्वधम् अस्य प्रहरणं पारश्वधिकः, परशुरस्य प्रहरणं पारशविकः, तरवारिरस्य प्रहरणं तारवारिकः, *शक्तिरस्य प्रहरणं शाक्तीकः, यष्टिरस्य प्रहरणं याष्टीकः।

७८। तदस्य प्रयोजनम्।

'तत् अस्य प्रयोजनम्' इस अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, स्वर्गं प्रयोजनमस्य स्वर्ग्यम्, यशः प्रयोजनमस्य यशस्यम्, आयुः प्रयोजनमस्य आयुष्यम् कामः प्रयोजनमस्य काम्यम्, गृहप्रवेशनं प्रयोजनमस्य गृहप्रवेशनीयम्, अनुप्रवचनं प्रयोजनमस्य अनुप्रवचनीयम्, संवेशनं प्रयोजनमस्य संवेशनीयम्।

७९। तदस्य शीलम्।

'तत् अस्य शीलम्' इस अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, तपोऽस्य शीलं तापसः (गुरोः दोषाणामावरणं छत्रम्) छत्रमस्य शीलं छात्रः, शिलास्य शीलं शैलः, प्ररोहोऽस्य शीलं प्रारोहः, चुरा अस्य शीलं चौरः।

८०। तदस्य प्राप्तं कालात्।

तत् अस्य प्राप्तम्, इस अर्थ में कालवाचक प्रातिपदिकों के

---

* शक्ति यष्ट्योरी कक्। कालाघत्। कालः प्राप्तो स्य काल्यं शीतम्।

उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, समयोऽस्य प्राप्तः सामयिकः; कालोऽस्य प्राप्तः कालिकः, दिष्टोऽस्य प्राप्तः दैष्टिकः, ऋतोरण् ऋतुरस्य प्राप्तः आर्त्तव।

८१। अधिकृत्य कृतं ग्रन्थे।

ग्रन्थ बोध होने से, 'अधिकृत्य कृतम्' इस अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, राममधिकृत्य कृतम् रामायणम्, भगवन्तमधिकृत्य कृतं भागवतम्, भरतानधिकृत्य कृतं भारतम्, वाक्यं पदञ्चाधिकृत्य कृतं वाक्यपदीयम्, राघवान् पाण्डवांश्चाधिकृत्य कृतं राघवपाण्डवीयम्, किरातमर्ज्जुनञ्चाधिकृत्य कृतं किरातार्ज्जुनीयम्, अनुशासनमधिकृत्य कृतम् आनुशासनिकम्, अश्वमेधमधिकृत्य कृतम् आश्वमेधिकम्, आश्रमवासमधिकृत्य कृतं आश्रमवासिकम्, मुषलमधिकृत्य कृतं मौषलम्, महाप्रस्थानमधिकृत्य कृतं महाप्रस्थानिकम्। स्वर्गारोहणम् अधिकृत्य कृतं स्वर्गारोहणिकम्। शारीरकमेधि कृत्य कृतो ग्रन्थः शारीरकः।

८२। तस्मै प्रभवति।

'तस्मै प्रभवति' इस अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, सन्तापाय प्रभवति सान्तापिकः, सन्नाहाय प्रभवति सान्नाहिकः, संग्रामाय प्रभवति सांग्रामिक, संघाताय प्रभवति सांघातिकः, उत्पाताय प्रभवति औत्पातिकः। योगाय प्रभवति योग्यः यौगिकः (योगाद्यञ्च)

८३। कार्म्मुकं धनुषि।

धनुष् अर्थ में कार्म्मुक शब्द निपातन से सिद्ध होता है। यथा, कर्म्मणे प्रभवति कार्म्मुकं धनुः।

८४। तस्मै हितम्।

तस्मै हितम्, इस अर्थ में प्रातिपदिक के उत्तर ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, यज्ञाय हितं यज्ञियम्, अध्वराय हितम् अध्वरीणम्, ब्रह्मणे हितं ब्राह्मण्यम्, विश्वजनेभ्यो हितं विश्वजनीनम्, सर्व्वजनेभ्यो हितम् सार्व्वजनीनम्।

८५। काले नक्षत्राच्चयोगे।

काल और नक्षत्र का योग बोध होने से नक्षत्रवाचक प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा विशाखया नक्षत्रेण युक्तो मास; वैशाखः, राधया नक्षत्रेण युक्तो मासः राधः, ज्येष्ठया नक्षत्रेण युक्तो मासः ज्यैष्ठः, आषाढ्या नक्षत्रेण युक्तो मासः आषाढः, श्रवणया नक्षत्रेण युक्तो मासः श्रावणः श्रावणिकः, भद्रया नक्षत्रेण युक्तो मासः भाद्रः, भद्रपदया नक्षत्रेण युक्तो मासः भाद्रपदः, प्रोष्ठपदया नक्षत्रेण युक्तो मासः प्रष्ठपदाः, अश्विन्या नक्षत्रेण युक्तो मासः आश्विनः, अश्वयुजा नक्षत्रेण युक्तो मासः आश्वयुजः, कृत्तिकया नक्षत्रेण युक्तो मासः कार्त्तिकः कार्त्तिकिकः, आग्रहायण्या नक्षत्रेण युक्तो मासः अग्रहायणः आग्रहायणः आग्रहायणिकः मृग्या नक्षत्रेण युक्त मासः मार्गः, मृगशीर्षेण नक्षत्रेण युक्तो मासः मार्गशीर्षः,

मृगशिरसा नक्षत्रेण युक्तो मासः मार्गशिरसः, मघया नक्षत्रेण युक्तो मासः माघः, फल्गुन्या नक्षत्रेण युक्तो मासः फाल्गुनः फाल्गुनिकः, चित्रया नक्षत्रेण युक्तो मासः चैत्रः चैत्रिकः।

८६। यलोपस्तिष्यपुष्ययो।

तिष्य और पुष्य शब्दों के य का लोप होता है। यथा, तिष्येण नक्षत्रेण युक्तो मासः तैषः, पुष्येण नक्षत्रेण युक्तो मासः पौषः। पुष्येण युक्तमह :पौषम्। पौषी रात्रिः।

८७। तद्वहति।

तत् वहति, इस अर्थ में प्रातिपादिक के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, धुरं वहति धुर्य्यः धौरेयः, सर्व्वं धुरांवहति सर्व्वधुरीणः, चतुर्धुरां वहति चतुर्धुरीणः, हलं वहति हालिकः, सीरं वहति सैरिकः, रथं वहति रथ्यः, युगं वहति युग्यः, शकटं वहति शाकटः।

८८। तेन जीवति।

तेन जीवति, इस अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, वेतनेन जीवति वैतनिकः, वाहनेन जीवति वाहनिकः, जालेन जीवति जालिकः, उपदेशेन जीवति औपदेशिकः, धनुषा जीवति धानुषिकः, क्रयविक्रयाभ्यां जीवति क्रयविक्रयिकः, आयुधेन जीवति आयुधिकः आयुधीयः, वागुरया जीवति वागुरिकः, नावा जीवति नाविकः, व्यवहारेण जीवति व्यवहारिकः।

८९। तदस्मिन् दीयते।

तत् अस्मिन् दीयते, इस अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, द्वावस्मिन् वृद्धिः आयः लाभः शुल्कम् उपदा वा दीयते द्विकं शतम्, त्रिकं शतम्, चतुष्कं शतम्, पञ्चकं शतम्। वृद्धि आदि के केवल दान स्थान में है।

९०। तादर्थ्ये।

तादर्थ्य बोध होने से प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, पादार्थमुदकं पाद्यम् अर्घार्थमुदकम् अर्घ्यम्,* वलये इदं वालेयम्, अतिथये इदम् आतिथ्यम् अग्निदेवतायै इदम् अग्निदैवत्यम्, पितृदेवतायै इदं पितृदैवत्यम्।

९१। स्वार्थे।

स्वार्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। प्रत्यय होने पर प्रातिपदिकों के अर्थ में विशेषता नहीं होती, पूर्व्व ही का अर्थ ज्यों का त्यों रहता है। यथा, बन्धुरेव बान्धवः, चोर एव चौरः, चाण्डाल एव चाण्डालः, मन एव मानसम्, देवतैव दैवतम्, प्रज्ञ एव प्राज्ञः, कुतुकमेव कौतुकम्, कुतूहलमेव कौतूहलम्, मरुदेव मारुतः, रक्ष एव राक्षसः, भेषजमेव भैषज्यम्, इतिहैव ऐतिह्यम्,

* पादार्घाभ्याञ्च अतिथेर्य्यः।

त्रिलोकी एव त्रैलोक्यम्, करुणा एव कारुण्यम्, द्विगुणावेव द्वैगुण्यम्, त्रिगुणा एव त्रैगुण्यम्, षड्गुणा एव षाड्गुण्यम्, चत्वारो वर्णा एव चातुर्वर्ण्यम्. सेना एव सैन्यम्, सन्निधि, रेव सान्निध्यम्, समीपमेव समीप्यम्, उपमै एव औपम्यम्, सुखमेव सौख्यम्, सोदर एव सोदर्य्यः एक एव एककः। अत्यय एव आत्ययिकः, सूर एव सूर्यः, मर्त्त एव मर्त्त्यः, समानएव सामान्यम्, याव एव यावकः, बाल एव बालकः, नारेव नौका, नवमेव नव्यम्, नवीनम्, वागेव वाचिकं सन्देशवचनम्* ।

९२। देवातल्।

स्वार्थ में देव शब्द के उत्तर तल् प्रत्यय होता है। यथा, देव एव देवता।

९३। भाग रूप नामभ्यो धेयः।

स्वार्थ में भाग, रूप और नामन् इन तीन प्रातिपदिकों के उत्तर धेय प्रत्यय होता है। यथा, भाग एव भागयेयः, नामैव नामधेयम्ः, रूपमेव रूपधेयम्।

९४। मृदस्तिकन्।

स्वार्थ में मृद शब्द के उत्तर तिकन् प्रत्यय होता है। यथा, मृदेव मृतिका।

९५। सस्नौ प्रशंसायाम्।

---

*सन्देश वाग्वाचिकं स्यात्।

प्रशंसा बोध होने से स्वार्थ में मृद् शब्द के उत्तर स और स्न प्रत्यय होता है। यथा, प्रशस्ता मृत् मृत्सा, मृत्स्ना।

६६। नूत्ननूतनौ।

नूत्न और नूतन ये शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, नवमेव नूत्नं नूतनम्।

६७। औपयिकश्च (विनयादिभ्यष्ठक्)।

औपयिक निपातन से सिद्ध होता है। यथा, उपाय एव औपयिकः, विनय एव वैनयिकः; समय एव सामयिकः।

६८। सोऽस्य निवासोऽभिजनो वा।

'स अस्य निवासः' (१), 'सः अस्याभिजनः' (२) इन दोनों अर्थों में प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, मथुरा अस्य निवासः, माथुरः, मिथिला अस्य निवासः मैथिलः, कम्बोजोऽस्य निवासः काम्बोजः, कश्मीरोऽस्य निवासः काश्मीरः, गान्धारोऽस्य निवासः गान्धारः, कलिङ्गोऽस्य निवासः कालिङ्गः, उत्कलोऽस्य निवासः औत्कलः, सिन्धुरस्य निवासः सैन्धवः, तक्षशिलास्य निवासः तात्तशिलः, विदेहोऽस्य निवासः वैदेहः, पञ्चालोऽस्य निवासः पाञ्चालः, मगधोऽस्य निवासः मागधः, अयोध्या अस्य निवासः आयोध्यिकः, मद्रोऽस्य निवासः माद्रः, अङ्गोऽस्य निवास, आङ्गः, वङ्गोऽस्य निवासः वाङ्गः। अभिजन अर्थ में

(१) निवासो नाम यत्र सम्प्रत्युष्यते।
(२) अभिजनो नाम यत्र पूर्वैरुषितम्।

भी येही रूप होता है। यथा, गन्धारोऽस्याभिजनः गान्धारः इत्यादि।

९९। लोपो बहुवचने॥

बहुवचन में 'निवास' और 'अभिजन' अर्थ में विहित प्रत्यय का लोप होता है। यथा, अङ्ग एषां निवासः अङ्गाः, वङ्ग एषां निवासः वङ्गाः, कलिङ्ग एषां निवासः कलिङ्गाः, विदेह एषां निवासः विदेहाः, उत्कल एषां निवासः उत्कलाः, कम्बोज एषां निवासः कम्बोजाः, मगध एषां निवासः मगधाः, पञ्चाल एषां निवासः पञ्चालाः, कश्मीर एषां निवासः कश्मीराः।

१००। न स्त्रियाम्।

स्त्रीलिङ्ग में नहीं होता। यथा मगध आसां निवासः मागध्यः, पञ्चाल आसां निवासः पाञ्चाल्यः, विदेह आसां निवासः वैदेह्यः, कलिङ्ग आसां निवासः कालिङ्ग्यः।

१०१। सोऽस्य राजेत्येवम्।

'सः अस्य राजा' इस अर्थ में भी ऐसा ही होता है; अर्थात् सोऽस्य निवासः, सोऽस्याभिजनः, इन दोनों अर्थों में जो प्रत्यय और कार्य्य होते हैं, 'सोऽस्य राजा' इस अर्थ में भी वे ही प्रत्यय और कार्य्य होते हैं। यथा, कश्मीरस्य राजा काश्मीरः, कलिङ्गस्य राजा कालिङ्गः, विदेहस्य राजा वैदेहः, पञ्चालस्य राजा पाञ्चालः,* मगधस्य राजा मागधः, निषधस्य

*जनपद शब्दात् क्षत्रियादञ्।

राजा नैषधः, । वहुवचन में—कश्मीराः, कलिङ्गाः, विदेहाः, पञ्चालाः मगधाः, निषधाः ।

१०२ । तस्य भावः ।

'तस्य भावः' इस अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर यथा सम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं । यथा, कुमारस्य भावः कौमारम्, शिशोर्भावः शैशवम्, वृद्धस्य भावः वार्द्धकम्, स्थविरस्य भावः स्थाविरम्, गुरोः भावः गौरवम्, लघोर्भावः लाघवम्, सुष्ठु भावः सौष्ठवम्, ऋजोः भावः आर्जवम्, मृदोर्भावः मार्दवम्, पटोर्भावः पाटवम्, सुरभे भावः सौरभम्, रमणीयस्य भावः रमणीयम्, कमनीयस्य भावः कमनीयकम्, स्थिरस्य भावः स्थैर्य्यम्, धीरस्य भावः धैर्य्यम्, गम्भीरस्य भावः गाम्भीर्य्यम्, कृशस्य भावः कार्श्यम्, जड़स्य भावः जाड्यम्, शीतस्य भावः शैत्यम्, उष्णस्य भावः औष्ण्यम्, दृढ़स्य भावः दार्ढ्यम्, मन्दस्य भावः मान्द्यम्, सुभगस्य भावः सौभाग्यम्, दुर्भगस्य भावः दौर्भाग्यम्, मधुरस्य भावः माधुर्य्यम् माधुरी, मूर्खस्य भावः मौर्ख्यम्, विषमस्य भावः वैषम्यम्, समस्य भावः साम्यम् कातरस्य भावः कातर्य्यम्, कर्कशस्य भावः कार्कश्यम्, वालस्य भावः वाल्यम्, शुक्लस्य भावः शौक्ल्यम्, सुमनसो भावः सौमनस्यम्, दुर्मनसो भावः दौर्मनस्यम्, विमनसो भावः वैमनस्यम्, प्रवीणस्य भावः प्रावीण्यम्, उदासीनस्य भावः औदासीन्यम्, कृपणस्य भावः कार्पण्यम्, मध्यस्थस्य भावः माध्यस्थ्यम्, उदारस्य भावः औदार्य्यम्,

विगुणस्य भावः वैगुण्यम्, सुजनस्य भावः सौजन्यम्, स्थूलस्य भावः स्थौल्यम्, अधिकस्य भावः आधिक्यम्।

१०२। तस्य भावः कर्म्म च।

'तस्य भावः,' 'तस्य कर्म्म' इन दोनों अर्थों में प्रातिपदिकों के उत्तर यथासम्भव ऊपर लिखे सब प्रत्यय होते हैं। यथा, ब्राह्मणस्य भावः कर्म्म वा ब्राह्मण्यम्, चोरस्य भावः कर्म्म वा चौर्य्यम्, अलसस्य भावः कर्म्म वा आलस्यम्, सेनापतेर्भावः कर्म्म वा सैनापत्यम्, अधिपतेर्भावः कर्म्म वा आधिपत्यम्, सख्युर्भावः कर्म्म वा सख्यम्, शूरस्य भावः कर्म्म वा शौर्य्यम्, वीरस्य भावः कर्म्म वा वीर्य्यम्, दूतस्य भावः कर्म्म वा दूत्यं दौत्यम्, पुरोहितस्य भावः कर्म्म वा पौरोहित्यम्, सुहितस्य भावः कर्म्म वा सौहित्यम्, सारथेर्भावः कर्म्म वा सारथ्यम्, आस्तिकस्य भावः कर्म्म वा आस्तिक्यम्, नास्तिकस्य भावः कर्म्म वा नास्तिक्यम्, पण्डितस्य भावः कर्म्म वा पाण्डित्यम्, वणिजो भावः कर्म्म वा वाणिज्यम्, शुचेर्भावः कर्म्म वा शौचम्, अशुचेर्भावः कर्म्म वा अशौचम्, मुनेर्भावः कर्म्म वा मौनम्, अकुशलस्य भावः कर्म्म वा आकौशलम्, अनुकूलस्य भावः कर्म्म वा आनुकूल्यम्, प्रतिकूलस्य भावः कर्म्म वा प्रातिकूल्यम्, पुरुषस्य भावः कर्म्म वा पौरुषम्, सुभ्रातुर्भावः कर्म्म वा सौभ्रात्रम्, दुर्भ्रातुर्भावः कर्म्म वा दौर्भ्रात्रम्, सुहृदो भावः कर्म्म वा सौहृदम्, दुर्हृदो भावः कर्म्म वा दौर्हृदम्, अनृशंसस्य भावः कर्म्म वा आनृशंस्यम्, कुशलस्य भावः कर्म्म वा कौशल्यं,

कौशलम्, चपलस्य भावः कर्म्म वा चापल्यं, चापलम्, निपुणस्य भावः कर्म्म वा नैपुण्यं नैपुणम्, पिशुनस्य भावः कर्म्म वा पैशुन्यं पैशुनम्, सहायस्य भावः कर्म्म वा साहाय्यं, साहायकम् चतुरस्य भावः कर्म्म वा चातुर्य्यं, चातुरी।

१०४। इतरेष्वपि दृश्यन्ते।

षिण् आदि प्रत्यय अपत्य आदि जिन अर्थों में दिखाये गये हैं, उनके अतिरिक्त अनेक अर्थों में देखे जाते हैं। कई एक उदाहरण दिखाये जाते हैं। यथा, धर्म्मं चरति धार्म्मिकः, वशं गतः वश्यः, पृथिव्या ईश्वरः पार्थिवः, सर्व्वभूमेरीश्वरः सार्व्वभौमः चक्षुषा गृह्यते चाक्षुषं-रूपम्, श्रवणेन गृह्यते श्रावणः-शब्दः, रसनया गृह्यते रासनो-रसः, त्वचा गृह्यते त्वचः स्पर्शः, चक्षुषा निष्पन्नं चाक्षुषं प्रत्यक्षम्, श्रवणेन निष्पन्नं श्रावणम्, रसनया निष्पन्नं रासनम्, त्वचा निष्पन्नं त्वाचम्, पारं गतवान् पारीणः, पारावारं गतवान् पारावारीणः, अर्थेन क्रीतः आर्थः, विद्यया लब्धं वैद्यम्, विद्यायां कुशलः वैद्यः, स्त्रिया जितः स्त्रैणः द्वारेनियुक्तः, दौवारिकः, भाण्डागारे नियुक्तः भाण्डागारिकः, हिमवतः प्रभवति हैमवती गङ्गा, विदूरात् प्रभवति वैदूर्य्योमणिः, रथेन सञ्चरते रथिकः, अश्वेन सञ्चरते आश्विकः, शकुनीन् हन्ति शाकुनिकः, शकुन्तान् हन्ति शाकुन्तिकः, सहसा वर्त्तते साहसिकचौरः, जलेन वर्त्तते जलीयो-मत्स्यः, अनुकूलं वर्त्तते आनुकूलिकः, प्रतिकूलं वर्त्तते प्रातिकूलिकः, नावा तार्य्या नाव्या-नदी, वयसा तुल्य. वयस्यः, तुलया सम्मितं

तुल्यम्, गृहपतिना संयुक्तः गार्हपत्योऽग्निः, समाने तीर्थे गुरौ वसति सतीर्थ्यः, समाने उदरे शयितः समानोदर्य्यः, अग्रे दीयते अग्रियम्, लोके विदितः, लौकिकः, सर्व्वलोके विदितः सार्व्वलौकिकः,* नित्यं क्रियते दीयते वा नैत्यं नैत्यकं नैत्यिकम्, निमित्तेन क्रियते दीयते वा नैमित्तिकम्, प्रवेशन दीयते प्रावेशनं प्रावेशनिकम्, सर्व्वाङ्गानि व्याप्नोति सर्व्वाङ्गीनस्तापः, आप्रपदं प्राप्नोति आप्रपदीनः—पटः, अनुपदं वद्धा अनुपदीना-उपानत्, अभ्यमित्रं सम्यक् गच्छति अभ्यमित्राणः, सप्तभि पदैरवाप्यते साप्तपदीनं-सख्यम्, इन्द्रस्य (आत्मनो) लिङ्गम् इन्द्रियम्, कुशाग्रमिव कुशाग्रीया-बुद्धिः, काकतालमिव (१) काकतालीयम्, प्राक् सम्भूतः प्राचीनः, अवाक् सम्भूतः अवाचीनः सुस्नातं पृच्छति सौस्नातिकः, सुखशयनं पृच्छति सौखशायनिकः, परदारान् गच्छति पारदारिक, याचितेन निर्वृत्तं याचितकम्, अर्थं गृह्णाति आर्थिकः, आपणस्य धर्म्म्यम् आपणिकम्, नरस्य धर्म्म्या नारी, वातस्य शमनं कोपनं वा वातिकम्, पित्तस्य शमनं कोपनं वा पैत्तिकम्, सन्निपातस्य शमनं कोपनं वा सान्निपातिकम्, अस्ति परलोक इति मतिर्यस्य आस्तिकः, नास्ति परलोक इति मतिर्यस्य नास्तिकः, अस्ति दिष्टमिति मतिर्यस्य दैष्टिकः आमलक्या फलम् आमलकम्, वदर्य्याः फलं बादरम्, अश्वत्थस्य फलम्, आश्वत्थम्, न्यग्रोधस्य फलं नैयग्रोधम्।

---

* अनुशतिकादित्वादुभयपद वृद्धिः।

(१) काकागमनमिव तालपतनमिव काकतालम्।

१०५। लोपः क्वचित् प्रत्ययस्य।

कहीं कहीं प्रत्यय का लोप होता है। यथा, व्रीहीणां फलानि व्रीहयः, यवानां भलानि यवाः, माषाणां फलानि माषाः मल्लिकायाः पुष्पं मल्लिका, मालत्याः पुष्पं मालती, करवीरस्य पुष्पं करवीरम्, पाटलस्य पुष्पं पाटलम्, जात्याः पुष्पं जाती, यूथ्या पुष्पं यूथी।

१०६। जम्ब्वा बिभाषा।

जम्बु शब्द के उत्तर विकल्प से होता है। यथा, जम्ब्वाः फलम् जम्बु, जाम्बवम्।

१०७। हैयंगवीनाद्यश्वीनौ।

हैयङ्गवीन् और अद्यश्वीन निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, ह्यो गोदोहात् उद्भवति हैयङ्गवीनम्, अद्यश्वो वा घटते अद्यश्वीनं मरणम्, अद्यश्वीनो वियोगः, अद्यश्वो वा प्रसूते अद्यश्वीना स्त्री।

१०८। पान्थसाक्षिवार्द्धुषिकाः।

पान्थ, साक्षिन् और वार्द्धुषिक ये शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, पथि कुशलः पान्थः, साक्षात् दृष्टवान् साक्षी, वृद्धा जीवति वार्द्धुषिकः।

१०९। आमुष्मिकामुष्यायणौ।

षिकण् और षायनण् प्रत्यय सहित अदस् शब्द के स्थान

में आमुष्मिक आमुष्यायण ये दो शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, अमुष्मिन् (परलोके) हितम् आमुष्मिकम्, अमुष्य (मृतस्य) पुत्रः आमुष्यायणः।

११०। पौनःपुन्यम्।

पौनःपुन्य निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, पुनः पुनरनुष्ठानं सङ्घटनं वा पौनःपुन्यम्।

१११। नस्य लोपोऽन्त्यस्य।

तद्धित प्रत्यय होने से प्रातिपदिकों के अन्तस्थित नकार का लोप होता है। यथा, अग्निशर्म्मणोऽपत्यम् आग्निशर्म्मि, उडुलोम्नोऽपत्यम् औडुलोमिः, राज्ञां समूहः राजकम्, हस्तिनां समूहः हास्तिकम्, पथि कुशलः पथिकः सर्व्वकर्म्मसु कुशलः सर्व्वकर्म्मीणः, नामैव नामधेयम्, द्वयोरह्नोर्भवः द्व्याहीनः, साम वेत्ति अधीते वा सामकः, आत्मन इदम् आत्मीयम्।

११२। नानन्तस्य षणि।

षण् प्रत्यय होने से अन्‌भागान्त प्रत्ययों के नकार का लोप नहीं होता है। यथा, यूनो भावः यौवनम्, मघोन इदं माघवनम्, शुनां समूहः शौवनम्, पर्व्वणि क्रियते दीयते वा पार्व्वणम्, सामनि कुशलः सामनः, सुत्वन इदं सौत्वनम्, यज्वनोऽपत्यं याज्वनः, चर्मणा परिवृतः चार्म्मणः, कर्म्मास्य शीलं कार्म्मणः, भस्मनो विकारः भास्मनः।

११३। ये च भावैकर्म्मवर्ज्जे (ये चाह भाव कर्म्मणोः)

तद्धित का य परे रहने से अन्भागान्त प्रत्ययों के नकार का लोप नहीं होता । यथा, सामनि साधुः सामान्यः, ब्रह्मणि साधुः ब्रह्मण्यः, अध्वनि साधुः अध्वन्यः, राजनि साधुः राजन्यः* कर्म्मणि प्रभवति कर्म्मण्यः, मूर्द्धि भवः मूर्द्धन्यः । कर्म्म और भाव अर्थ में नकार का लोप होता है । यथा, राज्ञो भावः कर्म्म वा राज्यम् ।

११४ । नाध्वात्मनोर्णीने ।

णीन् प्रत्यय होने से अध्वन्, आत्मन् इन दोनों प्रातिपदिकों के नकार का लोप नहीं होता । यथा, अध्वनि साधुः अध्वनीनः, आत्मने हितम् आत्मनीनम् ।

११५ । मनन्तस्यापत्यषणि ।

अपत्य अर्थ में विहित षण् प्रत्यय परे रहने से मनभागान्त प्रातिपदिक के नकार का लोप होता है। यथा, सुसाम्नोऽपत्यं सौसामः, दुर्णाम्नोऽपत्यं दौर्णामः, कृतनाम्नोऽपत्यं कार्त्तनामः ।

११६ । वा हितनाम्नः ।

हितनामन् इस प्रातिपदिक का न लोप विकल्प से होता है । यथा, हितनाम्नोऽपत्यं हैतनामः हैतनामनः ।

११७ । हेमाश्मनोर्विकारे (तस्य विकारः) ।

---

* राजस्वश्व सुराधवत् ।

विकारार्थक षण् प्रत्यय के परे हेमन्, अश्मन्, इन दोनों प्रातिपदिकों के नकार का लोप होता है। यथा, हेम्नो विकारः हैमः, अश्मनोः विकारः आश्मः।

११८। चर्म्मणः कोषे।

कोष अर्थ में चर्म्मन् शब्द के नकार का लोप होता है। यथा, चर्म्मणो विकारः चार्म्मः-कोषः।

११९। ब्रह्मणोऽजातौ।

जाति भिन्न अर्थ में ब्रह्मन् शब्द के नकार का लोप होता है। यथा, ब्रह्मास्य देवता ब्राह्मम्-अस्त्रम्, ब्राह्मं-हविः, ब्राह्मी ओषधिः ब्रह्म उपास्ते ब्राह्मः, ब्रह्मण-इयं ब्राह्मी-तनुः। जाति अर्थ में नहीं होता। यथा, ब्रह्मणोऽपत्यं ब्राह्मणः जाति विशेषः।

१२०। नेनन्तस्य षणि।

षण् प्रत्यय होने से इन्भागान्त प्रातिपदिकों के नकार का लोप नहीं होता है। यथा, बलिन इदं बालिनम्, हस्तिन इदं हास्तिनम्, मेधाविन इदं मैधाविनम्, स्रग्विण इदं स्राग्वीणम्। अपत्य अर्थ में होता है। यथा, मेधाविनोऽपत्यं मैधावः, मायाविनोऽपत्यं, मायावः। गाथिन् आदि का नहीं होता है। यथा, गाथिनोऽपत्यं, गाथिनः, केशिनोऽपत्यं कैशिनः। इन् संयुक्त वर्ण में मिले रहने से नहीं होता। यथा, स्रग्विणोऽपत्यं स्राग्विणः, तपस्विनोऽपत्यं तापस्विनः, चक्रिणः अपत्यं चाक्रिणः।

१२१। तस्य भावस्त्वतलौ।

'तस्य भावः,' इस अर्थ में प्रातिपदिकोंके उत्तर त्व और तल् होता है। ल इत् होता है और त रह जाता है। त्व प्रत्ययान्त शब्द क्लीवलिङ्ग, और तल् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यथा, प्रभोर्भावः प्रभुत्वम्, प्रभुता; भीरोर्भावः भीरुत्वम्, भीरुता; मनुष्यस्य भावः मनुष्यत्वम्, मनुष्यता; अमरस्य भावः अमरत्वम्, अमरता; पशोर्भावः पशुत्वम्, पशुताः शूरस्य भावः शूरत्वम्, शूरता; कातरस्य भावः कातरत्वम्, कातरता; चपलस्य भावः चापलत्वम्, चपलता; नास्तिकस्य भावः नास्तिकत्वम्, नास्तिकता; अलसस्य भावः अलसत्वम्, अलसता; अन्धस्य भावः अन्धत्वम्, अन्धता; मूर्खस्य भावः मूर्खत्वम्, मूर्खता; मूकस्य भावः मूकत्वम्, मूकता; राज्ञो भावः राजत्वम्, राजता, यूनो भावः युवत्वम्, युवता; न्यूनस्य भाव. न्यूनत्वम्, न्यूनता।

१२२। वा नीलादेरिमनिः।

'तस्य भावः' इस अर्थ में नील आदि प्रातिपदिकों के उत्तर विकल्प से इमनि होता है। इ इत् होता है और इमन् रह जाता है। एक पक्ष में त्व और तल भी होता है। इमन् प्रत्ययान्त शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं। यथा, नीलस्य भावः नीलिमा, नीलत्वम्, नीलता; पीतस्यभावः पीतिमा, पीतत्वम्, पीतता; रक्तस्य भावः रक्तिमा, रक्तत्वम्, रक्तता; शुक्लस्य भावः शुक्लिमा, शुक्लत्वम्, शुक्लता, वक्रस्य भावः वक्रिमा, वक्रत्वम्, वक्रता;

शीतस्य भावः शीतिमा, शीतत्वम्, शीतता; उष्णस्य भावः उष्णिमा, उष्णत्वम्, उष्णता, जड़स्य भावः जड़िमा, जड़त्वम्; जड़ता; मधुरस्य भावः मधुरिमा, मधुरत्वम्, मधुरता।

१२३। ओर्लोपोऽन्त्यस्य।

इमनि प्रत्यय होने से शब्द के अन्तिस्थित उकार का लोप होता है (१) यथा, लघोर्भावः लघिमा, लघुत्वम्, लघुता; अणोर्भावः अणिमा, अणुत्वम्, अणुता; तनोर्भावः तनिमा, तनुत्वम्, तनुता; स्वादोर्भावः स्वादिमा, स्वादुत्वम्; स्वादुता; पटोर्भावः पटिमा, पटुत्वम्, पटुता; ऋजोर्भावः ऋजिमा, ऋजुत्वम्, ऋजुता।

१२४। ऋतो रः पृथ्वादेः।

इमनि प्रत्यय होने से पृथु, मृदु, दृढ़, कृश, भृश और परिवृढ़, इन शब्दों के ऋकार के स्थान में र होता है। (१) यथा, पृथोर्भावः प्रथिमा, पृथुत्वम्, पृथुता; मृदोर्भावः म्रदिमा, मृदुत्वम्, मृदुता; दृढ़स्य भावः द्रढ़िमा, दृढ़त्वम्, दृढ़ता; कृशस्य भावः क्रशिमा, कृशत्वम्, कृशता भृशस्य भावः भ्रशिमा, भृशत्वम्, भृशता; परिवृढ़स्य भावः परिव्रढ़िमा, परिवृढ़त्वम्, परिवृढ़ता।

१२५। प्रिय महतोः प्र महौ।

इमनि प्रत्यय के होने से प्रिय के स्थान में प्र और महत् के स्थान में मह होता है। (१) यथा, प्रियस्य भावः प्रेमा, प्रियत्वम्, प्रियता; महतो भावः महिमा, महत्वम्, महत्ता।

---

(१) ईष्ठ और ईयसु के स्थान में भी इस सूत्र का काम होता है।

१२६। गुरु ह्रस्व दीर्घाणां गर ह्रस द्राघाः।

इमनि प्रत्यय होने से गुरु के स्थान में गर, ह्रस्व के स्थान में ह्रस और दीर्घके स्थान में द्राघ होता है (१)। यथा गुरोर्भावः गरिमा, गुरुत्वम्, गुरुता; ह्रस्वस्य भावः ह्रसिमा ह्रस्वत्वम्, ह्रस्वता; दीर्घस्य भावः द्राघिमा, दीर्घत्वम्, दीर्घता।

१२७। भूमा।

बहु शब्द के उत्तर इमनि होने से भूमन् निपातन से सिद्ध होता है। यथा, बहोर्भावः भूमा।

१२८। औपम्य वतिच्।

सादृश्य बोध होने से प्रातिपदिकों के उत्तर वतिच् होता है, इ और च् इत् हो जाता है, वत् रहता है। यथा, चन्द्र इव मुखं चन्द्रवन्मुखम्, हिममिव शीतलम् हिमवत् शीतलम् समुद्र इव गम्भीरः समुद्रवद्गम्भीरः, पर्व्वतः इव उन्नतः पर्व्वतवदुन्नतः, ब्राह्मण इव अधीतें ब्राह्मणवदधीते क्षत्रिय इव युध्यति क्षत्रियवद्युध्यति, पितर मिव पूजयति पितृवत् पूजयत्युपाध्यायम्, पुत्रमिव स्निह्यति पुत्रवत् स्निह्यति शिष्यम्, गृहे इववसति गृहवद्वसति वने, शय्या यामिव शेते शय्यावत् शेते भूतले, देवदत्तस्येव भवनम् देवदत्तवद्भवनं यज्ञदत्तस्य, रामस्येव पितृभक्तिः रामवत् पितृभक्तिर्भरतस्य, राजेव राजवत्, आत्मेव आत्मवत्।

---

(१) ईष्ठ और ईयसु के स्थान में भी इस सूत्र का काम होता है।

१२९ । तेन वित्तश्चञ्चुचणौ ।

तेन वित्तः, इस अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर चुञ्चु और चण् प्रत्यय होते हैं। यथा, अर्थेन वित्तः अर्थचुञ्चुः, अर्थचणः; विद्यया वित्तः विद्याचुञ्चुः, विद्याचणः; ज्ञानेन वित्तः ज्ञानचुञ्चुः ज्ञानचणः; मायया वित्तः मायाचुञ्चुः, मायाचणः; अस्त्रेण वित्तः अस्त्रचुञ्चुः, अस्त्रचणः; कर्म्मणा वित्तः कर्म्मचुञ्चुः, कर्म्मचणः।

१३० । तदस्यास्मिन् वा संजातं। तारकादिभ्य इतः ।

'तत् अस्य संजातम्', 'तत् अस्मिन् संजातम्', इन दोनों अर्थों में प्रातिपदिकोंके उत्तर इत होता है। यथा, तारका अस्मिन् संजाता तारकितं नभः, पल्लवा अस्य संजाताः पल्लवितस्तरुः, फलानि अस्य संजातानि फलितो वृक्षः, पुष्पाण्यस्याः संजातानि पुष्पिता लता, तरंगा अस्याः संजाताः तरङ्गिता नदी, उत्कण्ठा अस्मिन् संजातम् उत्कण्ठितं मनः, अन्धकारमस्मिन् संजातम् अन्धकारितं जगत्, कलङ्कोऽस्य सञ्जातः कलङ्कितश्चन्द्रः, कर्द्दमोऽस्मिन् संजातः कर्द्दमितः पन्थाः, पुलकान्यस्मिन् संजातानि पुलकितं शरीरम्, अङ्कुरमस्य संजातम् अङ्कुरितं धान्यम्, व्याधिरस्य संजातः व्याधितो मनुष्यः, मञ्जरी-मञ्जरितः, कुड्मल-कुड्मलितः, स्तवक-स्तवकितः, किसलय-किसलयितः, मुकुल-मुकुलितः, कुवलय-कुवलयितः, कोरक

कोरकितः, निद्रा-निद्रितः, मुद्रा-मुद्रितः; बुभुक्षा-बुभुक्षितः, पिपासा पिपासितः, सुख-सुखितः, दुःख-दुःखितः व्रण-व्रणितः तिलक-तिलकिताः, गर्व्व-गर्व्वितः, हर्ष-हर्षितः क्षुध्-क्षुधा-क्षुधितः सीमन्त-सीमन्तितः, ज्वर-ज्वरितः, रोग-रोगिताः, रोमाञ्च रोमाञ्चितः, पण्डा-पण्डितः, कज्जल-कज्जलितः, तृष्-तृषा तृषितः, कल्लोल-कल्लोलितः, शैवल-शैवलितः, कन्दल-कन्दलितः, बिम्ब-बिम्बितः प्रतिबिम्ब-प्रतिबिम्बितः, मूर्च्छा मूर्च्छितः, दीक्षा-दीक्षितः।

१३१। प्रमाणे मात्र-दघ्न-द्वयसटः।

परिमाण अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर मात्रट्, दघ्नट् और द्वयसट् प्रत्यय होते हैं ट् इत् हो जाता है और मात्र, दघ्न, और द्वयस् रह जाते हैं। यथा, हस्तः प्रमाणमस्य हस्तमात्रम्, हस्तदघ्नम्, हस्तद्वयसम्; जानुः प्रमाणमस्य जानुमात्रम्, जानुदघ्नम्, जानुद्वयसम्; ऊरुः प्रमाणमस्य ऊरूमात्रम्, ऊरूदघ्नम, ऊरुद्वयसम; वितस्तिः प्रमाणमस्य वितस्तिमात्रं, वितस्तिदघ्नम्, वितस्तिद्वयसम्; तालप्रमाणमस्य तालमात्रम्, तालदघ्नम्; तालद्वयसम्; गजः प्रमाणमस्य गजमात्रम्, गजदघ्नम्, गजद्वयसम्।

१३२। यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप्।

परिमाण अर्थ में यद्, तद्, एतद् इन तीन प्रातिपदिकों के उत्तर वतुप् होता है उ और प इत् होता है और वत् रहता है।

१३३ आ दः।

वतुप् होने से यद्, तद्, और एतद् के द् स्थान में आ होता है। यथा, यत् परिमाणमस्य यावान्, तत् परिमाणमस्य तावान्, एतत् परिमाणस्य एतावान्।

१३४। कियदियतौ। (किमिदम्भ्यां बोधः)

किम् और इदम् शब्दों के उत्तर वतुप् प्रत्यय होने से कियत् और इयत् ये दो शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा किं परिमाणमस्य कियान्, इदं परिमाणमस्य इयान्।

१३५ किमःसंख्यापरिमाणे डति:

संख्या परिमाण बोध होने से किम् शब्द के उत्तर डति होता है। ड् इत हो जाता है और अति रहता है। यथा, का संख्या परिमाणमेषां कति। कति शब्द बहुवचनान्त है।

१३६। अवयवे तयट् संख्यायाः।

अवयव अर्थ में संख्यावाचक प्रातिपदिकों के उत्तर तयट् होता है। ट् इत् होता है और तय रहता है। यथा, चत्वारोऽवयवा अस्य चतुष्टयम्, पञ्च अवयवा अस्य पञ्चतयम्, शतमवयवा अस्य शततयम्, सहस्रमवयवा अस्य सहस्रतयम्।

१३७। डयट् वा द्वितिभ्याम्।

अवयव अर्थ में द्वि, और त्रि इन दो प्रातिपदिकों के उत्तर विकल्प से डयट होता है। ड और ट् इत् होता है,

और अय् रहता है। एक पक्ष में तयट् होता है। यथा, द्वौ अवयवौ अस्य द्वयं द्वितयम्, त्रयोऽवयवा अस्य त्रयं त्रितयम्।

१३८। उभाद् यः। (उभादुदात्तो नित्यम्)

अवयव अर्थ में उभ इस प्रातिपदिक के उत्तर य होता है। यथा, उभौ अवयवौ अस्य उभयम्।

१३९। तदस्मिन्नधिकमिति दशान्ताड्डः।

'तत् अस्मिन् अधिकम्', इस अर्थ में दशन् भागान्तप्रातिपदिकों के उत्तर ड होता है। ड् इत् होता है और अ रहता है। यथा, एकादश अधिका अस्मिन् एकादशं शतम्, द्वादशं शतम, त्रयोदशं शतम्, चतुर्दशं शतम्।

१४०। शदन्त विंशतेश्च।

'तत् अस्मिन् अधिकम्' इस अर्थ में शत् भागान्त और विंशति शब्द के उत्तर ड होता है। यथा, त्रिंशत् अधिका अस्मिन् त्रिंशं शतम्, चत्वारिंशं शतम्, पञ्चाशं शतम्, एकत्रिंशं शतम्, चतुश्चत्वारिंशं शतम्, पञ्चपञ्चाशं शतम्, विंशतिरधिका अस्मिन् विंशं शतम्, एकविंशं शतम्, द्वाविंशं शतम्।

१४१। संख्यायाः पूरणे डट्। (तस्य पूरणे डट्)

पूरण अर्थ में संख्यावाचक प्रातिपदिक के उत्तर डट् होता है। ड् और ट् इत् हो जाते हैं, अ रहता है। यथा,

एकादशानां पूरणः एकादशः, द्वादशः, त्रयोदशः, चतुर्दशः, पञ्चदशः, षोड़शः, सप्तदशः, अष्टादशः।

१४२। नान्तादसंख्यादेर्मट्।

पूरण अर्थ में नकारान्त संख्यावाचक प्रातिपदिकों के उत्तर मट् होता है। और ट् इत् होता है म रहता है। यथा, पञ्चनां पूरणः पञ्चमः सप्तानां पूरणः सप्तमः अष्टानां पूरणः अष्टमः, नवानां पूरणः नवमः, दशानां पूरणः दशमः। अन्य संख्यावाचक शब्द पुर्व में रहने से नहीं होता। यथा, एकादशानां पूरणः एकादशः, द्वादशः, त्रयोदशः।

१४३। थुट् चतुर्-षष्-कतिभ्यः।

पूरण अर्थ में चतुर्, षष्, कति इन तीन प्रतिपादिकों के उत्तर थुट् होता है। उ ट् इत् होजाते हैं और थ रहता है। यथा, चतुर्णां पूरणः चतुर्थः, षरणां पूरणः षष्ठः, कतीनां पूरणः कतिथः (१)।

१४४। द्वेस्तीयः।

पूरण अर्थ में द्वि शब्द के उत्तर तीय होता है। यथा, द्वयोः पूरणः द्वितीयः।

१४५। तृतीय तुर्य्य तुरीयाः।

पूरण अर्थ में तृतीय, तुर्य्य तुरीय, निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, त्रयाणां पूरणः तृतीयाः, चतुर्णां पूरणः तुर्य्यः, तुरीयः।

---

(१) कतिपय शब्द के उत्तर भी होता है। यथा, कतिपयानां पूरणः कतिपयथः।

१४६। विंशत्यादेस्तमट् वा।

पूरण अर्थ में विंशति आदि संख्यावाचक प्रातिपदिकों के उत्तर विकल्प से तमट् प्रत्यय होता है। ट् इत् होता है और तम् रह जाता है। पक्षे डट्। यथा, विंशतेः पूरणः विंशतितमः, विंशः; एकविंशतितमः, एकविंशः; द्वाविंशतितमः, द्वाविंशः; त्रयोविंशतितमः, त्रयोविंशः; त्रिंशत्तमः, त्रिंशः; चत्वारिंशत्तमः, चत्वारिंशः; पञ्चाशत्तमः, पञ्चाशः।

१४७। नित्यं शतादेः।

शत आदि प्रातिपदिकों के उत्तर सदा तमट् होता है। यथा, शतस्य पूरणः शततमः सहस्रस्य पूरणः सहस्रतमः, अयुतस्य पूरणः अयुततमः (१)।

१४८। षष्ट्यादेश्चासंख्यादेः,

षष्टि आदि संख्यावाचक प्रातिपदिकों के उत्तर सर्व्वदा तमट् होता है। यथा, षष्टेः पूरण षष्टितमः, सप्ततितमः अशीतितमः, नवतितमः। जब अन्य संख्यावाचक शब्द पूर्व्व में रहते हैं तब १४६ सूत्र के अनुसार कार्य्य होगा। यथा, एकषष्टेः पूरणः एकषष्टितमः, एकषष्टः; द्विषष्टितमः, द्विषष्टः।

१४९। बहुगणपूगसंघेभ्यस्तिथुक्।

पूरण अर्थ में बहु, गण, पूग और संघ इन कई एक प्राति-

(२३) मास, अर्द्धमास और संवत्सर इन तीनों के उत्तर भी होता है; यथा, मासस्य पूरणः मासतमः, अर्द्धमासस्य पूरणः अर्द्धमासतमः, संवत्सरस्य पूरणः संवत्सरतमः।

पदिकों के उत्तर तिथुक् होता है, उ क् इत् होते हैं और तिथ रह जाता है। यथा, बहूनां पूरणः बहुतिथः, गणानां पूरणः गणतिथः, पूगानां पूरणः पूगतिथः, सघानां पूरणः संघतिथः।

१५०। वत्वन्तादिथुक्।

पूरण अर्थ में वतु प्रत्ययान्त प्रातिपदिकों के उत्तर इथुक होता है, उ क् इत् होते हैं और इथ रहता है। यथा, यावतां पूरणः यावतिथः, तावतिथः, एतावतिथः, कियतिथः, इयतिथः

१५१। * तदस्यास्मिन् वास्ति मतुप्।

'तत् अस्य अस्ति,' 'तत् अस्मिन् अस्ति,' इन दोनों अर्थों में प्रातिपदिकों के उत्तर मतुप् होता है, उ प् इत् होते हैं और मत् रहता है। यथा, मतिरस्यास्ति मतिमान्, बुद्धिरस्यास्ति [बुद्धिमान्, धीरस्यास्ति धीमान्, श्रीरस्यास्ति श्रीमान्, अंशवोऽस्य सन्ति अंशुमान्, पिता अस्यास्ति पितृमान्, धनुरस्यास्ति धनुष्मान्, वपुरस्यास्ति वपुष्मान्, अग्निरस्मिन्नस्ति अग्निमान्, वायुरस्मिन्नस्ति वायुमान्, नद्योऽस्मिन् सन्ति नदीमान् देशः, गावोऽस्यां सन्ति गोमती-शाला।

१५२। † अवर्णान्तान्मो वः।

अवर्णान्त प्रातिपदिकों के उत्तर विहित मतुप् के म के स्थान में व होता है। यथा, ज्ञानमस्यास्ति ज्ञानवान् धनम-

---

* तदस्यास्तस्मिन्निति मतुप।

† मादुपधायाश्च मतोर्वो यतादिभ्यः।

स्यास्ति धनवान्, वलम् अस्यास्ति बलवान् विद्या अस्यास्ति विद्यावान्, दया अस्यास्ति दयावान्, क्षमा अस्यास्ति क्षमावान्।

१५३ । झङञणनस्पर्शान्तात ।

जिन प्रातिपदिकों के अन्त में ङ, ञ, ण, न भिन्न स्पर्श वर्ण हो तो उनके उत्तर विहित मतुप् के म के स्थान में व होता है । यथा, तड़ित् अस्मिन्नस्ति तड़ित्वान्, विद्युत अस्मिन्नस्ति विद्युत्वान्।

१५४ । अवर्णोपधात ।

जिन प्रातिपदकों के उपधा के स्थान में अ हो तो उन के उत्तर विहित मतुप् के म के स्थान में व होता है। यथा, आत्मा अस्यास्ति आत्मवान्, भा सोऽस्य सन्ति भास्वान्।

१५५ । मकारोपधाच्च ।

जिन प्रातिपदकों के उपधा के स्थान में म हो तो उन के उत्तर विहित मतुप् के म के स्थान में व होता है। यथा, लक्ष्मीरस्यास्ति लक्ष्मीवान्, शमीअस्मिन्नस्ति शमीवान्।

१५६ । न यावादेः ।

यव आदि प्रातिपदिकों के उत्तर विहित मतुप् के म के स्थान में व होता है। यथा, यवमान, कुञ्चामान्, वसामान्, द्राक्षामान्, गरुत्मान्, हरित्मान्, ककुद्मान्, ऊर्म्मिमान्, भूमिमान, कृमिमान्।

१५७ । उदन्वदादयः संज्ञायाम ।

मतुप् प्रत्यय होने पर संज्ञा बोध होने से उदन्वत् आदि

शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, उदकमस्मिन्नस्ति उदन्वान् समुद्रः, अन्यत्र उदकवान्, राजा अस्मिन्नस्ति राजन्वान् शोभनराजयुक्तो देशः*, अन्यत्र राजवान्, चर्म्म अस्या अस्ति चर्म्मण्वती नाम नदी, अन्यत्र चर्म्मवती, अस्थि अस्मिन्नस्ति अष्ठीवान् जानूरुसन्धिः अन्यत्र अस्थिमान्; चक्रमस्यास्ति चक्रीवान् नाम राजा, अन्यत्र चक्रवान्; कक्ष्या अस्यास्ति कक्षीवान् नाम ऋषि, अन्यत्र कक्ष्यावान्; लवणमस्मिन्नस्ति रुमन्वान् नाम पर्व्वतः, अन्यत्र लवणवान्।

१५८। कुमुदनडवेतसमहिषेभ्यो ड्वतुप्।

कुमुद्, नड़, वेतस, और महिष् इन चार प्रातिपदिकों के उत्तर ड्वतुप् होता है। ड् उ प इत् होता है और वत् रहता है यथा, कुमुदान्यस्मिन् सन्ति कुमुद्वान् नडान्यस्मिन् सन्ति नड्वान्, वेतसान्यस्मिन् सन्ति वेतस्वान्, महिषा अस्मिन् सन्ति महिष्वान् नाम देशः।

१५९। अस्मायामेधास्रजो विनिर्वा।

अस् भगान्त, माया, मेधा, और स्रज् इन सब प्रातिपदिकों के उत्तर विकल्प से विनि होता है इ इत् होता है विन् रहता है, एक पक्ष में मतुप् होता है। यथा, यशोऽस्यास्ति यशस्वी, यशस्वान तेजोऽस्यास्ति तेजस्वी तेजस्वान्; पयोऽस्या अस्तिपयस्विनी, धेनुः; माया आस्यास्ति मायावी, मायावान्,

---

* राजन्वान् सौराज्ये।

मेधाऽस्यास्ति मेधावी, मेधावान्, स्रक् अस्यास्ति स्रग्वी, स्रग्वान्।

१६० । नित्यं तपसः ।

तपस् शब्द के उत्तर सर्व्वदा विनि होता है। यथा, तपोऽस्यास्ति तपस्वी, तपस्विनी ।

१६१ । इन् वा नैकस्वरादवर्णात् ॥

एकाधिकस्वर-विशिष्ट अवर्णान्त प्रातिपदिकों के उत्तर विकल्प से इन होता है। एक पक्ष में यथासम्भव मतुप् और विनि प्रत्यय होते हैं। यथा, ज्ञानमस्यास्ति ज्ञानी ज्ञानवान्। बलमस्यास्ति बली, बलवान्, धनमस्यास्ति धनी, धनवान्; शिखा अस्यास्ति शिखी, शिखावान्; चूड़ा अस्यास्ति चूड़ी, चूड़ावान्; माया अस्यास्ति मायी, मायावी; साहसम् अस्यास्ति साहसी, साहसवान्; विवेकोऽस्यास्ति विवेकी, विवेकवान्; उत्साहः अस्यास्ति उत्साही, उत्साहवान्।

१६२ । नित्यं सुखादेः ।

सुख आदि प्रातिपदिकों के उत्तर सर्व्वदा इन् होता है। यथा, सुखम् अस्यास्ति सुखी, दुःखमस्यास्ति दुःखी, प्रणयोऽस्यास्ति प्रणयी, कृच्छ्रमस्यास्ति कृच्छ्री, सहस्रमस्यास्ति सहस्री।

१६३ । हस्तकराभ्यां जातौ ।

जाति बोध होने से, हस्त और कर इन दोनों प्रातिपदिका के उत्तर सर्व्वदा इन् होता है। यथा, हस्तोऽस्यास्ति हस्ती

गजः, करोऽस्यास्ति करी गजः। अन्यत्र, हस्तोऽस्यास्ति हस्त-वान् पुरुषः।

१६४। वर्णाद्ब्रह्मचारिणि।

ब्रह्मचारी बोध होने से वर्ण शब्द के उत्तर सर्व्वदा इन् होता है। यथा, वर्णः अस्यास्ति वर्णी ब्रह्मचारी; अन्यत्र वर्णवान्।

१६५। पुष्करादिभ्यो देशे।

स्थान बोध होने से पुष्कर आदि प्रातिपदिकों के उत्तर सर्व्वदा इन् होता है। यथा, पुष्कराण्यस्यां सन्ति पुष्करिणी दीर्घिका, पद्मान्यस्यां सन्ति पद्मिनी, उत्पलिनी, पङ्कजिनी, सरोरुहिणी अरविन्दिनी, अम्भोजिनी, अब्जिनी, कमलिनी, तमालिनी, नलिनी, तरङ्गिणी, कल्लोलिनी, तटिनी प्रवाहिणी।

१६६। अर्थाद याचके।

याचक बोध होने से 'अर्थ' इस प्रातिपदिक के उत्तर सर्व्वदा इन् होता है। यथा, अर्थोऽस्यास्ति अर्थी-याचकः अन्यत्र अर्थवान्।

१६७। अर्थान्तेभ्यश्च।

अर्थान्त प्रातिपदिकोंके उत्तर सर्व्वदा इन् होता है। यथा विद्यारूपोऽर्थः प्रयोजनमस्यास्ति विद्यार्थी, धनार्थी, धन्यार्थी हिरण्यार्थी, गुरुदक्षिणार्थी।

१६८। मांसादेर्लो विभाषा।

मांस आदि प्रातिपदिकों के उत्तर विकल्प से ल होता है।

यथा, मांसमस्यास्ति मांसलः, श्रीरस्यास्ति श्रीलः, पद्म अस्यास्ति पद्मलः, स्नेहोऽस्यास्ति स्नेहलः, शीतो गुणोऽस्यास्ति शीतलः, श्यामो गुणोस्यास्ति श्यामलः, पिङ्गो गुणोऽस्यास्ति पिङ्गलः, पित्तलः, पुष्कलः पृथुलः मृदुलः, मञ्जुलः, मण्डलः, चटुलः, कपिलः, श्रन्थिलः, कुशलः, पांशुलः, श्लेष्मलः पेशलः, कुण्डलः, अंसलः, वत्सः, । पक्षे मतुप् ।

१६९ । फेनादिलश्च ।

फेन इस प्रातिपदिक के उत्तर विकल्प से ल और इल प्रत्यय होते हैं । यथा, फेनोऽस्मिन्नस्ति फेनलः, फेनिलः ; पक्षे फेनवान् ।

१७० लोमादेः शः ।

लोमन् आदि प्रातिपदिकों के उत्तर श होता है । यथा, लोमान्यस्य सन्ति लोमशः, रोमशः, गिरिशः, कर्कशः, कपिशः ।

१७१ । पिच्छा पङ्काभ्यामिलः ।

पिच्छा, और पङ्क इन दोनों प्रातिपदिकों के उत्तर इल होता है । यथा, पिच्छा अस्यास्ति पिच्छिलः, पङ्किलः ।

१७२ । दन्तादुरः ।

दन्त इस प्रातिपदिक के उत्तर उर् होता है । यथा, उन्नता दन्ताः सन्त्यस्य दन्तुरः ।

१७३ ऊषशुषिमुष्कमधुभ्यो रः ।

ऊषः, शुषि, मुष्क और मधु इन प्रातिपदिकों के उत्तर र होता है । यथा, ऊषरः, शुषिरः, मुष्करः, मधुरः ।

१७४ । मुखादेश्च ।

मुख आदि प्रतिपदिकों के उत्तर र होता है। मुखमस्यास्ति मुखरः, कुञ्जरः, नगरम् , पाण्डुरः ।

१७५ । नड़शादाभ्यां ड्वलप् ।

नड़ और शाद, इन दोनों प्रातिपदिकों के उत्तर ड्वलप् होता है। ड् और प् इत् होते हैं, वल रहता है। यथा, नड़ा अस्मिन् सन्ति नड्वलः, शादा अस्मिन् सन्ति शाद्वलः ।

१७६ । कृष्यादेर्बलः ।

कृषि आदि प्रातिपदिकों के उत्तर वल होता है।

१७७ । दीर्घोऽन्त्यः ।

वल प्रत्यय होने पर अन्त्य स्वर दीर्घ होता है। यथा, कृषिरस्यास्ति कृषीवलः, परिषद्वलः, पर्षद्वलः, रजस्वला, ऊर्ज्जस्वलः, दन्तावलो-हस्ती, शिखावली-मयूरः ।

१७८ । केशादेर्वः संज्ञायाम् ।

संज्ञा बोध होने से केश आदि प्रातिपदिकों के उत्तर व होता है। यथा, केशः सन्त्यस्य केशवोविष्णुः मणिरस्यास्ति मणिव.-नागविशेषः, अजगः अस्यास्ति अजगवं पिनाकः, गाण्डिरस्यास्ति गाण्डिवम्-अर्ज्जुनस्य धनुः। इकार दीर्घ भी होता है, गाण्डीवम् ।

१७९ । स्वादीमिन्नैश्वर्य्ये ।

ऐश्वर्य्य बोध होने से स्व प्रातिपदिक के उत्तर आमिन् । यथा, स्वम् ऐश्वर्य्यम् अस्यास्ति स्वामी ।

१८० । शीतोष्णाभ्यामालुरसहने ।

असहन अर्थ में शीत और उष्ण, इन दोनों प्रातिपदिकों के उत्तर आलु होता है। यथा, शीत न सहते शीतालुः, उष्णं न सहते उष्णालुः ।

१८१ । वातातिसाराभ्यां रोगे किन् ।

रोग बोध होने से वात, अतीसार इन दोनों प्रातिपदिकों के उत्तर किन् होता है। यथा, वातोऽस्यास्ति वात की, अतीसारोऽस्यास्ति अतीसारकी ।

१८२ । बल्यादेर्भः ।

वलि आदि प्रातिपदिकों के उत्तर भ होता है। यथा, बलयोऽस्मिन् सन्ति वलिभम् मध्यम् ।

१८३ । अर्श आदेरत ।

अर्शस् आदि प्रातिपदिकों के उत्तर अत् होता है। त् इत् होता है और अ रहता है। यथा, अर्शांसि अस्य सन्ति अर्शसः उरोऽस्यास्ति उरसः, पलितम् अस्यास्ति पलितः, जटा अस्य सन्ति जटः, अम्लो गुणोऽस्यास्ति अम्लः, अघमस्यास्ति अघः लवणोरसोऽस्यास्ति लवणः ।

१८४ । अहम् शुभमभ्यां युः ।

अहम् और शुभम् इन दोनों प्रातिपदिकों उत्तर यु होता है। यथा, अहम् अस्यास्ति अहंयुः अहंकारवान्, शुभम् अस्यास्ति शुभंयुः शुभान्वितः ।

१८५। ज्योत्स्नादयः।

ज्योत्स्ना आदि निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, ज्योतिरस्या अस्ति ज्योत्स्ना; तमोऽस्यस्ति तमिस्रा; शृङ्ग-मस्यास्ति शृङ्गिणः, मलस्याअस्ति मलिना, मलीमसः ; अर्णांसि अस्मिन् सन्ति अर्णवः समुद्रः।

१८६। वाग्मिवाचालवाचाटाः।

वाग्मिन्, वाचाल और वाचाट निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, वाचोऽस्य सन्ति वाग्मी; यः कुत्सितं बहु भाषते, स वाचालः, वाचाटः।

१८७। मूले जाहः कर्णादेः।

मूल अर्थ में कर्ण आदि प्रातिपदिकों के उत्तर जाह होता है। यथा, कर्णस्य मूलं कर्णजाहम्, अक्ष्णो मूलम् अक्षिजाहम्, भ्रूजाहम्, नखजाहम्, केशजाहम्, पादजाहम्, शृङ्गम्जाहम्, दन्तजाहम्।

१८८। पक्षात्तिः।

मूल अर्थ में 'पक्ष' इस प्रातिपदिक के उत्तर ति होता है। यथा, पक्षस्य मूलं पक्षतिः।

१८९। मातृ-पितृभ्यां डुल व्यौ भ्रातरि।

भ्रातृ अर्थ में मातृ इस प्रातिपदिक के उत्तर डुल, और पितृ इस प्रातिपदिक के उत्तर व्य होता है ड इत् होता है और उल् रहता है। यथा, मातुर्भ्राता मातुलः, पितुर्भ्राता पितृव्यः।

१६० । डामहःपित्रोः ।*

पितृ और मातृ अर्थ में मातृ, पितृ इन दोनों प्रातिपदिकों के उत्तर डामह होता है। ड् इत् होता है और आमह रहता है। यथा, मातुः पिता मातामह, पितुः पिता पितामहः, मातुर्माता मातामही, पितुर्माता पितामही।

१६१ । ठः कर्म्मणः कुशले† ।

कुशल अर्थ में कर्म्मन् इस प्रातिपदिक के उत्तर ठ होता है। यथा, कर्म्मणि कुशलः कर्म्मठः।

१६२ । पूर्व्वादिनिस्तृतीयार्थे ।

तृतीया के अर्थ में पूर्व्व इस प्रातिपदिक के उत्तर इनि होता है, इ इत् होता है और इन् रहता है। यथा, पूर्व्वनेन कृतं भुक्तं पीतं गतं वा पूर्व्वीकृतं पूर्व्वमनेन कृतपूर्व्वी कटम्, भुक्तं पूर्व्वमनेन भुक्तपूर्व्वी ओदनम्, पीतं पूर्व्वमनेन पीतपूर्व्वी पयः, गतं पूर्व्वमनेन गत पूर्व्वी गृहम्।

१६३ । इष्टादिभ्यश्च ।

तृतीया के अर्थ में इष्ट आदि प्रातिपदिकों के उत्तर इनि होता है। यथा, इष्टमनेन इष्टी यज्ञे, अधीतमनेन अधीती शास्त्र, श्रुतमनेन श्रुति वेदे, गृहीतमनेन गृहीती उपदेशे, आम्नातमनेन आम्नाती इतिहासे, आसेवितमनेन आसेविती

---

* मातृ—पितृभ्यामिपतरि डामहच्।

† कर्मणि घटोऽठच्।

गुरौ, निराकृतमनेन निराकृती शत्रौ, उपकृतमनेन उपकृती मित्रे, अह्कीर्णमनेन अवकीर्णी व्रते।

१९४। अतिशायने तमबिष्ठनौ।

बहुतों में एक का उत्कर्ष बोध होने से प्रातिपदिकों के उत्तर तमप् और इष्ठन् प्रत्यय होते हैं। तमप् काप् इत् होता है और तम रहता है। इष्ठन् का न् इत् होता है और इष्ठ रहता है। यथा, अयमेषामतिशयेन पटुः पटुतमः, पटिष्ठः। अयमेषाम् अतिषयेन लघुः लघुतमः, लघिष्ठः। अयमेषामतिशयेन गुरुः गुरुतमः, गरिष्ठः। प्रियतमः, प्रेष्ठः; दीर्घतमः, द्राघिष्ठः; दृढ़-तमः, द्रढ़िष्ठः; मृदुतमः म्रदिष्ठः, कृशतमः क्रशिष्ठः।

१९५। द्वयोस्तरबीयसुनौ।

दो में एक का उत्कर्ष बोध होने से, प्रातिपदिक के उत्तर तरप् और ईयसुन् प्रत्यय होते हैं, तरप् का प् इत् होता है और तर रहता है। ईयसुन् का उ न् इत् होते हैं और ईयस् रहता है। यथा, अयमनयोरतिशयेन पटुः पटुतरः, पटीयान्; अयमनयोरतिशयेन लघुःलघुतरः, लघीयान्; गुरुतरः, गरीयान् प्रियतरः प्रेयान्। दीर्घतरः, द्राघीयान्; दृढ़तरः, द्रढ़ीयान्। मृदुतरः म्रदीयान्; कृशतरः, क्रशीयान्।

१९६। श्रज्यौ प्रशस्यस्य।

इष्ठन् और ईयसुन् प्रत्यय होने से प्रशस्य शब्द के स्थान में श्र और ज्य होता है। यथा, अयमेषामतिशयेन प्रशस्यः श्रेष्ठः, ज्येष्ठः; अयमनयोः अतिशयेन प्रशस्यः श्रेयान्।

१९७। आ ज्यादीरीयसुनः।

ज्य आदेश के परवर्त्ती ईयसुन् के ईकार के स्थान में आ होता है। यथा, ज्यायान्।

१९८। वर्ष ज्यौ वृद्धस्य।

इष्ठन् और ईयसुन् परे रहने से वृद्ध शब्द के स्थान में वर्ष और ज्य होता है। यथा, अनमेषामनयोर्वा अतिशयेन वृद्धः, वर्षिष्ठः, वर्षीयान्। ज्येष्ठः ज्यायान्।

१९९। अन्तिकवाढयोर्नेदसाधौ।

अन्तिक शब्द के स्थान में नेद और वाढ़ शब्द के स्थान में साध होता है। यथा, नेदिष्ठः, नेदीयान्; साधिष्ठः, साधीयान्।

२००। अल्पस्य कन् विभाषा।

अल्प शब्द के स्थान में विकल्प से कन् होता है। यथा, कनिष्ठा, कनीयान्; अल्पिष्ठः, अल्पीयान्।

२०१। यूनः कन् यवौ।

युवन् शब्द के स्थान में कन् और यव् होता है। यथा, कनिष्ठा, कनीयान्; यविष्ठः, यवीयान्।

२०२। स्थूल दूरयोः स्थवदवौ।

स्थूल के स्थान में स्थव और दूर के स्थान में दव होता है। यथा, स्थविष्ठाः, स्थवीयान्; दविष्ठः, दवीयान।

१०३। उरुक्षुद्रयोर्वरक्षोदौ।

उरु के स्थान में वर और क्षुद्र के स्थान में क्षोद होता है। यथा, वरिष्ठः, वरीयान्, क्षोदिष्ठः, क्षोदीयान्।

१०४। क्षिप्रबहुलयोः क्षेपवंहौ।

क्षिप्र के स्थान में क्षेप और बहुल के स्थान में वह होता है। यथा, क्षेपिष्ठः, क्षेपीयान्; वंहिष्ठः, वंहीयान्।

१०५। स्थिरस्य स्थः।

स्थिर शब्द के स्थान में स्थ होता है। यथा, स्थेष्ठः, स्थेयान्।

२०६। विन्मतुपोर्लुक्।

इष्ठन् और ईयसुन् परे रहने से विन् और मतुप् प्रत्यय का लोप होता है। यथा, अयमेषामतिशयेन मायावी मायिष्ठः, मायीयान्, अयमेषामतिशयेन बलवान् बलिष्ठः, बलीयान्।

२०७। भूतोभूयिष्ठौ।

बहु शब्द के उत्तर ईयसुन् प्रत्यय होने पर भूयस् और इष्ठन् होने से भूयिष्ठ निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, अयमनयोरतिशयेन बहुः भूयान्, अयमेषामतिशयेन बहुः भूयिष्ठः,

२०८। किंयत्तदां द्वयोरेकस्य निर्द्धारणःडतर।

दो में एक का निर्द्धारण बोध होने से, किम्, यद् और तद् इन तीनों प्रातिपदिकों के उत्तर डतर होता है। ड् इत् होता है, और अतर रह जाता है। यथा, अनयोः कतरो वैष्णवः अनयोर्यतरो ब्राह्मण. ततर आगच्छतु।

२०९। बहूनां डतमः।

अनेक में एक का निर्द्धारण बोध होने से डतम होता है। ड् इत् होता है और अतम रह जाता है। यथा, एषां कतमः शैवः, एषां यतमः द्वयियः ततमः प्रयातु।

२१०। एकान्याभ्याञ्च।

एक और अन्य इन दोनों प्रातिपदिकों के उत्तर डतर और डतम दोनों होते हैं। यथा, भवतोरेकतरः पठतु, भवतामेकतमः शृणोतु; तयोरन्यतरो यातः, तेषामन्यतमो मृतः।

२११। किमेदव्ययेभ्योऽद्रव्ये घतराम् घतमामेकोत्कर्षे।

दो और अनेक में एक का उत्कर्ष बोध होने से किम्, एकारान्त और अव्यय शब्द के उत्तर घतराम् और घतमाम् प्रत्यय होते हैं। घ इत् होता है तराम् और तमाम् रह जाते हैं। यथा, किन्तराम्, किन्तमाम्, प्राह्णेतराम् प्राह्णेतमाम्, उच्चैस्तराम्, उच्चैस्तमाम्। द्रव्य बोध होने से नहीं होता। यथा उच्चैस्तरस्तरुः।

२१२। प्रशंसायां रूपः।

प्रशंसा बोध होने से प्रातिपदिकों के उत्तर रूप प्रत्यय होता है। यथा, प्रशस्तो वैयाकरणः, वैयाकरणरूपः, नैयायिकरूपः, आलङ्कारिकरूपः, मीमांसकरूपः।

२१३। ईषदूने कल्पदेश्यदेशीयाः।

ईषत् और इन दोनों न्यून अर्थों का बोध होने से प्राति-

पदिकों के उत्तर कल्प, देश्य और देशीय प्रत्यय होते हैं। यथा ईषदूनो विद्वान् विद्वत्कल्पः, विद्वद्देश्यः विद्वद्देशीयः।

२१४। तिङन्तात्।

पूर्व्व सूत्र में विहित सब प्रत्यय तिङन्त पद के उत्तर होते हैं। यथा, पठतितराम्, पठतितमाम्, पठतिरूपम्, पठतिकल्पम् पठतिदेश्यम्, पठतिदेशीयम्।

२१५। वा सुपो बहुः पुरस्तात्।

'ईषदून' अर्थ में सुबन्त पदके उत्तर विकल्प से बहु प्रत्यय होता है। यह प्रत्यय सुबन्त पद के पूर्व्व में जाता है। यथा, ईषदूनः पटुः बहुपटुः, पटुकल्पः, पटुदेश्यः, पटुदेशीयः।

२१६। तेन तुल्यः स्थान स्थानीयौ।

'तेन तुल्यः' इस अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर स्थान और स्थानीय प्रत्यय होते हैं। यथा, पित्रा तुल्यः पितृस्थानः, पितृस्थानीयः भ्रातृस्थानः, भ्रातृस्थानीयः मातृस्थाना मातृस्थाननीयः, मातृष्वसा। सादृश्यबोध नहीं होने से नहीं होता यथा गास्थानम्।

२१७। जातौ जातीयः।

जाति अर्थ में प्रादिपदिकों के उत्तर जातीय प्रत्यय होता है। यथा, ब्राह्मणजातीयः, क्षत्रियजातीयः, पुरुषजातीयः स्त्रीजातीयः, वणिग्जातीयः, रजकजातीयः, तार्किकजातीयः, वैयाकरणजातीयः।

२१८। सङ्ख्यायाः क्रियाभ्यावृत्तिगणने कृत्वसुच्।

क्रिया की अभ्यावृत्तिगणन अर्थात् क्रिया के वार हुई इसकी गिनती बोध होने से संख्यावाचक प्रातिपदिकों के उत्तर कृत्वसुच् होता है, उ च् इत् होते हैं और कृत्वस् रहता है। यथा, पञ्च वारान् भुङ्क्ते, पञ्चकृत्वो भुङ्क्ते, सप्त वारान् स्वपिति स्वप्तकृत्वः स्वपिति, शतं वारान् पठति शतकृत्वः पठति। संख्या कारक शब्द न होने से नहीं होता, जैसे भूरि वारान् भुङ्क्ते।

२१९। द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच्।

क्रिया की अभ्यावृत्तिगणन बोध होने से, द्वि; त्रि और चतुर इन तीन प्रातिपदिकों के उत्तर सुच् होता है, उ च् इत् होते हैं, और स् रहता है। यथा द्वौ वारौ भुङ्क्ते द्विर्भुङ्क्ते, त्रीन् वारान् भुङ्क्ते त्रिर्भुङ्क्ते।

२२०। लोपोऽत्यस्य चतुरः।

सुच् होने से चतुर इस प्रातिपदिक के अन्त्य वर्ण का लोप होता है, यथा, चतुरो वारान् भुङ्क्ते चतुर्भुङ्क्ते।

२२१। एकस्य सकृच्च।

'एक' इस प्रातिपदिक के उत्तर सुच् होता है और उस के साथ एक स्थान में सकृत् होता है। यथा, एकं वारं भुङ्क्ते सकृद्भुङ्क्ते, सकृदधीते। यहां अभ्यावृत्ति सम्भव नहीं है, केवल गिनती जानी जाती है।

२२२। विभाषा बहोरविप्रकष्टकाले धाच्।

क्रिया की अभ्यावृत्तिगणन और क्रिया के अनुष्ठान काल की परस्पर निकटता बोध होने से बहु इस प्रातिपदिक के उत्तर विकल्प से धाच् प्रत्यय होता है च् इत् होता है और धा रहता है, एक पक्ष में कृत्वसुच् होता है। यथा, बहुधा दिवसस्य भुङ्क्ते, बहुकृत्वो दिवसस्य भुङ्क्ते। नैकट्य नहीं बोध होने से नहीं होता। यथा बहुकृत्वो मासस्यागच्छति।

२२३। बह्वल्पार्थाद्वा चशस्।

बह्वर्थक और अल्पार्थक प्रातिपदिकों के उत्तर विकल्प से चशस् होता है, च इत् होता है और शस् रहता है। यथा, बहु ददाति बहुशो ददाति, भूरि ददाति, भूरिशो ददाति अल्पं ददाति अल्पशो ददाति, स्तोकं ददाति, स्तोकशो ददाति। कारक ही के उत्तर होता है, अन्यत्र नहीं। यथा, बहूनां स्वामी, यहाँ बहुशः स्वामी नहीं होगा।

२२४। संख्यैकदेशवचनाच्च वीप्सायाम्।

वीप्सा बोध होने से संख्या वाचक और एक देशवाचक प्रातिपदिकों के उत्तर विकल्प से चशस् होता है। यथा, संख्यावाचक—द्वौ द्वौ ददाति द्विशो ददाति; पञ्च पञ्च ददाति पञ्चशो ददाति; एकदेशवाचक— पादं पादं ददाति, पादशो-ददाति अर्द्धमर्द्धं ददाति अर्द्धशो ददाति।

२२५। विकारे मयट्।

विकार अर्थ बोध होने से प्रतिपदिकों के उत्तर मयट्

होता है । ट् इत् होता है और मय् रहताहै । यथा, स्वर्णस्य विकारः स्वर्णमयो घटः, स्वर्णमयी प्रतिमा । मृदोविकारः मृण्मयी प्रतिमा ।

२२६ । हिरण्मयः ।

हिरण्मय निपातन से सिद्ध होता है । यथा, हिरण्यस्य विकारः हिरण्मयः ।

२२७ । अवयवे ।

अवयव बोध होने से प्रातिपदिकों के उत्तर मयट् होता है यथा, दारूण्यस्यावयवाः दारुमयमासनम्, दर्भाण्यस्यावयवाः दर्भमयो ब्राह्मणः, काष्ठान्यस्यावयवाः काष्ठमयो हस्ती, ऊर्णा अस्यावयवाः ऊर्णामयं वासः, अन्नान्यस्यावयवाः अन्नमयो यज्ञः, अपूपा अस्य अवयवाः अपूपमयं श्राद्धम् ।

२२८ । व्याप्तौ ।

व्याप्ति बोध होने से प्रातिपदिक के उत्तर मयट् होता है । यथा, जलेन व्याप्तं जलमयं जगत् प्रलये, रोगेण व्याप्तं रोगमयं शरीरम्, धूमेन व्याप्तं धूममयं गृहम् ।

२२९ । संसर्गे ।

संसर्ग बोध होने से प्रातिपदिकों के उत्त मयट् होता है । यथा, तिलेन संसृष्टं तिलमयं तर्पणम्, घृतेन संसृष्टं घृतमयं व्यञ्जनम्, पापेन संसृष्टं पापमयं शरीरम् ।

२३० । अपृथग्भावे च ।

अपृथग् भाव बोध होने से प्रातिपदिकों के उत्तर मयट्

होता है। यथा, विष्णोरपृथग्भूतं विष्णुमयं जगत्, वाग्भ्यो ऽपृथग्भूतं वाङ्मयं *शास्त्रम्, चितोऽपृथग्भूतः चिन्मयःपुरुषः।

२३१। गोश्च पुरीषे।

पुरीष बोध होने से गो, इस प्रातिपदिकों के उत्तर मयट् होता है। यथा, गोः पुरीषं गोमयम्।

२३२। स्नेहे तैलन्।

स्नेह अर्थ में प्रातिपदिक के उत्तर तैलन् होता है, न् इत् होता है और तैल रह जाता है। यथा, तिलस्य स्नेहः तिल-तैलम् सर्षपस्य स्नेहः सर्षपतैलम् एरण्डस्य स्नेहः एरण्ड-तैलम्।

२३३। संख्याया विधार्थे धाच्।

'विधा' अर्थ में संख्यावाचक प्रातिपदिकों के उत्तर धाच् होता है। च् इत् होता है और धा रहता है। यथा, एका विधा एकधा, द्वे विधे द्विधा, तिस्रो विधाः त्रिधा चतस्रो विधाः चतुर्धा, पञ्च विधाः पञ्चधा, एकधा द्विधा त्रिधा व भुङ्क्ते।

२३४। भावान्तरापादने च।

भावान्तरापादन अर्थात् अन्यथा भावासम्पादन अर्थ में भी धाच् होता है। यथा, पञ्च राशीन् एकधा कुरु, एकं राशिं पञ्चधा कुरु।

---

* नित्यं वृद्धशरादिभ्यः। आम्रमयम्। शरमयम्। एकोचोनित्यम्। त्वङ्मयम्। वाङ्मयम्।

२३५। ऐकध्यादयो वा ।

ऐकध्य आदि शब्द विकल्प करके निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, एका विधा ऐकध्यम्, द्वे विधे द्वैधं द्वेधा, तिस्रो विधाः त्रैधंत्रेधा, षड् विधा षोढा। एक पक्ष में एकधा द्विधा, त्रिधा, चतुर्धा इत्यादि होते हैं।

२३६। पाशः कुत्सिते ।

कुत्सित बोध होने से प्रातिपदिकों के उत्तर पाश प्रत्यय होता है। यथा, कुत्सितो वैयाकरणः वैयाकरणपाशः, मीमांसकपाशः, भिषक्पाशः, वैदिकपाशः, लेखकपाशः, पाचकपाशः

२३७। भूतपूर्व्वे चरट् ।

भूत पूर्व्व अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर चरट् होता है ट् इत् होता है और चर रहता है। यथा, आढ्यो भूतपूर्व्वः आढ्यचरः, दृष्टो भूतपूर्व्वः दृष्टचरः, अर्पितो भूतपूर्व्वः अर्पितचरः, अधीतो भूतपूर्व्वः अधीतचरः।

२३८। सम्बन्धे रूप्यश्च ।

सम्बन्ध बोध होने से भूतपूर्व्व अर्थ में चरट् और रूप्य प्रत्यय होते हैं। यथा, देवदत्तस्य भूतपूर्व्वं देवदत्तरूप्यम् देवदत्तचरं वा भवनम्।

२३९। एकादाकिनिरसहाये ।

सहाय-रहित बोध होने से एक शब्द के उत्तर आकिनि प्रत्यय होता है। इ इत् होता है और आकिन् रहता है। यथा, एक एव एकाकी।

२४० । प्राक् टेरक् स्वार्थे ।

स्वार्थ बोध होने से प्रातिपदिकों के टि के पूर्व के अक् होता है । यथा, कन्या एव कन्यका, तारा एव तारका ।

२४१ । बालादेरिक् ।

स्वार्थ बोध होने से बाला आदि प्रातिपदिक के टि के पूर्व में इक् होता है । यथा, बाला एव बालिका, तरला एव तरलिका, निपुणा एव निपुणिका, चतुरा एव चतुरिका, चपला एव चपलिका, लता एव लतिका, गोधा एव गोधिका ।

२४२ । अज्ञाते कन् ।

अज्ञात अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर स्वार्थ में कन् होता है, न् इत् होता है और क रह जाता है । यथा, कस्यायमश्वः अश्वकः, उष्ट्रकः, महिषकः गर्द्दभकः ।

२४३ । कुत्सिते ।

कुत्सित अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर स्वार्थ में कन् होता है । यथा, कुत्सितोऽश्वः अश्वकः कुत्सितो महिषः महिषकः ।

२४४ । अल्पे ।

अल्प अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर स्वार्थ में कन् होता है । यथा, अल्पं तैलं तैलकम्, क्षीरकम्, सलिलकम् ।

२४५ । ह्रस्वे ।

ह्रस्व अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर स्वार्थ में कन् होता

यथा, ह्रस्वो वृक्षः वृक्षकः, ह्रस्वः पटः पटकः, ह्रस्वः स्तम्भः स्तम्भकः, ह्रस्वो दण्डः दण्डकः।

२४६। अनुकम्पायाम ।

अनुकम्पा अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर स्वार्थ में कन् होता है। यथा, अनुकम्पितः पुत्रः पुत्रकः, वत्सकः, दुर्बलकः।

२४७। संज्ञायाम ।

संज्ञा अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर स्वार्थ में कन् होता है। यथा, करभकः, रोहितकः, शर्विलकः।

२४८। स्त्रियामान्त्यो ह्रस्वः ।

स्त्रीलिङ्ग प्रातिपदिकों के उत्तर कन् होने से अन्त्य स्वर ह्रस्व होता है। यथा, मालवी मालविका, सागरी सागरिका, लवङ्गी लवङ्गिका, माधवी माधविका, चण्डी, चण्डिका, कुशण्डी कुशण्डिका, शेफाली शेफालिका, मृणाली मृणालिका यूथी यूथिका, बदरी बदरिका, दूती दूतिका, काली, कालिका, शारी शारिका, सूची सूचिका।

२४९। ह्रस्वे कुटीशमीशुण्डाभ्यो रः ।

ह्रस्व अर्थ में कुटी, शमी और शुण्डा इन तीनों प्रातिपदिकों के उत्तर र होता है। यथा, ह्रस्वा कुटी कुटीरः, ह्रस्वा शमी शमीरः, ह्रस्वा शुण्डा शुण्डारः।

२५०। अश्वोक्षवत्सर्षभेभ्यस्तरट ।

ह्रस्व अर्थ में अश्व उक्षन् वत्स और ऋषभ इन चार प्रातिपदिकों के उत्तर तरट् होता है, ट् इत् होता है और

तर रहता है । यथा, ह्रस्वोऽश्वः अश्वतरः, उक्षतरः, वत्सतरः, ऋषभतरः ।

२५१ । पञ्चम्यास्तसिल वा ।

पञ्चमी विभक्ति के स्थान में विकल्प से तसिल् होता है, इ ल् इत् होते हैं और तस् रहता है । यथा, गृहात् गृहतः ग्रामात् ग्रामतः नगरात् नगरतः सर्व्वस्मात् सर्व्वतः, विश्वस्मात् विश्वतः, उभयस्मात् उभयतः, मेघतः भवतः भवत्तः, एकस्मात् एकतः, अन्यस्मात् अन्यतः, पूर्व्वस्मात् पूर्व्वतः, परस्मात् परतः, दक्षिणस्मात् दक्षिणतः, उत्तरस्मात् उत्तरतः हस्तात् हस्ततः, वृक्षात् वृक्षतः मेघात् मेघतः, जलात जलतः ।

२५२ । सप्तम्याश्च ।

सप्तमी के स्थान में विकल्प से तसिल् होता है । यथा पूर्व्वस्मिन् पूर्व्वतः, दक्षिणस्मिन् दक्षिणतः, उत्तरस्मिन्, उत्तरतः प्रथमे प्रथमतः, परस्मिन् परतः अग्रे अग्रतः आदौ-आदितः, *मध्ये मध्यतः, अन्ते अन्ततः, पृष्ठे पृष्ठतः, पार्श्वयोः पार्श्वतः, सर्व्वस्मिन् सर्व्वतः ।

२५३ । नित्यं पर्य्यभिभ्याम् ॥

परि और अभि उपसर्ग के उत्तर सदा तसिल् होता है । यथा, परितः, अभितः ।

---

* आद्यादिभ्य, उपसंख्यानम् ।

(१) द्वि अस्मद युष्मद् भिन्न ।

२५४। न हाकरुहोः।

हाक और रुह धातु के प्रयोग में तसिल् नहीं होता। यथा, स्वर्गात् हीयते, पर्व्वतादवरोहति।

२५५। सप्तम्यास्त्रल वा सर्व्वनाम्न।

सर्व्वनाम (१) के सप्तमी के स्थान में विकल्प से त्रल् होता है ल् इत् होता है और त्र रहता है। यथा, सर्व्वस्मिन् सर्व्वत्र, उभयस्मिन् उभयत्र, एकस्मिन् एकत्र, अन्यस्मिन् अन्यत्र, इतरस्मिन् इतरत्र, पूर्व्वस्मिन् पूर्व्वत्र, परस्मिन् परत्र, अपरस्मिन् अपरत्र।

२५६। अ-य-ता एतद्यद्तदाम्।

तसिल् और त्रल् प्रत्यय होने पर एतद् के स्थान में अ यद् के स्थान में य और तद् के स्थान में त होता है। यथा, एतस्मात् अतः एतस्मिन् अत्र, यस्मात् यतः, यस्मिन् यत्र ; तस्मात् ततः तस्मिन् तत्र।

२५७। किमः कुः।

किम् के स्थान में कु होता है। यथा, कस्मात् कुतः, कस्मिन् कुत्र।

२५८। क कुहौ।

क और कुह निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, कस्मिन् क, कुह।

२५९ । इरिदमः ।

इदम् के स्थान में इ होता है । (१) । यथा, अस्मात् इतः ।

२६० । सप्तम्या हः ।

सप्तमी के स्थान में ह होता है । यथा, अस्मिन् इह ।

२६१ । इतरासामपि दृश्यन्ते ।

पञ्चमी और सप्तमी के अतिरिक्त और विभक्तियें के स्थान में भी तसिल् और त्रल् प्रत्यय देखे जाते हैं । यथा, स भवान, ततोभवान, तत्रभवान ; तं भवन्तम्, ततोभवन्तम्, तत्रभवन्तम् तेन भवता ततोभवता, तत्रभवता ; अस्मै भवते, ततोभवते, तत्रभवते ; तस्य भवतः, ततोभवतः, तत्रभवतः ।

२६२ । एकसर्व्वन्यकिंयत्तदा काले दा ।

काल बोध होने से एक और सर्व्व इन दोनों सर्व्वनाम शब्दों की सप्तमी के स्थान में दा होता है । यथा, एकस्मिन् काले एकदा । काल नहीं बोध होने से सर्वत्र देखे ।

२६३ । सो वा सर्व्वस्य ।

दा प्रत्यय होने पर सर्व्व शब्द के स्थान में, विकल्प से स होता है । यथा, सर्व्वस्मिन् काले सदा, सर्व्वदा ।

२६४ । अन्य किं यदां र्हिळ् च ।

अन्य, किम् और यद् इन तीन सर्व्वनाम शब्दों की सप्तमी

(१) दानीम् होने से भी होता है ।

के स्थान में दा और र्हिल् होता है। ल् इत् होता है और र्हि रहता है। यथा अन्यस्मिन् काले अन्यर्हि अन्यदा। काल नहीं बोध होने से—इहदेशे।

२६५। किं यदोः क-यौ।

दा और र्हिल् प्रत्यय होने से किम् के स्थान में क, और यद् के स्थान में य होता है। यथा, कस्मिन् काले कर्हि कदा, यस्मिन् काले यर्हि, यदा।

२६६। तदो दानीं च।

तद् शब्द की सप्तमी के स्थान में दा, र्हिल् और दानीम् प्रत्यय होता है।

२६७। तस्तदः।

दा, र्हिल् और दानीम् प्रत्यय होने से तद् शब्द के स्थान में त होता है। यथा, तस्मिन् काले तदा, तर्हि, तदानीम्।

२६८। इदमो दानीम्।

इदम् शब्द की सप्तमी के स्थान में दानीम् होता है। यथा, अस्मिन् काले इदानीम्।

२६९। अधुनैतर्हो।

अधुना और एतर्हि ये दो पद निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, अस्मिन् काले अधुना, अस्मिन् एतस्मिन् वा काले एतर्हि। काल नहीं बोध होने से—इहदेशे।

२७०। एद्यसु पूर्व्वादेरहनि।

दिन बोध होने से पूर्व्व आदि प्रातिपदिकों के उत्तर एद्युस्

होता है। यथा, पूर्व्वस्मिन्नहनि पूर्व्वेद्युः, अन्यस्मिन्नहनि अन्येद्युः, अपरस्मिन्नहनि अपरेद्युः, इतरेद्युः, अन्यतरेद्युः, अधरेद्युः, उत्तरेद्युः, उभयेद्युः (१)।

२७१। द्यः सद्योऽद्यश्वः परेद्यवयः।

दिन बोध होने से विभक्ति सहित पूर्व्व के स्थान में ह्यस समान के स्थान में सद्यस् इदम् के स्थान में अद्य एवं पर के स्थान में श्वस् और परेद्यवि होता है। यथा, पूर्व्वस्मिन्नहनिह्यः, समानेऽहनि सद्यः, अस्मिन्नहनि अद्य, परस्मिहनि श्वः, परेद्यवि।

२७२। ऐषमः परुत् परारयो वर्षे।

वर्ष बोध होने से विभक्ति सहित इदम् के स्थान में ऐषमस्, पूर्व्व के स्थान में परुत् और पूर्व्वतर के स्थान में परारि होता है। यथा, अस्मिन् वर्षे ऐषमः, पूर्व्वस्मिन् वर्षे परुत्, पूर्व्वतरे वर्षे परारि।

२७३। थाल् प्रकारे तृतीयायाः।

प्रकार अर्थ में तृतीया के स्थान में थाल् होता है ल इत् होता है और था रह जाता है। यथा, सर्व्वं प्रकारैः सर्व्वथा, अन्येन प्रकारेण अन्यथा, इतरेण प्रकारेण इतरथा उभयेन प्रकारेण उभयथा, अपरेण प्रकारेण अपरथा।

---

(१) उभय शब्द के उत्तर द्युस् भी होता है। यथा, उभयस्मिन् अहनि उभयद्युः।

२७४ । य तो यत्तदो ।

थाल् प्रत्यय होने पर यद् शब्द के स्थान में य और तद् शब्द के स्थान में त होता है। यथा, येन प्रकारेण यथा। तेन प्रकारेण तथा ।

२७५ । कथमित्थमौ ।

कथम् और इत्थम् ये दोनों पद निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, केन प्रकारेण कथम्, अनेन एतेन वा प्रकारेण इत्थम् ।

२७६ । परादेरस्तात् सप्तमीपञ्चमी प्रथमानाम् ।

पर आदि प्रातिपदिकों की सप्तमी, पञ्चमी और प्रथमा विभक्तियों के स्थान में अस्तात्, होता है। यथा, परस्मिन् परस्मात् परो वा परस्तात्, पश्चिमे पश्चिमात् पश्चिमो वा पश्चिमस्तात् ।

२७७ । पश्चात् ।

अस्तात् सहित अपर शब्द के स्थान में पश्चात् निपातन से सिद्ध होता है। यथा, अपरस्मिन् अपरस्मात् अपरो वा पश्चात् ।

२७८ । उपर्य्युपरिष्टात् ।

अस्तात् सहित ऊर्द्ध्व शब्द के स्थान में उपरि और उपरिष्टात् निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, ऊर्द्ध्वे ऊर्द्ध्वात् ऊर्द्ध्वो वा उपरि, उपरिष्टात् ।

२७९ । पूर्व्वाधरावराणामसिश्च ।

पूर्व्व अधर और अवर इन तीन प्रातिपदिकों की सप्तमी, पञ्चमी और प्रथमा विभक्तियों के स्थानमें अस्तात् और असि प्रत्यय होते हैं इ इत् होता है और अस् रह जाता है।

२८० । पुराधौ पूर्वाधरयोः ।

अस्तात् और असि प्रत्यय होने से, पूर्व्व के स्थान में पुर और अधर के स्थान में अध होता है। यथा, पूर्व्वस्मिन् पूर्व्वस्मात् पूर्व्वो वा पुरस्तात् पुरः; अधरस्मिन् अधरस्मात्, अधरो अधस्तात्, अधः।

२८१ । अवो विभाषावरस्य ।

अस्तात् और असि होने से अवर के स्थान में विकल्प से अव् होता है। यथा अवरस्मिन् अवरस्मात् अवरो वा अवस्तात् अवरस्तात्, अव., अवरः।*

२८२ । दिग्देशयोर्दक्षिणोत्तरयोरतसुः ।

दिग्वाचक और देशवाचक दक्षिण और उत्तर शब्द की सप्तमी, पञ्चमी और प्रथमा विभक्तियों के स्थान में अतसु होता है। उ इत होता है और अतस् रह जाता है। यथा, दक्षिणस्मिन् दक्षिणस्मात दक्षिणो वा दक्षिणत', उत्तरस्मिन् उत्तरस्मात उत्तरो वा उत्तरतः।

---

*विभाषा परो हत्रभ्याम्। परतः। अवरतः। परस्तात। अपरस्तात्।

२८३। उत्तराधरदक्षिणानामातिः।

उत्तर, दक्षिण और अधर इन शब्दों की सप्तमी, पञ्चमी और प्रथमा विभक्तियों के स्थान में आति होता है। इ इत होता है और आत रह जाता है। यथा, उत्तरस्मिन् उत्तरस्मात् उत्तरो वा उत्तरात्, अधरात्, दक्षिणात्।

२८४। एनप् चादूरेऽपञ्चम्याः।

अदूर अर्थ में एनप् भी होता है। प् इत् होता है और एनः रह जाता है। यथा, उत्तरस्मिन् उत्तरो वा उत्तरेणः; अधरेण, दक्षिणेन। पञ्चमी के स्थान में नहीं होता।

२८५। दक्षिणोत्तरयोरादाही च।

दक्षिण और उत्तर शब्दों की सप्तमी और प्रथमा विभक्तियों के स्थान में आत् और आहि प्रत्यय होते हैं। त् इत् होता है और आ रहता है। यथा, दक्षिणा, दक्षिणाहि; उत्तरा उत्तराहि।

२८६। भवे कालाव्ययेभ्यस्तनप्।

भव अर्थ में कालवाचक अव्यय शब्द के उत्तर तनप होता है। ष् इत् होता है और तन् रहता है। यथा, अद्य भवम् अद्यतनम्, प्रातर्भवं प्रातस्तनम्, सायं भवं सायन्तनम्, दोषातनम् दिवातनम्, पुरातनम्, चिरन्तनम्, सदातनम्, अधुनातनम्, इदानीन्तनम्; तदानीन्तनम्।

२८७। प्राह्णे प्रगेभ्यांच।*

* प्राह्णे प्रगयोरेदन्तत्वञ्च पात्यते।

प्राह्णे और प्रगे इन दोनों सप्तम्यन्त पदों के उत्तर भी होता है। यथा, प्राह्णेतनम्, प्रगेतनम्।

२८८। विभाषा पूर्व्वाह्णापराह्णाभ्यांसप्तम्याम्।

सप्तमी विभक्ति में पूर्व्वाह्ण और अपराह्ण शब्दों के उत्तर विकल्प से तनप् होता है। यथा, पूर्व्वाह्णे भवं पूर्व्वाह्णेतनम्, पौर्व्वाह्णिकम्; अपराह्णे भवम् अपराह्णतनम, आपराह्णिकम्।

२८९। नित्यमूर्द्ध्वादेः।

ऊर्द्ध्व आदि प्रातिदपदिकों के उत्तर (भव इस अर्थ में सदा तनप् होता है। यथा, ऊर्द्ध्वे भवः ऊर्द्ध्वतनः, उपरि भवः उपरितनः, अधः भवः अधस्तनः, प्राक् भवः प्राक्तनः, पूर्व्वे भवः पूर्व्वतनः।

२९०। आदि मध्याभ्यां मन्।

सप्तमी विभक्ति में आदि, और मध्य इन दोनों प्रातिपदिकों के उत्तर मन् होता है। न् इत् होता है और म रहजाता है। यथा, आदौ भवः आदिमः, मध्ये भवः मध्यमः।

२९१। अग्रान्तपश्चाद्भ्यो डिमः।

अग्र अन्त और पश्चात् इन तीन प्रातिपदिकों के उत्तर डिम् प्रत्यय होता है, ड् इत् होता है और इम् रहता है। यथा अग्रे भवः अग्रिमः, अन्ते भवः अन्तिमः, पश्चात् भवः पश्चिमः।

२९२ । चिरपरुत्परारिभ्यस्त्नः ।

चिर् परुत् और परारि, इन तीन शब्दों के उत्तर त्न होता है । यथा, चिरत्नः, परुत्नः, परारित्नः ।

२९३ । दक्षिणा-पश्चात्-पुरोभ्यस्त्यण् ।

दक्षिणा, पश्चात्, पुरस् इन तीनों शब्दों के उत्तर त्यण् होता है ण् इत् होता है और त्य रहता है । यथा, दाक्षिणात्यः पाश्चात्यः, पौरस्त्यः ।

२९४ । अमेह-क-तसिल्-त्रल्भ्यस्त्यः ।

अमा, इह, क, तसिल् और त्रल् प्रत्ययान्त शब्दों के उत्तर त्य होता है । यथा, अमात्यः, इहत्यः, क्वत्यः, तसिल् प्रत्ययान्त-ततस्त्यः, अतस्त्यः, कुतस्त्यः ; त्रल् प्रत्यायान्त तत्रत्यः, अत्रत्यः, कुत्रत्यः ।

२९५ । किमश्चिच्चनौ विभक्त्यन्तात् ।

विभक्त्यन्त किम् शब्द के उत्तर चित् और चन् प्रत्यय होते हैं । यथा, कश्चित्, कश्चित्, केनचित्, कस्मैचित् कस्माश्चित् कस्यचित्, कस्मिंश्चित्, कुतश्चित्, क्वचित्, कुत्रचित् कश्चन, किञ्चन, कञ्चन, कुतश्चन, क्वचन, कुत्रचन ।

२९६ । कृभ्वस्तियोगेऽभूततद्भावे च्विः ।

कृ भू और अस् धातुओं के योग में अभूततद्भाव (१)

(१) अभूत का तद्भाव, अर्थात् जो जैसा न था वह वैसा हुआ । जैसा जो वस्तु, शुक्ल न थी वह शुक्ल हुई ।

अर्थ में प्रातिपदिकों के उत्तर च्वि होता है। और च्वि का सब इत् हो जाता है, कुछ भी नहीं रहता।

२९७। दीर्घोऽन्त्यः।

अभूततद्भाव अर्थ में प्रत्यय होने पर प्रातिपदिकों के अन्तस्थित ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है। यथा, अलघुं लघुं करोति लघू करोति, अलघुर्लघु भवति लघूभवति, अलघुर्लघुः स्यात् लघूस्यात्।

२९८। ईरवर्णस्य।

अभूततद्भाव अर्थ में प्रत्यय होने से प्रातिपदिकों के अन्तस्थित अ के स्थान में ई होता है। यथा, अशुक्लं शुक्लं करोति शुक्ली करोति, अशुक्लः शुक्लो भवति शुक्ली भवति अशुक्लः शुक्लः स्यात् शुक्ली स्यात्।

२९९। ऋतोरीः।

अभूततद्भाव अर्थ में प्रत्यय होने से प्रातिपदिकों के अन्तस्थित ऋकार के स्थान में री होता है। यथा, अश्रोतारं श्रोतारं करोति श्रोत्री करोति, श्रोत्रीभवति, श्रोतीस्यात्। अमातारं मातारं करोति, मात्री करोति, मात्री भवति, मात्रीस्यात्।

३००। लोपोऽरुसादेरन्त्यस्य।

अभूततद्भाव अर्थ में प्रत्यय होने से अरुस्, मनस्, चक्षुस्, चेतस्, रहस् और रजस् इन शब्दों के अन्त्य वर्ण का लोप होता है। यथा, अरु करोति, अरू भवति अरू

स्यात्; विमनीकरोति, विमनीभवति, विमनीस्यात्; उच्चद्करोति, उच्चद्भवति, उच्चदूस्यात्; सुचेतीकरोति, सुचेतीभवति, सुचेतीस्यात्; विरहीकरोति, विरहीभवति विरहीस्यात्; विरजीकरोति, विरजीभवति, विरजीस्यात्।

२०१। विभाषा सातिच् कार्त्स्न्यें।

कार्त्स्न्य (१) बोध होने से अभूततद्भाव अर्थ में कृ, भू और अस् धातुओं के योग में विकल्प से सातिच् होता है, इ च् इत् होते हैं और सात् रहता है। यथा, कृत्स्नं लवणं जलंकरोति जलसात्करोति, कृत्स्नं लवणं जलं भवति जलसाद्भवति, कृत्स्नं लवणं जलं स्यात् जलसात्स्यात्, भस्मसात् करोति, भस्मसाद्भवति, भस्मसात्स्यात्। एक पक्ष में च्वि होता है। यथा, जलीकरोति, जलीभवति, जलीस्यात्; भस्मी करोति, भस्मीस्यात्।

२०२। अभिविधौ सम्पदा च।

अभिविधि (२) बोध होने से अभूततद्भाव अर्थ में कृ, भू, अस् और सम्पूर्व्वक पद् धातु के योग में विकल्प से सातिच् प्रत्यय होता है। यथा, अग्निसात् करोति, अग्निसाद्भवति, अग्निसात्स्यात्; अग्निसात् सम्पद्यते। एक पक्ष में च्वि होता है। अग्नीकरोति, अग्नीभवति, अग्नी स्यात्, अग्नी सम्पद्यते।

(१) एकस्यान्यर्क्तः सर्व्वावयवावच्छेदेनान्यथाभावः कार्त्स्न्यम्।

(२) बहूनां व्यक्तीनां किंचिदवयावाच्छेदेनान्यथाभाव. अभिविधिः।

३०३। अधीनतायाञ्च।

अधीनता अर्थमें भी होता है। यथा, राज्ञोऽधीनं करोति राजसात्करोति, राज्ञोऽधीनं भवति राजसोद्भवति, राज्ञाऽधीनं स्यात् राजसात्स्यात्, राज्ञोऽधीनं सम्पद्यते राजसात् सम्पद्यते। एक पक्ष में च्वि होता है। यथा, राजी करोति राजीभवति, राजीस्यात राजी सम्पद्यते।

३०४। देये त्राच् च।

देय बोध होने से कृ, भू, अस् और सम् पूर्व्वक पद धातु के योग में सातिच् और त्राच् होते हैं। च् इत् होता है और आ रहता है। यथा, ब्राह्मणाय देयं करोतिं ब्राह्मणसात् करोति, ब्राह्मणत्राकरोति; ब्राह्मणसाद् भवति, ब्राह्मणत्रा भवति; ब्राह्मणसात् स्यात्, ब्राह्मणत्रा स्यात्; ब्राह्मणसात् सम्पद्यते, ब्राह्मणत्रासम्पद्यते। देय नहीं बोध होने से—राज सम्भवति राष्ट्रम्।

३०५। कृञा द्वितीयादेः कृषौ डाच्।

कृ धातु के योग में द्वितीय, तृतीय, शम्ब, बीज, इन सब प्रातिपदिकों के उत्तर कर्षण अर्थ में डाच् होता है। ड् और च् इत् होते हैं और आ रहता है। यथा, द्वितीयाकरोति, तृतीयाकरोति; द्वितीयं तृतीयं कर्षणं करोति इत्यर्थः; शम्बा करोति, अनुलोमकृष्टं क्षेत्रं प्रतिलोमं कर्षतीत्यर्थः, बीजाकरोति, बीजेन सह कर्षतीत्यर्थः।

३०६। संख्यायाश्च गुणान्तायाः।

गुण शब्द अन्त में रहने से संख्यावाचक शब्दों के उत्तर कृ धातु के योग में कर्षण अर्थ में डाच् होता है। यथा, द्विगुणाकरोति, त्रिगुणाकरोति क्षेत्रम्, द्विगुणं त्रिगुणं कर्षतीत्यर्थः।

३०७। समयाच्च यापनायाम्।

यापन बोध होने से, समय शब्द के उत्तर डाच् होता है। यथा, समयाकरोति, समयं यापयतीत्यर्थः।

३०८। सपत्र निष्पत्राभ्यां व्यथने।

व्यथन अर्थ में सपत्र और निष्पत्र इन दोनों प्रातिपदिकों के उत्तर डाच् होता है। यथा, सपत्रा करोति मृगं व्याधः सपत्रं शरम् अस्य शरीरे प्रवेशयन् व्यथयतीत्यर्थः, निष्पत्रा करोति शरीरात् शमृ अपरपार्श्वे निष्कामयन् व्यथयतीत्यर्थः।

३०९। निष्कुलान्निष्कोषणे।

निष्कोषण (१) अर्थ में निष्कुल प्रातिपदिक के उत्तर डाच् होता है। यथा, निष्कुला करोति दाड़िमम्, दाड़िमस्य अन्तरवयवान् वहिर्निःसारयतीत्यर्थः।

३१०। सुखप्रियाभ्यामानुलोम्यो।

आनुलोम्य अर्थ में सुख और प्रिय इन दोनों प्रातिपदिकों

---

(१) कोष से बाहर करना।

के उत्तर डाच् होता है। यथा, सुखा करोति प्रिया करोति मित्रम्, अनुकूलाचरणेन आनन्दयतीत्यर्थः।

३११। दुःखात् प्रातिलोम्ये।

प्रातिलोम्य बोध होने से दुःख इस प्रातिपदिक के उत्तर डाच् होता है। यथा, दुःखाकरोति भृत्य', प्रतिकूलाचरणेन स्वामिनं पीडयतीत्यर्थः।

३१२ शूलात् पाके।

पाक अर्थ में शूल प्रातिपदिक के उत्तर डाच् होता है। यथा, शूलाकरोति मांसम्, शूलेन पचतीत्यर्थः।

३१३। सत्यादशपथे।

शपथ-भिन्न अर्थ में सत्य प्रातिपदिक के उत्तर डाच् होता है। यथा, सत्याकरोति भाण्डं वणिक्, क्रेतव्यमिति प्रतिजानीते इत्यर्थः।

३१४। मद्रात् परिवापणे (१)।

मुण्डन अर्थ में मद्र शब्द के उत्तर डाच् होता है। यथा, मद्राकरोति' माङ्गल्यं मुण्डनं करोतीत्यर्थः।

---

(१) मद्र शब्दो मङ्गलार्थः।

स्त्रीप्रत्यय।

Feminine Bases.

१। स्त्रियाम्।

इस प्रकरण में जो सब कार्य्यविधान होते हैं उन्हें स्त्री लिङ्ग में समझना।

२। अदन्तादाप्।

अकारान्त प्रातिपदिकों के उत्तर आप् होता है प् इत् होता है और आ रहता है। यथा, कृश कृशा, दीन दीना, मलिन मलिना, कृपण कृपणा, क्रूर क्रूरा, सरल सरला, प्रबल प्रबला, अचल अचला, निपुण निपुणा, चतुर चतुरा, तरल तरला, चपल चपला. दक्षिण दक्षिणा, उत्तर उत्तरा, पूर्व्व पूर्व्वा, पश्चिम पश्चिमा, प्रथम प्रथमा, द्वितीय द्वितीया, तृतीय तृतीया, अनुकूल अनुकूला, प्रतिकूल प्रतिकूला, मनोहर मनोहरा।

३। आपि प्रत्ययकात् पूर्व्वस्यात इत्।

आप् होने से प्रत्यय के ककारके पूर्व्ववर्त्ती अकार के स्थान में इकार होता है। यथा, नायक नायिका, पाचक पाचिका, नाटक नाटिका, पालक पालिका, कारक कारिका, बोधक बोधिका, साधक साधिका, बालक बालिका।

४। नाष्टकादेः।

अष्टका आदि के ककार के पूर्व्ववर्त्ती अकार के स्थान में

इकार नहीं होता। यथा, अष्टका, इष्टका, कन्यका, करका, चटका, तारका, अधित्यका, उपत्यका।

५। ईप् गौरादिभ्यः।

गौर आदि अकारान्त प्रातिपादिकों के उत्तर ईप् होता है। प् इत् होता है और ई रहता है।

६। ईपि लोपोऽवर्णस्य।

ईप् होने पर प्रातिपदिकों के अन्तस्थित अ का लोप होता है। यथा, गौर गौरी, कुमार कुमारी, किशोर किशोरी, सुन्दर सुन्दरी, तरुण तरुणी, पितामह पितामही, मातामह मातामही, नद नदी, तट तटी, नट नटी, पट पटी, कदल कदली, स्थल स्थली, काल काली, नाग नागी, मण्डल मण्डली, सल्लक सल्लकी, वेतस वेतसी, अतस अतसी, आमलक आमलकी, तूण तूणी, द्रोण द्रोणी, वदर वदरी, कवर कवरी।

७। जातौ जातेरदन्तादीप्।

जाति बोध होने से जातिवाचक अकारान्त प्रातिपदिकों के उत्तर ईप् होता है। यथा, सिंह सिंही, व्याघ्र व्याघ्री, भल्लूक भल्लूकी, मृग मृगी, हरिण हरिणी, कुरङ्ग कुरङ्गी, गर्द्दभ गर्द्दभी, शूकर शूकरी, कुक्कुर कुक्कुरी, जम्बुक जम्बुकी, शृगाल शृगाली, विड़ाल विड़ाली, घोटक घोटकी, महिष महिषी, हंस हंसी, सारस सारसी, चक्रवाक चक्रवाकी, मानुष मानुषी,

ब्राह्मण ब्राह्मणी, गोप गोपी, चण्डाल चण्डाली, पिशाच पिशाची, राक्षस राक्षसी, निशाचर निशाचरी।

८। नाजादेः। अजाद्यतष्टाप्।

जातिवाचक शब्दों में अज आदि प्रातिपदिकों के उत्तर ईप् नहीं होता। यथा, अज अजा, कोकिल कोकिला, चटक चटका, अश्व अश्वा, मूषिक मूषिका, पुत्रक पुत्रका, बाल बाला, वत्स वत्सा, ज्येष्ठ ज्येष्ठा, कनिष्ठ कनिष्ठा, शूद्र शूद्रा। महत् शब्द पूर्व्व में रहने से होता है। यथा, महाशूद्री।

९। न योपधाद्गवयादिवर्ज्जात्।

जिन जातिवाची प्रातिपादिकों के उपधा के स्थान में य होता है उनके उत्तर ईप् नहीं होता है। यथा, वैश्य वैश्या, गवय, हय, मुकय, मत्स्य, मनुष्य इनके उत्तर ईप् होता है। यथा, गवयी, हयी, मुकयी इत्यादि।

१०। लोपो मत्स्यमनुष्ययोर्यस्य।

ईप् होने से मत्स्य और मनुष्य शब्द के य का लोप होता है। यथा, मत्स्य मत्सी, मनुष्य मनुषी।*

११। ऋदन्तादाप्।

ऋकारान्त प्रातिपदिकों के उत्तर ईप् होता है। जैसे दातृ दात्री, धातृ धात्री, कर्तृ कर्त्री, जनयितृ जनयित्री, प्रसवितृ प्रसवित्री।

---

*मनुष्यी और मानुषी भी होता है।

१२। नस्वस्रादेः।

ऋकारान्त में स्वसृ आदि प्रातिपदिकों के उत्तर ईप् नहीं होता। यथा, स्वसा, माता, दुहिता, याता, ननान्दा, तिस्रः, चतस्रः।

१३। नान्तादीप्।

नकारान्त प्रातिपदिकों के उत्तर ईप् होता है। यथा, कामिन् कामिनी, मानिन् मानिनी, मायाविन मायाविनी मेधाविन् मेधाविनी, तपस्विन तपस्विनी, बिलासिन् बिलासिनी, अधिकारिन अधिकारिणी, अनुगामिन् अनुगामिनी, उपकारिन् उपकारिणी, अनुरागिन अनुरागिणी, प्रियवादिन् प्रियवादिनी, मनोहारिन् मनोहारिणी।

१४। उपधाया लोपोऽनः।

ईप् होने से अन् भागान्त प्रातिपदिकों के उपधा का लोप होता है। यथा, राजन् राज्ञी। उपधा म संयुक्त अथवा व संयुक्त वर्ण में मिला रहने से नहीं होता।

१५। न संख्यायाः।

नकारान्त में संख्यावाची प्रातिपदिकों के उत्तर ईप् नहीं होता। यथा, पञ्च, सप्त, अष्ट, नव, दश।

१६। न मनन्तात्।

नकारान्त में मन्भागान्त प्रातिपदिकों के उत्तर ईप नहीं होता। यथा, सीमा, पामा, सुदामा, अतिमहिमा।

१७। नानन्ताद्बहुव्रीहौ।

बहुव्रीहि समास होने पर अन्‌भागान्त प्रातिपदिकों के उत्तर ईप् नहीं होता। यथा, बहुनि, सन्त्यस्यां पर्व्वाणि बहुपर्व्वा वेणुयष्टिः।

१८। विभाषा डाप्।

बहुव्रीहि समास होने पर अन्‌भागान्त प्रातिपदिकों के उत्तर विकल्प से डाप् होता है, ड् और प् इत् होते हैं और आ रहता है। यथा बहुपर्व्वा बहुपर्व्वे बहुपर्व्वः, पक्षे बहुपर्व्वा, बहुपर्व्वाणौ बहुपर्व्वाणः।

१९। ईप चोपधालोपिनो वा।

जिन अनन्त प्रातिपदिकों के उपधा का लोप हो जाता है, बहुव्रीहि समास होने पर उनके उत्तर विकल्प से डाप् और ईप् होते है। यथा, बहवः सन्त्यत्र राजानः बहुराजा, बहुराजे, बहुराजाः बहुराज्ञी, बहुराज्ञौः, बहुराज्ञ्यः। एक पक्ष में बहुराजा बहुराजानौ, बहुराजनः।

२०। युवत्यादयः।

युवति आदि शब्द निपातन स सिद्ध होते हैं। यथा युवन् युवतिः, युवनी, यूनी, श्वन-शूनी, मघवन-मघोनी, मघवती।

२१। उद्दृभ्यामीप्।

जिन का उकार और ऋकार इत् हो ऐसे प्रत्ययों के योग

से बने हुए प्रातिपदिकों के उत्तर इप् होता है। यथा उकार इत् प्रत्यय भवत् भवती. इयत् इयती, कियत् कियती, श्रीमत् श्रीमती, बुद्धिमत् बुद्धिमती पुत्रवत् पुत्रवती, लज्जावत् लज्जावती, बलवत् बलवती, प्रभावत् भावती, कृतवत् कृतवती, प्रेयस प्रेयसी, श्रेयस श्रेयसी, गरीयस गरीयसी, लघीयस लघीयसी, कनीयस कनीयसी। (ऋकार इत प्रत्यय) सत् सती, रुदत-रुदती। श्रण्डवत् श्रण्डवती, द्विषत् द्विषती, बिभ्रत् बिभ्रती, कुर्व्वत् कुर्व्वती, गृह्णत गृह्णती, जानत् जानती।

२२। शतुर्नुन् भ्र दिवादिभ्याम।

ईप् होने से भ्वादि और दिवादि गणीय धातुओं के उत्तर विहित शतृ प्रत्यय के स्थान में नुन् होता है। उन् इत् होता है और न् रहता है और वह तकार के पूर्व्व में मिल जाता है। यथा भ्वादिगणीय—धावत् धावन्ती, गच्छत् गच्छन्ती, पतत् पतन्ती, तिष्ठत् तिष्ठन्ती, चलत् चलन्ती. पश्यत् पश्यन्ती, कारयत् कारयन्ती, स्मारयत्, स्मारयन्ती, स्थापयत् स्थापयन्ती पालयत् पालयन्ती। दिवादिगणीय—दीव्यत् दीव्यन्ती, नश्यत् नश्यन्ती, नृत्यत् नृत्यन्ती जीर्य्यत् जीर्य्यन्ती, मुह्यत् मुह्यन्ती।

२३। वा तुदादेः।

तुदादिगणीय धातु के उत्तर विकल्प से होता है। यथा, तुदत् तुदन्ती, तुदती; इच्छत् इच्छन्ती, इच्छती, पृच्छत् पृच्छन्ती पृच्छती; स्पृशत् स्पृशन्ती, स्पृशती, सिञ्चत् सिञ्चन्ती, सिञ्चती।

२४। अदादेरादन्तात्।

अदादिगणीय आकारान्त के उत्तर विकल्प से होता है। यथा, यात् यान्ती याती ; मात् मान्ती, माती ; भात् भान्ती, भाती ; स्नात् स्नान्ती, स्नाती।

२५। विभाषा स्यतुः।

ईप् होने से स्यतृ प्रत्यय के स्थान में विकल्प से नुन् होता है। यथा, भविष्यत् भविष्यन्ती भविष्यती ; करिष्यत् करिष्यन्ती, करिष्यती ; दास्यत् दास्यन्ती, दास्यती ; यास्यत् यास्यन्ती, यास्यती।

२६। टित् षिद्भ्यामीप्।

जिनका टकार और षकार इत् हो ऐसे प्रत्ययों के योग से बने हुए प्रातिपदिकों के उत्तर ईप् होता है। (टकार इत् प्रत्यय से बने हुए शब्द) गायन गायनी, कर्म्मकर कर्म्मकरी, अर्थंकर अर्थंकरी, यशस्कर यशस्करी, निशाचर निशाचरी, भयङ्कर भयङ्करी, चतुर्थ चतुर्थी, पञ्चम पञ्चमी, षष्ठ षष्ठी, सप्तम सप्तमी, अष्टम अष्टमी, नवम नवमी, दशम दशमी, एकादश एकादशी, द्वादश द्वादशी, त्रयोदश त्रयोदशी, चतुर्दश चतुर्दशी षोड़श षोड़शी, द्वय द्वयी, त्रय त्रयी, चतुष्टय चतुष्टयी, दयामय दयामयी, स्वर्णमय स्वर्णमयी, मृण्मय मृण्मयी, हिरण्यमय हिरण्यमयी। (षकार इत् प्रत्यय से बने हुए शब्द) नर्त्तक नर्त्तकी, रजक रजकी, मानव मानवी, वैष्णव वैष्णवी, द्रौपद

द्रौपदी, पाञ्चाल पाञ्चाली, मागध मागधी, मैथिल मैथिली, पार्व्वत पार्व्वती, चातुर चातुरी, माधुर माधुरी, भागिनेय भागिनेयी, पौत्र पौत्री, दौहित्र दौहित्री, ईदृश ईदृशी, तादृश तादृशी, कीदृश कीदृशी, सदृश सदृशी, एतादृश एतादृशी, अन्यादृश अन्यादृशी ।

२७ । ईपि लोपः ष्यणो हलः ।

ईप् होने से हल वर्ण के परवर्त्ती ष्यण् प्रत्यय का लोप होता है। यथा, गार्ग्य गार्गी, वात्स्य वात्सी, आगस्त्य आगस्ती, बाभ्रव्य बाभ्रवी, माण्डव्य माण्डवी, मौद्गल्य मौद्गली, कौण्डिन्य कौण्डिनी ।

२८ । प्रागादेरीप् ।

प्राच् आदि प्रातिपदिकों के उत्तर ईप् होता है। यथा, प्राच् प्राची, अवाच् अवाची ।

२९ । प्रतीच्यादयः ।

प्रतीची आदि निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, प्रत्यच् प्रतीची, प्रत्यञ्ची, उदच् उदीची, उदञ्ची ; तिर्य्यच् तिरश्ची, तिर्य्यञ्ची ।

३० । जातेरदन्ताज्जायायाम् ।

जाया अर्थ में जातिवाची अकारान्त प्रातिपदिकों के उत्तर ईप् होता है। यथा, ब्राह्मणस्य जाया ब्राह्मणी, शूद्रस्य जाया

शूद्री, गोपस्य जाया गोपी, गणकस्य जाया गणकी, नापितस्य जाया नापिती, निषादस्य जाया निषादी ।

३१ । न पालकान्तात् ।

जिन प्रातिपदिकों के अन्त में पालक हो तो उनके उत्तर ईप् नहीं होता । यथा, गोपालकस्य जाया गोपालिका, पशुपालकस्य जाया पशुपालिका ।

३२ । भवादेरानीपौ ।

जाया अर्थ में भव आदि (१) प्रातिपदिकों के उत्तर आन् और ईप् होता है । यथा, भवस्य जाया भवानी, सर्व्वस्य, जाया सर्व्वाणी, रुद्रस्य जाया रुद्राणी, मृड़स्य जाया मृड़ानी, इन्द्रस्य जाया इन्द्राणी, वरुणस्य जाया वरुणानी ।

३३ । नलोपो ब्रह्मणः ।

आन् होने से ब्रह्मन् शब्द के नकार का लोप होता है। यथा ब्रह्मणो जाया ब्रह्माणी

३४ । मातुलादान् विभाषा ।

मातुल शब्द के उत्तर विकल्प से आन् होता है । यथा, मातुलस्य जाया मातुलानी मातुली ।

३५ । वा क्षत्रियादेरानीपौ ।

क्षत्रिय आदि प्रातिपदिकों के उत्तर विकल्प से आन् और

इन्द्र, वरुण, भव, सर्व, रुद्र, मृड, ब्रह्मन्, मातुल, क्षत्रिय, अर्य उपाध्याय, आचार्य्य ।

ईप् होता है। यथा, क्षत्रियस्य जाया क्षत्रियाणी क्षत्रिया, अर्य्यस्य जाया अर्य्याणी अर्य्या, उपाध्यायस्य जाया उपाध्यायानी, उपाध्याया, आचार्य्यस्य जाया आचार्य्यानी (१) आचार्य्या।

३६। अर्थविशेषे हिमादेः।

अर्थ विशेष में हिम, अरण्य, यव और यवन, इन चार प्रातिपदिकों के उत्तर सदा आन् और ईप् होता है। यथा, महत् हिमम् हिमानी, महत् अरण्यम् अरण्यानी, दुष्टो यवः यवानी, यवनानां लिपिः यवनानी।

३७। वा शोणादेरीप्।

शोण आदि प्रातिपदिकों के उत्तर विकल्प से ईप् होता है। यथा, शोणी शोणा, चण्डी चण्डा, आराली आराला, कृपणी कृपणा, कल्याणी कल्याणा पुराणी पुराणा, उदारी उदारा, विकटी विकटा, विशाली विशाला, विसङ्कटी विसङ्कटा।

३८। अवयवाद्बहुव्रीहौ।

बहुव्रीहि समास होने से अवयववाचक प्रातिपदिकों के उत्तर विकल्प से ईप् होता है। यथा, चन्द्रमुखी चन्द्रमुखा, सुकेशी सुकेशा, ताम्रनखी ताम्रनखा।

३९। न संज्ञायां नख मुखाभ्याम्।

संज्ञा बोध होने से नख और मुख इन दो अवयववाचक

(१) मूर्द्धन्य नहीं होता।

प्रातिपदिकों के उत्तर ईप् नहीं होता है। यथा, सूर्पणखा, गौरमुखा।

४०। न क्रोड़ादेः।

क्रोड़ आदि अवयववाचक प्रातिपदिकों के उत्तर ईप् नहीं होता। यथा, सुक्रोड़ा, तीक्ष्णखुरा, चारुशिखा, दीर्घशफा।

४१। न संयुक्तोपधादङ्गादिवर्ज्जात्।

जिन अवयववाचक प्रातिपदिकों के उपधा के स्थान में संयुक्तवर्ण हो तो उनके उत्तर ईप् नहीं होता है। यथा, मृगनेत्रा, चारुगुल्फा, लोलजिह्वा। अङ्ग आदि के उत्तर होता है। यथा, कृशाङ्गी कृशांगा, मृदुगात्री मृदुगात्रा, बिम्बोष्ठी बिम्बोष्ठा, कोकिलकण्ठी कोकिलकण्ठा, कुन्ददन्ती कुन्ददन्ता, चारुकर्णी चारुकर्णा, दीर्घजङ्घी दीर्घजङ्घा, सत्पुच्छी सत्पुच्छा तीक्ष्णशृङ्गी तीक्ष्णशृङ्गा।

४२। नद्व्यधिकस्वरान्नासिकोदरवर्ज्जात्।

जिन अवयववाचक प्रातिपदिकों में दो से अधिक स्वर हों तो उनके उत्तर ईप् नहीं होता है। यथा, मृगनयना, चन्द्रवदना, चारुदशना, पृथुजघना, लोलरसना। नासिका और उदर शब्द के उत्तर होता है। यथा, तुङ्गनासिकी तुङ्गनासिका कृशोदरी कृशोदरा।

४३। न सह नञ् विद्यमानपूर्व्वात्।

सह, नञ् और विद्यमान पूर्व्व में रहने से अवयववाचक

प्रातिपदिकों के उत्तर ईप् नहीं होता। यथा, सकेशा, अकेशा विद्यमानकेशा।

४४। नित्यमूधसष्टेश्च नः।

बहुब्रीहि समास होने से ऊधस् शब्द के उत्तर सदा ईप् और टि के स्थान में न होता है। यथा, पीनमस्या ऊधः पीनोध्नी घटवदस्या ऊधः घटोध्नी, द्विविधमस्या ऊधः द्विविधोध्नी, अति अस्या ऊधः अत्यूध्नी।

४५। दामहायनाभ्यां संख्यायाः।

बहुब्रीहि समास होने से, संख्यावाचक शब्दों के परवर्त्ती दामन् और हायन् इन दोनों प्रातिपदिकों के उत्तर ईप् होता है। यथा द्वे अस्या दाम्नी द्विदाम्नी, त्रीण्यस्या दामानि त्रिदाम्नी द्वावस्या हायनी द्विहायनी, त्रिहायणी, चतुर्हायणी गौः। हायन् शब्द वयोवाचक नहीं होनेसे ईप् और णत्व नहीं होता। यथा, द्विहायना, त्रिहायना, चतुर्हायना शाला।

४६। इदन्ताद्विभाषा।

इकारान्त प्रातिपदिकों के उत्तर विकल्प से ईप् होता है। यथा, श्रेणी श्रेणिः, राजी राजिः, आली आलिः, कटी कटिः रात्री रात्रिः, रजनी रजनिः, शारी शारिः, यष्टी यष्टिः, अही अहिः, कपी कपिः, मुनी मुनिः, शकटी शकटिः।

४७। नित्यं सख्युः।

सखि शब्द के सदा होता है। यथा, सखी।

४८। न क्तेः।

क्ति प्रत्यय से बने इकारान्त प्रातिपदिकों के उत्तर ईप् नहीं होता। यथा, गतिः स्थितिः, कृतिः, मतिः, भक्तिः, मुक्तिः, युक्तिः, बुद्धिः।

४९। वा शक्ति-पद्धतिभ्याम्।

शक्ति और पद्धति शब्द के उत्तर विकल्प से होता है। यथा, शक्ती शक्तिः पद्धती पद्धतिः।

५०। पत्युर्नो यज्ञसंयोगे।

यज्ञ संयोग अर्थात् यज्ञ के फलभागी बोध होने से पति, इस प्रातिपदिक के उत्तर ईप् और इकार के स्थान में न होता है। यथा, वशिष्ठस्य पत्नी, वशिष्ठानुष्ठितयज्ञफलभोक्त्रीत्यर्थः। ग्रामस्य पतिरियम् यहां पतिशब्द का अर्थ अधिकारिणी, यज्ञफल भोगने वाली नहीं है इसलिये ईप् और न नहीं हुआ।

५१। सपत्नीप्रभृतयः।

सपत्नी आदि शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, समानः पतिरस्याः सपत्नी, एकः पतिरस्याः एकपत्नी साध्वी, वीरः पतिरस्याः वीरपत्नी, वृद्ध पतिरस्याः वृद्धपत्नी, भद्रः पतिरस्याः भद्रपत्नी, पञ्च पतयोऽस्याः पञ्चपत्नी द्रौपदी, पतिरस्त्यस्याः पतिवत्नी जीवद्भर्तृका, अन्तरस्त्यस्याः अन्तर्वत्नी गर्भिणी।

५२। पदो बहुब्रीहौ।

बहुव्रीहि समास होने से पद् इस प्रातिपदिक के उत्तर ईप् होता है। यथा द्वावस्याः पदौ द्विपदी; त्रयोऽस्याः पदः त्रिपदी, चतुष्पदी, बहुपदी शतपदी।

५३। दतश्च।

बहुव्रीहि समास होने से दत् प्रातिपदिक के उत्तर ईप् होता है।यथा सुदती, चारुदती, शुभ्रदती, कुन्ददती।

५४। पाणिगृहीतात् पत्न्याम्।

पत्नी अर्थ होने बोध से पाणिगृहीत शब्द के उत्तर ईप् पोता है। यथा पाणिगृहीतोऽस्याः पाणिगृहीती पत्नी; अन्यत्र पाणिगृहीता नारी।

५५। वा गुणवाचकादूवन्तात।

गुणवाचक उकारान्त प्रातिपदकिकों के उत्तर विकल्प से ईप् होता है। यथा, मृद्वी मृदुः, साध्वी, साधुः, पट्वी पटुः गुर्व्वी गुरुः लध्वी लघुः, अण्वी अणुः, स्वाद्वी स्वादुः बह्वी बहुः। खरु शब्द का नहीं होता।

५६। न संयुक्तोपधात्।

जिन गुणवाचक उकारान्त प्रातिपदिकों के उपधा के स्थान में संयुक्तवर्ण हो तो उन के उत्तर ईप् नहीं होता। यथा, पाण्डुः।

५७। नित्यमशिश्वरड्डुङ्ख्याम।

अशिशु और अनडुह् शब्द के उत्तर सदा ईप् होता है यथा, अशिश्वी, नास्त्यस्याः शिशुरित्यर्थः; अनडुही।

५८। अदड्वाही।

निपातन से सिद्ध होता है।

५९। उदन्तादूप्।

उकारान्त प्रातिपदिक के उत्तर ऊप् होता है। प् इत् होता है और ऊ रहता है। यथा, कुरूः कद्रुः अलाबूः, कर्कन्धूः, ब्रह्मबन्धूः।

६०। न रज्ज्वादेः।

रज्जु आदि उकारान्त प्रातिपदिकों के उत्तर ऊप् नहीं होता। यथा, रज्जुः, धेनुः, आखुः हनुः, कमण्डलुः, कृकवाकुः, वृत्तबाहुः, अध्वर्युः।

६१। विभाषा तन्वादेः।

तनु आदि उकारान्त प्रातिपदिकों के उत्तर विकल्प से ऊप् होता है। यथा, तनूः तनुः, चञ्चूः चञ्चुः।

६२। श्वश्रूः श्वशुरस्य।

श्वशुर शब्द के स्थान में निपातन से श्वश्रू होता है। यथा, श्वशुरस्य जाया श्वश्रूः।

६३। ऊरोरौपम्ये।

उपमा बोध होने से ऊरु प्रातिपदिक के उत्तर ऊप् होता

है। यथा, रम्भे इवास्या ऊरू रम्भोरूः, करभाविवास्या ऊरू करभोरूः, करिकराविवास्या ऊरू करिकरोरूः।

६४। वामादिपूर्व्वाच्च।

वाम आदि शब्द के परवर्त्ती ऊरू इस प्रातिपदिक के उत्तर ऊप् होता है। यथा, वामोरूः, सहितोरूः, सहोरूः, संहितोरूः, लक्षणोरूः शफोरूः।

समास Compounds.

१। एकपदीभावः समासः।

दो वा अनेक पदों के एकपदीभाव अर्थात् एक हो जाने को समास कहते हैं।

२। लुक् विभक्तेः।

समास के अन्तर्गत पदों की विभक्तियों का लोप हो जाता है।

३। नस्य लोपः पूर्व्वस्य।

समास होने पर पूर्व्वपद के अन्तस्थित नकार का लोप होता है।

४। परस्य स्वरे।

स्वरवर्ण परे रहने से पर पद के अन्तस्थित नकार का लोप हो जाता है। (१)

५। लोपोऽवर्णोवर्णयोः।

स्वरवर्ण परे रहने से अ और इ वर्ण का लोप होता है।

६। अकारो नञो हलि।

हल् वर्ण परे रहने से नञ् के स्थान में अन् होता है।

७। अन् स्वरे।

स्वरवर्ण परे रहने से नञ् के स्थान में अन् होता है।

८। टेर्लोपो डिति।

जिसका डकार इत हो ऐसा प्रत्यय परे रहने से टि का लोप होता है।

९। तेर्विंशतेः।

विंशति शब्द के ति का लोप होता है।

१०। ह्रस्वावन्ते गोस्त्रियावन्यार्थे।

जहाँ अन्य पदार्थ का बोध हो वहाँ अन्तस्थित गो शब्द और स्त्री प्रत्यय का ह्रस्व होता है।

११। स्त्री नेयसुनः।

---

(१) ल्यप् प्रत्यय परे रहने पर भी परपद के अन्तस्थित नकार का लोप होता है।

ईयसुन् को परवर्ती स्त्री प्रत्यय का ह्रस्व नहीं होता।

१२। समासाः प्रातिपदिकानि।

समास होने पर समस्त भाग प्रातिपदिक होता है अर्थात् फिर उनके उत्तर नयी विभक्ति होती है।

१३। विशेष्यलिंगमन्यार्थे।

जहाँ अन्य पदार्थ का बोध होता है वहाँ समस्त भाग को विशेष्य का लिङ्ग होता है।

१४। नपुंसकैकवचने समाहारे।

समाहार समास होने पर समस्त भाग नपुंसक लिङ्ग और एकवचनान्त होता है।

१५। पुंवद्भावः सर्व्वनाम्नः।

समास में स्त्रीलिङ्ग सर्व्वनाम का पुंवद्भाव अर्थात् पुंलिङ्ग की भाँति आकार होता है।

१६। महतो महा विशेष्ये।

विशेष्य शब्द परे रहने से महत् शब्द के स्थान में महा होता है।

अव्ययीभाव समास।

Indeclinable compounds

१। अव्ययीभाव।

इस प्रकरण में जितने समास होते हैं उनका नाम अव्ययीभाव है।

२। नपुंसकमव्ययीभावे।

अव्ययीभाव समास होने से समस्त भाग नपुंसकलिङ्ग होता है।

३। अदन्ताद्विभक्तेरपञ्चम्या मः।

अकारान्त अव्ययीभाव के परवर्त्ती विभक्ति के स्थान में म होता है पर पञ्चमी के स्थाने में नहीं होता।

४। विभाषा तृतीयासप्तम्योः।

तृतीया और सप्तमी विभक्ति के स्थान में विकल्प से म होता है।

५। लुक् परात्।

अकारान्त भिन्न अव्ययीभाव के परवर्त्ती विभक्ति का लोप होता है।

६। सुपाव्ययं समीपादौ।

समीप आदि (१) अर्थ में सुवन्त पद के साथ अव्यय का समास होता है। यथा, समीप—गृहस्य समीपम् उपगृहम्, गङ्गायाः समीपम् उपगङ्गम्; अभाव—विघ्नस्याभावः निर्विघ्नम्, मक्षिकाणाम् अभावः निर्मक्षिकम्; अत्यय—हिमस्यात्ययः अतिहिमम्, बाधाया अत्ययः अतिबाधम्; असम्प्रति—निद्रा सम्प्रति न युज्यते अतिनिद्रम्, शोकः सम्प्रति न युज्यते अति शोकम्; पश्चात्—रथस्य पश्चात् अनुरथम्, गृहस्य पश्चात् अनुगृहम्; योग्य—रूपस्य योग्यम् अनुरूपम्, कुलस्य योग्यम् अनुकुलम्; वीप्सा—दिनं दिनं प्रति प्रतिदिनम्, गृहं गृहं प्रति प्रतिगृहम्; अनतिवृत्ति—शक्तिमनतिक्रम्य यथाशक्ति, ज्ञानमनतिक्रम्य यथाज्ञानम्; अनुपूर्व्व—ज्येष्ठस्यानुपूर्व्वेण अनुज्येष्ठम्, वर्णानाम् अनुपूर्व्वेण अनुवर्णम्; विभक्त्यर्थ—हरौ अधिहरि, गृहे अधिगृहम्।

७। सहःसोऽकाले।

अव्ययीभाव समास में सह शब्द के स्थान में स होता है यथा, सादृश्य—हरेः सदृशं सहरि; यौगपद्य—चक्रेण युगपत् सचक्रम्; साकल्य—तृणमप्यपरित्यज्य सतृणम्, समृद्धि—मद्राणां समृद्धिः समद्रम्, पर्य्यन्त—अग्निग्रन्थपर्य्यन्तमधीते साग्नि। कालबोध होने से नही होता। यथा, सहपूर्व्वाह्णम्, सहापराह्णम।

---

(१) समीप, अभाव, अत्यय, असम्प्रति, पश्चात्, योग, वीप्सा-अनतिवृत्ति, अनुपूर्व्व, विभक्ति, सादृश्य, यौगपद्य, साकल्य, समृद्धि, पर्य्यंत इत्यादि।

८। यावदवधारणे।

अवधारण बोध होने से सुवन्त के साथ 'यावत्' इस शब्द का समास होता है। यथा, यावदमत्रं ब्राह्मणानामन्त्रयस्व यावन्त्यमत्राणि सन्ति पञ्च षड् वा, तावत् आमन्त्रयस्वेत्यर्थः। अमत्रं भाजनं प्यत्रम्।

९। विभाषा वाहरादिः पञ्चम्या।

पञ्चम्यन्त पद के साथ वाहिस् आदि (१) शब्दों का समास विकल्प से होता है। यथा, वहिर्ग्रामं ग्रामाद्बहिः, प्रागुपवनं उपवनात् प्राक्।

१०। आङ मर्य्यादाभिविध्योः।

मर्य्यादा और अभिविधि (२) बोध होते से सुवन्त पद के साथ आङ् अव्यय का विकल्प से समास होता है। यथा, आपाटलिपुत्रम्, आपाटलिपुत्रात्, वृष्टो देवः ; आकुमारम्, आकुमारेभ्यः, यशः कालिदासस्य।

११। लक्ष्येणाभिप्रती आभिमुख्ये।

अभिमुख्य बोध होने से लक्ष्यवाचक सुवन्तपद के साथ अभि और प्रति इन दो अव्ययों का विकल्प से समास होता है। यथा, अभ्यग्नि, अग्निम् अभि, शलभाः पतन्ति ; प्रत्यग्नि, अग्नि प्रति।

(१) वहिस्, प्राच, अवाच्, प्रत्यच्, अप् परि इत्यादि

(२) तेन विना मर्य्यादा, तत्सहितोऽभिविधिः।

१२ । यस्य चायामस्तेनानुः ।

जिसका दैर्घ्य बोध हो उसके साथ अनु अव्यय का विकल्प से समास होता है। यथा, अनुगङ्गम्, गङ्गाया अनु, वाराणसी ; गङ्गा दैर्घ्यसदृशदैर्घ्योपलक्षिता इत्यर्थः।

१३ । परमाध्यौ षष्ठ्या ।

षष्ठ्यन्त पद के साथ पार और मध्य शब्द का विकल्प से अव्ययीभाव समास होता है। यथा, समुद्रस्य पारं पारे समुद्रम् गङ्गाया मध्यं मध्येगङ्गम्। निपातन से एकार आगम होता है एक पक्ष में षष्ठी समास होता है।

१४ । संख्या नदीभिः समाहारे ।

समाहार बोध होने से नदी वाचक सुवन्त पद के साथ संख्या-वाचक पद का अव्ययीभाव समास होता है। यथा, तिसृणां गङ्गानां समाहारः त्रिगङ्गम्, पञ्चनदम, सप्तगोदावरम्।

१५ । अपन्यदार्थे च संज्ञायाम ।

संज्ञा बोध होने से और अन्य पदार्थ बोध होने से नदी वाचक शब्द के साथ सुवन्त पद का अव्ययीभाव समास होता है। यथा उन्मत्ता गङ्गा यस्मिन् उन्मत्त गङ्गम्, लोहितगङ्गम्, तूष्णीगङ्गम् शनैर्गङ्गम् ' इमानि देश विशेषनामानि।

१६। तिष्ठद्गुप्रभृतीनि।

अव्ययीभाव समास में तिष्ठद्गु आदि (१) शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, तिष्ठन्ति गावो यस्मिन् काले दोहाय तिष्ठद्गु, आयान्ति यस्मिन् काले गावो गोष्ठम् आयतीगवम्।

१७। शरदादेरन्।

अव्ययीभाव समास होने से शरद आदि (२) शब्दों के उत्तर अन् होता है, न् इत् होता है और अ रहता है। यथा, उपशरदम्, प्रतिदिशम्, आहिमवतम्, अनुदृशम्।

१८। जरया जरस्।

अन् होने से जरा शब्द के स्थान में जरस् होता है। यथा, उपजरसम्।

१९। सरजसोपशुने।

सरजस् और उपशुन निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, रजोऽप्यपरित्यज सरजसम्, शुनः समीपम् उपशुनम्।

---

[१] तिष्ठद्गु वहद्गु आयतीगवम् खलेयवम्, खलेबुसम्, लूनयवम् लूयमानयवम्, पूतयवम्, पुयमानयवम्, संहृतयवम्, संह्रियमाणयवम्, संहृतबुसम्, संह्रियमाणबुसम् समभूमि, समपदाति, सुषमम्, विषमम्, दुःषमस, निषमम्, अपसमम् आयतीसमम्, प्रोढ़म्, पापसमम्, पुण्यसमम् प्राह्णम्, प्ररथम्, प्रमृगम्, प्रदक्षिणम्, अपरदक्षिणम्, सम्प्रति-असम्प्रति !

(२) शरद, विपाश्, अनस्, मनस्, उपानह्, दिव्, हिमवत्, हिरुक्, विद्सद्, दिश, दृश्, विश्, चतुर्, त्यद्, तद्, यद्, कियत् जरा।

२० । प्रति परः समनुभ्योऽक्ष्णः ।

प्रति, परस्, सम् और अनु इन के परवर्त्ती अक्षि शब्द के उत्तर अन् होता है। यथा, प्रत्यक्षम्, परोक्षम्, समक्षम्, अन्वक्षम्।

२१ । अनन्तात् ।

अन् भागान्त शब्दों के उत्तर अन् होता है । यथा, उपराजम्, अध्यात्मम्, प्रत्यध्वम्।

२२ । वा नपुंसकात् ।

नपुंसक अन्भागान्त शब्द के उत्तर विकल्प से अन् होता है। यथा, उपचर्म्मम् उपचर्म्म ।

२३ । गिरि नदी पौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः ।

गिरि, नदी, पौर्णमासी और आग्रहायणी के उत्तर विकल्प से अन् होता है। यथा, उपगिरम्, उपगिरि; उपनदम्, उपनदि ; उपपौर्णमासम्, उपपौर्णमासि ;उपाग्रहायणम्, उपाग्रहायणि।

२४ । स्पर्शान्ताच्चापञ्चमात् ।

पञ्चम भिन्न स्पर्शवर्णान्त शब्द के उत्तर विकल्प से अन् होता है। यथा, उपदृशदम्; उपदृशत् अनुसमिधम्' अनुसमित् ।

२५ । प्रतेरुरसः सप्तमीस्थात् ।

प्रति शब्द के परवर्ती सप्तमी अर्थ में वर्तमान उरस् शब्द के उत्तर अन् होता है । यथा, उरसि प्रत्युरसम् ।

२६ । अनुगवमायामे ।

दैर्घ्य बोध होने से अनुगवम् पद निपातन से सिद्ध होता है । यथा, गोः पश्चात् अनुगवम् ।

तत्पुरुष समास ।

Determinative compounds.

१ । तत्पुरुषः ।

इस प्रकरण में जो समास हैं उनका नाम तत्पुरुष है ।

२ । परलिङ्गं तत्पुरुषे ।

तत्पुरुष समास होने पर समस्तभाग को परपद का लिङ्ग प्राप्त होता है ।

३ । रात्राह्नाहाः पुमांसः ।

तत्पुरुष समास होने पर समस्त भाग का अन्तस्थित रात्र, अह्न और अह पुलिङ्ग होता है ।

४ । रात्रंनपुंसक संख्यापूर्व्वम् ।

संख्यावाचक शब्द पूर्व्व में रहने से रात्र नपुंसक लिङ्ग होता है ।

५ । पुण्यादहः ।

पुण्य शब्द के परवर्त्ती अह नपुंसक लिङ्ग होता है ।

६। द्वितीया श्रितादिभिः।

श्रित आदि सुवन्त पदों के साथ द्वितीयान्त पद का समास होता है। यथा, कष्टं श्रितः कष्टश्रितः, दुःखमतीतः दुःखातीतः कूपं पतितः कूपपतित गृहं गतः गृहंगतः, तुहिनमत्यस्तः तुहिनात्यस्तः, सुखं प्राप्तः सुखप्राप्तः, सुखमापन्नः सुखापन्नः ग्रामं गामी ग्रामगामी, अन्नं बुभुक्षुः अन्नबुभुक्षुः, वेदं विद्वान् वेदविद्वान्।

७। खट्वाक्तेन कुत्सायाम्।

निन्दा बोध होने से क्त प्रत्यय से बने सुवन्त पद के साथ द्वितीयान्त खट्वा शब्द का समास होता है। यथा, खट्वाम् आरूढ़ः, खट्वारूढ़, उत्पथप्रस्थित इत्यर्थः। नित्य समास।

८। काला अत्यन्तसंयोगे।

अत्यन्तसंयोग बोध होनेसे सुवन्त पद के साथ द्वितीयान्त कालवाचक सुवन्त पद का समास होता है। यथा, मुहूर्त्तं सुखम् मुहुर्त्तसुखम्, मासंगम्यः मासगम्यः, वर्षं भोग्यः वर्ष भोग्य, मुहूर्त्तं, मासं, वर्षं, व्याप्य इत्यर्थः।

९। तृतीया पूर्व्वादिभिः।

पूर्व्व आदि सुवन्त पदों के साथ तृतीयान्त पद का समास होता है। यथा मासेन पूर्व्वः, मासपूर्व्वः, वर्षेण अवरः वर्षावरः, वाचा कलह वाकलहः, गुड़ेन मिश्रः गुड़मिश्रः आचारेण

श्लक्ष्णः, आचारश्लक्ष्णः, धनेन अर्थः धनार्थः, मात्रा सदृशी, मातृसदृशी पित्रा समः पितृसमः।

१०। ऊनार्थैश्च।

ऊनार्थकसुवन्त पदों के साथ तृतीयान्त पद का समास होता है। यथा, एकेन ऊनः एकोनः, विद्यया हीनः विद्याहीनः, श्रमेण रहितः श्रमरहितः, गर्व्वेण शून्यः गर्व्वशून्यः, अङ्गेन विकलः अङ्गविकलः।

११। कृता कर्त्तृकरणयोः।

कृत् प्रत्यय से बने सुवन्त पदों के साथ कर्त्ता और करण में विहित तृतीयाविभक्त्यन्त पद का समास होता है। यथा, कर्त्ता में—व्याघ्रेण हतः व्याघ्रहतः, अहिना दष्टः अहिदष्टः, व्यासेन रचितः व्यासरचितः, पाणिनिना प्रणीतं पाणिनि-प्रणीतम्, नारदेन प्रोक्तं नारदप्रोक्तम्, द्विजेन भक्ष्यं द्विजभक्ष्यम्, पुत्रेण देयं पुत्रदेयम्। करण में—नखैर्भिन्नः, नखभिन्नः, असिना छिन्नम् असिच्छिन्नम्, अग्निना दग्धः अग्निदग्धः, जलेन सिक्तः जलसिक्तः, अञ्जलिना पेयम्, अञ्जलिपेयम् शिरसा धार्य्यं शिरोधार्य्यम्।

१२। चतुर्थी बलिहितसुखैः।

सुवन्त बलिः, हित और सुख शब्द के साथ चतुर्थ्यन्त पद का समास होता है। यथा, भूताय बलिः भूतबलिः, पुत्राय हितम् पुत्रहितम्, भ्रात्रे सुखम् भ्रातृसुखम्।

१३। अर्थेन च।

अर्थ शब्द के साथ चतुर्थ्यन्त पद का समास होता है। और समस्त भाग को विशेष्य का लिङ्ग प्राप्त होता है। यथा, द्विजार्थः सूपः, द्विजार्था यवागूः, द्विजार्थं पयः। नित्य समास।

१४। विकृतिः प्रकृत्या तादर्थ्ये।

तादर्थ्य बोध होने से प्रकृति स्थलीय सुवन्त पद के साथ विकृतिस्थलीय चतुर्थ्यन्त पद का समास होता है। यथा, कुण्डलाय हिरण्यं कुण्डलहिरण्यम्, यूपाय दारु-यूपदारु।

१५। पञ्चमी भयादिभिः।

भय आदि सुवन्त पद के साथ पञ्चम्यन्त पद का समास होता है। यथा, व्याघ्रात् भयम् व्याघ्रभयम्, व्याघ्रात् भीतः व्याघ्रभीतः, व्याघ्रात् भीः व्याघ्रभीः, व्याघ्रात् भीतिः व्याघ्र-भीति गृहात निर्गतः गृहनिर्गतः, अधर्म्मात् जुगुप्सुः अध-र्म्मजुगुप्सुः, सुखात् अपेत सुखापेतः, बन्धनात् मुक्तः बन्धन-मुक्तः, रथात् पतितः रथपतितः, तरङ्गात् अपत्रस्तः तरङ्गाप-त्रस्त विदेशात् आगत विदेशागतः।

१६। षष्ठी समर्थेन।

समर्थ सुवन्त पद के साथ षष्ठयन्त पद का समास होता है। यथा, गङ्गायाः जलम् गङ्गाजलम्, तरोः छाया तरुच्छाया, अग्नेः शिखा अग्निशिखा, वायोः वेग वायुवेगः, जलस्य प्रवाहः जलप्रवाहः, सुखस्य भोगः सुखभोगः, पयसः पानं पयःपानम्,

कन्यायाः दानं कन्यादानम्, गवां दोहः गोदोहः, आज्ञायाः भङ्गः आज्ञाभङ्गः, दशायाः अन्तः दशान्तः, सूर्य्यस्य उदयः सूर्य्योदय, वृष्टेः पातः वृष्टिपातः, शिरसः छेदः शिरश्छेदः, गवां वधः गोवधः, पितु गृहं पितृगृहम्, राज्ञः भवनं राजभवनम्, मनोः बचनं मनुवचनम्, अर्थस्य नाशः अर्थनाशः, कुपस्य उदकं कुपोदकम्।

१७। न निर्द्धारणे।

निर्द्धारण अर्थ में विहित षष्ठी का समास नहीं होता। यथा, मनुष्याणां क्षत्रियः शूरः गवां कृष्णा बहुक्षीरा।

१८। न पूरणार्थैः।

पूरणार्थक पद के साथ षष्ठ्यन्त पद का समास नहीं होता। यथा, राज्ञां प्रथमः, पुत्रयोः द्वितीयः, भ्रातृणां तृतीयः, शिष्याणां चतुर्थः, छात्राणां पञ्चमः।

१९। न गुणवाचिभिः।

गुणवाचक पद के साथ षष्ठ्यन्त पद का समास नहीं होता। यथा, पटस्य शौक्ल्यम्, कोकनदस्य लौहित्यम्, आकाशस्य नीलिमा, द्राक्षायाः माधुर्य्यम्। कहीं २ होता है। यथा, अर्थस्य गौरवम् अर्थगौरवम्, बुद्धेः मान्द्यम् बुद्धिमान्द्यम्, अर्थस्य कार्श्यम् अर्थकार्श्यम्।

२०। न तृप्त्यर्थैः।

तृप्त्यर्थक पद के साथ षष्ठयन्त पद का समास नहीं होता। यथा, अपां तृप्तः, फलानां सुहितः अन्नस्य आशितः।

२१। न तृजकाभ्यां याजकादिवर्ज्जम।

तृच् और अक् प्रत्यय के योग से बने हुए शब्दों के साथ षष्ठयन्त पद का समास नही होता। यथा, तृच—जगतः स्रष्टा, सुखस्य दाता, दुःखस्य हर्त्ता। अक—प्रजानां पालकः, वृक्षाणां छेदकः, शत्रूणां घातकः। याचक आदि का होता है। यथा, शूद्रयाजकः, देवपूजकः, राजपरिचारकः, वेदाध्यापकः, सर्वोत्साहकः, देवस्नातकः जलपरिवेचकः, भुवनभर्त्ता, हविर्होता, गुणग्रहीता, गुणग्राहकः।

२२। सप्तमी शौण्डादिभिः।

शौण्ड आदि (१) शब्दों के साथ सप्तम्यन्त पद का समास होता है। यथा, दाने शौण्डः दान शौण्डः, शास्त्रे प्रवीणः शास्त्र प्रवीणः, रणे पण्डित रणपण्डितः क्रीड़ायां कुशलः क्रीड़ाकुशलः कर्म्मसु निपुणः कर्म्मनिपुणः, आतपे शुष्कः आतपशुष्कः, स्थाल्यां पक्व. स्थालीपक्व.।

२३। कृत्यैऋणे।

ऋण बोध होने से कृत्य प्रत्यय से हुए बने शब्दों के साथ सप्तम्यन्त पद का समास होता है। यथा, मासे देयं मासदेयम् ऋणम् वर्षे परिशोध्यं वर्षपरिशोध्यम् ऋणम्।

---

(१) शोंड, धूर्त, कितव, प्रवीण, संवीत, पटु, पंडित, कुशल, चपल, निपुण सिद्ध, शुष्क और पक्व इत्यादि।

२४ । क्तेनाहोरात्रावयवाः ।

क्त प्रत्यय से बने हुए शब्दों के साथ दिन और रात्रि के अवयव बोधक सप्तम्यन्त पदों का समास होता है । यथा, पूर्व्वाह्णे कृतं पूर्व्वाह्णकृतम्, अपराह्णे कृतं अपराह्णकृतम्, पूर्व्व रात्रे कृतं पूर्व्वरात्रकृतम्, अपररात्रे कृतं अपररात्रकृतम् ।

२५ । कुत्सायां काकवाचिना ।

निन्दा बोध होने से काकवाचक सुबन्त शब्दों के साथ सप्तम्यन्त पद का समास होता है । यथा, तीर्थे काक इव तीर्थे काकः, तीर्थवायसः तीर्थध्वांक्षः, अनवस्थित इत्यर्थः ।

२६ । पूर्व्वादिरेकदेशिनैकवचने ।

एक वचनान्त अवयवी के साथ पूर्व्व, अपर अधर और उत्तर इन शब्दों का समास होता है । यथा, पूर्व्वं कायस्य पूर्व्वकायः, अपरकायः अधरकायः, उत्तरकायः । एकवचन नहीं होने से नहीं होता । यथा, पूर्व्वं छात्राणां आमन्त्रयस्व ।

२७ । अर्द्धं नपुंसकम् ।

एकवचनान्त अवयवी के साथ क्लीव लिङ्ग अर्द्ध शब्द का समास होता है । यथा, अर्द्धं पिप्पल्याः अर्द्धं पिप्पली । अन्य लिङ्ग में नहीं होता । यथा, ग्रामस्य अर्द्धः । एकवचन न होने से नहीं होता । यथा, अर्द्धं पिप्पलीनाम् ।

२८ । कालाः परिमाणिना ।

परिच्छेदवाचक पद के साथ कालवाचक पद का समास होता है। यथा, मासो जातस्य मास जातः, वर्षो मृतस्य वर्षमृतः।

२९। एकदेशवाचिना च।

एक देशवाचक पद के साथ कालवाचक पद का समास होता है।

३०। अह्नोऽह्नो एकदेशात्।

एक देशवाचक पद के परवर्त्ती अहन् शब्द के स्थान में अह्न होता है। यथा, पूर्व्वम् अह्नः पूर्व्वाह्णः, मध्यम् अह्नः मध्याह्नः अपरम् अह्नः अपराह्णः, सायम् अह्नः सायाह्नः।

३१। रात्रेरन्।

एकदेशवाचक शब्द के परवर्त्ती रात्रि शब्द के उत्तर अन् होता है न् इत् होता है और अ रहता है। यथा, पूर्व्वंरात्रेः पूर्व्वरात्रः, मध्यं रात्रे. मध्यरात्रः, अपरं रात्रेः अपररात्रः।

३२। विभाषा द्वितीय-तृतीय-चतुर्थ-तुर्य्याणि।

षष्ठ्यन्त अवयवी के साथ द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और तुर्य्य इन शब्दों का विकल्प से समास हाता है। यथा, द्वितीयं भिक्षाया द्वितीयभिक्षा, तृती भिक्षायाः तृतीयभिक्षा, चतुर्थं भिक्षायाः चतुर्थभिक्षा, तुर्य्यं भिक्षायाः तुर्य्यभिक्षा। एक पक्ष में षष्ठी समास होता है। यथा, भिक्षाया. द्वितीयम्

भिक्षा द्वितीयम्, भिक्षा तृतीयम्, भिक्षा चतुर्थम्, भिक्षा तुर्य्यम्।

३३। अलं चतुर्थ्या पुंवच्च।

चतुर्थ्यन्त पद के साथ अलम् इस अव्यय का समास और चतुर्थ्यन्त स्त्रीलिङ्ग पद का पुंवद्भाव* होता है। यथा, अलं जीविकायै अलञ्जीविका।

३४। अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया।

क्रान्त आदि अर्थ में द्वितीयान्त पद के साथ अति आदि का समास होता है और स्त्रीलिङ्ग द्वितीयान्त पद का पुंवद्भाव होता है। यथा, अतिक्रान्तः खट्वाम् अतिखट्वः, उत्क्रान्तो वेलाम् उद्वेलः।

३५। अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया।

क्रुष्ट आदि अर्थ में तृतीयान्त पद के साथ अव आदि का समास और स्त्रीलिङ्ग तृतीयान्त पद का पुंवद्भाव होता है। यथा, अवक्रुष्टः कोकिलया अवकोकिलः।

३६। पर्य्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या।

ग्लान आदि अर्थ में चतुर्थ्यन्त पद के साथ परि आदि का समास और स्त्रीलिङ्ग चतुर्थ्यन्त पद का पुंवद्भाव होता है। यथा, परिग्लानः अध्ययनाय पर्य्यध्ययनः, परिग्लानः सेवायै परिसेवः।

---

*स्त्रीलिङ्ग से पुल्लिङ्ग हो जाता है। अनुवादक।

३७। निरादयः क्रान्तादौ पञ्चम्या।

क्रान्त आदि अर्थ में पञ्चम्यन्त पद के साथ निर् आदि का समास और स्त्री लिङ्ग पञ्चम्यन्त पद का पुंवद्भाव होता है। यथा, निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः निष्कौशाम्बिः, उत्थितो निद्राया उन्निद्रः।

३८। सामिस्वयमौ क्तेन।

क्त प्रत्यय से बने हुए सुवन्त पद के साथ सामि और स्वयम् इन दो अव्ययों का समास होता है। यथा, सामिकृतम् सामिघटितम्; स्वकृतम्, स्वयन्दत्तम।

३९। नञ् सुपा।

सुवन्त पद के साथ नञ् का समास होता है। यथा, न ब्राह्मणः अब्राह्मणः, न मोघः, अमोघः, न प्रियः अप्रियः, न विकृत अविकृतः न सिद्धः असिद्धः, न सुखम् असुखम्, न दर्शनम्, अदर्शनम्, न उपलम्भः अनुपलम्भः।

४०। ईषत्कृता।

कृदन्त भिन्न सुवन्त पद के साथ ईषत् अव्यय का समास होता है। यथा, ईषत्कड़ारः, ईषत्पिंगलः, ईषद्विकचः, ईषन्मुकुलित।

४१। आङीषदर्थे।

ईषदर्थ बोध होने से सुवन्त पद के साथ आङ इस अव्यय

का समास होता है । यथा, आमधुरः, आपिंगलः, आपाण्डुरः, आलोहितः ।

४२ । स्वती पूजायाम् ।

प्रशंसा अर्थ बोध होने से सुवन्त पद के साथ सु और अति, इन दो अव्ययों का समास होता है । यथा, सुपुरुषः, सुब्राह्मण.. अतिमृदुः, अतिदयालुः ।

४३ । दुर्निन्दायाम् ।

निन्दा अर्थ बोध होने से सुवन्त पद के साथ दुर् इस अव्यय का समास होता है । यथा, दुष्कुलम् दुर्नीतिः, दुश्चरितम् दुष्पुरुषः ।

४४ । कुः पापार्थे ।

कुत्सित अर्थ बोध होने से सुवन्त पद के साथ कु इस ०यय का समास होता है । यथा, कुब्राह्मणः. कुपुरुषः कुसंस्कारः ।

४५ । धातुभिरुपपदानि ।

धातुओं के साथ उपपदों (१) का समास होता है । यथा, कुम्भकारः, प्रभाकरः, निशाकरः, हितकरः, प्रीतिकरः

---

(१) जिन सब सुवन्त पदों के परवर्त्ती धातु के उत्तर कृत् प्रत्यय होता है, उनको उपपद कहते हैं । कुम्भकारः, यहां कुम्भम् इस उपपद के साथ कृ धातु का समास हुआ, कुम्भकृ ऐसा होनेसे अण् होता है । इसी प्रकार सर्व्वत्र ।

अग्रसरः, जलचरः, पार्श्वचरः, शिलाशयः, सरसिजम्, पङ्कजम्
अण्डजः, जलजः, पतगः, भुजगः।

४६। उपसर्गाश्च।

धातु के साथ उपसर्गों का समास होता है यथा, सम्—संस्करोति, संस्कारः, संस्कृत्य; वि—विजयते, विजयः, विजित्य, अभि–अभिसिञ्चति, अभिषेकः, अभिषिच्यः आ—आरभते, आरम्भः, आरभ्य।

४७। ऊर्य्यादि-च्वि-डाचश्च।

धातु के साथ ऊरी आदि (१) शब्दों का, एवं च्वि और डाच् प्रत्ययों का समास होता है। यथा, ऊरी—ऊरीकरोति, ऊरीकरणम्, ऊरीकृत्य; आविस्—आविष्करोति, आविष्क्रिया आविष्कृत्य; प्रादुस्—प्रादुर्भवति, प्रादुर्भावः, प्रादुर्भूयः। च्वि—स्वीकरोति; स्वीकारः, स्वीकृत्य; भस्मीभवति, भस्मीभावः, भस्मीभूयः; डाच्—समयाकरोति समयाकरण समया कृत्य, दुःखाकरोति, दुःखाक्रिया, दुःखाकृत्य।

४८। अनुकरणञ्चानितिपरम्।

धातु के साथ अनुकरण शब्द का समास होता है। यथा, खात्करोति, खात्करणम्, खात्कृत्य; द्राङ्करोति, द्राङ्क्रिया, द्राङ्कृत्य। इति शब्द परे रहने से नही होता। यथा, खादिति, कृत्वा निष्ठीवति, द्रामिति कृत्वा पतति।

---

(१) ऊरी, उररी, आविस्, प्रादुस् स्वधा, स्वाहा, वषट्, वौषट् इत्यादि।

४९। आदरानादरयोः सदसती।

आदर और अनादर अर्थ में क्रम से धातु के साथ सत् और असत् शब्दों का समास होता है। यथा, सत्करोति, सत्कारः, सत्कृत्य; असत्करोति, असत्क्रिया, असत्कृत्य।

५०। अलम् भूषणे।

भूषण अर्थ बोध होने से धातु के साथ 'अलम्' शब्द का समास होता है। यथा, अलङ्करोति, अलङ्करणम्, अलङ्कृत्य,

५१। अन्तरपरिग्रहे।

धातु के साथ अन्तर् शब्द का समास होता है। यथा, अन्तर्भवति, अन्तर्भावः अन्तर्भूय। परिग्रह अर्थ में नहीं होता। यथा, अन्तर्हत्वा गतः, हतं परिगृह्य गत इत्यर्थः।

५२। पुरोऽव्ययम्।

धातु के साथ पुरस् इस अव्यय का समास होता है। यथा, पुरस्करोति, पुरस्कारः, पुरस्कृत्य।

५३। अस्तम् च।

धातु के साथ अस्तम् इस अव्यय शब्द का समास होता है। यथा, अस्तङ्गच्छति. अस्तङ्गतः' अस्तङ्गत्य।

५४। अच्छ च वदगत्यर्थैः।

वद धातु और गत्यर्थ धातुओं के साथ "अच्छ" इस अ-

व्यय का समास होता है। यथा, अच्छवदति, अच्छोद्य; अच्छग च्छति, अच्छगत्यः, अभिसुखमित्यर्थः।

५५। अन्तर्द्धौ तिरः।

व्यवधानःबोध होने से धातु के साथ तिरस् इस अव्यय का समास होता है। यथा, तिरोभवति, तिरोभावः तिरोभूय।

५६। विभाषा कृञा।

कृधातु के साथ विकल्प से होता है। यथा, तिरस्कृत्य, तिरः कृत्वा।

५७। साक्षात्प्रभृतीनि च।

कृ धातु के साथ साक्षात् आदि (१) शब्दों का विकल्प से समास होता है। यथा, साक्षात्कृत्य, साक्षात्कृत्वा; नमस्कृत्य, नमः कृत्वा; वशेकृत्य, वशे कृत्वा; मिथ्याकृत्य, मिथ्या कृत्वा।

५८। अनुपश्लेष उरसिमनसी।

कृ धातु के साथ उरसि और मनसि इन दोनों सप्तम्यन्त पदों का समास होता है। यथा उरसिकृत्य, उरसिकृत्वा, स्वीकृत्येत्यर्थः। मनसिकृत्य, मनसि कृत्वा, निश्चत्येत्यर्थ.। उपश्लेष अर्थ में नहीं होता। यथा उरसि शयित्वा।

५९। मध्ये-पदे-निवचने च।

---

(१) साक्षात्, मिथ्या, नमस्, प्रादुस्, अर्थे, वशे, अमा- अद्धा, उष्णम् शीतम्, आर्द्रम्, विकसने प्रहसने इत्यादि।

कृ धातु के साथ मध्ये, पदे और निवचने, इन तीन सप्तम्यन्त पदों का विकल्प से समास होता है। यथा, मध्येकृत्य मध्ये कृत्वा; पदेकृत्य, पदे कृत्वा; निवचनेकृत्य, निवचने कृत्वा। उपश्लेष अर्थ में नहीं होता। यथा मध्ये शयित्वा. पदे धृत्वा।

६०। नित्यं हस्ते पाणावुपयमने।

विवाह अर्थ में कृ धातु के साथ हस्ते और पाणौ, इन दोनों सप्तम्यन्त पदों का सर्व्वदा समास होता है। यथा, हस्तेकृत्य, पाणौकृत्य, दारकर्म्म कृत्वेत्यर्थः।

६१। तत्पुरुषः समानाधिकरणपदः कर्म्मधारयः।

जिस तत्पुरुष समास में सब समस्यमान पद सामानाधिकरण हों अर्थात विशेष्य विशेषण भावापन्न, अथवा अभेदसम्बन्ध में एकार्थ प्रातिपदिक हों तो उनको कर्म्मधारय कहते हैं।

६२। विशेषणं विशेष्येण।

विशेष्य पद के साथ विशेषण पद का समास होता है। यथा, नीलम्, उत्पलम् नीलोत्पलम्, शीतः पवनः शीत पवनः उष्णम्, उदकम्, उष्णोदकम्, नवः पल्लवः, नवपल्लव., मधुर वचनं मधुरवचनम्, नवम् अन्नम् नवान्नम्, सर्वे लोकाः सर्व्वः लोका,विश्वे देवाः विश्देवाः, दृढ़ो वन्ध, दृढ़वन्धः, सुरभि चन्दनं सुरभिचन्दनम्, नवः जलधरः नवजलधरः, सन् पुरुषः सत्, पुरुषः, महान् देवः महादेवः महान् वीरः महावीरः

परमः पुरुषः परमपुरुषः, केवलः वैयाकरण. केवलवैयाकरणः, जरन् नैयायिक. जरन्नैयायिकः, सप्त ऋषयः सप्तर्षय. अष्टौ वसव. अष्टवसव नव ग्रहा. नवग्रहाः।

६३। पुंवत् पूर्व्वं भाषितपुंस्कं कर्मधारये।

कर्म्मधारय समास होने से भाषितपुस्कं (१) स्त्रीलिङ्ग पूर्व्व पद को पुंवद्भाव होता है। यथा, सुन्दरी महिला सुन्दर-महिला, कृष्णा चतुर्दशी कृष्णचतुर्दशी, पाचिका स्त्री पाच-कस्त्री, पञ्चमी कन्या, पञ्चमकन्या, सुकेशी भार्य्या सुकेशभार्य्या ब्राह्मणी भार्य्या ब्राह्मणभार्य्या,। उप् प्रत्यान्त का नही होता। यथा, वामोरू भार्य्या वामोरू भार्य्या।

६४। क्तेन नञ् विशिष्टेनानञ्।

नञ् विशिष्ट क्त प्रत्ययान्त पद का समास होता है। यथा, कृतञ्च तत अकृतञ्च कृताकृतम्, भुक्तञ्च तत अभुक्तञ्च भुक्ता-भुक्तम् पीतञ्च तत अपीतञ्च पीतापीतम्, क्लिष्टञ्च तत अक्लि-ष्टञ्च क्लिष्टाक्लिष्टम्, पक्वञ्च तत अपक्वञ्चापक्वापक्वम् केवल समान प्रकृति के स्थान में ही होता है, सिद्धञ्च अभुक्तञ्च, ऐसे स्थानो में समास नहीं होता।

६५। वर्णो वर्णेन।

वर्णवाचक पद के साथ वर्णवाचक पद का समास होता

(१) जितने शब्द स्त्रीलिङ्ग पुलिङ्ग दोनों होते है, इनको भाषितपुंसक कहते है; जैसे सुन्दर शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुलिङ्ग दोनों है। जो शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग है इनको भाषित पुंस्क नहीं कहते। जैसे श्री, लक्ष्मी आदि।

है। यथा, नीलश्च स लोहितश्च नीललोहितः लोहितश्च स शवलश्च लोहितशवलः, पीतश्च स धवलश्च पीतधवलः ।

६६ । पूर्व्वोत्तरकालयोः क्तः ।

पूर्व्वकाल और उत्तरकाल बोध होने से क्त प्रत्यान्त पद का समास होता है । यथा, पूर्व्वं स्नातः पश्चादनुलिप्तः स्नातानुलिप्तः, यातायातः, शयितोत्थितः, दत्तापहृतम् , भुक्तोद्गीर्णम् ।

६७ । उपमानानि साधर्म्म्यवचनैः ।

उपमान और उपमेय के समान धर्म्मबोधक शब्दों के साथ उपमानवाचक पदों का समास होता है । यथा, घन इव श्यामः घनश्यामः, अर्णव इव गभीरः अर्णवगभीरः, शैल इव उन्नतः शैलोन्नतः, अनल इव उज्ज्वलः, अनलोज्ज्वलः, नवनीतमिव कोमलं नवनीतकोमलम् ।

६८ । उपमेयानि व्याघ्रादिभिः साधर्म्म्याप्रयोगे ।

व्याघ्र आदि (१) उपमानवाचक पदों के साथ उपमेय पदों का समास होता है । यथा, पुरुषो व्याघ्र इव पुरुषव्याघ्रः,

---

(१) व्याघ्र, सिंह, ऋक्ष, वृक, वृष, वराह, कुञ्जर, चन्द्र, कमल किसलय इत्यादि ।

पुरुषः सिंह इव पुरुष सिंहः, राजाचन्द्र इव राजचन्द्रः मुखम् कमलम् इव मुखकमलम्, करः किसलयमिव करकिसलयम्, अधरः पल्लव इव अधर पल्लवः वदनं सुधाकर इव बदनसुधाकरः। उपमान और उपमेय के सामान्य धर्म्म का प्रयोग रहने से नहीं होता। यथा, पुरुषो व्याघ्र इव शूरः, मुखम् कमलमिव सुन्दरम्।

६९। श्रेण्यादयः कृतादिभिरभूततद्भावे।

अभूततद्भाव अर्थ बोध होने से कृत आदि (१) शब्दों के के साथ श्रेणी आदि (२) शब्दों का समास होता है। यथा, अश्रेणय. श्रेणय कृता श्रेणिकृता, अपूगा पूगाः कृता पूगकृताः, अराशयः राशय कृता राशिकृता, अश्रेणयः श्रेणयो भूताः श्रेणिभूताः अनिपुणा निपुणा भूताः निपुणभूताः, अकुशलाः कुशला भूताः कुशलभूताः (३)।

७०। संख्यापूर्ब्बो द्विगुः।

---

(१) कृत, मित, मत, भूत, उक्त, युक्त, समाज्ञात, समाम्नात, समाख्यात, सम्भावित, संसेवित, अवधारित, अवकल्पित, निराकृत, उपकृत, उपाकृत, दृष्ट, कलित, दलित, उदाहृत, विश्रुत, उदित।

(२) श्रेणि, पूग, मुकुन्द, राशि निचय, विशेष, विधान, पर, इन्द्र, देव, मुण्ड, भूत, प्रवण, वदान्य, अध्यापक, अभिरूपक, ब्राह्मण, क्षत्रिय, विशिष्ट, पटु, पण्डित, कुशल, चपल, निपुण, कृपण।

(३) च्वि प्रत्यय होने से समस्त तत्सम्बन्धीनकार्य्य भी होते हैं। यथा, श्रेणीकृत, पूगीकृत, राशीकृत, श्रेणीभूत, निपुणीभूतः, राशीभूतः, कुशलीभूतः इत्यादि।

जिस कर्मधारय के पूर्व पद के स्थान में संख्यावाचक शब्द हो उसको द्विगु कहते हैं।

७१ । तद्धितार्थोत्तरपद समाहारेषु ।

तद्धित अर्थ में, उत्तर पद रहने से, और समाहार बोध होने से, द्विगु समास होता है। यथा, तद्धितार्थ में—पञ्चभिर्गोभिः क्रीतः पञ्चगुः; उत्तर पद परे रहने से—पञ्च हस्ताः प्रमाणमस्य पञ्चहस्तप्रमाणः। प्रमाण शब्द उत्तर पद परे रहने से पञ्च और हस्ताः इन दोनों पदों का द्विगु समास हुआ।

७२ । अदन्ताद्दीप् समाहारे ।

समाहार द्विगु होने से अकारान्त शब्द के उत्तर ईप् होता है। यथा, त्रयाणां लोकानां समाहारः त्रिलोकी, चतुर्णां पदानां समाहारः चतुष्पदी, पञ्चानां नलानां समाहारः पञ्चनली, सप्तानां शतानां समाहारः सप्तसती।

७३ । न भुवनादेः ।

भुवन आदि के उत्तर ईप् नहीं होता। यथा, त्रयाणां भुवनानां समाहारः त्रिभुवनम् चतुर्णां युगानां समाहारः चतुर्युगम्, पञ्चानां पात्राणां समाहारः पञ्चपात्रम्।

७४ । मयूरव्यंसकादयः ।

मयूरव्यंसक आदि निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, मयूरो व्यंसकः मयूरव्यंसकः, उदक् च अवाक् च उच्चावचम्, नास्ति किञ्चन यस्य स अकिञ्चनः, नास्ति कुतोऽहि भयं यस्य

स अकुतोभयः, अन्योऽर्थः अर्थान्तरम्, अन्यो देशः देशान्तरम्।

७५। आख्यातमाख्यातेन क्रियासातत्ये।

क्रिया का अनुष्ठान निरन्तर बोध होने से आख्यात पद के साथ समास होता है, और यह पद निपातन से सिद्ध होते हैं यथा, अश्नीत पिबत इत्येवं सततमभिधीयते यस्यां क्रियायां सा अश्नीतपिबता, पचतभुञ्जता, खादतमोदता, खादताचमता।

७६। सर्व्वपुण्यसंख्याव्ययेभ्यो रात्रेरन्।

सर्व्व, पुण्य, संख्यावाचक और अव्यय शब्दों के परवर्त्ती रात्रि शब्द के उत्तर अन् होता है। यथा, सर्व्वा रात्रिः सर्व्वरात्रः, पुण्या रात्रिः पुण्यरात्रः, द्विरात्रम्, त्रिरात्रम्, पञ्चरात्रम् दशरात्रम्, अतिरात्रः।

७७। अह्नोऽह्नश्च।

सर्व्व, पुण्य, संख्यावाचक और अव्यय शब्दों के परवर्त्ती अहन् शब्द के उत्तर अन् और अहन् के स्थान में अह्न होता है। यथा, सर्व्वमहः सर्व्वाह्नः, द्वयोरह्नोः भवः द्व्यह्नः; पञ्चसु अहःसु भव. पञ्चाह्नः।

७८। न संख्यायाः समाहारे।

समाहार होने से संख्यावाचक के परवर्त्ती अहन् शब्द के

स्थान में अह्न् नहीं होता। यथा, द्वयोरह्नोः समाहारः द्व्यहः, त्र्यहः, दशाहः ।

७९ । न पुण्यैकाभ्याम् ।

पुण्य और एक शब्द के परवर्त्ती अहन् के स्थान में अह्न नहीं होता । यथा, पुण्याहम् , एकाहः ।

८० । संख्यायाव्ययाभ्यामंगुलेः ।

संख्यावाचक और अव्यय शब्द के परवर्त्ती अंगुलि शब्द के उत्तर अन् होता है। यथा, द्वेअंगुला प्रमाणमस्य द्वयङ्गुलम् त्र्यङ्गुलम् , निरङ्गुलम् ।

८१। राजाहःसखिभ्यष्टः ।

राजन् , अहन् और सखि शब्द के उत्तर ट होता है। ट् इत् होता है और अ रहता है। यथा, अङ्गानां राजा अङ्गराजः, महान् राजा महाराजः, परममहः परमाहः, उत्तममहः उत्तमाहः; राज्ञः सखा राज सखः, प्रियः सखा प्रियसखः ।

८२ । गोरतद्धितार्थे ।

गो शब्द के उत्तर ट होता है। यथा, राज्ञो गौः राजगवः, परमो गौः परमगवः, दश गावो धनमस्य दशगवधनः, पञ्चानां गवां समाहारः पञ्चगवम् । तद्धित में अर्थ में नहीं होता। यथा पञ्चभिर्गोभिः क्रीतः पञ्चगुः ।

८३ । मुखयार्थादुरसः ।

मुख्य इस अर्थ के वाचक उरस् शब्द के उत्तर ट होता है। यथा, अश्वानाम् उरः इव अश्वोरसम्, मुख्योऽश्व इत्यर्थः।

८४। अनोऽश्मायः-सरसां जाति संज्ञयोः।

जाति और संज्ञा बोध होने से अनस्, अश्मन्, अयस् और सरस् शब्दों के उत्तर ट होता है। यथा, जाति—उपानसम्, अमृताश्मः, कालायसम्, मण्डूक सरसम्; संज्ञा—महानसम्, पिण्डाश्मः, लोहितायसम्, जलसरसम्।

८५। ग्रामकौटाभ्यां तक्ष्णः।

ग्राम और कौट शब्द के परवर्त्ती तक्षन् शब्द के उत्तर ट होता है। यथा, ग्रामतक्षः, साधारण इत्यर्थः, कौटतक्षः, स्व-तन्त्रः इत्यर्थः। अन्यत्र, राजतक्षा।

८६। अतेः शुनः।

अति शब्द के परवर्त्ती श्वन् शब्द के उत्तर ट होता है। यथा, अतिक्रान्तः श्वानम् अतिश्वो-वराहः, अतिश्वी-सेवा

८७। उपमानादप्राणिषु।

उपमानवाचक श्वन् शब्द के उत्तर ट होता है। यथा, आकर्षः श्वेव आकर्षश्वः। प्राणी बोध होने से नहीं होता। यथा, वानरः श्वेव वानरश्वा।

८८। उत्तरमृगपूर्व्वोपमानेभ्यः सक्थ्नः।

उत्तर, मृग, पूर्व्व और उपमानवाचक शब्दों के परवर्त्ती सक्थि शब्द के उत्तर ट होता है। यथा, उत्तरसक्थम्, मृग-सक्थम्, पूर्व्वसक्थम्; उपमान—फलकमिव सक्थि फलक-सक्थम्।

८९। नावो द्विगोरतद्धितार्थे।

द्विगुसमासस्थित नौ शब्द के उत्तर ट होता है। यथा, द्वयोर्नावोः समाहारः द्विनावम्, पञ्च नावो धनमस्य पञ्चनाव-धनः। तद्धितार्थ में नहीं होता है। यथा, पञ्चभिर्नौभिः क्रीतः पञ्चनौः। द्विगुभिन्न स्थान में, राज्ञो नौः राजनौः, नवीना नौः नवीन नौः।

९०। अर्द्धाच्च।

अर्द्ध शब्द के परवर्त्ती नौ शब्द के उत्तर ट होता है। यथा अर्द्धं नावः अर्द्धनावम्। परलिङ्ग नहीं हुआ।

९१। खार्य्या विभाषा।

द्विगुसमास होने से, अथवा अर्द्ध शब्द पूर्व्व में रहने से खारी शब्द के उत्तर विकल्प से ट होता है। यथा, द्वे खार्य्यौ प्रमाणमस्य द्विखारम्, द्विखारि; अर्द्धं खार्य्याः अर्द्धखारम्; अर्द्धखारिम।

९२। द्वि त्रिभ्यामञ्जलेः।

द्विगु समास होने से द्वि और त्रि शब्द के परवर्त्ती अञ्जलि शब्द के उत्तर विकल्प से ट होता है। यथा, द्वे अञ्जली

प्रमाणमस्य द्व्यञ्जलम् ; द्व्यञ्जलि ; त्र्यञ्जलम् त्र्यञ्जलि । अन्यत्र द्वयोरञ्जलिः द्व्यञ्जलिः ।

९३ । जनपदाद्ब्रह्मणः ।

जनपदवाचक शब्द के परवर्त्ती ब्रह्मन् शब्द के उत्तर ट होता है। यथा, सुराष्ट्रस्य ब्रह्मा सुराष्ट्र ब्रह्मः, अवन्तिब्रह्मः कलिङ्गब्रह्मः। अन्यत्र, देवब्रह्मा-नारदः।

९४ । विभाषा कुमहद्भ्याम् ।

कु और महत् शब्द के परवर्त्ती होने पर विकल्प से होता है। यथा, कुत्सितो ब्रह्मा कुब्रह्मा, कुब्रह्म महाब्रह्मः, महा-ब्रह्मा।

९५ । अक्ष्णोऽचक्षुषि ।

अक्षि शब्द के उत्तर ट होता है। यथा, गवामक्षीव गवाक्षः चक्षु बोध होने से नहीं होता। यथा, बालकस्य अक्षि बाल-काक्षि।

९६ । वृद्ध-महज्जातेभ्य उक्ष्णः ।

वृद्ध, महत् और जात शब्द के परवर्त्ती उक्षन् शब्द के उत्तर ट होता है। यथा, वृद्धः उक्षा वृद्धोक्षः, महान् उक्ष महोक्षः, जातः उक्ष जातोक्षः।

९७ । निःश्रेयसपुरुषायुषे ।

निःश्रेयस और पुरुषायुष निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा निश्चितं श्रेयः निःश्रेयसम्, पुरुषस्यायुः पुरुषायुषम्।

९८। विभाषा छायादि नपुंसकम्।

छाया आदि (१) शब्द विकल्प से नपुंसक होते हैं। यथा, तरुच्छायम् तरुच्छाया, गोशालम्गोशाला।

९९। नित्यं छाया वाहुल्ये।

पूर्व्व पदार्थ का वाहुल्य वोध होने से छाया शब्द सदा नपुंसक होता है। यथा, इक्षुणां छाया इक्षुच्छायम्, शराण छाया शरच्छायम्।

१००। सभा प्रभुपर्य्यायपूर्व्वा।

प्रभु का पर्य्याय शब्द पूर्व्व में रहनेसे सभा शब्द सदा नपुंसक होता है। यथा, प्रभुसभम्, ईश्वरसभम। राजसभा आदि के स्थान में नहीं होता।

१०१। रक्षःपिशाचादिपूर्व्वा च।

रक्षस् और पिशाच आदि शब्द पूर्व्व में रहने से सभा शब्द सदा नपुंसक होता है। यथा, रक्षःसभम्, पिशाचसभमं अन्यत्र, मनुष्यसभा, देवदत्तसभा।

१०२। अशाला च।

शालाभिन्नार्थवाचक सभा शब्द सदा नपुंसक होता है। यथा, स्त्रीसभम्, स्त्रीणां समूहः इत्यर्थः; शिशुसभम्, शिशुनां समवाय इत्यर्थः।

---

(१) छाया, शाला, सेना, सुरा, निशा।

१०३ । पुंवत कुक्कुटी प्रभृतीनामण्डादौ ।

अण्ड आदि शब्द परे रहने से कुक्कुटी आदि का पुंवद्भाव होता है । यथा, कुक्कुट्यां अण्डं कुक्कुटाण्डम्, हंस्या अण्ड हंसाण्डम्, कुक्कुट्याः शावः, कुक्कुटशावः,हंस्या शावः हंसशावः मृग्याः पदं मृगपदम्, मृग्याः क्षीरं मृगक्षीरम् ।

—:o:—

बहुव्रीहि ।

Relative compounds.

१ बहुव्रीहिः ।

इस प्रकरण में जिन समासों का विधान होता है, उनका नाम बहुव्रीहि है ।

२ । अनेकमन्यपदार्थे ।

एकाधिक प्रथमान्त पद अन्य पदार्थ में विद्यमान रहने से बहुव्रीहि समास होता है । यथा, आरूढ़ो वानरोयम् आरूढ़वानरो वृक्षः, कृतं कर्म्म येन कृतकर्म्मा पुरुषः, दत्त धनं यस्मै दत्तधनो दरिद्रः, उद्धृतम् उदकं यस्यमात् उद्धृतोदकः कूपः, दीर्घौ बाहू यस्य दीर्घबाहुः पुरुषः, प्रफुल्लानि कमलानि यस्मिन् प्रफुल्लकमलं सरः ।

३ । संख्ययाभिरव्ययासन्नादूराधिकसंख्याः ।

सख्यावाचक शब्दों के साथ अव्यय, आसन्न, अदूर,

अधिक और संख्यावाचक शब्दों का बहुव्रीहि समास होता है।

४। संख्यया अव्ययासन्नादूराधिकसंख्याः संख्येये।

संख्यावाचक शब्दों के उत्तर ड होता है। यथा, दशानां समीपे ये ते उपदशाः, विंशतेरासन्नः आसन्नविंशाः, त्रिंशतोऽदूरे अदूरत्रिंशाः, चत्वारिंशतोऽधिका अधिकचत्वारिंशाः, द्वौ वा त्रयो वा द्वित्राः, पञ्च वा षड्वा पञ्चषाः बहुशब्द के उत्तर नहीं होता। यथा, बहुनां समीपे उपबहवः।

५। दिङ्नामान्यन्तराले।

अन्तराल बोध होने से दिग्वाचक पूर्व्व आदि शब्दों का बहुव्रीहि समास होता है। यथा, पूर्व्वस्या उत्तरस्याश्च दिशोरन्तरालंपूर्व्वोत्तरा दक्षिणस्याः पूर्व्वस्याश्च दिशारन्तरालं ।:, उत्तरस्याः पश्चिमायाश्च दिशोरन्तरालम् उत्तर पश्चिमा।

६। सहस्तृतीयया।

तृतीयान्त पद के साथ सह शब्द का बहुव्रीहि समास होता है।

७। सहः सो विभाषा।

बहुव्रीहि समास में सह शब्द के स्थान में विकल्प से स होता है। यथा, पुत्रेण सह सपुत्रः, सहपुत्रः अनुजेन सह सानुजः, सहानुज; बान्धवेन सह सबान्धवः, सहबान्धवः, भृत्येन सह सभृत्यः, सहभृत्यः।

८। रणव्यतिहारेतृतीयासप्तम्योःसरूपयोः।

परस्पर युद्धबोध होने से समान रूप तृतीयान्त और सप्तम्यन्त पदों का बहुब्रीहि समास होता है।

९। दीर्घोऽन्त्यः पूर्व्वस्य।

रणव्यतिहार में समास होने पर पूर्व्व पद का अन्त्य स्वर दीर्घ होता है।

१०। इच् परात् इच कर्म्मव्यतिहारे।

रणव्यतिहार में समास होने से परपद के उत्तर इच होता है। च् इत् होता है और इससे सिद्धपद अव्यय होता है इच् परे रहने से अन्त्य उ को गुण होता है। यथा, केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तं केशाकेशिं, दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तं दण्डादण्डि, मुष्टीमुष्टि, बाहूबाहवि (१) असयसि मुसलामुसली।

११। स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कायाः।

बहुब्रीहि समास में स्त्रीलिङ्ग शब्द परे रहने से भासितपुंस्क स्त्रीलिङ्ग शब्द को पुंवद्भाव होता है। यथा, स्थिरा बुद्धिरस्य स्थिरबुद्धि. महती मतिरस्य महामति, चित्रा गति-

---

(१) बोपदेव के मत से पूर्व्व पद के अन्त्य स्वर के स्थान में विकल्प से आ होता है। यथा, मुष्टामुष्टि, मुष्टीमुष्टि, बाहाबाहवि बाहूबाहवि। स्वरवर्ण परे रहने से नहीं होता। यथा, असासि।

रस्य चित्रगतिः दृढ़ा भक्तिः रस्य दृढ़भक्तिः, प्रिया भार्य्यायस्य, प्रियाभार्य्याः शीता गौरस्य शीतगुः।

१२। नोबन्तस्य।

बहुब्रीहि समास में ऊप् प्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग को पुंवद्भाव नहीं होता है। यथा, वामोरूः, भार्य्यास्य वामोरूभार्य्यः।

१३। न कोपधस्य।

जिस स्त्रीलिङ्ग शब्द के उपधा के स्थान में तद्धित का अथवा अक प्रत्यय का क हो तो उसको पुंवद्भाव नहीं होता। यथा, तद्धित—रसिका भार्य्यास्य रसिकभार्य्यः, अक्प्रत्यय—पाचिका [भार्य्यास्य पाचिकाभार्य्यः। अन्यत्र होता है। यथा एका भार्य्यास्य एकभार्य्यः।

१४। न संज्ञापूरणयोः।

संज्ञावाचक और पूरणवाचक स्त्रीलिङ्ग शब्दों का पुंवद्भाव नहीं होता। यथा, संज्ञावाचक-दत्ता भार्य्यास्य दत्ताभार्य्यः, गङ्गा भार्य्यास्य गङ्गाभार्य्यः, रोहिणी भार्य्यास्य रोहिणीभार्य्यः, रेवती भार्य्यास्य रेवतीभार्य्यः; पूरणवाचक-द्वितीया भार्य्यास्य द्वितीयाभार्य्यः, पञ्चमी भार्य्यास्य पञ्चमीभार्य्यः।

१५। न जाति-स्वांगयोः।

जातिवाचक और स्वाङ्गवाचक स्त्रीलिङ्ग शब्दों को पुंवद्भाव नहीं होता। यथा, जातिवाचक—ब्राह्मणी भार्य्यास्य ब्राह्मणीभार्य्यः, क्षत्रिया भार्य्यास्य क्षत्रियाभार्य्यः; स्वाङ्गवाचक-

सुकेशी भार्य्यास्य सुकेशीभार्य्यः, कृशाङ्गी भार्य्यास्य कृशाङ्गी भार्य्यः।

१६। न प्रियादिपूरणयोः।

बहुव्रीहि समास में प्रिया आदि (१) और पूरणवाचक शब्द परे रहने से पूर्ववर्ती स्त्रीलिङ्ग शब्द को पुंवद्भाव नहीं होता। यथा, शोभना प्रियास्य शोभनाप्रियः, सुलोचना कान्तस्य सुलोचनाकान्तः।

१७। अप् पूरणीप्रमाणीभ्याम्।

पूरणवाचक और प्रमाणी शब्द के उत्तर अप् होता है; प् इत् होता है और अ रहता है। यथा, कल्याणी पञ्चमी यासां रात्रीणां ताः कल्याणी पञ्चमा रात्रयः (२) स्त्री प्रमाणी येषां ते स्त्री प्रमाणाः कुटुम्बिनः।

---

(१) प्रिया, मनोज्ञा, कल्याणी, सुभगा दुर्भगा, सचिवा, स्वा, कान्ता क्षान्ता, समा, चपला, वामना। भक्ति, तनया, दुहिता, वे तीन शब्द भी प्रियादिगण में गिने जाते हैं। किन्तु सर्वत्र विपरीत प्रयोग देखा जाता है। इसलिये गण में नहीं गिने गये।

(२) मुख्य पूरणवाचक के उत्तर अप् होता है, गौण के उत्तर नहीं। कल्याणी पञ्चमी रात्रिर्यस्मिन् पक्षेस कल्याणा पञ्चमीकः पक्षः। यहां पूरण वाचक शब्द गौण हैः इसलिये इसके उत्तर अप् नहीं हुआ। असमस्त दशा में जिस अर्थ का वाचक है, समस्त दशा में भी उसी अर्थ का वाचक होने से मुख्य और असमस्त दशा में जिस अर्थ का वाचक है समस्त दशा में तद्भिन्नार्थवाचक होने से गौण कहते हैं। कल्याणपञ्चमा रात्रय, यहां पूरणवाचक शब्द असमस्त और समस्त दोनों दशा मे रात्रिवाचक है। इसलिये मुख्य है और कल्याणपञ्चमीकः पक्षः यहां पूरणवाचक शब्द

१८। नञ्-सु-वि-त्र्युपेभ्यश्चतुरः।

नञ्, सु, वि, त्रि, उप्, इनके परवर्ती चतुर शब्द के उत्तर अप् होता है। यथा, अविद्यमानानि चत्वार्य्यस्य अचतुरः, सुचतुरः, विचतुरः, त्रिचतुरः, उपचतुरः।

१९। नेतुर्नक्षत्रात्।

नक्षत्रवाचक शब्द के परवर्ती नेतृ शब्द के उत्तर अप् होता है। यथा, मृगनेत्राः, पुष्यनेत्राः रात्रयः।

२०। नाभेः संज्ञायाम्।

संज्ञा बोध होने से नाभि शब्द के उत्तर अप् होता है। यथा, ऊर्णनाभः, पद्मनाभः।

२१। अन्तर्बहिर्भ्यां लोम्नः।

अन्तर् और बहिस् शब्द के परवर्ती लोमन् शब्द के उत्तर अप् होता है। यथा, अन्तर्लोमानि यस्य अन्तर्लोमः, बहिर्लोमानि यस्य बहिर्लोमः।

२२। नञ् दुः सुभ्यः सक्थ्नो वा।

नञ्, दुर्, सु इन तीनों के परवर्ती सक्थि शब्द के उत्तर विकल्प से अप् होता है। यथा, असक्थः, असक्थिः, दुःसक्थः, दुःसक्थिः; सुसक्थः, सुसक्थिः।

असमस्त दशा में रात्रिवाचक है किन्तु समस्त दशा में रात्रिवाचक न होकर तद्भिन्नार्थ पक्षवाचक होता है इसलिये वह गौण है।

२३। सक्थ्यक्षिभ्यां षः स्वांगे।

स्वाङ्ग बोध होने से सक्थि और अक्षि शब्द के उत्तर ष होता है। ष् इत् होता है और अ रहता है। यथा, दीर्घे सक्थिनी अस्य दीर्घसक्थः पुरुष, वृत्ते सक्थिनी अस्याः वृत्तसक्थी नारी, दीर्घे अक्षिणी अस्मिन् दीर्घाक्षं वदनम्, विशाले अक्षिणी अस्याः विशालाक्षी देवी। स्वाङ्ग नहीं बोध होने से नहीं होता। यथा, दीर्घ सक्थि शकटम्, स्थूलाक्षि इक्षुदण्डः, स्थूलाक्षी वेणुयष्टिः।

२४। अंगुलेर्दारुणि।

दारु बोध होने से अङ्गलि शब्द के उत्तर ष होता है। यथा, पञ्चांगुलं दारु। दारु भिन्न स्थान में पञ्चांगुलिर्हस्तः।

२५। द्वित्रिभ्यां मूर्द्धः।

द्वि और त्रि शब्द के परवर्ती मूर्द्धन्य शब्द के उत्तर ष होता है। यथा, द्वौ मूर्द्धानावस्य द्विमूर्द्धः, त्रयो मूर्द्धानोऽस्य त्रिमूर्द्धः। अन्यत्र नहीं होता। यथा, पञ्च मूर्द्धानोऽस्य पञ्चमूर्द्धा।

२६। अस् नञ्-दुः-सुभ्यः प्रजायाः।

नञ्, दुर् और सु इनके परवर्ती प्रजा शब्द के उत्तर अस् होता है। यथा, अप्रजाः, दुष्प्रजाः, सुप्रजाः।

२७। मन्दाल्पाभ्याञ्च मेधायाः।

नञ्, दुरः, सु, मन्द और अल्प इनके परवर्त्ती मेधा शब्द के उत्तर अस् होता है। यथा, अमेधाः, दुर्मेधाः, सुमेधाः मन्द-मेधाः, अल्पमेधाः।

२८। धर्म्मादन् केवलात।

धर्म शब्द के उत्तर अन् होता है। यथा. सुधर्मा, शुभधर्मा, अर्ज्जितधर्मा। धर्म शब्द अन्य शब्द के साथ मिला रहने से नहीं होता है। यथा, परमस्वधर्मः।

२९। दक्षिणादीर्म्माल्लुब्धयोगे।

व्याध सम्बन्ध बोध होने से धर्म शब्द के परवर्ती ईर्म्म शब्द के उत्तर अन् होता है। यथा, दक्षिणे ईर्म्म व्रणं यस्य दक्षिणेर्मा, मृगः, व्याधेन दक्षिणे पार्श्वे कृतव्रण इत्यर्थः।

३०। प्र-सम्भ्यां जानुनो ज्ञुः।

प्र और सम् इन दोनों अव्ययों के परवर्ती जानु शब्द के स्थान में ज्ञु होता है। यथा, प्रज्ञुः, संज्ञुः।

३१ ऊर्द्ध्वाद्वि भाषा।

ऊर्द्ध्व शब्द के परवर्ती जानु शब्द का विकल्प से ज्ञुः होता है। यथा, ऊर्द्ध्वज्ञुः, ऊर्द्ध्वजानुः।

३२। नसोनासिकायाः संज्ञायाम्।

संज्ञा बोध होने से नाशिका शब्द के स्थान में नस होता है। यथा, द्रुरिबनासिका अस्य द्रुणस वार्द्धीव नासिकास्य

वार्द्धीणस·, गौरिव नासिकास्य गोनसः। स्थूल शब्द के उत्तर नहीं होता। यथा, स्थूला नासिकास्य स्थूलनासिकः। संज्ञा नही बोध होने से नहीं होता। यथा, तुङ्गा नासिका अस्य तुङ्गनासिक·पुरुषः।

३३ उपसर्गाच्च ।

उपसर्ग के परवर्ती नासिका शब्द के स्थान में नस होता है। यथा, प्रणसः उपनसः उन्नसः, ः

३४ । खुरखराभ्यां नस् च ।

खर और खुर शब्द के परवर्ती नासिका के स्थान में नस होता है। यथा, खरणसः, खरणाः ; खुरणसः खुरणाः।

३५ । विग्नाद्रयः ।

वि उपसर्ग के परवर्ती नासिका शब्द के स्थान में (विगत हो नासिका जिसकी इस अर्थ में) विग्न, विख्य, विक्खु और विख्र निपातन से सिद्ध होते हैं।

३६ । जानिजायायाः ।

जाया शब्द के स्थान में जानि होता है। यथा, युवतिर्जायास्य युवजानिः, प्रिया जायास्य प्रियजानि·, सुन्दरी जायास्य सुन्दरजानिः।

३७ । दुर्गंधादुत्सुपूतिसुरभिभ्यः ।

उत्, सु, पूति और सुरभि, इनके परवर्ती गंध शब्द के

उत्तर इ होता है। यथा, उद्गन्धिः, सुगन्धिः, पूतिगन्धिः, सुरभिगन्धिः। द्रव्यान्तर के गन्ध सम्बन्ध में नहीं होता। यथा सुगन्धः पवनः।

३८। अल्पसंयोगे।

अल्प संयोग बोध होने से गन्ध शब्द के उत्तर इ होता है। यथा, घृतगन्धि, दधिगन्धि, सूपगन्धि भोजनम्।

३९। उपमानाच्च।

उपमानवाचक, पद के परवर्त्ती गन्ध शब्द के उत्तर इ होता है। यथा, पद्मस्येव गन्धोऽस्य पद्मगन्धिः, करीषगन्धिः(१)

४०। पादस्य पादपमानादहस्त्यादेः।

उपमानवाचक पद के परवर्ती पाद शब्द के स्थान में पाद् होता है। यथा, व्याघ्रस्येव पादावस्य व्याघ्रपात्। हस्तिन् आदि (२) के परवर्ती का नहीं होता। यथा, हस्तिन इव पादावस्य हस्तिपादः।

४१। संख्याऽसुपूर्ब्बस्य च।

संख्यावाचक और सु पूर्व में रहने से पाद शब्द के स्थान में पाद् होता है। यथा, द्विपात्, त्रिपात्, चतुष्पात् सुपात्।

४२। स्त्रियां कुम्भादेः पद।

(१) वोपदेव के मत से विकल्प होता है।

(२) हस्तिन्, कुद्दाल, अश्व, अत, कपोत, जाल, गण्डे, गण्डोल, कुसूल, इत्यादि।

स्त्रीलिङ्ग में, कुम्भ आदि (१) के परवर्ती पाद् शब्द के स्थान में पद् होता है। यथा, कुम्भपदी, एकपदी, द्विपदी, त्रिपदी, शतपदी, विष्णुपदी, आर्द्रपदी।

४३। सुहृद्दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः।

मित्र और अमित्र दोनों अर्थ में क्रम से सुहृद्, और दुर्हृद्, ये दोनों शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, शोभनं हृदयमस्य सुहृत् मित्रम्, दुष्टं हृदयमस्य दुर्हृत् अमित्रः अन्यत्र सुहृदय., दुर्हृदयः।

४४। उरः प्रभृतिभ्य कप्।

उरस् आदि (२) शब्द के उत्तर कप् होता है प् इत् होता है और क रहता है। यथा, व्यूढमुरोऽस्य व्यूढोरस्कः, उपानद्भ्यां सह सोपानत्कः, भाषितः पुमाननेन भाषितपुंस्कः, न विद्यते अर्थोऽस्मिन् निरर्थकम्, अनर्थकम्।

४५। इनन्तात् स्त्रियाम्।

स्त्रीलिङ्ग में इन भागान्त शब्द के उत्तर कप् होता है। यथा, बहवोऽस्यां धनिनः बहुधनिका नगरी, बहवोऽस्यां वाग्मिनः बहुवाग्मिका सभा।

४६। ऋदन्तनदीभ्याञ्च।

---

(१) कुम्भ, एक, द्वि, त्रि, शत शूल, जाल, मुनि, गुण, सूत्र, गोधा तृण, विष्णु आर्द्र, कृष्ण, शुचि स्थूणा इत्यादि।

(२) उरस्, उपानह्, पुमस्, पयस् दधि, मधु, शालि, सर्पिस, अनडुह्, नौ, निर् और नञ् पूर्व्वक अर्थ।

ऋकारान्त और नदीसंज्ञक शब्द के उत्तर कप् होता है। यथा, ऋदन्त-एकपितृकः, समातृकः, मृतभर्तृका ; नदीसंज्ञक मृतपत्नीकः, बहुकुमारीकः।

४७। शेषाद्विभाषा।

पूर्व्वोक्त से भिन्न शब्दों के उत्तर विकल्प से कप् होता है। यथा, धृतधनुष्कः, धृतधनुः; लब्धयशस्कः, लब्धयशाः; मुण्डितशिरस्कः, मुण्डितशिराः; अर्ज्जितधनकः, अर्ज्जितधनः।

४८। नेयसुनः।

ईयसुन् प्रत्ययान्त शब्द के उत्तर कप् नहीं होता। यथा, बहुप्रेयान्, बहुप्रेयसी।

४९। न प्रशंसायां भ्रातुः।

प्रशंसा बोध होने से भ्रातृ शब्द के उत्तर कप् नहीं होता। यथा, सुभ्राता, पण्डितभ्राता साधुभ्राता। अन्यत्र, मूर्खभ्रातृकः, बहुभ्रातृकः।

५०। न नाड़ीतन्त्र्योः स्वाङ्गे।

स्वाङ्ग बोध होने से नाड़ी और तन्त्री शब्द के उत्तर कप् नहीं होता। यथा, बहुनाड़िः-कायः बहुतन्त्री-ग्रीवा। स्वाङ्ग नहीं बोध होने से, बहुनाड़िकः स्तम्भः, बहुतन्त्रीका वीणा।

५१। सुप्रातादयः।

बहुव्रीहि समास में सुप्रात आदि शब्द निपातन से सिद्ध

होते हैं। यथा, शोभनं प्रातरस्य सुप्रातः शोभनं, दिवास्य सुदिवः चतस्रोऽश्रयः अस्य चतुरश्रः।

द्वन्द्व।

Copulative compounds.

१। द्वन्द्वः

इस प्रकरण में जितने समास होते हैं; उनका नाम द्वन्द्व है।

२। परलिङ्ग द्वन्द्वे।

द्वन्द्व समास होने पर समस्त भाग को परपद का लिङ्ग प्राप्त होता है।

३। इतरेतरयोगे।

परस्पर योग बोध होने से द्वन्द्व समास होता है। यथा, हरिश्च हरश्च हरिहरौ, रामश्च, लक्ष्मणश्च रामलक्ष्मणौ, भीमश्च अर्ज्जुनश्च भीमार्ज्जुनौ, धवश्च खदिरश्च पलाशश्च धवखदिरपलाशाः, कन्दश्च मूलञ्च फलश्च कन्दमूलफलानि, शब्दश्च स्पर्शश्च रूपश्च रसश्च गन्धश्च शब्दस्पर्शरूपरस-गन्धाः। हरिहरौ, यहां हरि पदार्थ और हर पदार्थ का परस्पर योग बोध होता है। धवखदिरपलाशाः, यहां धव पदार्थ, खदिर पदार्थ और पलाश पदार्थ का परस्पर योग बोध होता है।

४। समाहारे च।

दो वा अनेक पदार्थों का समाहार बोध होने से द्वन्द्व समास होता है।

५। द्वन्द्वश्च प्राणितूर्य्यसेनांगानाम्।

द्वन्द्व समास में प्राण्यङ्ग, तूर्य्याङ्ग और सेनाङ्ग वाचक पदों का समाहार होता है। यथा, (प्राण्यङ्गपाणिश्च पादश्च पाणिपदाम्, करश्च चरणश्च करचरणम्, दन्तश्च ओष्ठश्च दन्तौष्ठम्, कर्णश्च नासिका च कर्णनासिकम्, भ्रुवौ च ललाटौ च भ्रूललाटम्, पृष्ठश्च उदरश्च पृष्ठोदरम्;(तूर्य्याङ्ग)—पणवश्च मृदङ्गश्च पणवमृदङ्गम्, शङ्खश्च दुन्दुभिश्च शङ्खदुन्दुभि, भेरी च पटहश्च भेरीपटहम्, ऋषभश्च गान्धारश्च ऋषभगन्धारम् धैवतश्च पञ्चमश्च धैवतपञ्चमम्; षड्जश्च मध्यश्च षड्जमाध्यमम्; (सेनाङ्ग)—रथिकाश्च अश्वारोहाश्च रथिकाश्वारोहम्, शाक्तीकाश्च याष्टीकाश्च शाक्तीकयाष्टीकम्, परशवश्च करवालाश्च परशुकरवालम्, धनूंषि च शराश्च धनुःशरम्, शराश्च तूणीराश्च शरतूणीरम् (१)

६। नदीवाचिनां लिंगभेदे।

लिंग का भेद रहने से नदीवाचक पद का समाहार होता है। यथा, गङ्गा च शोणश्च गङ्गाशोणम्, उद्धयश्च इरावती

---

(१) सेनाङ्गवाचक पद के केवल बहुवचन में समाहार होता है एकवचन द्विवचन में नहीं होता। यथा, शरश्च तूणीरश्च, शरतूणीरौ, शक्तिश्च परशुश्च करवालश्च शक्तिपरशुकरवालाः।

च उद्धेयरावति, ब्रह्मपुत्रश्च चन्द्रभागा च ब्रह्मपुत्रचन्द्रभागम्, लिंगभेद नहीं रहने से नहीं होता। यथा, गङ्गा च यमुना च गंगायमुने; सरस्वती च दृषद्वती च सरस्वती दृषद्वत्यौ।

७। देशवाचिनाञ्च।

लिंगभेदहने रहने से देशवाचक पदों का समाहार होताहै। यथा, कुरुवश्च कुरुक्षेत्रञ्च कुरुकुरुक्षेत्रम्, कुरुवश्च जांगलश्च कुरुजाङ्गलम्, मथुरा च पाटलिपुत्रश्च मथुरापाटलिपुत्रम्, लिङ्गभेद नहीं रहने से नहीं होता। यथा; मद्राश्च केकयाश्च मद्रकेकयाः, विदेहाश्च कलिङ्गाश्च विदेहकलिङ्गाः; ग्रामवाचक पद का समाहार नहीं होता। यथा, जाम्ववञ्च शालूकिनी च जाम्ववशालूकिन्यौ।

८। वा पशुशकुनक्षुद्रजन्तुवाचिनां बहुवचने।

बहुवचन में पशुवाचक, शकुनिवाचक क्षुद्रजन्तुवाचक पदों का विकल्प से समाहार होता है। यथा, पशुवाचक—गावश्च महिषाश्च गोमहिषम् गोमहिषाः, वृकाश्च कुरंगाश्च वृककुरंगम, वृककुरंगाः, गोमायवश्च गर्द्दभाश्च गोमायुगर्द्दभम्, गोमायुगर्द्दभाः; शकुनिवाचक—हंसाश्च सारसाश्च हंससारसम्, हंससारसाः; वकाश्च चक्रवाकाश्च वकचक्रवाकम्, वकचक्रवाकाः, कोकिलाश्च मयूराश्च कोकिलमयूरम् कोकिलमयूराः; क्षुद्रजन्तुवाचक—दंशाश्च मशकाश्च दंश

मशकम्, दंशमशकाः; यूकाश्च मक्षिकाश्च यूकमक्षिकम्, यूकमक्षिकाः; मत्कुणाश्च पिपीलिकाश्च मत्कुणपिपीलिकम्, मत्कुणपिपीलिकाः;।

९। फलतृणतरुवाचिकानाञ्च।

बहुवचन में फलवाचक, तृणवाचक और तरुवाचक पदों का विकल्प से समाहार होता है। यथा, फलवाचक—बदराणि च आमलकानि च बदरामलकम् बदरामलकानि। खर्ज्जुराणि च नारिकेलानि च खर्ज्जुरनारिकेलम्, खर्ज्जुर-नारिकेलानि; व्रीहयश्च यावश्च व्रीहियवम्, व्रीहियवाः, मुद्गाश्चमाषाश्चमुद्गमाषम्, मुद्गमाषाः; तृणवाचक-कुशाश्च काशाश्च कुशकाशम्, कुशकाशाः; तरुवाचक—अश्वत्थाश्च न्यग्रोधाश्च अश्वत्थन्यग्रोधम्, अश्वत्थन्यग्रोधाः।

१०। नित्यं नित्यविरोधिनाम्।

जो सब जन्तु परस्पर सदा विरोधी हैं, बहुवचन में उनके वाचक पदों का सदा समाहार होता है। यथा, अहयश्च नकुलाश्च अहिनकुलम्, काकाश्च उलूकाश्च काकोलूकम्, मार्ज्जाराश्च मूषिकाश्च मार्ज्जारमूषिकम्।

११। गवाश्वप्रभृतीनाञ्च।

गवाश्च आदि (१) का सदा समाहार होता है। यथा,

---

(१) गवाश्वम्, गवाविकम्, गवैडकम्, अजाविकम्, अजैडकम्, कुब्जवामनम्, कुब्जकिरातम्, पुत्रपौत्रम्, श्वचण्डालम्, स्त्रीकुमारम्,

गावश्च अश्वाश्च गवाश्वम्, अजाश्च आविकाश्च अजाविकम्, पुत्राश्च पौत्राश्च पुत्रपौत्रम्।

१२। विभाषा पूर्व्वापरादीनाम्।

पूर्व्वापर आदि का विकल्प से समाहार होता है। यथा, पूर्व्वञ्च अपरञ्च पूर्व्वापरम्ः पूर्व्वापरे; अधरं च उत्तरं च अधरोत्तरम्, अधरोत्तरे, दधि च घृतं च दधिघृतम्, दधिघृते।

१३। विरुद्धानामबिशेषणानञ्च।

परस्पर विरुद्ध पदार्थ का विकल्प से समाहार होता है। यथा शीतञ्च उष्णञ्च शीतोष्णम्, शीतोष्णे; सुखञ्च दुःखञ्च सुखदुःखम्, सुखदुःखे; आलोकश्च अन्धकारश्च आलोकान्धकारम् आलोकान्धकारे। विशेषण होने से नहीं होता। यथा, शीतोष्णे पयसी।

१४। शूद्राणामनिरवसितानां नित्यम्।

शूद्रवाची पद का सदा समाहार होता है। यथा गोपाश्च नापिताश्च गोपनापितम्, कर्म्मकाराश्च कुम्भकाराश्च कर्म्मकाकुम्भकारम्, ताम्बूलिकाश्च तन्तुवायाश्च ताम्बूलिकतन्तु

दासीमाणवकम्, शाटीपटीरम्, शाटीप्रच्छादम्, शाटीपट्टिकम्, उष्ट्रखरम्, उष्ट्र, शशम मूत्रशकृत्, मूत्रपुरीषम्, यकृन्मेदम्, मांसशोणितम्, दर्भपरम्, दर्भपूतीकम्, अर्ज्जुनशिरीषम्, अर्ज्जुनपुरुषम्, तृणोपलम्, दासीदासम्, कुटीकुटम्, भागवतीभागवतम्।

वायम्। निरवसित (१) शूद्र का नहीं होता। यथा, चण्डाला-श्च मृतपाश्च चण्डालमृतपाः।

१५। न दधिपयः प्रभृतीनाम्।

दधिपयस् आदि (२) का समाहार नहीं होता। यथा, दधिपयसी, इध्नावहि सर्पिर्मधुनी, शुक्लकृष्णौ, दीक्षांतपसी, उलूखल मूसले।

१६। अश्चवर्ग दषहान्तात् समाहारे।

समाहार द्वन्द्व में चवर्गान्त, दकारान्त, षकारान्त और हान्त शब्द के उत्तर अ होता है। यथा, वाक्त्वचम्, श्रीस्रजम्, समद्दृषदम्, सम्पद्विपदम्, वाक्त्विषम्, वाग्विप्रुषम्, छत्रोपानहम्, धेनुगोदुहम्, समाहार नहीं होने से नहीं होता यथा श्रीस्रजौ, प्रावृट्शरदौ।

१७। ऋदन्ताद्यन्ते डा विद्यागोत्रसम्बन्धे।

विद्यासम्बन्ध और गोत्रसम्बन्ध रहने से, और ऋकारान्त शब्द परवर्ती होने से ऋकारान्त शब्दों के उत्तर डा होता है। ड इत् होता है और आ रहता है। यथा, विद्या

(१) यैर्भुक्ते पात्रं संस्कारेणापि न शुद्ध्यति ते निरवसिताः।

(२) दधिपयस्, सर्पिर्मधु, मधुसर्पिस्, ब्रह्मप्रजापति, शिववैश्रवण स्कन्दविशाल, परिव्राटकौशिक, प्रवर्ग्योप वसद् शुल्क कृष्ण इध्मवर्हिस्, दीक्षा तपस्, श्रद्धातपस् मेधातपस्, अध्ययनतपस्, उलूखलमुसल, आद्यवसान श्रद्धामेधा।

सम्बन्ध में—होता च पोता च होतापोतारौ, नेष्टा च उद्गाता च नेष्टोद्गातारौ; गोत्रसम्बन्ध में—माता च पिता च मातापितरौ, याता च ननान्दा च यातानान्दारौ।

१८। पुत्रे च

पुत्र शब्द परे रहने से ऋदन्त शब्द के उत्तर डा होता है। यथा, पिता च पुत्रश्च पितापुत्रौ, माता च पुत्रश्च मातापुत्रौ।

१९। देवतावाचिनां पूर्ब्बात्।

देवतावाची पद का द्वन्द्व समास होने पर पूर्व्व पद के उत्तर डा होता है। यथा, इन्द्रश्च वरुणश्च इन्द्रावरुणौ मित्रश्च वरुणश्च मित्रावरुणौ, सूर्य्यश्च चन्द्रमाश्च सूर्य्याचन्द्रमसौ।

२०। नब्रह्मप्रजापत्यादेः।

ब्रह्मप्रजापति आदि के उत्तर डा नहीं होता। यथा, ब्रह्मा च प्रजापतिश्च ब्रह्मप्रजापती, अग्निश्च वायुश्च अग्निवायू; वायुश्च अग्निश्च वाय्वग्नी।

२१। ईदग्नेः सोमवरुणयोः।

सोम और वरुण शब्द परे रहने से अग्नि शब्द के उत्तर ईत् होता है। त् इत् होता है और ई रहता है। यथा अग्निश्च सोमश्च अग्नीषोमौ, अग्निश्च वरुणश्च अग्नीवरुणौ।

२२। दिवो द्यावा।

पूर्व्ववर्ती दिव् के स्थान में द्यावा होता है। यथा द्यौश्च भूमिश्च द्यावाभूमी, द्यौश्च क्षमा च द्यावाक्षमे ।

२३ । दिवस् च पृथिव्याम् ।

पृथिवी शब्द परे रहने से दिव् के स्थान में द्यावा और दिवस् होता है। यथा, द्यौश्च पृथिवी च द्यावापृथिव्यौ दिव-स्पृथिव्यौ ।

२४ । मातरपितरौ ।

निपातन से सिद्ध होता है। यथा माता च पिता च मातरपितरौ ।

२५ । दम्पती जम्पती वा ।

जाया और पति शब्द में समास होने पर विकल्प से दम्पती और जम्पती होता है। यथा, जाया च पतिश्च जाया-पती, दम्पती, जम्पती ।

२६ । नित्यं स्त्रीपुंसादयः ।

द्वन्द्व समास होने से, स्त्रीपुंसौ (१) आदि निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, स्त्री च पुमांश्च स्त्रीपुंसौ, वाक् च मनश्च वाङ्मनसे, नक्तञ्च दिवा च नक्तन्दिवम्, रात्रौ च

---

(१) स्त्रीपुंसौ, धेन्वनडुहम्, ऋक्सामे, वाङ्मनसे, अक्षिभ्रुवम्, दारगवम्, ऊर्व्वष्ठीवम्, पदष्ठीवम्, नक्तन्दिवम्, रात्रिन्दिवम्, अहर्दिवम् ऋग्यजूषम्, अहोरात्रः ।

दिवा च रात्रिन्दिवम्, अहनि च दिवा च अहर्दिनम्, अहश्च रात्रिश्च अहोरात्रः।

२७। सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ।

एक विभक्ति होने से, समानाकार अनेक पदों में से केवल एक अवशिष्ट रहता है। दो पदों में से एक शेष रहने से अवशिष्ट पद द्विवचनान्त होता है और अनेक पदों में से एक शेष रहने से अवशिष्ट पद बहुवचनान्त होता है। यथा, तरुश्च तरुश्च तरू, तरुश्च तरुश्च तरुश्च तरवः, फलञ्च फलञ्च फले, फलञ्च फलञ्च फलञ्च फलानि।

२८। पुमान् स्त्रिया।

समानाकार स्त्रीवाचक पद के साथ समास होने से पुरुषवाचक पद अवशिष्ट रहता है। यथा, ब्राह्मणश्च ब्राह्मणी च ब्राह्मणौ, कुक्कुटश्च कुक्कुटी च कुक्कुटौ। स्त्रीलिङ्ग निमित्तक आप्, ईप् आदि विशेप को छोड़ कर और अंशों में समानाकार होना आवश्यक है। शब्दों के रूप में विशेषता रहने पर नहीं होता। यथा, हंसश्च सारसी च हंस-सारस्यो।

२६। न व्यक्तिसंज्ञानाम्।

व्यक्ति विशेप के संज्ञावाचक पदों का एक शेप नहीं होता। यथा, इन्द्रश्च इन्द्राणी च इन्द्रेन्द्राण्यौ, भवश्च भवानी च भवभवान्यौ।

३०। भ्रातृपुत्रौस्वसृदुहितृभ्याम्।

स्वसृ के साथ भ्रातृ का और दुहितृ के साथ पुत्र का समास होने से भ्रातृ और पुत्र अवशिष्ट रहते हैं। यथा, भ्राता च स्वसा च भ्रातरौ, पुत्रश्च दुहिता च पुत्रौ।

३१। विभाषा पिता माता।

मातृ शब्द के साथ समास होने पर पितृ शब्द विकल्प से अवशिष्ट रहता है। यथा, माता च पिता च पितरौ माता पितरौ।

३२। श्वशुरः श्वश्वा।

श्वश्रू शब्द के साथ समास होने पर श्वशुर शब्द विकल्प से अवशिष्ट रहता है। यथा, श्वश्रूश्च श्वशुरश्च श्वशुरौ, श्वश्रूश्वशुरौ।

३३। नपुंसकमनपुंसकेनैकवचनं वा।

नपुंसक भिन्नपद के साथ नपुंसक का समास होने से नपुंसक शब्द अवशिष्ट रहता है और उसी से विकल्प करके एकवचन होता है। यथा, शुक्लश्च शुक्ला च शुक्लञ्च शुक्लम्, शुक्लानि। नपुंसक के साथ समास होने से एकवचन नहीं होता। यथा, शुक्लञ्च शुक्लञ्च शुक्लञ्च शुक्लानि।

समासों की साधारण विधि।

Genral rules for forming compounds.

१। पथो ङः समासे।

समास होने पर समस्त पद के अन्तस्थित पथिन् शब्द के उत्तर ङ होता है, ङ् इत् होता है और अ रहता है। यथा, पथः समीपम् उपपथम्, जले पन्था जलपथः, दक्षिणस्यां दिशि पन्थः दक्षिणापथः, महान् पन्थाः महापथः, त्रयाणां पथां समाहारः त्रिपथम्, चतुर्णां पथां समाहार चतुष्पथम्, रम्यः पन्थाः अस्मिन् रम्यपथं नगरम्, क्षेत्रञ्च पन्थाश्च क्षेत्र पथौ। अव्यय के परवर्त्ती होने से नपुंसक होता है। यथा, विरुद्धः पन्थाः विपथम्, गर्हितः पन्था; उत्पथम्; अपकृष्टः पन्थाः अपथम्।

२। अनपः।

समास होने से समस्त पद के अन्तस्थि अप् शब्द के उत्तर अन् होता है। न् इत् होता है और अ रहता है। यथा, विमला आपोऽस्मिन् विमलापं सरः, उद्धृता आपोऽस्मात् उद्धृतापः कूपः, कूपस्यापः कूपापाः, निर्म्मला आपः निर्म्मलापाः।

३। द्व्यन्तरुपसर्गेभ्योऽप ईः।

द्वि, अन्तर और उपसर्ग के परवर्ती अप् शब्द के उत्तर

अकार के स्थान में ई होता है। यथा, द्वयोर्दिशोः आपोऽस्य द्वीपम्, अन्तरीपम्, नीपम्, समीपम्, प्रतीपम्, अन्वीपम्।

४। अवर्णाद्विभाषा।

अवर्णान्त उपसर्ग के परवर्त्ती होने पर विकल्प से होता है। यथा, प्रेपम्, प्रापम्; परेपम्, परापम्; अपाम् समीपम् उपेपम्, उपापम्।

५। समापानूपौ।

समाप और अनूप निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, समापं देवयजनम्, अनूपो देशः।

६। धुरोऽनक्षे ऋकपुरब्धः पथामानक्षे।

समास होने पर समस्त पद के अन्तस्थित धुर् शब्द के उत्तर अन् होता है, न इत् होता है और अ रहता है। यथा, राज्ञो धूः राजधुरा, महती धूः महाधुरा, धृता धूरनेन धृतधुरः। अक्ष शब्द का सम्बन्ध रहने से नहीं होता। यथा, अक्षस्य धूः अक्षधूः, दृढ़ाधूरस्मिन् दृढ़धूः अक्षः।

७। ऋचश्च।

समस्त पद के अन्तस्थित ऋच् शब्द के उत्तर अन् होता है। यथा, अर्द्धम् ऋचः अर्द्धर्चं (१) अधिगता ऋक् अनेन अधिगतर्चः।

---

(१) पुलिंग होता है।

८। नञो माणवके।

माणवक बोध होने से नञ के परवर्त्ती ऋच् शब्द के उत्तर अन् होता है। यथा, अनृचो माणवकः। अन्यत्र अनृक साम।

९। बह्वोश्चरणे।

चरण बोध होने से बहु शब्द के परवर्ती ऋच् शब्द के उत्तर अन् होता है। यथा, बह्वचश्चरणः। अन्यत्र, बह्वृक् सूक्तम्।

१०। प्रत्यन्ववेभ्यो लोम्नः।

प्रति, अनु और अव इन तीनों के परवर्त्ती लोमन् शब्द के उत्तर अन् होता है। यथा, प्रतिलोमम्, अनुलोमम्, अवलोमम्।

११। साम्नश्च।

प्रति, अनु और अव इन तीनों के परवर्ती सामन् शब्द के उत्तर अन् होता है। यथा, प्रतिसामम्, अनुसामम्, अवसामम्।

१२। कृष्णोदकपाण्डुसंन्याभ्यो भूमेः।

कृष्ण, उदक, पाण्डु और संख्यावाचक पद के परवर्ती भूमि शब्द के उतर अन् होता है। यथा, कृष्णभूमः, उदकभूमः पाण्डुभूमः, द्विभूमः, चतुर्भूमः।

१३। ब्रह्महस्तिपल्यराजभ्यो वर्च्चसः।

ब्रह्मन्, हस्तिन्, पल्य और राजन् इनके परवर्ती वर्च्चस् शब्द के उत्तर अन् होता है। यथा, ब्रह्मवर्च्चसम्, हस्तिवर्च्चसम्, पल्यवर्च्चसम्, राजवर्च्चसम्।

१४। अव समन्धेभ्यस्तमसः।

अव, सम् और अन्ध इनके परवर्ती तमस् शब्द के उत्तर अन् होता है। यथा, अवतमसम्, सन्तमसम्, अन्धतमसम्।

१५। अन्ववतप्तेभ्यो रहसः।

अनु, अव और तप्त इनके परवर्ती रहस् शब्द के उत्तर अन् होता है। यथा अनुरहसम्, अवरहसम्, तप्तरहसम्।

१६। उपसर्गादध्वनः।

उपसर्ग के परवर्ती अध्वन् शब्द के उत्तर अन् होता है। यथा, प्रगतः अध्वानम् प्राध्वोरथः, अध्वनोऽभावः निरध्वम्, अध्वानं प्रति प्रत्यध्वम्। अन्यत्र उत्तमोऽध्वा उत्तमाध्वा।

१७। श्वसोऽवसीयःश्रेयोभ्याम्।

श्वस् शब्द के परवर्ती अवसीयस्, और श्रेयस् शब्दों के उत्तर अन् होता है॥ यथा, श्वोवसीयसम्, श्वःश्रेयसन्तेभूयात्।

१८। न प्रशंसायां स्वतिभ्याम्।

प्रशंसावाचक सु और अति के पूर्व्व में रहने से समासान्त विधि नहीं होती। यथा, शोभनो राजा सुराजा, शोभनो

राजा अस्मिन् सुराजा देशः, अतिशयेन राजा अतिराजा, शुसखा, अतिसखा, सुगौः, अतिगौः, सुपन्थाः, स्वश्वा। प्रशंसावाचीन होने से गामाति क्रान्तोऽतिगवः।

१९। न किमः कुत्सायाम्।

कुतसा (निन्दा) वाची किम् शब्द पूर्व्व में रहने से समासान्त विधि नही होती। यथा, कुत्सितो राजा किंराजा, कुत्सितः सखा किंसखा, कुत्सितः पन्था. अस्मिन् किम्पन्थाः देशः कुत्सितो गौः किंगौ। कुत्सावाची न होने से कुत्सितो राजा किंराजाः, किं सखः, किं गवः।

२०। न नञस्तत्पुरुषे।

तत्पुरुष समास में नञ् पूर्व में रहने से समासान्त विधि नहीं होती। यथा, अराजा, असखा अगौः।

२१। पथो विभाषा।

पथिन् शब्द के उत्तर विकल्प से होता है। समासान्त पक्ष में नपुसकलिङ्ग होता है यथा, अपथम्, अपन्थाः।

२२। सः समानस्य गोत्रादौ।

समास में गोत्र आदि शब्द परे रहने से समान शब्द के स्थान में स होता है। यथा, समानं गोत्रमस्य सगोत्रः सरूपः, सवर्णः, सपक्षाः, सनाभिः, सपिण्डः, सनामा, सवयाः, सतीर्थः सस्थानः, सबन्धुः, सनवन सरात्रिः, सज्योतिः, सजनपदः, सब्रह्मचारी।

२३। विभाषा धर्म्मोदर्य्यजातीयेषु।

धर्म्म, उदर्य्य और जातीय शब्द परे रहने पर विकल्प से होता है। यथा, सधर्म्मा, समानधर्म्मा ; सोदर्य्यः, समानोदर्य्यः ; सजातीयः, समानजातीयः।

२४। दुरन्यादाशीरादिषु।

आशिस् आदि शब्द परे रहने से अन्य शब्द के उत्तर दु होता है। उ इत् होता है और द् रहता है। यथा, अन्या आशीः अन्यदाशीः, अन्यस्मिन् आशा अन्यदाशा, अन्यस्मिन् आस्था अन्यदास्था, अन्यस्मिन् आस्थितः, अन्यदास्थितः, अन्यस्मिन् उत्सुकः अन्यदुत्सुकः, अन्यस्मिन् रागः अन्यद्रागः, अन्यः कारकः अन्यत्कारकः।

२५। तृतीया षष्ठ्योः।

तृतीयान्त और षष्ठ्यन्त पदों का नहीं होता। यथा, अन्येन आशीः अन्याशीः अन्यस्याशीः अन्याशीः।

२६। अर्थे विभाषा।

अर्थ शब्द परे रहने पर विकल्प से होता है। यथा, अन्यस्यार्थः, अन्यदर्थः, अन्यार्थः।

२७। कोः कत स्वरे तत्पुरुषे।

तत्पुरुष समास में स्वर वर्ण परे रहने से कु शब्द के स्थान में कत् होता है। यथा, कुत्सितोऽश्वः, कदश्वः कुत्सित उष्ट्रः

कदुष्ट्रः कुत्सितमन्नं कदन्नम्, कुत्सित आचारः कदाचारः, कुत्सितमुदकं कदुदकम् ।

२८ । त्रिरथवदेषु । रथवदयोश्च ।

त्रि रथ और वद शब्द परे रहने से कु शब्द के स्थान में कत् होता है । यथा, कुत्सितास्त्रयः कत्त्रयः, कुत्सितो रथः कद्रथः, कुत्सितं वदति कद्वदः । तत्पुरुष समास नहीं होने से कोष्ट्रो राजा ।

२९ । का पथ्यक्षयोः ।

पथिन और अक्षि शब्द परे रहने पर विकल्प से का होता है । यथा, कुत्सितः पन्थाः कापथः, कुत्सितमक्षि अस्य काक्षः ।

३० । ईषदर्थे च ।

ईषत् अर्थ बोधक कु शब्द के स्थान में का होता है । यथा, कामधुरम्, ईषन्मधुरमित्यर्थः; कालवणम्, ईषल्लवणमित्यर्थः ।

३१ । विभाषा पुरुषे ।

पुरुष शब्द परे रहने पर विकल्प से होता है । यथा, कापुरुषः कुपुरुषः ।

३२ । का कत् कन्वान्युष्णे । कवं चोष्णे ।

उष्ण शब्द परे रहने से कु शब्द के स्थान में का, कत् और कव होता है यथा, कोष्णम्, कदुष्णम्, कवोष्णम् ।

३३। विश्वामित्रादयः।

विश्वामित्र आदि शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा, विश्वस्य मित्रं विश्वामित्रः विश्वावसुः, विश्वानरः, अष्टावक्रः, अष्टापदम्, अष्टागवम्, श्वादन्तः श्वादंष्ट्रा, श्वाकर्णः, श्वापुच्छः, श्वापदः।

३४। समानोऽन्त्यलोपः काम मनसोः।

काम और मनस् शब्द परे रहने से, सम् इस अव्यय के अन्त्य वर्ण का लोप होता है। यथा, सन्तुकामः, सन्तुमनाः।

३५। तुमुनश्च।

काम और मनस् शब्द परे रहने तुमुन् प्रत्यय के अन्त्य-वर्ण का लोप होता है। यथा, सकामः, मनाः।

३६। अवश्यमः कृत्ये।

कृत्य प्रत्यय परे रहने से अवश्यम् शब्द के अन्त्यवर्ण का लोप होता है। यथा, अवश्यदेयम्, अवश्यभव्यम्, अवश्य-कर्तव्यम्।

अलुक समास।

A compound in which the case termination are not dropped, but retained.

१। अलुगुत्तरपदे।

समास होने पर कहीं कहीं उत्तर पद के परे विभक्ति का लोप नहीं होता।

२। पञ्चम्याःस्तोकान्ति दूरार्थ कृच्छ्रेभ्यः।

स्तोकार्थ, अन्तिकार्थ, दूरार्थ और कृच्छ्र शब्दों के परवर्ती पञ्चमी विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा, स्तोकान्मुक्तः, अल्पान्मुक्तः, अन्तिकादागतः, समीपादागतः, दूरादागतः, विप्रकृष्टादागतः, कृच्छ्रान्मुक्त.।

३। ओजस्सहोऽम्भस्तमोऽञ्जसस्तृतीयायाः।

ओजस्, सहस्, अम्भस्, तमस् और अञ्जस् शब्दों के परवर्ती तृतीया विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा ओजसा-कृतम्, सहसाकृतम्, अम्भसाकृतम्, तमसाकृतम्, अञ्जसाकृतम आर्जवेन कृतमित्यर्थ।

४। पुंसोऽनुजे।

अनुज शब्द परे रहने से पुंस् शब्द के परवर्ती तृतीया विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा, पुंसानुजः।

५। जनुषोऽन्धे।

अन्ध शब्द परे रहने से जनुष शब्द के परवर्ती तृतीया विभक्ति का लोप नहीं होता । यथा, जनुषान्धः—जातान्धः (१)

६ । आत्मनः पूरणे ।

पूरणवाचक शब्द परे रहने से आत्मन् शब्द के परवर्ती तृतीया विभक्ति का लोप नहीं होता । यथा, आत्मनापञ्चमः, आत्मनादशमः । पूरणार्थक नहीं होने से—आत्मनाकृतम् आत्मकृतम् ।

७ । वैयाकरणाख्यायां चतुर्थ्याः ।

व्याकरण की संज्ञा बोध होने से आत्मन् शब्द के परवर्ती चतुर्थी विभक्ति का लोप नहीं होता । यथा, आत्मनेपदम्, आत्मनेभाषा ।

८ । पराच्च ।

पर शब्द के उत्तर भी नहीं होता । यथा, परस्मैपदम्, परस्मैभाषा ।

९ । हलदन्तात् सप्तम्याः संज्ञायाम् ।

संज्ञा बोध होने से हलवर्णान्त और अकारान्त शब्दों की सप्तमी विभक्ति का लोप नहीं होता । यथा, युधिष्ठिरः, त्वचिसारः अरण्येतिलकाः, वनेकिंशुकाः, कूपेपिशाचकः । (२)

---

(१) पुंशानुजो जनुसान्ध इति च ।
(२) गवियुधिभ्यांस्थिरः—गविष्ठिरः । हृद्युभ्याञ्च हृदिस्पृक, दिविस्पृक ।

१० । अन्तमध्याभ्यां गुरौ ।

गुरु शब्द परे रहने से अन्त और मध्य शब्द के परवर्ती सप्तमी विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा, अन्तेगुरुः (१) मध्येगुरुः।

११ । अमूर्द्धमस्तकात् स्वांगादकामे ।

स्वाङ्गवाचक शब्द के परवर्ती सप्तमी विभक्ति का लोप नही होता। यथा, कण्ठेकालः, उरसिलोमा, शिरसिशिखः। काम शब्द परे रहने से होता है। यथा, सुखकामः। मूर्द्धन् और मस्तक शब्द के उत्तर होता है। यथा मूर्द्धशिखः, मस्तकशिख।

१२ । विभाषा बन्धे ।

बन्ध शब्द परे रहने पर विकल्प से होता है। यथा, हस्ते बन्धः, हस्तबन्धः, पदेबन्धः, पदबन्धः।

१३ । तत्पुरुषे कृति बहुलम् ।

तत्पुरुष समास में कृत् प्रत्यय से बने पद परे रहने से सप्तमी विभक्ति के लुक् होने का नियम नहीं है अर्थात् कहीं २ नहीं होता है; ऐसे ही कहीं कहीं होता भी है और कहीं कहीं विकल्प से होता है। यथा, अलुक्—अन्तेवासी, स्तम्बरेरमः, कर्णेजपः, पङ्केरुहः, मनसिशयः, प्रावृषिजः, शरदिजः; लुक्—कुरुचरः, स्थण्डिलशायी, कूटस्थः, गृहस्थः; विकल्पे-सरसिजम्

(१) अन्ताच्च।

सरोजम्, मनसिजः मनोजः, ग्रामेवासः ग्रामवासः, ग्रामेवासी ग्रामवासी ।

१४ । षष्ठ्या आक्रोशे ।

भर्त्सना बोध होने से षष्ठी विभक्ति का लुक् नहीं होता। यथा, चौरस्यकुलम्, दासस्यतनयः। भर्त्सना बोध नहीं होने से ब्राह्मण कुलम्।

१५ । पुत्रे विभाषा ।

भर्त्सना बोध होने से और पुत्र शब्द परे रहने से षष्ठी विभक्ति का विकल्प से लुक् नहीं होता। यथा, दास्याः पुत्रः, दासीपुत्रः ; वृषल्याः। पुत्रः, वृषलीपुत्रः निन्दा बोध नहीं होने से ब्राह्मणीपुत्रः।

१६ । वाक्दिक्पश्यद्भ्यो युक्तिदण्डहरेषु ।

युक्ति, दण्ड और हर शब्द परे रहने पर क्रम से वाच्, दिश् और पश्यत् शब्दों के परवर्त्ती षष्ठी विभक्ति का लुक् नहीं होता। यथा, वाचोयुक्तिः, दिशोदण्डः, पश्यतोहरः।

१७ । देवात् प्रिये ।

प्रिय शब्द पर रहने से देव शब्द के परवर्ती विभक्ति का लोप नही होता। यथा, देवानाम्प्रियः पक्षान्तरे-देवप्रियः।

१८ । शुनः शेफपुच्छलांगलेषु संज्ञायाम् ।

संज्ञा बोध होने से और शेफ, पुच्छ और लाङ्गल शब्द परे

रहने से श्वन् शब्द के परवर्ती विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा, शुनःशेफः शुनःपुच्छः, शुनोलाङ्गूलम्।

१६। दिवश्च दासे।

संज्ञा बोध होने पर दास शब्द परे रहने से दिव शब्द के परवर्ती विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा, दिवोदासः।

२०। ऋतो विद्या-गोत्रसम्बन्धात्।

विद्यासम्बन्धवाची एवं गोत्रसम्बन्धवाची ऋकारान्त शब्दों के परवर्ती विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा, होतुः पुत्रः, होतुरन्तेवासी पितुःपुत्रः, पितुरन्तेवासी।

२१। विभाषा स्वसृपत्योः।

स्वसृ और पति शब्द परे रहने पर विकल्प से होता है। यथा, मातुःस्वसा, मातृष्वसा, पितुष्वसा ; पितृष्वसा; दुहितुः पतिः, दुहितृपतिः ; ननान्दुःपतिः, ननान्दृपतिः।

२२। पात्रे समितादयः कुत्सायाम्।

कुत्सा बोध होने से पात्रेसमित आदि (१) की सप्तमी विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा पात्रेसमिताः, भोजन काले पात्रे एव सङ्गताः, नतु कार्य्यकाले इत्यर्थः, गेहेशूरः, गेहे एव शूरः, नतु अन्यत्र इत्यर्थः।

---

(१) पात्रेसमिताः, पात्रेबहुलाः, गेहेशूरः, गेहेनर्दी, गेहेक्ष्वेड़ी, त्रिगेहेजिती, गेहेदृप्तः, गेहेधृष्टः, गर्भेतृप्तः, गोष्ठेशूरः गोष्ठेपटः, गोष्ठेपण्डितः गोष्ठेप्रगल्भः इत्यादि।

मध्यपदलोपी समास।

१। लोपः क्वचिन्मध्यस्य।

समास होने पर कहीं २ मध्य पद का लोप हो जाता है। यथा, घृतमिश्रम् ओदनम् घृतौदनम्, पलमिश्रम्, अन्नं पालान्नम् शाकप्रियः पार्थिवः शाकपार्थिवः, गत एव प्रत्यागतः गतप्रत्यागतः, कण्ठे स्थितः कालोऽस्य कण्ठेकालः, उरसि स्थितानि लोमान्यस्य उरसिलोमा, शिरसि स्थिता शिखास्य शिरसिशिखः प्रपतितानि पर्णान्यस्मात् प्रपर्णः ; अपगतः शोकोऽस्य अपशोकः निर्गतं मलम् अस्मात् निर्मलः, अभुक्तानि पर्णान्यनया अपर्णा, विगतोऽर्थः अस्मात् व्यर्थः, अनुगतोऽर्थोऽस्मिन् अन्वर्थः, यथाभूतोऽर्थोऽस्मिन् यथार्थः, प्रतिगतमक्षमस्मिन् प्रत्यक्षः, उन्नमितं मुखमनेन उन्मुखः, अधःकृतं मुखमनेन अधोमुखः, निर्नष्टं धनमस्य निर्द्धनः, विचलितं मनोऽस्य विमनाः, उत्कण्ठितं मनोऽस्य उन्मनाः, सुस्थितं मनोऽस्य सुमनाः, सुवर्णविकारोऽलङ्कारोऽस्य सुवर्णालङ्कारः, अविद्यमानः पुत्रोऽस्य अपुत्रः अविद्यमानः क्रोधोऽस्य अक्रोधः, एकाधिका विंशतिः एकविंशतिः, एकाधिका त्रिंशत्, एकत्रिंशत्, चतुरधिका दश चतुर्दश, पञ्चाधिका दश पञ्चदश, पञ्चाधिका विंशतिः पञ्चविंशतिः, पञ्चाधिका त्रिंशत् पञ्चत्रिंशत्।

२। एकस्यैका दशानि।

दशन् शब्द परे रहने से एक शब्द के स्थान में एका होता है। यथा, एकाधिका दश एकादश।

३। द्व्यष्टनोद्वाष्टा संख्यायाम्।

संख्यावाचक शब्द परे रहने से द्वि के स्थान में द्वा और अष्टन् के स्थान में अष्टा होता है। यथा, द्व्यधिका दश द्वादश द्व्यधिका विंशतिः द्वाविंशतिः, द्व्यधिका त्रिंशत् द्वात्रिंशत् अष्टाधिका दश अष्टादश, अष्टाधिका विंशतिः अष्टाविंशतिः, अष्टाधिका त्रिंशत् अष्टात्रिंशत। बहुब्रीहि समास होने से द्वित्राः द्व्यशीतिः।

४। त्रेस्त्रयस्।

त्रि के स्थान में त्रयस् होता है। यथा, त्र्यधिका दश त्रयोदश त्र्यधिका विंशतिः त्रयोविंशतिः त्र्यधिका त्रिंशत् त्रयस्त्रिंशत्।

५। विभाषा चत्वारिंशत्प्रभृतौ सर्व्वेषाम्।

चत्वारिंशत आदि (१) परे रहने से द्वि के स्थान में द्वा, त्रि के स्थान में त्रयः और अष्टन् के स्थान में अष्टा विकल्प से होता है। यथा, द्व्यधिका चत्वारिंशत् द्वाचत्वारिंशत्, द्विचत्वारिंशत्, द्व्यधिका पञ्चाशत् द्वापञ्चाशत्, द्विपञ्चाशत्; त्रयश्चत्वारिंशत्, त्रिचत्वारिंशत्; त्रयःपञ्चाशत्, त्रिपञ्चाशत्; अष्टाचत्वारिंशत्, अष्टचत्वारिंशत्; अष्टापञ्चाशत्, अष्टपञ्चाशत्।

(१) चत्वारिंशत्, पञ्चाशत्, षष्टि; सप्तति, नवति।

६। नाशीति शतातौ बहुव्रीहौ।

अशीति और शत आदि संख्यावाचक शब्द परे रहने से बहुव्रीहि समास में पूर्वोक्त कार्य्य नहीं होता। द्व्यशीतिः, त्र्यशीतिः, द्विशतम्, त्रिसहस्रम्, द्वित्राः, त्रिचतुराः।

७। एकोनस्यैकान्यैकान्दौ विभाषा।

एकोन के स्थान में विकल्प से एकान्न और एकादून होता है। यथा, एकोनविंशतिः एकान्नविंशतिः एकादूनविंशतिः।

पूर्व्व निपात।

१। उपसर्ज्जनं पूर्व्वम्।

समास में उपसर्ज्जन पद का पूर्व्व निपात होता है।

२। प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्ज्जनम्।

समास के सूत्रों में प्रथमा विभक्ति के योग में जिसका निर्देश रहता है उसको उपसर्ज्जन कहते हैं। अव्ययी भाव में अव्यय आदि पद, तत्पुरुष में द्वितीयादि विभक्त्यन्त पद, कर्म्मधारय में विशेषण आदि पद और द्विगु में संख्यावाचक पद उपसर्ज्जन कहे जाते हैं। यथा, अव्ययीभाव में—कूलस्य समीपम् उपकूलम्, ज्ञानमनतिक्रम्य यथाज्ञानम्, वर्णानामानपूर्व्व्येण अनुवर्णम्, तृणमप्यपरित्यज्य सतृणम्, ग्रामाद्बहिः बहिर्ग्रामम्, पाटलिपुत्रात् आ आपाटलिपुत्रम्, समुद्रस्य पारे

पारेसमुद्रम्। तत्पुरुष में—सुखं प्राप्तः सुखप्राप्तः, अन्नं बुभुक्षुः, अन्नबुभुक्षुः, वर्षं भोग्यः वर्षभोग्यः, पित्रा समः पितृसमः, अङ्गेन विकल अङ्गविकल, पाणिनिना प्रणीतम् पाणिनिप्रणीतम् भूताय बलि भूतबलि, पुत्राय हितम् पुत्रहितम्, व्याघ्रात् भयम् व्याघ्रभयम्, गृहात् निर्गत गृहनिर्गतः, तरोः छाया तरुच्छाया, अग्ने शिखा अग्निशिखा, शास्त्रे प्रवीण, शास्त्र-प्रवीणः, पूर्व्वाह्ने कृतम् पूर्व्वाह्णकृतम्। कर्म्मधारय में—नालं उत्पलम् नीलोत्पलम्, नवः पल्लवः, नवपल्लव, सन् पुरुष. सत्पुरुषः। द्विगु में—पञ्चभिः गोभिः क्रीतः पञ्चगु., त्रयाणां लोकानां समाहारः त्रिलोकी, त्रयाणां भुवनानां समाहारः त्रिभुवनम्।

३। राजदन्तादिषु परम्।

राजदन्त आदि में उपसर्ज्जन पद का परनिपात होता है। यथा, दन्तानां राजा राजदन्त, वनस्य अग्रे अग्रेवनम्।

४। वा कड़ारादयः कर्म्मधारये।

कर्म्मधारय समास में कड़ार आदि (१) पद का विकल्प से पूर्व्वनिपात होता है। यथा. कड़ारगज, गजकड़ारः; खञ्जशिशु, शिशुखञ्जः; वृद्धपुरुष, पुरुषवृद्धः।

५। सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ।

---

(१) कड़ार, खञ्ज, काण, कुण्ट, गौर, वृद्ध, भिक्षुक, पिङ्ग, पिङ्गल, तनु, जठर, बधिर, बर्व्वर इत्यादि।

बहुव्रीहि समास में सप्तम्यन्त और विशेष पदों का पूर्व्व-निपात होता है। यथा, सप्तम्यन्त—कण्ठेकालाः, उरसिलोमा; विशेषण—दीर्घबाहुः, महाबलः।

६। विभाषा प्रियस्य।

प्रिय शब्द का विकल्प से पूर्वनिपात होता है। यथा, गुड़ प्रियः प्रियगुड़ः।

७। सप्तमी परागड्वाद्यैः।

गडु आदि के योग में सप्तम्यन्त पदों का परनिपात होता है। यथा, गडुः कण्ठे यस्य गडुकण्ठः, गडुः शिरसि यस्य गडुशिराः।

८। प्रहरणार्थैश्च।

प्रहरणवाचक पदों के योग में सप्तम्यन्त पदों का परनिपात होता है। यथा, शस्त्रं पाणौ यस्य शास्त्रपाणिः, दण्डः पाणौ यस्य दण्डपाणिः, खड्ग करे यस्य खड्गकरः, धनुर्हस्ते यस्य धनुर्हस्तः।

९। निष्ठा पूर्व्वा।

निष्ठ प्रत्यय से बने हुए पदों का पूर्व्वनिपात होता है। यथा, कृतकर्म्मा अधीतव्याकरणः, भक्षितौदनः, धृतायुधः, उद्धृतदण्डः, भग्नरथः, पक्वकेशः।

१०। वाहिताग्न्यादिषु।

आहिताग्नि आदि में निष्ठा प्रत्यय से बने पदों का विकल्प

से पूर्व्वनिपात होता है। यथा, आहिताग्निः, अग्न्याहित. जातसुखः, सुखजातः, जातपुत्रः, पुत्रजातः, जातदन्त दन्तजातः जातश्मश्रुः, श्मश्रुजातः, तैलपीतः, पीततैलः घृतपीतः, पीतघृतः ; मद्यपीतः, पीतमद्यः ; सुरापीतः, पीतसुरः ; भार्य्योढ ऊढभार्य्यः, अर्थगतः, गतार्थः ; प्राप्तकालः, कालप्राप्तः। अस्युद्यतः उद्यतासिः।

११। अलास्वरं द्वन्द्वे।

द्वन्द्व समास में अल्प-स्वर विशिष्ट पदों का पूर्व्वनिपात होता है। यथा, तालतमालौ, गजतुरङ्गौ, शङ्खदुन्दुभी, भ्रातृभगिन्यौ, गोमहिषौ, दंशमशकौ, हंससारसौ, काककोकिलौ, अम्लमधुरौ, तिक्तकषायौ।

१२। स्वराद्यदन्तं साम्ये।

स्वरसाम्य (जहां स्वर बराबर हो) में स्वरादि अकारान्त पदों का पूर्व्वनिपात होता है। यथा, अश्वगजौ, अम्लतिक्तौ, अनलपवनौ, अच्युतमहेशौ, अचलसमुद्रौ, इन्द्रवह्नी, ईशभवौ, उष्णखरौ, ऊर्द्ध्वनिम्ने।

१३ इदुदन्तश्च।

स्वरसाम्य में इकारान्त और उकारान्त पदों का पूर्व्व निपात होता है। यथा हरिहरौ, रविबुधौ पटुशुक्लौ, मृदुदृढ़ौ।

१४। अभ्यर्हितञ्च।

अभ्यर्हित बोधक पदों का पूर्व्वनिपात होता है। यथा, मातापितरौ, तापसयाचकौ।

१५। लघुवर्णाञ्च। लघुक्तर पूर्व्वम्।

लघुवर्ण विशिष्ट पदों का पूर्वनिपात होता है। यथा कुश, काशम् नलनीलौ, वलयकेयूरौ।

१६। भ्राता च ज्यायान्। भ्रातुर्ज्यायसः।

ज्येष्ठभ्रातृवाचक पद का पूर्व्वनिपात होता है। यथा, युधिष्ठिरार्ज्जुनौ, धृतराष्ट्रपाण्डू, वलदेवकृष्णौ।

१७। ऋतु नक्षत्राणामानुपूर्व्व्येण।

ऋतुवाचक और नक्षत्रवाचक पदों का पूर्व्व पद के अनुसार पौर्व्वापर्य्य * नियम है। यथा, ऋतुवाचक-हेमन्त शिशिरौ, शिशिरवसन्तौ, वसन्तनिदाघौ ; नक्षत्रवाचक अश्विनीभरण्यौ, कृतिकारोहिण्यौ। अक्षरसाम्य में यही नियम है।

१८। वर्णानाञ्च।

ब्राह्मणादि वाचक पदों में आनुपूर्व्व्य के अनुसार पूर्वापर के नियम होते हैं। यथा—ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य,-शूद्राः।

१९। अनियमो धर्म्मादौ।

---

* जो पद पहले बोला जाता है उसको पहले रखना और उसके बाद जो बोला जाता है उसे आगे रखना। अनुवादक।

धर्म्म प्रभृति प्रयोग में पूर्व्वा पर का नियम नहीं है। यथा—धर्म्मार्थौ, अर्थधर्म्मौ, कामार्थौ, अर्थकामौ, शब्दार्थौ, अर्थशब्दौ, बरवध्वौ, बधुवरौ, सर्पिर्म्मधूनी, मधूसर्पिषौ, आद्यन्तौ, अन्तादी, गुणवृद्धी, वृद्धगुणौ।

सर्व समास शेष।

१। समासश्चतुर्व्विधः।

पाणिनी के मत से समास अव्ययीभाव, तत्पुरुष, वहुव्रीहि द्वन्द्व, ये चार प्रकार के हैं। कर्म्मधारय, द्विगु, स्वतन्त्र समास में परिगणित नहीं हैं किन्तु ये तत्पुरुष के अन्तर्गत है। किसी २ के मत से कर्म्मधारय और द्विगु, स्वतन्त्र समास दिखलाये गये। हैं उनके मत से समास छ प्रकार के हैं।

२। पूर्वपदार्थः प्रधानो अव्ययीभावः।

अव्ययीभाव समास में पूर्व्वपद प्रधान रहता है। उप-गृहम्, यथाशक्ति, इत्यादि स्थल में उप, यथा, प्रभृति पूर्व्व-पदार्थ प्रधान भाव से रहता है।

३। उत्तर-पदार्थ-प्रधानस्तत्पुरुषः।

तत्पुरुष समास में उत्तर पदार्थ प्रधान भाव से प्रतीत होता है। तरुच्छाया, गङ्गा जलम् इत्यादि।

४। अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः।

वहुव्रीहि समास में समस्यमान कोई पदार्थ प्रधान भाव

से प्रतीत न होकर उससे उपलक्षित अन्य पदार्थ प्रतीत होता है। बहुधनः, दीर्घबाहुः आदि में बहु धन, दीर्घ, बाहु आदि में से कोई पदार्थ प्रधान भाव से प्रतीत नहीं होता किन्तु बहु-धन और दीर्घ-बाहु विशिष्ट व्यक्ति रूप अन्य पदार्थ प्रधान भाव से प्रतीत होता है।

५। उभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः।

द्वन्द्व समास में समस्यमान दोनों पदार्थ प्रधान भाव से प्रतीत होते हैं। अश्वगजौ, तालतमालौ आदि में अश्व, गज, ताल, तमाल आदि सब ही पदार्थ प्रधान भाव से प्रतीत होते हैं।

परन्तु सर्वत्र ये नियम नही घटते। स्थल विशेष में विपरीत देखा जाता है। सप्तगोदावरम्, उन्मत्तगङ्गम् इत्यादि अव्ययी भाव में पूर्व पदार्थ प्रधान भाव से प्रतीत न होकर अन्य पदार्थ प्रधान प्रतीत होता है। अकिञ्चनः, आपन्नजीविकः इत्यादि तत्पुरुष में उत्तर पदार्थ प्रधान भाव से प्रतीत न होकर अन्य पदार्थ प्रधान भाव से प्रतीत होता है। द्वित्राः, पञ्चषः इत्यादि बहुव्रीहि समास में अन्य पदार्थ प्रधान भावसे प्रतीत न होकर दोनों ही पदार्थ प्रधान भाव से प्रतीत होते हैं। हंससारसम्, दंशमशकम्, इत्यादि द्वन्द्व समास में दोनों पदार्थ प्रधान भाव से प्रतीत न होकर उसके समाहार रूप अन्य पदार्थ प्रधान भावसे प्रतीत होता है। इसलिए पूर्वोक्त सब लक्षण प्रायिक अभिप्राय से निर्दिष्ट हैं; अर्थात्

प्रायः सब स्थलों में उन उन लक्षणों का समावेश होता है, कहीं कहीं नहीं होता है। इसीलिये बहुत लोग, प्रायेण पूर्वपदार्थ-प्रधानोऽव्ययीभावः, प्रायेणोत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः, प्रायेणान्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः, प्रायेणोभयपदार्थप्रधानो द्वंन्द्वः, इस प्रकार से अव्ययीभाव आदि के लक्षणों में प्रायेण इस पद की योजना करते हैं।

सचमुच उन उन समासों के अधिकार में जो सब समास विहित हुए हैं वेही सब समास उन २ संज्ञाओं के भाजन हैं। अर्थात् अव्ययी भाव प्रकरण में जो सब समास विहित हुए हैं उनका नाम अव्ययीभाव है। तत्पुरुष प्रकरण में जो सब समास विहित हुए हैं उनका नाम तत्पुरुष है। बहुव्रीहि प्रकरण में जो सब समास विहित हुए हैं उनका नाम बहुव्रीहि है। और द्वन्द प्रकरण में जो सब समास विहित हुए हैं उनका नाम द्वन्द है।

'उभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः' यहां उभय शब्द से केवल दो पद का बोध नहीं होता वरन् अधिक का होता है। दो पद में जैसा द्वन्द्व समास होना है अनेक पद में भी वैसा ही होता है यथार्थ में केवल अव्ययीभाव समास दो पद में होता है। द्वन्द्व और बहुव्रीहि दो पदों में और अनेक पद में भी होता है तत्पुरुष प्रायः सर्वत्र दो पदों में होता है कही कहीं अनेक पद में भी देखा जाता है। वस्तुतः द्वन्द्व समास के लक्षण ये उभय शब्द के स्थान में अनेक शब्द का रहना आवश्यक है।

६। बहुव्रीहिर्द्विविधस्तद्गुणसंविज्ञानोऽतद्गुण-संविज्ञानश्च।

बहुव्रीहि दो प्रकार का है तद्गुणसंविज्ञान और अतद्गुण संविज्ञान। जहां समास-बोधित अन्य पदार्थ के समान समस्यमान पदार्थ का भी परस्पर में क्रिया आदि के साथ अन्वय होता है, उसको तद्गुणसंविज्ञान और जहाँ समस्यमान पदार्थ की क्रिया के साथ अन्वय नहीं होता उसको अतद्गुण संविज्ञान कहते हैं। लम्बकर्णमानय इत्यादि में आनय क्रिया में लम्बकर्ण-विशिष्ट व्यक्ति का अन्वय होता है, किन्तु लम्ब-कर्ण का भी परस्पर में अन्वय है, इसलिए वह तद्गुणसंविज्ञान है, और दृष्टसमुद्रमानय इत्यादि स्थलों में आनयन क्रिया में दृष्टसमुद्र व्यक्ति का अन्वय है किन्तु समुद्र का नहीं है, इस-लिए वह अतद्गुणसंविज्ञान है।

७। समानाधिकरणपदघटितो व्यधिकरण पद-घटितश्च।

बहुव्रीहि प्रकारान्तर से दो प्रकार का है, समानाधिकरण पदघटित और व्यधिकरणपदघटित। एक ही विभक्ति वाले विशेष्य और विशेषण पदों में जो बहुव्रीहि समास होता है वह समानाधिकरणपदघटित कहलाता है। यथा, नीलाम्बरः, दीर्घबाहुः, कृष्णकायः इत्यादि। और, जहाँ भिन्न २ विभक्ति

वाले पदों में बहुव्रीहि समास होता है उसको व्यधिकरणपद घटित कहते हैं, यथा, दण्डपाणिः, धनुर्हस्तः इत्यादि।

तद्धित-परिशिष्ट।

१। पुंवत्तसिलादिषु भाषितपुंस्कस्य।

तसिल्, त्रल् चरट्, जातीय, देशीय और पाश प्रत्यय परे रहने से भाषितपुंस्क स्त्रीलिङ्ग शब्दों का पुंवद्भाव होता है। यथा, उत्तरस्यादिशः उत्तरतः, उत्तरस्यां दिशि उत्तरतः, सर्वस्यां दिशि सर्व्वत्र· अर्पिता भूतपूर्वा अर्पितचरी, जात्या ब्राह्मणी ब्राह्मणजातीया, ईषदूना पण्डिता पण्डितदेशीया, कुत्सिता पाचिका पाचकपाशा।

२। कल्याणादिषु च।

कल्प रूप तर् और तम् प्रत्यय परे रहने से भाषितपुंस्क स्त्रीलिङ्ग शब्द का पुंवद्भाव होता है। यथा, ईषदूना पण्डिता पण्डितकल्पा, प्रशस्ता गायिका गायिकरूपा, इयमनयोरतिशयेन निपुणा निपुणतरा, इयमासामतिशयेन चपला चपलतमा।

३। ईवूपोर्व्विभाषा।

कल्प आदि शब्द परे रहने से भाषितनपुंस्क ईवन्त और ऊवन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द का विकल्प से पुंवद्भाव होता है। यथा, ईषदूना विदुषी विदुषिकल्पा, विद्वत्कल्पा, प्रशस्ता मेधाविनी, मेधाविनीरूपा मेधाविरूपा; इयमनयोरतिशयेन

मायाविनी मायाविनीतरा, मायावितरा ; इयमासामतिशयेन मनोहारिणी, मनोहारिणीतमा, मनोहारितमा ; वामोरूकल्पा, वामोरुकल्पा, वामोरूरूपा, वामोरुरूपा ; वामोरूतरा, वामोरुतरा वामोरूतमा, वामोरुतमा (१)।

४। शसि बह्वल्पार्थस्य।

शस् प्रत्यय परे रहने से बह्वर्थ अल्पार्थ भाषितपुंस्क स्त्रीलिङ्ग शब्द का पुंवद्भाव होता है। यथा, बह्वीभ्यो देहि, बहुशो देहि ; अल्पाभ्यो देहि, अल्पशो देहि।

५। त्वतलोर्गुणवचनस्य।

सकते हैं।

त्व और तल् प्रत्यय परे रहने से गुणवाचक भाषितपुंस्क स्त्रीलिङ्ग शब्द का पुंवद्भाव होता है। यथा, निपुणाया भावः निपुणत्वम्, निपुणता, चपलायाः भावः चपलत्वम्, चपलता, मेधाविन्या भावः मेधावित्वम्, मेधाविता ; प्रियवादिन्या भावः प्रियवादित्वम्, प्रियवादिता।

सम्पूर्णम्

---

(१) वैयाकरणलोग ऊङन्त का पुंवद्भाव निषेध करके ऊङ् का विकल्प से ह्रस्व करते हैं और पुंवद्भाव के अभाव मे ईप् के स्थल विशेष में विकल्प से और स्थल-विशेष में नित्य ह्रस्व करते हैं। इसके अनुसार विदुषिकल्पा विदुषीकल्पा, विद्वत्कल्पा, एवं ब्राह्मणिकल्पा, ब्राह्मणीकल्पा ये सब रूप हो सकते हैं।

प्रश्नावली ।

QUESTIONS.

कारक ।

1. Explain and illustrate अपादान कारक . C.V. 1918.

2. What classes of verbs generally in their causative form convert the agrent (प्रयोज्यकर्त्ता) into the gramatical accusative (कर्म्मसंज्ञया) ? adduce two suitable examples. C. V., 1914.

3. Explain clearly by examples the rule or rules bearing upon the change of voice of verbs with 'double accusatives.

4. Compose sentences to show the use of the following verbs governing nouns in ablative case (अपादान) भी, त्र, and यत् । C. V., 1917.

विभक्ति निर्णय ।

1. Use any five of the following words in short Sanskrit sentences :—धिक् । विना । मासेन । फलाय । बहिस् । पृथक् । नमः । अलम् C V., 1913.

2. Correctly use any two of the following words in short sentences of your own :—वक्त्वा, वक्तुम, वक्तम्, वक्तवान् , वक्ता, वक्तव्यम् । C. V., 1915.

3. Correctly use मासम अधीतम् and मासेन अधीतम् in difference sentences of your own C. V., 1915.

4. What is the difference between महाभुजः, and महद्भुजः ? use the words in different sentences C. V., 1915.

5. In the case of महाभ्रम् would also महद्भ्रम् be right in any case ? If not, give the right form ; and the reasons for your answer, C. V , 1917.

6. Account for the case—ending either in भृत्यस्य पश्यतः or in प्राणेषु विद्यमानेषु in group A. C. V., 1918.

स्त्रीप्रत्यय।

1. When to use आचार्य्या, and when to use आचार्य्यानी ? Form sentences to illustrate the different use C. V.

2. Give the feminine forms of any two of the following :—पुन्य, श्वन् and सखि। C. V , 1917.

3. Give the corresponding feminaine forms. For the following :—आचार्य्य, अश्व, गोप, शूद्र, धातृ, and विद्वस्। C. V., 1917.

4. Give the feminine forms of वरुण and भव,

समास।

1. Either compound the following :—सुन्दरीणां बुद्धिः, सुन्दरी बुद्धिर्यस्यसा। or expound the Samas in त्रिभुवनम् हंसकोकिलम् C. V., 1910.

2. Show by different sentences that the word पीताम्बर can be taken both as a कर्म्मधारय and as a बहुब्रीहि। C. V., 1910.

3. What is an अव्ययी भाव समास ? Give two instances of अव्ययीभाव समास C. V., 1911

4. Show by examples difference between समाहारद्वन्द and समाहारद्विगु C. V , 1911 and 1915.

5. Expound the Samasas in any two of the following आमार्य्यादम्। मूषिक निर्विशेषम्। व्यावृतसर्वेइन्द्रिपार्थस्य। स्वत प्रार्थना सिद्धार्थम् C. V., 1912.

6. Define Sandhi and Samas. How many kinds of Samas are there? Name them, and give one example of each. Is Ekasesa a Samas ? Give reasons for your answers C. V. 1913.

7. Expound the Samasas in any two of the following :—महोरस्कम् । नृसिंहम् । सिंहसकाशम् । अमृत प्रायाणी C. V. 1913.

8. Expound the Samas as in any three of the following :—

(*a*) मांसाद्याहारेण । (*b*) अक्षत केशाः (*c*) मांसाहारदानेन । (*d*) कोशमात्रावस्थितेन (*e*) सबहुमानम् (*f*) धर्माविरोधेन (*g*) समित्रबन्धुः C. V., 1914.

9. Cleariy explain the उपपद समास and give illustrative examples C. V., 1914.

10 Distinguish between the रूपक and उपमित compounds by proper examples C.V., 1914.

11. Name and expound the Samasas in any two of the following :—

(*a*) प्रबोधनार्थम् (*b*) यथाकालोपपन्नम् (*c*) मुनिपुङ्गवः (*d*) अनेकविधचाटुवाक्यगर्भा । C. V., 1915.

12. Why महाराजेन and not महाराज्ञा? C. V. 1915.

Under what rule of Samasa does the final न of राजन् disappear in such cases ?

13. Explain and illustrate the distinction between एक शेष and द्वन्द्व । C. V , 1915.

14. Show by sentences of your own, the use of any two of the following pairs :—

(*a*) महाधनम् । and महद्धनम् (*b*) वर्षमधीतम् (*c*) वर्षेणाधीतम् स्वेषाम् and स्वानाम् । (*d*) उपाध्यायानी and उपाध्याया । C. V. 1917.